लाल झण्डे के नीचे

आत्मकथात्मक उपन्यास



लाल झण्डे के नीचे

आत्मकथात्मक उपन्यास

लाओ श

परिकल्पना प्रकाशन
लखनऊ

अनुवाद : कृष्णकुमार त्रिवेदी 'कोमल'

ISBN: 81-87425-80-6 (PB)

मूल्य : रु. 50.00 (पेपर बैक)

पहला संस्करण : **जनवरी, 2006**

परिकल्पना प्रकाशन
द्वारा, जनचेतना, डी-68, निरालानगर,
लखनऊ-226 020 द्वारा प्रकाशित

क्रिएटिव प्रिन्टर्स, 628/S-28, शक्तिनगर, लखनऊ द्वारा मुद्रित

आवरण : **रामबाबू**

LAL JHANDE KE NEECHEY: *by* **Lao Sha**

1

मेरी बुआ और मेरी सबसे बड़ी बहिन की सास आज यदि जीवित होती तो मुझे विश्वास है कि इस प्रश्न पर उनका विवाद चल रहा होता कि आखिर वह क्या था जिसके कारण मेरी माँ उस रात्रि निश्चेत हो गईं जब मेरा जन्म हुआ—क्या वह कारण मेरा जन्म ही था अथवा कोयले का विषाक्त धुआँ?

सौभाग्यवश जब उनका समय आया, दोनों ही महिलाओं की स्वाभाविक मृत्यु हो गयी और उन्हें उनके मित्रों तथा रिश्तेदारों द्वारा कब्रिस्तान में ले जाकर विधिवत दफना दिया गया। अन्यथा, यदि मैं अपनी साठवीं या सत्तरवीं सालगिरह मनाने के लिये लम्बे समय तक जीवित भी रहूँ तो भी मैं अपने में पूर्ण रूप से शान्त नहीं हो सकता। क्योंकि यदि मेरी बहिन की सास का कथन सत्य होता, तो मेरा जन्म ही न हुआ होता।

यहाँ मुझे यह उल्लेख अवश्य कर देना चाहिए कि जब मेरा जन्म हुआ उस समय मेरी माँ की आयु काफी हो चुकी थी, क्योंकि मेरी सबसे बड़ी बहिन का विवाह पहले ही हो चुका था, और जब मेरा जन्म हुआ तब उसकी सास जीवित थी, ऐसी सास जिसकी पूर्व धारणाएँ हीरे से भी अधिक कठोर थीं। यह सही है उनकी अनेक धारणाओं में एक इतनी गहरी थी कि मैं उनकी दृष्टि से दूर रहने की यथासम्भव कोशिश करता रहता था। मैं उनके सामने जाने से डरता था, क्योंकि वे मुझे देखते ही कमरे से कोयले का विषाक्त धुआँ बाहर निकालने के लिये सभी दरवाजे व खिड़कियाँ खोल देती थीं।

दूसरा महत्वपूर्ण बिन्दु यह कि मैं इन दोनों महिलाओं की तुलना नहीं करना चाहता अर्थात यह नहीं चाहता कि मैं अपनी बुआ की प्रशंसा करूं और अपनी बहिन की सास की निन्दा करूँ या उसे उपेक्षित रखूँ। इससे कोई उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता। फिर भी सच्चाई यह है कि मेरी बुआ ने मेरे अस्तित्व के प्रति कोई बड़ी चिन्ता नहीं व्यक्त की। अन्यथा अब यह बता सकना कठिन है कि कुछ वर्ष बीतने पर ही मेरी बुआ अपने पाइप की चिलम से मेरे सिर को क्यों ठोकती थीं? क्या वे नहीं जानती थीं कि मेरे कन्धों पर वह मेरा सर था न कि एक टूटी हुई ईंट।

तथापि मेरी बुआ अपना कठोर वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण लेकर मेरी बहिन की सास के साथ उग्र वाद-विवाद में संलग्न रहती थीं। बुआ के मतानुसार मेरी माँ मेरे जन्म के समय रक्त की कमी के कारण अचेत हो गयी थीं बाद में मैंने ज़ानकारी की कि

गग का यह निदान किसी सीमा तक सत्य के निकट था। अधेड़ावस्था में ही विधवा हो जाने के पश्चात बुआ जी हमारे घर में ही रहने लगी थीं। और इसलिये उन्हें हमारे परिवार की पूरी जानकारी थी। उस रात मेरे रोने के कारण वे सो नहीं सकीं। तब हम निश्चय ही कह सकते हैं कि मैं कोयले की गैस का एक झोंका न था।

खोज करने पर मुझे यह ज्ञात हुआ कि जब से मेरी बुआ हमारे साथ रहने लगी थीं तभी से वह मेरे पिता की बहिन के पद पर आसीन होने के कारण मेरी माँ से घर का सारा काम कराना अपना अधिकार समझती थीं--जैसे, चाय बनाना, पानी भरना, मेज साफ करना और फर्श बुहारना। बुआ जी अपने पद के अधिकारों एवं विशेषाधिकारों का उपयोग करना पूर्ण रूप से न्यायसंगत मानती थीं। यह सही है कि इस प्रकार सोचना उनका अधिकार था और इसीलिये उनके विरोध में कोई बात कहना मेरे लिये अत्यन्त कठिन था। आपको यह ध्यान में रखना चाहिए कि उन दिनों जो स्त्री अपने भाई की पत्नी पर स्वामित्व नहीं दिखा सकती थी वह सम्मान पाने की अधिकारिणी नहीं मानी जाती थी।

मेरे जन्म से कुछ सप्ताह पूर्व और और उसके पश्चात जैसा कि आप स्वयं अनुमान कर सकते हैं, मेरी माँ सदा की भाँति मेरी बुआ के सब कार्य कर सकने में असमर्थ थीं और इसलिये इसमें कोई आश्चर्य न होना चाहिए कि मेरी बुआ इस संसार में मेरे तुच्छ आगमन के पूर्व से ही मुझसे अप्रसन्न थीं। तथापि, इस प्रकार की स्वार्थी होने पर भी मुझे उनके प्रति कृतज्ञ होना चाहिये। यदि उस समय उन्होंने बहसें न की होतीं या मेरी बहिन की सास के साथ झगड़ें न किए होते, तो मेरी जन्मतिथि और समय के सम्बन्ध में अत्यन्त गम्भीर भ्रम बना रहता क्योंकि तब इस विषय पर एक से अधिक मत होते। मुझे उस शुभ दिवस और घड़ी के प्रति कितना लगाव है!

और वह कितना शुभ अवसर था जबकि कुछ वर्षों पश्चात मेरी बुआ अपनी पाइप की चिलम से मेरा सर तीन बार ठोंकने के बाद पुनः विचार करने के लिये विवश हुईं कि क्या उन्हें ऐसा करते रहना चाहिए! कारण, उन्हें यह मानना पड़ा कि मेरा जन्म वर्ष के बारहवें मास के तेईसवें दिन सायंकाल लगभग सात बजे हुआ था, और यह वही समय था जबकि पूरे पेइचिङ नगरवासी, सम्राट और उसके तमाम सैनिक-असैनिक कर्मचारी, "अग्निदेवता" को, जिसका उस समय स्वर्गारोहण हो रहा था, भेंट चढ़ाने में संलग्न थे।

उन दिनों पेइचिङ में अमावस की रातें अत्यन्त काली और भयावह होती थीं। मुख्य मार्गों पर अभी बिजली का प्रकाश नहीं आया था और वहाँ की तंग गलियों(हूथुङ) में प्रकाश की एक किरण भी न पहुँच पाती थीं जो भी व्यक्ति रात को लालटेन-बत्ती के बिना निकलता, वह इतना भयभीत हो जाता था कि वह मार्ग

ही भूल जाता और घर वापस आने के लिये राह न पा सकता। कभी-कभी लोग पूरी रात वहीं चक्कर काटते रहते थे। इस प्रकार की स्थिति को उन दिनों "भूत निर्मित भूल भुलैयों" का वैज्ञानिक नाम दिया गया था।

फिर भी जिस रात मेरा जन्म हुआ, यह पूर्ण रूप से निश्चित था कि एक भी पेइचिङ निवासी उन भूल भुलैयों में भटक नहीं रहा था। निश्चय ही नगर के किसी एक या दूसरे कोने में कुछ लोग या तो भूख से या ठण्ड से मर रहे थे अथवा उनकी हत्या हो रही थी। किन्तु इन घटनाओं का भूतों से कोई सम्बन्ध न था, क्योंकि उस रात हठी से हठी भूत भी विश्राम के लिये अपने घर ही बने रहे। बाहर जाने का साहस बटोरने में वे इतने भयभीत थे कि रात्रि के समय पैदल चलने वाले यात्रियों के लिये कोई भूल-भुलैया न तो निर्मित कर सकते थे और न भूल भुलैयों के अन्दर जाने और बाहर निकलने का आनन्द उठा सकते थे।

उन दिनों नगर की सड़कों पर खरबूजे के आकार की मिश्रियाँ और "क्वानतुङ"* की माल्टोज टाफियाँ बेचने वालों की भीड़ लगी रहती थी। सूर्यास्त के समय वे लालटेनें जलाते थे, जिनसे उनके छोटे-छोटे स्टालों और ठेलों पर प्रकाश की तेज किरणें पड़ती थीं। जैसे-जैसे शाम होती थी, फेरी लगाकर सामान बेचने वालों की आवाज अधिक तेज गूँजने वाली तथा अधीरतापूर्ण हो जाती थी, क्योंकि वे जानते थे कि लगभग आठ बजे के बाद जब अग्निदेवता को भेंट चढ़ाने का समय समाप्ति पर होगा तो उनकी वस्तुओं को कोई खरीदना नहीं चाहेगा। इन्हीं मिश्री बेचने वालों की तेज चिल्लाहटों के कारण कायर भूतों की बात क्या कही जाये अत्यन्त साहसी भूत भी बाहर घूमने के अनिच्छुक रहते थे, जिसका तात्पर्य यह है कि कुछ भूत बहुत साहसी नहीं होते।

शाम को पाँच या छः बजे तक इधर-उधर पटाखों के फूटने की आवाजें सुनाई पड़ने लगतीं और सात बजे तक (मेरे जन्म का समय) जबकि लोग दुकानों और घरों में अपने तमाम पटाखे छोड़ने लगते थे तब न केवल भूत ही अपितु पेइचिङ के तमाम कुत्ते, चाहे वे काले हों या पीले, छोटे हों या बड़े, भय से काँपते हुए जहाँ वे खड़े थे वहीं अन्दर छिपने के लिये भाग जाते थे। आसमान में उड़कर फटने वाले राकेटों की चमक रात्रि के समय दूरवर्ती वृक्षों की शाखाओं को रह-रहकर प्रकाशित कर देती थी।

प्रत्येक घर के आँगन में यह दृश्य घटित होता था : अग्निदेवता का कागज का बना चित्र आँगन के बीच में रखा जाता था और लम्बी-लम्बी धूपबत्तियाँ तथा सरपत के वृक्षों की शाखाएँ जलायी जाती थी। जिस समय अग्निदेवता क्वानतुङ टाफियाँ चूसने में व्यस्त रहता, उसके चित्र में आग लगा दी जाती थी और तब वह राख के

---

* शानहाएक्वान दर्रे के पूर्व में अर्थात उत्तर-पूर्वी चीन का एक स्थान।

रूप में परिणत होकर "स्वर्ग के महल"* की ओर आरोहण करता था।

इस पृथ्वी पर मेरा आगमन ठीक उस समय हुआ था, जिस समय अग्निदेवता स्वर्ग की ओर अग्रसर हो रहा था। मेरी बुआ के मन में इस घटना से एक पवित्र भावना उत्पन्न हुई। "इस शिशु का भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल जान पड़ता है। कदाचित अग्निदेवता के बाद ही स्थान ग्रहण करने वाला यह छोटा बालसेवक** अपनी मिश्री खाने में इतना व्यस्त था कि वह समय पर स्वर्ग नहीं पहुँच सका। अतः अब वह यहाँ हमारे साथ रहने जा रहा है।" इसी से यह स्पष्ट होता है कि मेरी बुआ के मन में मेरे प्रति घृणा के साथ-साथ सम्मान की क्षीण भावना क्यों पैदा हो गयी थी।

मैं आज तक यह निश्चय नहीं कर सका कि अग्निदेवता मेरी बुआ के प्रति किस प्रकार की भावना रखता था। किन्तु मैं यह भली-भाँति जानता हूँ कि वह उसके प्रति कोई विशेष भक्ति-भाव नहीं रखती थीं। वह अपने कमरे में उसकी पूजा का कोई ऊँचा स्थान (बेदी) नहीं बनाए थीं। जब मेरी माँ उसकी मूर्ति के सामने तीन धूपबत्तियाँ जला देती और धन के देवता हमारे घर में स्थापित हो जाते, केवल तभी मेरी बुआ आगे आकर लगातार कुछ बुदबुदाती हुई अनमनेपन से सिर झुकाती थीं। यदि मैं उपस्थित होता तो वे मेरी ओर घृणास्पद दृष्टि डालतीं, क्योंकि वे मुझे "अग्निदेवता" के बालसेवक का अवतार समझती थीं जिसे उन पर नजर रखने के लिये भेजा गया था।

वर्णन के इस बिन्दु पर मुझे अपनी बहिन की सास का, देवताओं तथा बुद्ध के प्रति दृष्टिकोण भी बता देना चाहिए। वे अपने जीवन में ठाट-बाट का दिखावा बहुत करती थीं। पीले कपड़े से ढँकी पूजा की एक ऊँची मेज उनके कमरे के बीच में रखी राहती थी। इस मेज पर लगभग छत की ऊँचाई के बराबर लम्बा एक अत्यन्त सुन्दर तराशा हुआ बुद्ध-मन्दिर रखा था। अपने लाल मुख और लम्बी दाढ़ी वाले युद्ध के देवता "क्वान" उस मन्दिर के आले पर विराजमान थे। वसन्तोत्सव के प्रारम्भ में वे वृद्ध महिला अर्थात मेरी बहिन की सास "क्वान" देवता के सामने छोटे छोटे पगोडाओं की भाँति मिश्री से भरे पाँच कटोरे, चन्द्राकार केक के पाँच कटोरे और तमाम ताजे फल तथा सूखे मेवे सजाकर रख देती थीं।

"क्वान" देवता की बगल में धन के देवता, अग्निदेवता तथा अमर "चाङ" देवता

---

* इस यात्रा का उद्देश्य अग्निदेवता (चाओ वाङ) द्वारा स्वर्ग के सम्राट को उस परिवार के सदस्यों के पिछले वर्ष के आचरण के सम्बन्ध में रिपोर्ट देना था। यह विश्वास किया जाता था कि चिपचिपी मिश्री जो देवता के मुँह पर फैला दी जाती थी, वह या तो उस रिपोर्ट को मधुर बना देगी या उसके होंठों को बन्द कर देगी जिससे वह अपना मुँह बिल्कुल न खोल सके।

** एक बालसेवक प्रायः भोजनालय में लगाये गये लकड़ी के ठप्पों से बने चित्रों पर चूल्हे के बिल्कुल बगल में आया करता था।

के मन्दिर (जो स्वर्ग के कुत्तों को भगाते हैं और बेटों तथा पोतों को इस लोक में पहुँचाते हैं) ऐसे स्थापित थे जैसे कि "क्वान" देवता ही उस घर के संरक्षक हों, अग्निदेवता नहीं।

यह वृद्ध महिला इतनी धृष्ट थीं कि जब वे अपने पति और पुत्र को फटकारतीं तब वे तनिक भी पश्चाताप की भावना के बिना अपनी गालियों से देवताओं ओर बुद्ध को भी नहीं छोड़ती थीं। "बेइमानो... तुम मेरी कोई चिन्ता किए बिना मेरी ही मिश्री और सेव खा जाते हो? तुमने अपने को क्या समझ रखा है?"

कोई भी व्यक्ति इस बात की मन ही मन सराहना किए बिना नहीं रह सकता था कि मेरी बुआ में उस वृद्ध महिला का विरोध करने और उनसे बराबरी का वाग्युद्ध करने का साहस था जो देवताओं तथा बुद्ध की भी निन्दा करने से भयभीत नहीं होती थीं। इसीलिये अपनी बुआ के प्रति मेरे मन में कोई वास्तविक स्नेह न होते हुए भी जब कभी मेरी बहिन की सास के साथ उनका झगड़ा होता, तब मैं भी सदा उन्हीं का पक्ष लेता था।

अपनी ओर से वस्तुगत विश्लेषण करने के बाद भी मैं अपनी बहिन की सास में कोई सराहनीय गुण नहीं खोज सका। आज भी जब कभी मैं उन लोगों के विषय में सुनता हूँ जो अपना प्रभाव रखते हैं, तो मुझे अपनी बहिन की सास का ही स्मरण हो आता है। सर्वप्रथम मैं उनेक युगल नेत्रों का स्मरण करता हूँ; अत्यन्त विवेकहीन युगल नेत्र! जब वे आपकी ओर देखते थे, चाहे वे नेत्र आपके अभिवादन की अभिव्यक्ति के लिये हों अथवा वाग्युद्ध में प्रहार के अभिप्राय से, वे सदा घूरते ही रहते थे। वे अपने चमकते नेत्रों से सम्भवतया किसी विशेष प्रकार के भाव को इंगित करने का प्रयास कर रही होतीं, किन्तु दर्शक को वे भावशून्य तथा घबराई जैसी जान पड़ती थीं। सदा उदासीन से लटके उनके मांसल गाल, जहरीली गैस से भरी दो थैलियों के समान प्रतीत होते थे। जब वे खाँसती या बोलती थीं तब उनका गला और कण्ठनली स्वयं में पूर्ण रूप से जन सम्बोधन का एक साधन बन जाती थी। वे कल्पना करती थीं कि कोई भी उच्च स्वर, जो एक बड़े घण्टे की ध्वनि के समान उच्च हो, एक महान सत्ता का द्योतक था। मेरी बहिन की सास सांसारिकता से बहुत कम परिचित थीं और उससे भी कम अपनी जीवनचर्या से अवगत थीं। तो भी यह जानते हुए कि किस प्रकार लोगों को तिरछी निगाह से देखा जाये और किस प्रकार जोर से चिल्लाया जाये उनके मन में यह भावना आयी कि वे सर्वज्ञानी हैं।

यद्यपि मैं अपनी बुआ के पाइप की चिलम को कभी नहीं भूलूँगा (विशेष रूप से जबकि वह सुगन्धित जलती हुई तम्बाकू से भरी होती थी) तो भी सामान्य रूप में यदि कहा जाये तो मेरी बहिन की सास की तुलना में उनमें परिहास की भावना अधिक थी। ऊपर से मेरी बुआ में कृत्रिम शिष्टता का आभास मिलता था, कम से

कम उनके कपोल जहरीली गैस से भरी थैलियों के समान कदापि न थे। अपनी गम्भीर एवं शान्त मनोदशाओं में उनके नेत्र ओजपूर्ण प्रतीत होते थे। उनके दीदे और पुतलियाँ स्पष्ट रूप से विभक्त थीं। दुर्भाग्यवश अकारण या चेतावनी के बिना ही उनसे भयंकर तूफान जैसा निकलता जान पड़ता था। ऐसे क्षणों में उनके सजीव नेत्र भूतों से ग्रस्त हो जाते थे और उनसे ठण्डी तथा भेदनेवाली कष्टदायक किरणें फूटती थीं। किन्तु यहाँ अब हमें उनके नेत्रों की ओर से ध्यान हटा लेना चाहिए।

उन्हें ताश खेलने से प्रेम था। जब कभी वे दो-तीन सिक्के नकद जीत जातीं तो धीमे स्वर में पेइचिङ आपेरा की तान में गुनगुनाने लगती थीं। कहा जाता था कि उनके पति अर्थात मेरे फूफा एक आपेरा गायक थे, सुधार आन्दोलन के समय... एइया, मुझसे कुछ महत्वपूर्ण तथ्य छूट गया है।

आपको याद होगा कि मैं अपने जन्म का दिन और महीना पहले ही बता चुका हूँ, किन्तु मैंने वर्ष का उल्लेख नहीं किया। मैं 1898 के सुधार आन्दोलन के प्रसिद्ध वर्ष में पैदा हुआ था।

यह बात विचित्र सी लगती है कि उन दिनों जब प्रत्येक व्यक्ति सुधारों और आधुनिकीकरण की बातें करता था तब यदि कोई भी "वस्त्रों", "अभिनेताओं", "वेतन" या नाटक सम्बन्धी इधर-उधर की चर्चा छेड़ देता, तो मेरी बुआ उस समय तुरन्त उस वार्तालाप को दूसरे विषयों की ओर घुमा देती थीं। किन्तु त्योहारों या उत्सवों के अवसर इसके अपवाद थे जब वे गुलाब के स्वाद वाली मदिरा पीकर कहा करती थीं, "एक आपेरा गायक होना कोई लज्जा की बात नहीं है।" तथापि उनको किसी ने भी यह चर्चा करते हुए नहीं सुना था कि मेरे फूफा का रंगमंचीय नाम क्या था अथवा वे युवा नायक का अभिनय करते थे या वृद्ध महिला का। खोज का दूसरा प्रश्न यह भी था कि मेरे फूफा मानचू बैनरमैन* थे अथवा नहीं। यदि वे थे तो सम्भवतया पेइचिङ आपेरा के उन कलाप्रेमी अवैतनिक गायक कलाकारों में थे जो ख्याति-प्राप्त करने के लिये पैसा उड़ाते थे। किन्तु चूँकि आपेरा गायन लोकाचार के अनुरूप एक मनोरंजन था तब मेरी बुआ इसे मान लेने में क्यों आनाकानी करती थीं? कदाचित इस कारण से कि वे वास्तव में एक प्रोफेशनल अभिनेता थे। इससे भी कोई बात नहीं बनती। सुधार आन्दोलनों और राज-विप्लवों के उन दिनों में कोई भी वास्तविक मानचू बैनरमैन जो आपेरा गायक बनकर अपना जीवन-यापन करना चाहता था वह बैनरमैन की पंजिका से अपना नाम पृथक किए जाने का संकट मोल लेता था। तब क्या मेरे फूफा हान चीनी थे? यह भी असत्य है, क्योंकि यदि ऐसा

* बैनर मूलतः मानचू जाति का एक फौजी यूनिट था, जिसकी पहचान उसके ध्वज के विशिष्ट रंग से होती थी। बाद में बैनर एक प्रशासनिक व सामाजिक इकाई भी बन गया। मानचू जाति के व्यक्ति को बैनरमैन अथवा ध्वजवाहक कहा जाता है।

होता, तो यह कैसे सम्भव था कि उनकी मृत्यु के बाद मेरी बुआ प्रतिमाह बैनरमैन के नाम पर धन तथा अनाज के रूप में अनेक भत्ते प्राप्त करती थीं?

मैं अपने अतीत के इस भाग को आज तक नहीं समझ पाया। यह प्रश्न अप्रासंगिक है कि मेरे फूफा आपेरा गायक थे अथवा नहीं। जो तथ्य मेरी समझ के बाहर है वह यह है कि मेरी विधवा बुआ जो स्वभावतः अपने पाइप की चिलम से मेरे सर को ठोकती थीं वे किस रूप में इन भत्तों की अधिकारिणी थीं। मेरे पिता सचमुच एक मानचू सैनिक थे, जिनका पावन कर्तव्य था सम्राट के महल की पहरेदारी करना। उन्हें तीन औंस चाँदी माहवारी वेतन के रूप में मिलती थी जिसमें बहुधा अनेक नकली टुकड़े आ जाते थे। तब मेरे फूफा ने, जो पेइचिङ आपेरा में युवा पुरुषों या वृद्ध महिलाओं के अभिनय किया करते थे और जो सम्भवतः हान चीनी हो सकते थे, उन्होंने किस प्रकार ऐसे महान सैनिक सम्मान प्राप्त किए कि जिनके द्वारा वे अपनी पत्नी को विभिन्न प्रकार के भत्ते वसीयत के रूप में दिला सकने में समर्थ हो सकें। ऐसा जान पड़ता है कि इसमें कहीं कोई भूल है।

यह सम्राट की भूल थी या किसी अन्य की, किन्तु वास्तविकता यही है कि मेरी बुआ एक आराम का जीवन व्यतीत करती थीं। उनकी आमदनी पर्याप्त थी और खर्च कम। चूँकि वे हमारे साथ रहती थीं, जिसका उन्हें कोई किराया नहीं देना पड़ता था और साथ ही एक स्वैच्छिक नौकरानी के रूप में मेरी माँ उनके सभी कार्य किया करती थीं, इसलिये वे हमारे छोटे से "हूथुङ" की करोड़पति थीं। सम्भवतः यही कारण था कि उन्हें मेरी बहिन की सास के साथ निडर होकर कलह करने का साहस मिल जाता था।

जब कभी मेरी बहिन की सास कुछ बोलने के लिये मुँह खोलती थीं तब वे यह कहना कभी नहीं भूल पाती कि "मेरे पिता एक वाइकाउण्ट* थे, मेरे पति सम्राट की सेना में कप्तान हैं और मेरा बेटा अश्वरोही सेना में एक अधिकारी है।" यह सब कुछ सही था, यद्यपि उनकी अलमारी के खानों में या सन्दूकों में ऐसी कोई बड़ी महत्वपूर्ण वस्तु शेष नहीं रह गयी थी जिसको दिखाकर वे इस बात को प्रमाणित कर सकतीं। उनका मांसल चेहरा इस बात का प्रमाण था कि वे खाना बहुत पसन्द करती थीं। इसका अभिप्राय यह नहीं कि वे अच्छा भोजन केवल तभी करती थीं जब उनके पास खर्च करने के लिये धन होता था। इसमें तनिक भी सच्चाई नहीं। सच तो यह है कि जब उनके पास पैसा नहीं होता था तब वे वाइकाउण्ट की बेटी और कप्तान की पत्नी के नाते चीजें उधार खरीद लेती थीं। उधार खरीदने में न केवल उन्हें बहुत आनन्द मिलता था बल्कि वे ऐसे मित्रों और रिश्तेदारों को हीन दृष्टि से देखती थीं जिनमें ऐसा कर सकने का साहस नहीं था या जो इसमें प्रसन्नता का अनुभव नहीं

* उपसामन्त।

करते थे। यद्यपि वे ऐसा कभी कहती नहीं थीं। किन्तु सोचती अवश्य थीं कि "एक मानचू बैनरमैन होने से क्या लाभ यदि आप उधार भी नहीं खरीद सकते?"

यद्यपि मैं यह उल्लेख कर चुका हूँ कि उन्हें भोजन से बड़ा प्रेम था, किन्तु मैंने यह नहीं कहा कि वे कोई विशिष्ट भोजन करती थीं। वे केवल मुर्गा, बत्तख, मछली और सुअर का मांस पसन्द करती थीं और इसके अतिरिक्त वे कोई अन्य शिकार का मांस अथवा समुद्र से प्राप्त भोजन या कोई अन्य व्यंजन नहीं पसन्द करती थीं। इसका एकमात्र अपवाद यह था कि प्रत्येक शीत ऋतु में वे दो मरकती हरे खीरे खरीदती थीं जो फङ्थाए के शीशे के घरों में पैदा होते थे और जिनमें कुछ पीले-पीले फूल राजमुकुट की भाँति चिपके रहते थे। उन्हें वे "क्वान" देवता की मूर्ति के सामने रख देती थीं।

मई माह में मिङ मकबरों के पास सबसे पहले बड़ी-बड़ी चेरियाँ पक जाती थीं उनमें से वे कुछ खरीद लेती थीं। इन्हें वे अपनी पूजा की ऊँची मेज पर केवल अपनी रुचि और उत्तम विधि तथा कार्यशैली को प्रदर्शित करने के लिये रख देती थीं। किन्तु जब वे वस्तुतः भूखी होती थीं तो चेरी के स्थान पर पहाड़ी सेम खरीद लेती थीं और पूरी मुट्ठी भरकर एक साथ अपने मुँह में रख लेती थीं। पहाड़ी सेम सस्ती होने के साथ ही तुष्टिप्रद होती थी। प्रत्येक दशा में वे निरन्तर ऋणग्रस्त रहती थीं; उन्हें इसकी तनिक भी चिन्ता नहीं थी चाहे उन पर कितने ही बड़े दायित्व रहे हों।

जब कभी ऋण देने वालों से उनका सामना होता, तब उनके नेत्र असाधारण रूप से विशाल और गोलाकार हो जाते थे और उनका स्वर विशेष रूप से ऊँचा हो जाता था। वे उत्तेजित होकर उत्कटतापूर्वक उनसे कहतीं : "सुनो! पेरे पिता वाइकाउण्ट थे, मेरे पति कप्तान, मेरे परिवार के दोनों पक्षों की गारण्टीशुदा आय है। निश्चित समय पर मुझे मेरी चाँदी और अनाज भत्ते के रूप में प्राप्त हो जायेंगे, मैं आपको कुछ दिन विलम्ब से तो भुगतान कर सकती हूँ किन्तु एक भी पैसा कम नहीं। फिर आप इतना व्यग्र क्यों हो रहे हैं?"

मेरी बहिन की सास के इस प्रकार के गर्वोक्तिपूर्ण तथा प्रभावशाली वक्तव्य उनके ऋणदाताओं को मानचू सेना के उस सामरिक गौरव का स्मरण कराने में कभी असफल नहीं होते थे जो उसने दो सौ वर्ष पहले शानहाएक्वाद दर्रे पर आक्रमण करते समय प्रदर्शित किया था। ये वक्तव्य उन ऋणदाताओं को चालीस ली पीछे हटाने के लिये पर्याप्त होते थे। जब उनके शब्द पूर्व अनुमान के अनुसार प्रभाव न डाल पाते थे तब वे अपने नेत्र फैलाकर एक या दो बार हँसती थीं और उन्हें घूरकर देखते हुए प्रभावित करती थीं और यदि आपसे सत्य कहा जाये तो उनकी हँसी चिल्लाने-रोने से कम नहीं लगती थी। कठोरता और विनम्रता का यह मिश्रण लोगों को इस ऊहापोह में डाल देता था कि वे हँसें अथवा रोयें।

जब कभी वे अच्छे वस्त्र पहनती थीं तो उससे हमें कम दुख नहीं होता था। तथापि, अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा और जीवन शैली के कारण, जिसकी वे अभ्यस्त थीं, उपयुक्त फैशन के कपड़े पहनना उनकी एक आवश्यकता थी। जब पारभासक रेशम का चलन था तब वे साधारण रेशम का वस्त्र पहनना पूर्णतया अस्वीकार कर देती थीं। जब बालों में किंगफिशर जेड की चिमटियाँ लगाने का फैशन था तब वे सोने की चिमटियाँ लगाए दिखाई पड़ना पसन्द नहीं करती थीं। उनके दर्जनों अस्तरदार, बिना अस्तरदार, रूईदार, फरदार, रेशमी परिधान और प्रत्येक ऋतु के अनुसार अन्य प्रसाधन बारी-बारी से गिरवी रखे और छुड़ाए जाते थे जिस प्रक्रिया को गिरवीदार बहुत पसन्द करते थे।

कुछ लोगों के मतानुसार, जिन्होंने यमराज (जो स्वयं अपराध-जगत का देवता माना जाता था) की सजी-सँवरी बूढ़ी पत्नी को देखा था, उसका समूचा प्रभाव मेरी बहिन की सास के तमाम प्रयासों की अपेक्षा बहुत ही कम अन्तर रखता था। यही कारण है कि मैं यह अनुमान कभी नहीं लगा सका कि उनके पति किस प्रकार अपने को अत्यन्त प्रसन्न रख पाते थे। जब मैं बच्चा था तब मैं उन्हें बहुत ही आश्चर्यजनक व्यक्ति मानता था, क्योंकि हर समय प्रसन्नचित्त रहने के अतिरिक्त वे इतने प्रिय भी थे। उनकी एकमात्र त्रुटि यह थी कि वे धन खर्च करने में आनन्द लेते थे। उनके सम्बन्ध में जो सबसे पहली बात मुझे याद आती है वह है उनका खाँसना, जो इतना स्पष्ट और मधुर प्रतिध्वनि उत्पन्न करता था कि उनके खाँसने से आप यह अनुमान लगा सकते थे कि वे कम से कम एक चतुर्थ श्रेणी के अधिकारी जरूर हैं। उनके कपड़े स्वच्छ होते थे जिनमें कपूर की गोलियों की गन्ध आती थी। कुछ लोग कहा करते थे कि ऐसा इसलिये था क्योंकि उन्होंने अभी-अभी उन कपड़ों को गिरवी की दुकान से उठाया है किन्तु मैं इस कथन की सच्चाई के सम्बन्ध में कोई प्रमाण नहीं जुटा सकता। पूरे वर्ष वह चिड़ियों के चार पिंजड़े अपने आस-पास रखते थे, जिनमें दो लाल कण्ठी वाले और दो नील कण्ठी पक्षी होते थे। वे लालकण्ठ और नीलकण्ठ पक्षियों के अतिरिक्त अन्य कोई पक्षी नहीं पालते थे। क्योंकि यह नस्ल, जिसे सभ्य और गँवारू समाज दोनों ही समान रूप से पसन्द करते थे, शाही सेना के कप्तान के पद के पूर्णतया अनुकूल थी। एक बार उन्होंने अपने आधे वर्ष का वेतन एक हिमश्वेत गौरैया को खरीदने पर खर्च कर दिया था। दुर्भाग्यवश जैसे ही पेइचिङ के बड़े-बड़े चाय गृहों में इस गौरैया की कीर्ति फैलने लगी, किसी रहस्यमय बीमारी के कारण उसकी मृत्यु हो गयी। इसके बाद किसी श्वेत रंग का कौआ भी उन्हें प्रभावित नहीं करता था।

जाड़े के दिनों में उनका आना मुझे अत्यन्त आनन्ददायक लगता था। उस समय उनके पास सदा कम से कम तीन तूंबीनुमा पिंजड़े होते थे, जिनमें से प्रत्येक इतना

सुन्दर होता था कि उसे किसी कलावस्तु की दुकान में रखा जा सकता था। मुझे इस प्रकार के पिंजड़ों के प्रति बहुत कम लगाव था। सबसे अधिक उत्साहवर्धक जो मुझे लगता था वह था उन पिंजड़ों के अन्दर बन्द तीन अत्यन्त हरे चमकते टिड्डे। और जिस कोमलता से वे बार-बार चीं-चीं करते थे, उसे सुनकर ऐसा लगता था कि जैसे पेइचिङ में यकायक ग्रीष्म ऋतु का चुपचाप पदार्पण हुआ हो।

अपनी बालबुद्धि से मैंने यह अनुमान लगाया कि मेरी बहिन के श्वसुर एकमात्र मेरे साथ खेलने के उद्दश्य से आते थे न कि मेरे माता-पिता से मिलने। जब कभी वे चिड़ियाँ पालने और टिड्डों तथा झींगुरों की बात शुरू करते, तो समय की गति भूल जाते थे और तब मेरी माता को उन्हें रात्रि के भोजन के लिये आमंत्रित करना आवश्यक हो जाता था, भले ही इसके कारण उन्हें सदा असुविधा होती थी।

वास्तव में वे भी वैसे ही भोले और सरल थे जैसा कि मैं। एक बार जब मेरी माँ ने उनसे रात्रि के भोजन के लिये ठहरने के सम्बन्ध में कुछ कहा, तो उन्हें खाँसी का दौरा पड़ गया जो मधुर और लयपूर्ण था और जिसका अन्त एक लम्बी हँसी में हुआ। वे बोले : "प्रिय श्रीमती जी, आपसे यदि सच कहूँ, तो अब मुझे भी कुछ भूख जान पड़ रही हैं। किन्तु, कृपया मेरे लिये कष्ट न उठाइए। शायद आप मेरे लिये 'थ्येनथाएश्वेन' रेस्तराँ से भुने गोश्त के कुछ टुकड़े, सुअर का कीमा और काली मिर्च तथा धनिया युक्त गर्म-चटपटा शोरबा मँगा सकती हैं। इतना ही मेरे लिये पर्याप्त होगा।"

और यह अवश्य ही अच्छा था! क्योंकि उसके दूसरे या तीसरे दिन तक मेरी माँ की आँखें सामान्य स्थिति से कई गुना नम बनी रहतीं। उन्हें रात्रि भोजन के लिये आमंत्रित न करना मेरी सबसे बड़ी बहिन (उसकी बहू) के लिये कष्टप्रद होता जबकि उन्हें आमंत्रित करने का अर्थ होता, धन का व्यय। यदि आधुनिक भाषा में कहा जाये तो उन दिनों सम्बन्धियों का आतिथ्य सत्कार करना वास्तव में कष्टकारक था।

यद्यपि मेरी बहिन के श्वसुर चतुर्थ श्रेणी के सैनिक अधिकारी थे, किन्तु वे सैनिकों का नेतृत्व करने या युद्ध करने के विषय में बहुत कम बात करते थे। जब कभी मैंने उनसे पूछा कि क्या वे घुड़सवारी कर सकते हैं या तीर कमान से निशाना लगा सकते हैं, तब-तब उनका उत्तर खाँसी के दौरे से शुरू होता और उसके पश्चात वे बातचीत को चिड़ियाँ पालने-उड़ाने की कला की ओर मोड़ देते थे। वास्तव में इस विषय पर उनकी बातें सुनने योग्य थीं, जिस पर वे एक पुस्तक की रचना भी कर सकते थे।

वे घण्टों मुझे बताया करते कि नीले और लाल कण्ठ वाले पक्षियों को किस प्रकार पाला-उड़ाया जाता है, उन्हें हवा खिलाने बाहर ले जाया जाता है और कैसे गाना

सिखाया जाता है, उनके पर गिरने के समय उन्हें किस मात्रा में भोजन दिया जाता है और साथ ही यह भी समझाते थे कि उन्होंने अपने चारों पिंजड़े किस प्रकार बनाए थे। पिंजड़ों के अतिरिक्त वे बड़े विस्तार से अन्दर रखे उनके खाने और पीने के पोर्सलीन के बर्तनों और चिड़ियों कि गन्दगी को साफ करने के लिये छोटे-छोटे बाँस के चम्मचों के सम्बन्ध में भी बताते थे। कौन इंकार कर सकता था कि वे सभी कला की वस्तुएँ थीं!

सचमुच जान पड़ता है कि वे भूल गए थे कि वे एक सैन्य अधिकारी हैं, क्योंकि वे अपने जीवन की सरी शक्ति छोटे-छोटे खिलाने के बर्तनों और चमचों को प्रभावशाली बनाने में लगा देते थे; साथ ही उनकी खाँसी और हँसी अपने विशिष्ट कलात्मक प्रभाव के द्वारा उन्हें इच्छानुसार और अधिक उन्मत्त करने के लिये उनको आनन्द के साथ कुछ शक्ति भी प्रदान करती थी।

वे आपेरा गायन भी कर सकते थे। कुलीन मानचू परिवारों के कुछ युवक दाढ़ी वाले वृद्ध पुरुष का गाते हुए अभिनय करना पसन्द करते थे, कुछ बेली* फौजी अभिनय कर सकते थे और कुछ ऐसे भी मानचू अधिकारी थे जो अपना अभिनय गैरव्यावसायिक नाटक मण्डलियों में आरम्भ करने के बाद पेइचिङ आपेरा के पेशेवर सितारे बन गए। चाहे दर्शकों के बीच बैठना हो या मेकअप करना हो और रंगमंच पर जाना हो, आपेरा में भाग लेना और अनेक संगीत के मनोरंजन के साधन, जो उन दिनों बहुत लोकप्रिय थे, मानचू जीवन के अभिन्न अंग थे। मानचू लोगों ने बहुत से मौलिक मध्यवर्ती प्रदर्शनों (आपेरा के अंकों के मध्य के मनोरंजक नाटकीय कार्यक्रम), तालयुक्त कथात्मक गीतों और ढोलगीतों की रचना कर संगीत भण्डार को अति समृद्ध किया था।

स्वाभाविक है कि मेरी बहिन के श्वसुर इन सबसे अपने को अलग नहीं रखना चाहते थे, किन्तु उनके पास अपनी खुद की नाटक संस्था बनाने के लिये धन नहीं था। ऐसी संस्था चलाने के लिये दिन-रात अपने को किसी मित्र या सम्बन्धी की सन्तानोत्पति के प्रथम माह के उत्सव या किसी बूढ़ी महिला का जन्म दिन मनाने में लगाना पड़ता और साथ ही आने-जाने तथा चाय नाश्ते पर भी खर्च पड़ता। इसका अभिप्राय था पैसा कमाने के लिये मुक्त हस्त से धन का व्यय करना, यद्यपि इससे आस पड़ोस तथा पेइचिङ के प्रत्येक क्षेत्र में कीर्ति भी फैलती थी।

मेरी बहिन के श्वसुर केवल एक ही संस्था के सदस्य बन सके, जो दूसरों ने बनाई थी और जिसमें वे समय-समय पर अपने मनोरंजन के लिये भाग लिया करते थे। वे कुछ चटपटी कहानियाँ सुनाना जानते थे। उनका ढंग कोई बहुत विकसित नहीं था, किन्तु अपने आकर्षक व्यक्तित्व के कारण उनके मित्र और रिश्तेदार सदा ही

* "बेली" मानचू भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है सामन्त।

उनके प्रदर्शन की हार्दिक प्रशंसा करते थे। उनका सबसे बड़ा घातक दोष एक प्रदर्शन के समय स्पष्ट हुआ जब उनकी दृष्टि सुन्दर वस्त्राभूषणों से सुसज्जित दर्शकों में बैठी अपनी पत्नी पर पड़ी, जिसे देखकर उन्हें यमराज की पत्नी का स्मरण हुआ और वे अपनी पँक्तियाँ भूल गए।

ऐसी प्रतिष्ठा की क्षति के पश्चात वे यह प्रयास करते थे कि घर में अपना मानसिक सन्तुलन न खोयें, क्योंकि घरेलू झगड़े में चिल्लाने के कारण उनका गला बैठ जाने की सम्भावना थी जो उनके गायन के स्वर को नष्ट कर देता। लेकिन उनकी पत्नी पहले ही हमला करतीं और कहतीं कि घर की सारी परेशानियाँ और बढ़ते जाते कर्जों का एकमात्र कारण है उनका नाटकों के प्रति अति लगाव और अपने घर के कार्यों के प्रति उपेक्षा। वह कुछ बोलते नहीं थे, बल्कि जैसे ही उनकी पत्नी थककर थोड़ा साँस लेने लगतीं, वे तीन तारों वाले गिटार पर "डेन्ग गेरली डेन्ग डेन्ग" की धुन गुनगुनाने लगते।

उनका कला प्रेम में मगन रहना उनके आत्मसन्तोष का साधन था, इसीलिये वे प्रसन्न रहते थे, यद्यपि उनकी पत्नी के कथनानुसार "यह उनकी पूरी निर्लज्जता" थी। आज तक मैं यह निश्चय नही कर सका कि उन दोनों में सही कौन था। किन्तु अब हमें अपनी मूल कथा पर आ जाना चाहिए। मैं अपने जन्म दिन के सम्बन्ध में और अधिक वर्णन करूँगा।

मेरे जन्म के समय मेरे पिता सम्राट के महल के किसी भाग की पहरेदारी करते थे। एक पुरानी परम्परा थी कि "पुरुष चाँद की पूजा नहीं करेंगे और स्त्रियाँ अग्निदेवता को भेंट नहीं चढ़ायेंगी"। मेरी बुआ विधवा थीं और मेरी माँ तथा दूसरी बहिन भी स्त्रियाँ थीं। मैं यद्यपि पुरुष था तो भी कोई बड़ा दायित्व वहन करने के अयोग्य था। इसका अर्थ यह हुआ कि मेरे घर में अग्निदेवता को भेंट चढ़ाने वाले पावन उत्सव के समय अधिष्ठाता के रूप में बैठने वाला कोई नहीं था।

मेरी बुआ का चिड़चिड़ापन अनेक प्रकार से व्यक्त होता था। तीन दिन पहले से ही उन्होंने मानचू हान बेकरी से कुछ असली क्वानतुङ टाफियाँ खरीद रखी थीं, जो छोटे-छोटे टुकड़ों में पत्थर के समान सख्त थीं। एक बार आपने अपने मुँह में ये कैण्डी रखी नहीं कि या तो आपने अपना दाँत तोड़ लिया या फिर उनकी चिपकनेपन ने दाँतों का बाहर ही निकाल लिया। यह सड़क के स्टालों पर बिकने वाला घटिया माल नहीं था जो इतना मुलायम हो कि थोड़ी-सी गर्मी उसे पिघला सके। उन्होंने कुछ शीरे और तिल की बनी दक्षिणी प्रान्तीय मिठाइयों की एक कैटी खरीद रखी थी। इन सबको उन्होंने चीनी की प्यालियों से ढँककर एक शीतल छाँहदार स्थान पर अग्निदेवता तथा अन्य सभी से दूर छिपा कर रख दिया था। उन्होंने सोच रखा था कि जब सारा परिवार अग्निदेवता की पूजा कर चुकेगा और अपनी आत्माओं को

शान्त कर लेगा, तब वे अकेले ही आराम से अपनी रजाई के अन्दर उनको खाने का आनन्द लेंगी। यदि उस खाने की क्रिया में उनका आधा दाँत टूट भी गया तो उसे कोई जान न सकेगा। यह योजना उन्हें तब क्रियान्वित करनी थी जब अग्निदेवता स्वर्गारोहण कर गए हों, अन्यथा यदि वे अपने इस क्रिया-कलाप में देवता द्वारा पकड़ ली जातीं तो ईश्वरीय दण्ड से कभी न बच पातीं।

मेरी बुआ अकस्मात चिल्ला पड़ीं और बोलीं : "हुँह, घर में कोई आदमी नहीं!" मेरी दूसरी बहिन, जो अत्यन्त ईमानदार और दयालु थी, किसी समस्या को हल करने में असमर्थ थी। मेरी बुआ जितना ही अधिक क्रोधित होने लगतीं, उतना ही मेरी बहिन और अधिक घबड़ा जाती और अपनी आँखों में आँसू भरकर केवल चिल्लाकर "बुआ-बुआ" कहती।

ठीक उसी समय मेरी सबसे बड़ी बहिन आ गयी। वह एक अत्यन्त सुन्दर युवा पत्नी थी। उसका छोटा चेहरा, जो चौड़ा कम और लम्बा अधिक था, बहुत ही सुन्दर और कोमल आकृति वाला था। उसकी पतली ठुड्डी श्वेत कमल की पँखुड़ी के सदृश थी। चाहे वह लाल साटन का सुन्दर ओवरकोट पहने हो, या नीला सूती गाउन, चाहे उसके बालों के बीच से माँग निकली हो या मानचू फैशन में जूड़ा बना हो, उसका मधुर आकर्षक स्वभाव सभी को प्रसन्नचित्त कर देता। उसकी पतली कमर तीर के समान सीधी थी और जब वह खड़ी होती तो अत्यधिक सुन्दर लगती थी। जब वह किसी के प्रति झुक कर अपना आदर भाव व्यक्त करती थी तब अत्यन्त गौरवान्वित और सुन्दर जान पड़ती थी, क्योंकि वह सदा पूर्ण रूप से सीधे चलती थी। हँसने के समय ही केवल उसकी पीठ थोड़ा सा झुक जाया करती थी और ऐसा जान पड़ता था कि मानो साँस लेने में उसे कुछ कष्ट होता हो, तथापि उसकी हँसी सदैव भोली और विमुग्धकारी होती थी।

मेरी बुआ सहित हमारे सभी सम्बन्धी और मित्र उसे बहुत पसन्द करते थे। हाँ, केवल उसकी सास एकमात्र अपवाद थीं। उनके विचार से मेरी बड़ी बहिन न सुन्दर थी और न चतुर। वे बहुधा उसका उपहास करते हुए कहती थीं : "तुम्हारे पिता केवल प्रतिमाह तीन औंस चाँदी पाने वाले घुड़सवार ही तो हैं।"

मेरी सबसे बड़ी बहिन की सास इतनी नकचढ़ी और रोबीली थीं कि वे घर की नौकरानियों पर कड़ा नियंत्रण रखने पर विश्वास रखती थीं। वे नौकरानियों से कठोरता के साथ कार्य की अपेक्षा रखती थीं। उनका विश्वास था कि नौकरानियों को प्रथम दिन से ही अपने को कार्य के प्रति जीवनपर्यन्त समर्पित रखना चाहिए। जब उनके पुत्र त्वोफू ने मेरी बहिन से विवाह किया, तब उन्होंने अपनी सभी नौकरानियों को निकाल दिया और अपनी बहू को दस नौकरानियों के बराबर कार्यभार से लाद दिया। मेरी बहिन बहुधा दिन-रात काम करती रहती थी और अपने

बाल तक सँवारने का साहस नहीं जुटा पाती थी और इसलिये वह जब सोने भी जाती थी तो प्रायः उसके बाल किसी छोटे से वृत्ताकार स्मारक की आकृति के रूप में बिखरे रहते थे। अपने बालों में कंघी करना समय का अपव्यय करना था और यदि उसकी सास कभी जल्दी सोकर उठ जातीं और जोर से खखारने लगतीं, तो मेरी बहिन उनके प्रति अपना सम्मान व्यक्त करने के लिये बिना कंघी किए हुए ही पहुँच जाती, जो एक बहुत बड़ा अपराध था।

मेरी बहिन को सूर्योदय से पहले उठना पड़ता था जिससे कि वह अपनी सास के नाश्ते के लिये कुछ केक तथा अन्य मिठाइयाँ खरीद कर ला सके। तथापि मेरी बहिन अभी जवान थी और नींद उसकी एक आवश्यकता थी। जब उसका विवाह हो गया तो उसने जल्दी जग पड़ने की आदत डाली। जागने के पश्चात वह बाहरी द्वार खोलकर नक्षत्रों की ओर ताकती रहती। यदि कभी वह प्रातः बहुत शीघ्र उठ पड़ती, तो कमरे में वापस जाकर अपने कपड़े पहन लेती और फिर बैठे-बैठे ऊँघ लेती, क्योंकि उसे भय था कि यदि वह लेट गयी तो गहरी नींद आ जायेगी और उसे फिर अपने अन्य कार्य करने में विलम्ब हो जायेगा।

भोजन बनाना, सिलाई करना, चाय देना और सफाई करना ये सभी कार्य मेरी बहिन को करने पड़ते थे। जितना ही अधिक परिश्रम से वह कार्य करती थी उतना ही अधिक उसकी सास उसे प्रशिक्षित करने के लिये काम से लाद देती। उसकी सास भोजन करने या कोई पीने की चीज मुँह तक ले जाने के सिवाय अपने हाथों का प्रयोग बहुत कम करती थीं। जितना ही कम वह अपने हाथों से काम लेती थीं उतना ही अधिक सक्रिय उनके नेत्र और उनका मुँह हो जाता था। मेरी बहिन की परछाँही देखते ही उनके अनेक अति आवश्यक आदेश जारी हो जाते थे।

मेरी बहिन को इतना अधिक काम करना पड़ता था कि किसी भी विवाद से बचने के लिये वह प्रतिदिन बड़ी सावधानी से काम की योजना पहले ही बना लेती थी। विवाह के कई माह उपरान्त उसकी भौहों के बीच माथे पर दो पतली झुर्रियाँ दिखाई पड़ने लगीं। अपनी निराशा की भावनाओं को उसने अपने पति से कभी व्यक्त नहीं किया, क्योंकि उसे भय था कि इससे कोई विवाद उठ खड़ा होगा। जब वह हमारे घर वापस आई तो उसने मेरी माँ से यह सब नहीं बताया, क्योंकि वह अपनी माँ को चिन्तातुर नहीं करना चाहती थी। जब मेरी माता ने उससे प्रश्न किया तो उसने हँसते हुए कहा, "कहीं कोई परेशानी नहीं है, कुछ नहीं दादी! आप मेरे लिये चिन्तित न हों।" (हम लोग अपनी माँ को दादी कहते थे।)

मेरी बहिन बुआ जी से भी कोई शिकायत करने का और भी कम साहस करती थी, क्योंकि वह उनके क्रोधी स्वभाव को जानती थी जो तनिक-सी बात पर तुरन्त ही आग बबूला हो उठती थीं। मेरी बुआ द्वारा दी जाने वाली थोड़ी सहायता को भी

वह अस्वीकार नहीं करती थी। मेरी बहिन की सास यह आशा करती थी कि वह सुन्दर वस्त्रादि पहनकर निकले, किन्तु इस सम्बन्ध में वे उसके वस्त्रों, पाउडर तथा बालों आदि के प्रसाधनों आदि पर एक सेण्ट भी खर्च करने को तैयार नहीं थी। प्रत्येक समय मेरी बुआ उससे पूछती कि क्या उसे पैसे की आवश्यकता है, तो मेरी बहिन उत्तर में केवल अपना सर झुका लेती जो इस बात का संकेत होता था कि उसके पास खर्च के लिये एक सेण्ट भी नहीं है।

मेरी बुआ यदा-कदा ही दानशीलता का परिचय देती थीं। मेरी बहिन को सहायता देने का कारण यही था कि परम्परानुसार मानचू जाति के लोग अपने परिवार के पितृपक्ष की स्त्रियों का सम्मान करते थे। अतः पितृपक्ष की ओर से बुआ के रूप में स्वाभाविक था कि वे अपने भाई की पुत्री के साथ सहानुभूति रखतीं, जो उनके अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने का भी एक साधन था। इसके अतिरिक्त मेरी बहिन की आवश्यकताएँ भी कोई बहुत अधिक नहीं थीं; केवल कुछ पैसों से ही उसका काम चल सकता था और इसलिये क्यों न यदा-कदा एक मानवतावादी उदार व्यवहार प्रदर्शित कर दिया जाये?

मेरी बहिन की सास सम्भवतः यह जानती थीं, किन्तु वह अपना मुँह बन्द रखती थीं। यह स्वाभाविक ही था कि नई दुल्हन के अपने परिवार के लोग ही उसके ससुराल जाने पर उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते रहें, क्योंकि लड़कियाँ धन व्यय करवाने के लिये ही जन्मी थीं। इसी दुष्टिकोण से स्थिति को समझते हुए हम यह और अच्छी तरह समझ सकते हैं कि क्यों मेरी बुआ मेरी बहिन की सास के साथ विरोधात्मक व्यवहार करने का साहस करती थीं।

इस बार मेरी बड़ी बहिन हम लोगों से भेंट करने आई, किन्तु इस कारण नहीं कि उसने सपने में किसी विचित्र ड्रैगन या भयानक चीते को मेरी माँ के पेट में प्रवेश करते देख लिय़ा हो जिसका अर्थ होता कि उसका शिशु भाई किसी दिन सेनापति या प्रधानमंत्री बनेगा। वास्तव में नए वर्ष का आगमन निकट था और उसके पास न तो रेशमी फूल थे, न वस्त्र, न पाउडर और न चुनी हुई मिठाइयाँ। मेरी बहिन का पति त्वोफू विवाहित था, साथ ही अश्व सेना का सिपाही भी (यद्यपि वह घुड़सवारी नहीं कर सकता था), फिर भी अपने पिता की भाँति अनेक बातों में एक शिशु जैसा ही था। यदि उसे समय पर चाँदी के रूप में उसका भत्ता मिल जाता था और वर्ष भर खाने के लिये चावल, तो वह सारे ब्रह्माण्ड की विशालता पर चिन्तन-मनन क्यों करे? अपने दैनिक रुचि के कार्यों में लगे रहना ही उसके लिये जीवन का वास्तविक अर्थ था और उसमें ही वह वास्तविक आनन्द तथा आर्कषण का अनुभव करता था।

त्वोफू नीले कण्ठ वाले पक्षियों को पालने-उड़ाने से सन्तुष्ट नहीं था और इसीलिये वह अपनी वीरोचित नैसर्गिक प्रवृत्तियों का अनुसरण करता था तथा छोटी जाति के

बाज और किरौले जैसे शिकारी पक्षी पालता था, जिन्हें वह गौरैयों को पकड़ने के लिये छोड़ देता था। इस कार्यकलाप से थक जाने पर वह कबूतर पालने लगा। उसके प्रत्येक कबूतर का मूल्य एक या दो औंस चाँदी होता था। उन कबूतरों को उड़ाने पर अपनी प्रिय वीरोक्तिपूर्ण भाषा में वह कहता था, "ये उड़ने वाली चाँदी की ईंटें हैं।" उसके पास अनेक कबूतरों की घण्टियाँ थीं, जिन्हें प्रसिद्ध निर्माताओं द्वारा गढ़ा गया था और जिन्हें उसने प्राचीन कलाकृतियों की दुकान से क्रय किया था।

त्वोफू चुनी हुई मिठाइयों का विशेष उपयोग करता था। प्रतिवर्ष ऐसा ही होता था : विभिन्न रंगों के विदेशी कागजों से वह छोटे-छोटे स्टैण्ड सजाता था, जिन पर सेम की कैण्डियाँ और खुबानी के बड़े-बड़े बीज आदि प्रदर्शित किए जाते थे और उन्हें इतनी स्वच्छता से रखा जाता था कि जैसे वह स्वयं को ही भेंट कर रहा है। वह काम भी करता जाता था और खाता भी जाता था। बहुधा स्टैण्डों को चिपकाने का कार्य समाप्त करने से पहले मिठाइयाँ समाप्त हो जाती थीं। इसकी उसे कोई चिन्ता नहीं थी, क्योंकि जो कुछ भी वह कर रहा होता था उससे उसे किसी प्रकार का सन्तोष अवश्य मिलता था।

जब सभी समाप्त हो जाता तब वह दीपोत्सव के लिये कागजों की लालटेनें बनाना आरम्भ कर देता। जब लालटेनें बनाना समाप्त हो जाता तब वह पतंगें बनाने लगता। वह इस प्रकार की छोटी-मोटी साधारण वस्तुओं पर अत्यधिक ध्यान देता था।

जब भी उसकी भेंट किसी जाने पहचाने व्यक्ति से होती, तब वह अपने नवीनतम कार्य की प्रगति को विस्तार से बताने पर जोर देता, भले ही उससे मिलने वाला व्यक्ति उसमें रुचि रखता हो अथवा नहीं। इस प्रकार के विचार-विमर्श बहुधा उसे अपनी योजनाओं को सुधारने के लिये प्रेरणा देते थे—इस आशा से कि उससे कोई मौलिक और आकर्षक वस्तु का निर्माण होगा। यदि उसे कोई अपनी इच्छा से श्रोता न मिल पाता था तो वह सारी कथा अपनी पत्नी से बताता था और तमाम लालटेनों व पतंगों का हिसाब बताकर उसके दिमाग को चक्कर में डाल देता था, जिसके कारण उसकी पत्नी का अपना काम भी बन्द हो जाता था। ऐसी स्थिति में उसकी सास के वाग्बाण उस पर बरसने लगते थे। जो पैसा वह अपने मनोरंजन पर व्यय करता था वह मेरी बहिन की चिन्ता का प्रमुख कारण था। जब उसका पैसा खर्च हो जाता था तब झगड़ा अवश्यम्भावी था, जो एक प्रकार से पारिवारिक मनोरंजन का रूप था। दस में से नौ बार ऐसा होता था कि किसी एक कोने में आपस में बहस करने के बाद उसके परिवार के अन्य सदस्य संयुक्त रूप से मिलकर सारा दोष उस पर मढ़ देते थे। यद्यपि मेरा बहिनोई उसके प्रति स्वभाव से बुरा नहीं था, किन्तु इस तू-तू, मैं-मैं में उसको मेरी बहिन को ही बुरा-भला कहना पड़ता था। कोई भी आदमी अपने बूढ़ों से कोई भी अपमान के शब्द सुन सकता था, केवल "जोरू का गुलाम"

कहे जाने के अतिरिक्त।

मेरी बहिन ने धीरे-धीरे एक नया गुण प्राप्त कर लिया। जब वह अपने ऊपर तमाम बुराइयों की बौछारें पड़ते सुनती, तब अपने को ऐसा बना लेती कि जैसे वह खड़खड़ाहट के अतिरिक्त कुछ नहीं सुन पा रही हो। ऐसा जान पड़ता था कि उसने अपने दोनो कानों में एक-एक तड़ित-रक्षक लगा लिया हो। बेचारी मेरी बहिन!

जब वह हमारे घर पहुँची तो उसने एक दृष्टि में सारी परिस्थिति को समझ लिया। उसने मेरी दूसरी बहिन को दाई बुलाने के लिये भेजा और साथ ही उससे यह भी कह दिया कि बीच में ही उसकी ससुराल में जाकर कह दे कि उस रात वह विलम्ब से घर लौट सकेगी। उसका परिवार हमारे घर से लगभग एक ली की दूरी पर रहता था। दूसरी बहिन तुरन्त तेजी से चली गयी।

मेरी बुआ ने मुस्कराते हुए मेरी बहिन को कई खडखड़ाते हुए लाल बैंक नोट भेंट किए, जो पुराने प्रास्पैरिटी बैंक द्वारा नौकरों को इनाम देने या बच्चों को नए वर्ष का उपहार देने के लिये वितरित किए गए थे। उन पर "ल्यूहाए" का वह चित्र छपा था जिसमें वह अपने भाग्यशाली पैरों वाले मेंढक जैसे जन्तु को कुएँ से बाहर निकलने के लिये अपनी ओर आकृष्ट कर रहा था। इनमें से प्रत्येक नोट दो नकद सिक्कों में विनिमय किया जा सकता था। साथ ही मेरी माता के बच्चा होने का सम्पूर्ण दायित्व उन्होंने मेरी बहिन पर डाल दिया, जिससे कि यदि कहीं कोई दुर्घटना हो जाये तो उसका दायित्व उन पर न रहे।

जब मेरी दूसरी बहिन मेरी बड़ी बहिन की ससुराल पहुँची, उस समय उसके श्वसुर अपने पुत्र के साथ आँगन में पटाखे छुड़ा रहे थे। इस वर्ष उनका परिवार पहले से कहीं अधिक ऋण में डूबा था। वर्ष के बारहवें महीने के तेईसवें दिन जिसे तथाकथित "छोटा नए साल का दिन" माना जाता था, उनसे यह आशा करनी चाहिए थी कि वे अपना कर्ज निपटाने के लिये कोई रास्ता निकालने में व्यस्त होंगे, अपने खर्चों में कटौती कर रहे होंगे जिससे कि ऋणदाता वर्ष के अन्तिम दिन अपना पैसा लेने के लिये जब बाहर का दरवाजा खटखटाएँ तो उन्हें वे बाहर के द्वार तोड़ने से रोक सकें। यह कहना व्यर्थ ही है कि वे ऐसी कोई योजना नहीं बना रहे थे।

मेरी बहिन की सास ने न जाने कहाँ से कुछ पैसा लेकर बड़ी-बड़ी सुन्दर खरबूजे की आकृति की मिश्री (थाङ्क्वा) खरीद ली थी, जिसमें कुछ तिलयुक्त तथा कुछ तिलहीन भी थी। उसे उन्होंने अग्निदेवता की मूर्ति के समक्ष रख दिया और घूरकर देखते हुए यह आदेश दिया, "जब तुम मेरी मिश्री खा चुको तो उतर जाओ और मेरे सम्बन्ध में कुछ शुभकामना व्यक्त करो। मैं कोई अर्थहीन बात या झूठ सुनने के लिये यहाँ नहीं रहूँगी।"

परिवार के दानों पुरुषों ने भी किसी अज्ञात स्रोत से कुछ पैसा इकट्ठा कर लिया

था, जिसे उन्होंने पूरा का पूरा पटाखों पर खर्च कर दिया। दोनों ने अपने लम्बे गाउन उतार रखे थे। बूढ़े पुरुष ने एक घुड़सवारी वाली जैकेट, जो लोमड़ी के बालों की बनी थी, पहन रखी थी। उसके बटन बन्द नहीं थे। साथ ही उन्होंने एक ढीला सूती कमरबन्द बाँधा हुआ था। सचमुच ही यह एक बेजोड़ पहनावा था। मेरा बहिनोई, जिसमें अभी नौजवानी की कान्ति थी, केवल एक छोटी-सी रूईदार जैकेट पहने था। उसे लगातार छींकें आ रही थीं और साथ-साथ वह यह भी कहता जा रहा था कि "मुझे सर्दी नहीं लग रही है।"

सबसे पहले पटाखों के छूटने की एक-एक करके सूचनाएँ मिलने लगीं और फिर तेजी से चिंगारियाँ फैलने लगीं, जिससे एक तूफान जैसा उठ खड़ा हुआ। बेटा बिजली की कड़क जैसी आवाज वाले पटाखों को छुड़ाने में लगा था जबकि पिता दोहरी मार वाले पटाखे छुड़ा रहा था। इससे एक "पिपापिया डोंग, पिपापिया डोंग डांग" जैसी लयात्मक ध्वनि निकलने लगी। अन्त में यह खेल समाप्त होने पर पिता और पुत्र दोनों ने एक दूसरे को गर्व से देखा। वे दोनों इस बात से सहमत थे कि उनके पटाखे छुड़ाने का तरीका पूरे पेइचिङ में सर्वोत्तम था और इसलिये उस सम्बन्ध वे अपने आस-पड़ोस के लोगों की हार्दिक प्रशंसा के पात्र थे।

मेरी छोटी बहिन जो सूचना देना चाहती थी, वह बम जैसे और दोहरी मार वाले पटाखों के विस्फोट के कारण सुनायी नहीं पड़ती थी। अतः मेरी सबसे बड़ी बहिन की सास ने ऐसा समझा कि जैसे मेरी माँ पर विषाक्त धुएँ का बुरा प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने मेरी दूसरी बहिन से पटाखों की आवाज के बीच चिल्लाकर कहा : "ठीक है, तुम मूर्ख लोग अपनी चिन्ता रखना भी नहीं जानते। बहुत सम्भव है, तुम्हें जहरीली गैस से अपने को विषाक्त करने में आनन्द मिलता हो।" उसने "सम्भव है" के स्थान पर "बहुत सम्भव है" का प्रयोग यह सोचते हुए किया था कि "बहुत" शब्द जोड़ने से भाषा में एक लावण्य आ जाता है। ऐसा कहने के पश्चात उसने अपने कपड़े बदले और अपनी "उदारता" और "मानवता" की भावना व्यक्त करते हुए मेरी माँ की जीवनरक्षा करने के लिये चल पड़ी।

कप्तान और घुड़सवार ने मेरी दूसरी बहिन की घोषणा पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि वे पटाखे छुड़ाने में अधिक व्यस्त थे। किन्तु यदि उन्होंने उसकी सूचना को सुन-समझ भी लिया होता, तो भी वे पटाखों के अतिरिक्त और किसी बात पर अपना ध्यान नहीं बँटा सकते थे। मेरा जन्म हुआ और मेरी माँ निश्चेत हो गयी। मेरी बहिन की सास ने मेरी बुआ के क्वार्टर में शरण ली। उस समय मेरी बहिन की सास के नेत्र ऐसे लग रहे थे मानो वे फूल कर बाहर उभर आए हों और उनके दोनों कपोल विष की दो थैलियों की भाँति नीचे लटक गए हों। उन्होंने मेरी बुआ को गैस के कारण होने वाले विषाक्तीकरण के उपचार का अति प्रभावशाली नुस्खा विस्तारपूर्वक

बताया। मेरी बुआ ने अपनी पाइप में अभ्यस्त हाथों से अमरकन्द की सुगन्ध वाली तम्बाकू जलायी और अपने मुँह के एक कोने में पाइप की जेड लगी डण्डी के मुख को तिरछी करके लगा लिया। उस समय उनकी भँवे तनी थीं, जैसे कि वे युद्ध के लिये तत्पर हों।

"गुप्त नुस्खे गम्भीर बीमारी को भी अच्छा कर देते हैं।" मेरी बहिन की सास ने इस तरह कहा मानो वे किसी प्राचीन ग्रन्थ का उद्धरण प्रस्तुत कर रही हों।

"किन्तु जब आपके बच्चा पैदा हो रहा हो तो किसी गुप्त नुस्खे की आवश्यकता नहीं होती।" मेरी बुआ ने अपना आक्रमण आरम्भ किया।

"यह उस पर निर्भर करता है जिसके बच्चा होने को है।" मेरी बहिन की सास मन में प्रसन्न थीं। यही तो वह अवसर था जिसकी प्रतीक्षा में वे थीं कि कब अपनी सेना को कार्य में लगा सकें।

"कोई अन्तर नहीं पड़ता कि बच्चा किसके हो रहा है, क्योंकि जहरीली गैस के लिये कोई गुप्त नुस्खा किसी के लिये भी लाभप्रद नहीं हो सकता।" मेरी बुआ ने अपनी लम्बी पाइप मुँह से निकाल ली और उसकी चिलम का रुख अपने अतिथि की नाक की ओर करते हुए कहा।

मेरी बहिन की सास ने जान बूझकर बड़ी शिष्टतापूर्वक अपना अन्तिम प्रहार करते हुए कहा, "मेरी प्रिय बुआ जी! यदि आप पर धुएँ के जहर का प्रभाव पड़ जाये तो आपके बच्चा नहीं हो सकता!"

दोनों के बीच का भयानक वाग्युद्ध जब इस बिन्दु पर पहुँचा, तो मेरी बड़ी बहिन मुझे अपनी बाँहों में पहले से ही उठाए थी। वह रो रही थी क्योंकि मेरी माँ अभी तक होश में नहीं आ पाई थीं, किन्तु इसलिये प्रसन्न भी थी कि उसके एक छोटे भाई ने जन्म लिया है। मेरी दूसरी बहिन अकेली बाहर कमरे में खड़ी सिसकियाँ ले रही थी। वह रात बहुत ठण्डी थी। यदि मेरी बहिन ने मुझे अपनी बाँहों में दबाए न रखा होता, तो मुझे विश्वास है कि मेरा जीवन गम्भीर संकट में पड़ जाता, चाहे मेरे अन्दर कितनी ही जीवन शक्ति रही होती।

2

मेरी बुआ जब प्रसन्न मुद्रा में और विशेषतः तब जब मेरे प्रति सहृदय होती थीं तो वे मुझे चिढ़ाते हुए "छोटे कुत्ते की पूँछ" कहती थीं, क्योंकि जैसा मैं पहले वर्णन कर चुका हूँ, मेरा जन्म सन 1898 के बिल्कुल अन्त में हुआ था जो कि पंचांग के अनुसार "श्वान वर्ष" था। लेकिन जब वह प्रसन्न मुद्रा में भी होती थीं और कुछ

हास-परिहास करना चाहती थीं तो वे सदा किसी न किसी को चिढ़ाने का रास्ता ढूँढ़ लेती थी। एक कुत्ते के बच्चे का स्वाभिमान दण्डनीय अपराध नहीं होता है—यह असत्य है। आज भी जब मैं पेइचिङ के "डाग टेल हूथुङ" से गुजरता हूँ तो किंचित लज्जा का अनुभव करने से नहीं बच सकता।

कुत्ते की पूँछ के विषय को छोड़कर अब हमें अधिक महत्वपूर्ण विषयों की चर्चा पर आ जाना चाहिए। मैं इस प्रकार व्यक्त करने का प्रयास करूँगा—मेरा जन्म ठीक उसी समय हुआ था जब "छिङ साम्राज्य" की अन्त्येष्टि क्रिया के समय जलने वाली मोमबत्ती बुझने ही वाली थी। जैसे ही ढहते हुए खण्डहर के दृश्य के ऊपर सूर्य अस्त हुआ, यह बात स्पष्ट होने लगी कि मेरी बहिन की सास का यह बढ़ा-चढ़ा कर कहना कि वे वाइकाउण्ट की पुत्री और एक कप्तान की पत्नी थीं, यह केवल एक तथ्यहीन और खोखली बात थी। उनके पास न कोई शक्ति थी न कोई प्रतिष्ठा। जब तिलपट्टी बेचने वाले उनसे अपना पैसा माँगने आते थे तब वे सीधे उनकी नाक की ओर उँगली से संकेत करते हुए कहते थे : "तुम मेरी तिलपट्टी खा जाती हो पर उनका पैसा नहीं देतीं, क्या यह ईमानदारी है?"

यद्यपि हमारी भाँति तमाम गरीब मानचू सिपाहियों के परिवार अब भी एक निश्चित आय प्राप्त करते थे, किन्तु हम यह जानते थे कि हमारे गले में फन्दा पड़ा है जो लगातार कसता जा रहा है। हम पूर्ण रूप से अपने पिता की तीन औंस चाँदी और दो बार चावल के पूरक माहवारी भत्ते पर निर्भर करते थे जो वसन्त और पतझड़ के समय वितरित किया जाता था। कुशल गृहणी के रूप में मेरी माँ की मितव्ययिता धन्यवाद का विषय है, जिसके कारण हमें भिक्षावृत्ति के गर्त में डूबने से बचाने में इतनी कम आय भी पर्याप्त हुई।

दो सौ वर्ष या उससे अधिक के इतिहास में जो धूल जमा हो चुकी थी उसने अधिकाँश मानचू बैनरमैन की वह गुणात्मकता नष्ट कर दी थी कि जिससे वे अपना आत्म-परीक्षण और आत्म-विकास कर सकते। हमने रहन-सहन की एक विशेष शैली विकसित की थी। जिनके पास धन था वे प्रत्येक वस्तु अच्छी से अच्छी चाहते थे, किन्तु जिनके पास धन नहीं था वे भी अपनी निर्धनता के बावजूद वही चाहते थे। अतः वे सभी आनन्द की खोज करने वाले जीवनरूपी ठहरे जलाशय में डूब गए अथवा उतराते रहे।

उदाहरण के लिये मेरी बहिन के श्वसुर को ही लें, जिनके लिये अपने सरकारी कार्य करना तथा शत्रु की फौजों पर हमला करने की योग्यता रखना गौण था। बाह्य रूप से देखने पर वे और उनके मित्र तथा सम्बन्धी उनसे इससे कुछ और अधिक आशा नहीं करते थे कि वे केवल अपने भत्ते प्राप्त कर लिया करें, बैले गान गाया करें और अपने चार नीलकण्ठ वाले पक्षियों को पालते-उड़ाते रहें।

इसी परिपाटी में मेरे बहिनोई केवल "चाँदी की ईंटें" उड़ाने से ही सन्तुष्ट न थे, वरन् वे बड़ी प्रसन्नता के साथ उनमें से एक के लिये भी अपने जीवन का बलिदान करने के लिये तैयार रहते थे। चाहे कितने ही आवश्यक कार्य में वे लगे हों, सरकारी या व्यक्तिगत, इसकी चिन्ता किए बिना वे निरन्तर आकाश की ओर ताकते रहते थे और इस सम्भावना के प्रति पूर्णतया उदासीन रहते थे कि कहीं किसी वृद्ध महिला से टकरा न जायें या गिरने पर उनके सर पर चोट लगने से कोई गुल्मा न उठ आए। वे आसमान से अपनी दृष्टि इसलिये नहीं हटा सकते थे क्योंकि हजार अवसरों में एक बार वे यह पता लगाते कि कोई थका हुआ कबूतर, जो अपने समूह से बिछुड़ गया हो, आराम करने के लिये किसी विश्रामस्थल की खोज़ में कहीं आकाश में नीचे उड़ रहा है या नहीं। ऐसे अवसर पर भले ही वे कोई अति आवश्यक सैनिक आदेश दे रहे हों, वे सीधे घर की ओर भागते थे और अपने बहुत से कबूतरों को छोड़ देते थे जिससे कि वे उस "चाँदी की ईंट" को घेर लें जो अभी-अभी आकाश से गिरा था। इस प्रकार किसी दूसरे व्यक्ति के कबूतर को पकड़ लेना त्वोफू के जीवन का सर्वोत्तम आनन्ददायक कार्य होता था। इस प्रकार के कार्य से यदि कोई विवाद उठ खड़ा होता, तो वे इसके लिये अस्त्र-शस्त्र ग्रहण करने और उस कबूतर को पाने का लिये अपना जीवन दाँव पर लगा देते थे। त्वोफू के व्यक्तित्व का यह पहलू मेरी बहिन को असीम रूप से आतंकित कर देता था।

मेरे बहिनोई और उनके पिता दोनों ही बुद्धिमान व समर्थ थे तथा लोगों को पहचानने की क्षमता रखते थे, किन्तु उन्हें अत्यन्त साधारण वस्तुओं में भी बहुत आनन्द और उत्साह प्राप्त होता था। वे अपने साँसकृतिक स्तर को इस प्रकार के साधनों से ऊँचा उठाते थे जैसे झींगुर के खाने के बर्तन और कबूतरों की घण्टियाँ इकट्ठा करना या भुने हुए गोश्त के टुकड़े लाना, यद्यपि वे उस संसार के बारे में पहली बात भी नहीं जानते थे जिसमें वे रह रहे थे। ऐसा जान पड़ता था कि वे किसी अत्यन्त सुन्दर स्पष्ट किन्तु कुछ उलझे हुए स्वप्न में विचरण कर रहे हैं।

स्त्रियाँ अत्यधिक शिष्टाचारिणी थीं। उदाहरण के लिये मेरी सबसे बड़ी बहिन को ही लें, जो अपने से बड़े लोगों की उपस्थिति में बहुधा घण्टों खड़े-खड़े काम में लगी रहती थी और अपने होंठों से एक क्षण के लिये भी मुस्कराहट गायब नहीं होने देती थी। एक ही साथ उसे चाय के प्यालों पर दृष्टि लगाए रखना पड़ती थी और आवश्यकतानुसार उन्हें भरना पड़ता था, हुक्कों और चिलमों में तम्बाकू भरनी पड़ती थी और उपयुक्त समय पर छोटे कागज के टुकड़े मुँह से फूँक कर जलाने पड़ते थे। जिस सुन्दरता के साथ वह हुक्कों को पकड़ कर उनके मालिकों को वापस करती थी वह त्रुटिहीन होता था। कागज के टुकड़ों को फूंकते समय उसके होंठों की तनिक भी गति देखने से सुखद लगती थी। वृद्ध महिलाएँ (उसकी सास के अतिरिक्त)

उससे इतना प्रसन्न थीं कि वे यह भी नहीं देख पाती थीं कि पूरा दिन खड़े रहने के कारण उसके पाँव बिल्कुल सूज गए होंगे। मेरी सबसे बड़ी बहिन अपने से बड़े लोगों के सामने कम से कम बोलती थी, किन्तु साथ ही साथ वह यह भी प्रयास करती थी कि वह बिल्कुल काठ के पुतले के समान न बनी रहे। वह अपने शब्दों पर बड़ा ध्यान देती थी और एक आध वाक्य भी समय की पाबन्दी करते हुए बोलती थी जैसे कि वह यंत्र हो जो आपेरा गायक की पँक्तियों को चिह्नित करता है। वह वृद्ध महिलाओं को मंत्रमुग्ध करती थी तथा उनके वार्तालाप में सजीवता लाती थी।

मेरी सबसे बड़ी बहिन को अपने घर में ही इस प्रकार के गुणों का अभ्यास करने के लिये पर्याप्त अवसर थे, जिससे कि वह विशेष औपचारिक अवसरों पर उन्हें उचित रूप से सँवारकर प्रदर्शित कर सकती थी।

बच्चा पैदा होने पर जब उसे तीसरे दिन स्नान कराया जाता या जब वह एक माह का हो जाता था या जब किसी प्रौढ़ व्यक्ति की चालीसवीं या पचासवीं वर्षगाँठ होती थी, तब इन गुणों का प्रदर्शन इस प्रकार होता था जैसे शिष्टाचार की कोई महान प्रतियोगिता हो रही हो। अन्तिम संस्कार या विवाह के अवसरों पर किसी की हँसी की आवाज या किसी के द्वारा दी जाने वाली बधाई बहुत ही सम्भालकर कुशलता और शिष्टता के नियमों के अनुसार दी जाती थी। ऐसे अवसरों पर जब मेरी बुआ और बहिन की सास की भेंट होती थी, तब वे एक दूसरे पर यकायक प्रहार करतीं और अपनी शक्तिभर विरोधी को परास्त करने के लिये हर प्रकार के साधन का प्रयोग करती थीं, जिससे कि उनका यश बढ़े। कोई महिला जिसके यहाँ कोई विवाह या मृत्यु संस्कार हो रहा होता, उसे निरन्तर सावधान रहना पड़ता था कि ऐसे उपहास और घृणा के प्रभाव को यदि समूल नष्ट न कर सकें तो यथासम्भव कम अवश्य कर दें।

आतिथ्य करने वाली महिला कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण महिलाओं की सहायता से लोगों को बैठाने का प्रबन्ध करती थी और यह निश्चित करती थी कि किस कुर्सी पप
हले किसे बिठाया जाये; इस सम्बन्ध में तनिक भी त्रुटि या कुप्रबन्ध होने पर उसके परिणाम भयानक हो सकते थे। वे मातृ पक्ष की किसी ममेरी बहिन की दूसरी सास की छोटी बहिन के पाले हुए पुत्र के मुकाबले भाई की विधवा के किसी अन्य के साली के श्वसुर के मुँह बोले भाई के सम्बन्ध में अवश्य विश्लेषण कर लेती थीं कि जिससे प्रत्येक मेहमान को उचित स्थान दिया जा सके और यह देख लिया जाये कि दोनों ही पक्ष उस प्रबन्ध से सहमत हैं, जिससे कि सभी लोग शान्तिपूर्वक भोजन कर सकें।

इस प्रकार की छानबीन कर लेने पर यदि कहीं यह पाया गया कि श्रीमती "अ"

और श्रीमती "ब" सामाजिक स्तर पर इतने निकट हैं कि उसमें बाल बराबर भी अन्तर नहीं है तो उस समस्या का समाधान भी मुश्किल न था, क्योंकि सभी मित्रों और रिश्तेदारों की जन्मतिथियाँ लिख लेने के अतिरिक्त वे महिलाएँ उनके जन्म का बिल्कुल ठीक-ठीक समय भी जानती थीं। यह भी सम्भव था कि ऐसे मेहमान भी आ पधारें जो बिल्कुल समान सामाजिक स्तर के हों और उनके जन्म का दिन, महीना और वर्ष भी एक ही हो। तब यदि यह पता लग जाता था कि श्रीमती "अ" श्रीमती "ब" से पूरा एक घण्टा पहले जन्मी थीं तो उनके बैठाने की समस्या का हल निकल आता था। किन्तु यदि श्रीमती "ब" श्रीमती "अ" से बाद भी पैदा हुई थीं तो भी उनका पति यदि तृतीय श्रेणी का अधिकारी होता था जो श्रीमती "अ" के पति से दो श्रेणी ऊपर था तो उसके लिये आगे विश्लेषण करना पड़ता था, जिसके कारण सबको बैठाने की योजना को पूरी तरह से संशोधित करना पड़ता था।

मेरी सबसे बड़ी बहिन यद्यपि अनपढ़ थी तो भी वह हमारे तमाम सम्बन्धियों और मित्रों के जन्म के समय और उनकी जन्मपत्रियों के सम्बन्ध में एक चलता फिरता पंचांग थी। उसकी सास इस विषय को चाहे जितना उलझाने का प्रयास करतीं तो भी मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरा जन्म सन 1898 के बारहवें महीने के 23वें दिन के ठीस सात बजे साँय हुआ था, न तो एक घण्टा आगे या पीछे, क्योंकि मेरी बहिन इसे सिद्ध करने के लिये प्रस्तुत थी।

विवाह तथा अन्तिम संस्कार के अवसर इतने महत्वपूर्ण होते थे कि हमारी ओर से उसमें किसी प्रकार की अशिष्टता सम्बन्धियों और मित्रों को भंयकर रूप से क्रोधित कर सकती थी। मेरी माँ उनके लिये कभी बजट नहीं बना सकीं, क्योंकि यह कौन बता सकता था कि कौन मरने जा रहा था और कौन पैदा होने वाला था। यदि दुर्भाग्यवश ये "लाल" अथवा "श्वेत" रंगों से सम्बन्धित कार्य (लाल वस्त्र विवाह के समय और सफेद अन्तिम संस्कार के समय पहने जाते थे) एक ही महीने में पड़ जाते थे, तो मेरी माँ पहले से धन का कोई बजट नहीं बना पाती थीं। किन्तु वे कभी मामी या बुआ की वर्षगाँठ मनाने से इंकार नहीं करती थीं या अपनी शोक संवेदना अथवा बधाइयाँ अपने दूर के रिश्तेदारों को देना नहीं भूलती थीं, केवल इसलिये कि ऐसी परिस्थिति में कहीं कुछ उल्टी बात न हो जाये।

ऐसे अवसरों पर उपस्थित न होने का अर्थ होता सम्बन्धियों से सम्बन्ध टूट जाना, जिसके कारण आप जीवनभर मुँह दिखाने योग्य न रहते और आपके मर जाने पर भी यह अपयश बना रहता। यदि आप ऐसे अवसरों पर केवल उपहार भिजवा देते और उपस्थित न रहते, तो भी बात नहीं बनती। उपस्थित रहने पर भी उपहारों के अतिरिक्त आपको अपने जूते-मोजों पर ध्यान देना पड़ता, बालों में लगाने के लिये फीते और रेशमी फूल खरीदने पड़ते और यहाँ तक कि नए कपड़े भी बनवाने पड़ते,

जिस सबके कारण कुछ और खर्च बढ़ जाता।

जहाँ तक ऐसे अन्तिम संस्कारों या उत्सवों में जाने का सम्बन्ध है, यदि उनके स्थान निकट होते तो आप पैदल जा सकते थे। किन्तु यदि वह स्थान दूर हुआ तो आपको खच्चर गाड़ी किराये पर लेनी पड़ती थी। उस सभ्यता के युग में पेइचिङ की सभी सड़कें लगभग तीन फुट धूल और बालू से वैसी ही भरी रहती थीं जैसे किसी धूपदानी का अन्दरूनी भाग। भली-भाँति शृंगार कर लेने के पश्चात इस प्रकार के रास्ते में लगभग आठ या दस "ली" यात्रा करने पर जब आप वहाँ पहुँचते, तो आप धूल धूसरित एक भूत के समान दिखाई पड़ते। यह स्थिति क्या उपहासास्पद नहीं थी? और आप किसी खच्चर गाड़ी पर भी बिना किराया दिए तो नहीं जा सकते थे।

इस प्रकार के कर्तव्य-पालन में केवल भेंट या उपहार ले जाना ही पर्याप्त नहीं था, अपितु उसके लिये आपको अतिरिक्त धन भी खर्च करना पड़ता था। ऐसे समय यदि कोई कुछ बाजी ताश खेलने को कहता तो आप इंकार न कर सकते और यदि कोई भतीजे, भतीजियाँ या नाती-पोते उपस्थित हों तो एक-एक पर दो सौ का और खर्च। हाँ, अनेक परिवार अन्तिम संस्कारों और विवाहों पर खर्च के कारण दिवालिये हो गए, तो फिर क्या उनके मित्र और सम्बन्धी उनसे हर स्थिति में सम्पर्क न बनाए रखते?

मेरी माँ इसलिये "सम्मानित माता" के रूप में कार्य करने हेतु कोई आमंत्रण प्राप्त करने में सबसे अधिक भयभीत रहती थीं जब कोई कन्या अपने परिवार में या उससे बाहर ब्याही जाती थी, इस तथ्य के बावजूद कि यह एक विशेष सम्मान माना जाता था। कोई विधवा या "व्याघ्र वर्ष" में जन्मी महिला अथवा जो स्त्री उदाहरणीय व्यवहार वाली नहीं होती थी वह इसके योग्य नहीं समझी जाती थी, यद्यपि वह इसके लिये आधारभूत आवश्यकताएँ पूरी करती थी कि उसके परिवार के सभी सदस्य जीवित हैं। केवल सम्मान पाने योग्य स्त्रियाँ ही जो कभी-कभी संकरे मार्ग से विरत न हुई हों वही यह दायित्व सम्भाल सकती थीं। यही कारण था कि मेरी माँ ऐसा आमंत्रणा प्राप्त करने पर उससे इंकार नहीं कर पाती थीं।

किन्तु "सम्मानित माता" को विवाह के अवसर पर एक खच्चर गाड़ी पर सवार होकर एक नौकरानी के साथ पहुँचना पड़ता था। यदि उसकी अपनी कोई नौकरानी नहीं होती थी तो उस समय के लिये उसे कोई अच्छी नौकरानी भाड़े पर लेनी पड़ती थी। उसे उचित "सम्मानित माता" नहीं माना जा सकता था, यदि उसे खच्चर गाड़ी में बैठाने और उतारने में तथा घर के अन्दर ले जाने तथा बाहर ले जाने के लिये कोई सहायिका साथ नहीं होती थी।

यह कहना व्यर्थ होगा कि कपड़े और आभूषण भी अन्य अतिथियों से अधिक अच्छे और मूल्यवान होने चाहिए थे। मेरी माँ किसी से कोई वस्तु माँगने, उधार लेने

से घृणा करती थीं, किन्तु कोई बीस-तीस औंस चाँदी की कीमत का साटन गाउन, कढ़ा हुआ बार्डरदार ओवरकोट, असली सोने के ब्रोच, कान के बुन्दे या बालपिनें खरीद सकना भी उनकी सामर्थ्य के बाहर था। कोई दूसरा रास्ता न होने के कारण ही उन्हें मेरी बुआ से ही सहायता माँगनी पड़ती थी। बुआ के पास आवश्यक वस्त्र तथा आभूषणों का एक पूरा सेट था, किन्तु वे उन्हें किसी को मँगनी नहीं देती थीं। विधवा हो जाने के बाद वे "सम्मानित माता" के पद के योग्य नहीं रह गयी थीं और अपने पति की मृत्यु के पहले भी उन्हें यह सम्मान बहुत कम मिल पाया था। चूँकि निश्चित रूप से यह कोई नहीं जानता था कि मेरे फूफा एक आपेरा गायक हैं, इसलिये बहुत कम लोग मेरी बुआ को आमंत्रित करने और सबके सामने प्रदर्शित करने का खतरा मोल लेते थे, चूँकि उन पर कोई विश्वास नहीं करता था, इसलिये वे बदले की भावना से किसी को अपनी कोई वस्तु मँगनी देने से इंकार कर देती थीं।

ऐसे समय पर मेरे पिता खुद बीच में पड़ते थे। भाई और बहिन किसी भी विषय पर आपस में बात कर सकते थे। मेरे पिता यह मानने को तैयार थे कि एक आपेरा गायक होना कोई निम्न श्रेणी का कार्य कदाचित नहीं है, इसलिये मेरी बुआ अन्त में कपूर की गोलियों की गन्ध से भरे अपने कपड़े तथा पुराने फैशन के भारी आभूषण दे देती थीं।

ऐसे समारोह के समय अपने मित्रों और सम्बन्धियों के बीच में अनिवार्य उपस्थिति से मेरी माँ की सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ी। वे मेरी माँ की इस बात पर प्रशंसा करते थे कि उन्हें इसका अच्छा ज्ञान था कि किस आवश्यकता पर कितना खर्च करना चाहिए। किन्तु यही चीजें ऐसी थीं जिनके कारण उन्हें उस समय चिन्ता हो जाती थी जब वह मेरे पिता का मासिक भत्ता प्राप्त करती थीं और उससे भी अधिक चिन्ता तब जब कोई भत्ता प्राप्त नहीं हो पाता था।

मेरे जन्म के समय भी यद्यपि हम लोग एक निश्चित आय पर निर्भर रह सकते थे, किन्तु वह धीरे-धीरे कम हो रही थी क्योंकि जो चाँदी प्राप्त होती थी तौल कम होने के साथ ही अशुद्ध भी होती थी। उधार खरीदना और कर्जदार बने रहना हमारे जीवन की एक पद्धति-सी हो गयी थी। जो दुकानदार हमें तिलपट्टी, कोयला और पानी देते थे, वे हमारे दरवाजे पर पाँच श्वेत रेखाएँ खींच दिया करते थे। (और अनेक परिवारों के भी) ये निशान मुर्गी के पंजों जैसे जान पड़ते थे। पहले हम वह वस्तु खरीदते थे जिसे उधार लेना आवश्यक था और भत्ता मिल जाने के पश्चात उन पंजों की संख्या के अनुसार पैसा जमा कर देते थे। मेरी माता अच्छी गृहिणी थीं। वे केवल तिलपट्टी या कोयला या बिसाती पानी बेचने वालों को अपने सफेद निशान हमारे दरवाजे पर लगाने की आज्ञा देती थीं ओर अन्य मिठाई या जंगली सेव की मिश्री

बनाने वालों को मुर्गी के पंजे वाले उधार सम्बन्धी चिह्न बनाने से रोक देती थीं।

मेरी बुआ हमारा पानी मुफ्त में पीती थीं और हमारे कोयले से ही अपनी इच्छानुसार कोयला ले लिया करती थीं; किन्तु हमारी तिलपट्टियों पर वे हाथ नहीं लगाती थीं, क्योंकि उनके पास पीतल के सुनहरे डिब्बों में आठ प्रकार के बहुत ही अच्छे भोज्य पदार्थ पर्याप्त मात्रा में बने रहते थे। जब कभी वे दरवाजे पर रहने वाले को यह संकेत देती थीं कि उन पंजों के निशान से उनको कुछ लेना-देना नहीं। मेरी बहिन की सास का दरवाजा उन दरवाजों में से एक था जिस पर पूरे आस-पड़ोस की तुलना में सबसे अधिक रकम के निशान बने थे।

मेरी बहिन के अतिरिक्त, जिनका ऋण बहुत ही सीमित था, उनके परिवार के अन्य सभी सदस्य जितना उधार लेना सम्भव था उतना लिया करते थे। जैसाकि त्वोफू कहते थे, "जब वेतन प्राप्त होगा तब हम भुगतान कर देंगे। इस प्रकार हमारी कोई मानहानि नहीं होती।" पहले बताए गए फेरी वालों के अतिरिक्त मेरी माता का उधार खाता केवल गल्ला व्यापारियों या अन्य सूखे भोज्य पदार्थ बेचने वालों के साथ चलता था। हम जलपान गृहों में खाने-पीने के अभ्यस्त नहीं थे और न नियमित रूप से रेशम व्यापारियों, आभूषण विक्रेताओं या किसी फॉर्मेसी की बड़ी दुकानों से हमारा लेन-देन था। प्रतिमाह हम पर्याप्त मात्रा में धूप बत्तियाँ और कुछ चाय खरीद लिया करते थे, किन्तु धूप बत्तियाँ और चाय बेचने वाला केवल नकद ही देता था, उधार नहीं।

यद्यपि हमारे दायित्व कोई बहुत अधिक नहीं थे, तो भी हमारे परिवार ने अप्रैल माह का अनाज मार्च माह में ही खा लेने का अभ्यास डाल लिया था। इसकी व्याख्या भी मुझे कर देनी चाहिए। जैसे ही हमारा मासिक भत्ता प्राप्त हो जाता था, हम उधार निपटा देते थे और फिर उसके बाद इतना कम पैसा बच पाता था कि हमें आगे के लिये पुनः उधार लेना पड़ता था। कोई भी अप्रत्यशित खर्च, जैसे किसी महिला के बच्चा होने पर मेरी माँ को सम्मानित माता के रूप में सम्मान प्राप्त करने का अवसर, स्वाभाविक रूप से पुराने कर्ज का भुगतान करने में हमारी सामर्थ्य घटा देता था और धनाभाव बढ़ता जाता था। इस प्रकार वेतन-भत्ता आने पर भी मेरी माँ की प्रसन्नता चिन्ताओं में दबी रहती थी।

मेरी बुआ घुमक्कड़ थीं। वे बहुधा "माहजोंग" खेलने, "राष्ट्र रक्षार्थ मन्दिर" के आस-पास टहलने, रिश्तेदारों से मिलने या केवल महिलाओं के लिये प्रदर्शित आपेरा और "रिव्यू" देखने जाया करती थीं। जब वे जुआ खेलने जातीं तब मेरी माता को उनके लिये आधी रात तक प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। यदि कहीं यकायक वर्षा होने लगती या हिमपात होने लगता, तो मेरी माँ और मेरी दूसरी बहिन को छाता लेकर उन्हें घर वापस लाने के लिये जाना पड़ता था। मेरी माता को बुआ के आराम का

प्रबन्ध करने के लिये अतिरिक्त कष्ट उठाना मंजूर था, अपेक्षाकृत इसके कि वे उनका कोपभाजन बनने का संकट मोल लेतीं।

जब मेरी बुआ विक्षुब्ध होती थीं तब उनका व्यवहार इतना अव्यवस्थित होता था कि उस समय देवता और भूत भी पहले से यह नहीं बता सकते थे कि उनका आगे का कदम क्या होगा। यदि वे केवल इस बात पर अप्रसन्न हो जातीं कि उनकी चाय ठण्डी थी, तो वे चिल्लाकर कहती थीं कि उनकी जबान जल गयी; तब वे पूरे परिवार को हमारे पीले कुत्ते सहित यह कहते हुए कोसती थीं कि हमने जान-बूझ कर उनका मुँह को जला दिया जिससे कि वे भोजन न कर सकें और भूख से मर जायें। इस प्रकार की पूर्व नियोजित हत्या सम्बन्धी चर्चा तीन-चार दिन तक चला करती थी।

मेरी माता की आदतें बिल्कुल उल्टी थीं, क्योंकि वे किसी विवाह या मृत्यु के अवसरों के अतिरिक्त बाहर बहुत कम जाती थीं। उन्हें घर के नियमित कार्यों में ही व्यस्त रहना अधिक पसन्द था। वे सफाई करती थीं, खाना बनाती थीं, लड़के के बाल काटती थीं और रेशमी डोरी से धीरे-धीरे रगड़कर लड़की के चेहरे के रोंए साफ करती थीं, जिससे कि जब उनके चेहरों पर पाउडर आदि लगाया जाये तो उनका रूप चिकना और चमकदार हो जाये।

कभी-कभी जब मेरे पिता अपनी ड्यूटी पर होते थे और "यामन" (चीनी सरकारी कार्यालय) द्वारा वेतन-भत्ता बाँटा जाता था, तो ऐसी स्थितिमें मेरी माता को उसे लेने जाना पड़ता था। "यामन" मेरे घर के बहुत निकट था, तो भी जब कभी मेरी माँ वहाँ जातीं तब वे इतनी घबराई रहती थीं कि जैसे उन्हें सुदूर दक्षिण हाएनान द्वीप की ओर जाना पड़ रहा हो। भत्ते के रूप में चाँदी की सिलें दी जाती थीं (जो हर महीने छोटी होती जाती थीं) और मेरी माँ घर लौटते समय उन्हें नकद पैसों में बदलवा लेती थीं। उन दिनों शानशी के व्यापारियों की तम्बाकू की दुकानों, मुसलमानों की मोमबत्ती की दुकानों या नियमित रूप से धन का विनिमय करने वाले संस्थानों और व्यक्तिगत बैंकों में हमें चाँदी के बदले पैसा मिल जाता था। मेरी माँ मोल-भाव करना नहीं पसन्द करती थीं। किन्तु चूँकि चाँदी का एक छोटा सा टुकड़ा भी हमारे पूरे परिवार के मासिक बजट को प्रभावित करता था, इसलिये वे विनिमय के भावों को कई स्थानों पर तुलना करके देखती थीं। कुछ सौ सिक्के अधिक नकद प्राप्त होने की आशा में वे विनिमय के भाव-ताव के सम्बन्ध में कुछ संकोच के साथ जोर देती थीं। कभी-कभी दो स्थानों पर जानकारी प्राप्त करने के बाद समान्य विनिमय का भाव गिर जाता था, जिसका अर्थ था कि वे व्यर्थ में इधर-उधर भटकतीं और उन्हें मोल-भाव में कई सौ की हानि उठानी पड़ती।

जैसे ही वे नकद पैसा लेकर घर पहुँचतीं, उनकी वास्तविकता चिन्ताएँ सामने आ जातीं। मेरी दूसरी बहिन उन्हें तुरन्त एक कटोरा भर चाय एक चीनी मिट्टी के बर्तन

में भरकर देती थीं, जिसे वह गर्म रखने के लिये चूल्हे के पास पहले से ही रख देती थीं यह चाय कड़ी होती थी और कभी-कभी उसका स्वाद अच्छा होता था। माता की विचार शृंखला में कोई बाधा न डालने के कारण मेरी बहिन चुप रहती थी। वह चुपचाप बाहर निकलकर दरवाजे पर पंजों के निशान गिन लेती थी और माँ के बजट बनाते समय उन्हें उनकी सही-सही याद दिलाती थीं। चाय पीने के बाद माँ अपनी अधबँहीं कमीज उतार देती थीं और "खाङ" पर पालथी मारकर बैठ जाती थीं। मेरी माँ हिसाब के लिये गिनती की पट्टी से काम लेने के बजाये सिक्कों से काम लेती थीं। वे बड़े सिक्के हजार के लिये और छोटे सिक्के सैकड़े के लिये प्रयोग में लाती थीं। सबसे पहले वे कर्ज जोड़ती थीं। मन में ही गिनती गुनगुनाते हुए अपने हाथ में वे कुछ सिक्कों को तौलती थीं। और अपने बाएँ हाथ की ओर एक ढेर बनाकर रख देती थीं। जब वे अपने दाहिने हाथ के ढेर को देखती थीं (जो रोज के खर्च के लिये था) कि वह बहुत छोटा हैं, तो अनमनी सी कुछ सिक्के बायीं ओर से उठा लेती थीं, यह सोचते हुए कि सूखे पदार्थों की दुकान के मालिक से कुछ मीठी-मीठी बातें कर लेने पर शायद इस माह उधार खाते में वह कुछ कम पैसा अदा कर सकेंगी। किन्तु ऐसे विचार से उसकी हथेलियों में पसीना आने लगता था और वे तुरन्त उन सिक्कों को अपनी बायीं ओर रख देती थीं। वे अपने उधारदाताओं से विशेष उदारता के लिये अनुरोध करना नहीं पसन्द करती थीं। उनका विचार था कि उधार वापस कर देना चाहिए और पूरा-पूरा हिसाब कर लेना चाहिए; दुकान के मालिक की कोई घुड़कन सुनने के बजाये यह अच्छा होगा कि उनके पास एक पैसा भी न रह जाये।

थाएफिङ विद्रोह, फ्रांसीसी और अँग्रेजी सेनाओं के हमले और 1894 के चीन-जापान युद्ध के पश्चात न केवल विदेशी लोगों ने सम्राट और मानचू सेना के प्रति अहंकार और अनादर का व्यवहार करना आरम्भ कर दिया था, अपितु शानतुङ की सूखे पदार्थों की दुकानों और शानशी के व्यक्तिगत बैंकों ने भी ध्वजवाहक खरीदारों के प्रति अपना व्यवहार कुछ अशिष्टतापूर्ण बना दिया था। अपनी आँखें फैलाकर वे मानचू ध्वजवाहकों पर इसलिये ताना मारते थे कि उन्होंने अपने खाने के पैसे अदा नहीं किए और यह धमकी भी देते ये कि उन्हें आगे से कोई उधार नहीं दिया जायेगा। यदि उनमें से कोई जमा हुआ सोयाबीन पनीर का एक टुकड़ा भी खरीदना चाहता, तो उसका भुगतान नकद ही करना आवश्यक था। यद्यपि मेरी माँ घरेलू या अन्तरराष्ट्रीय मामलों से पूर्णतया अपरिचित थीं, किन्तु वे अपने शरीर की हड्डियों में राजनीतिक परिवर्तनों का आभास पा रही थीं। जब वे इस स्थिति पर मेरे पिता के साथ कुछ बात करतीं तो वे एक मानचू ध्वजावाहक सिपाही के नाते, जिसे केवल शाही नगर की रक्षा करने का पावन कर्त्तव्य सौंपा गया था, केवल विनम्रतापूर्वक मुस्करा देते थे और बड़े शान्त भाव से कहते थे, "पहले उन्हें ऋण का भुगतान कर

दो।"

बिना भुगतान किए हुए ऋण को इंगित करने वाला बायी ओर का ढेर दाहिनी ओर के ढेर से बहुत बड़ा होता था। जैसे ही वे बैठतीं वैसे ही दुविधा भाव के कारण बड़ी व्यग्र तथा स्तब्ध हो जातीं और उनके माथे पर पसीने की बूँदें निकल पड़तीं। अन्त में मेरी दूसरी बहिन बीच में पड़कर कहती : "दादी! उनका उधार अदा कर दो, इससे आपको राहत मिलेगी। इस महीने हम लोग बालों के रिबन, पाउडर, क्रीम आदि खरीदे बिना ही रह लेंगे, हम अग्निदेवता के समक्ष कई बार झुककर क्षमा माँग लेंगे और उनसे यह कहेंगे कि अब उनके लिये केवल एक ही धूपबत्ती जलाई जा सकेगी क्योंकि हमें पूजा के खर्च में कटौती करनी पड़ रही है।"

माँ ठण्डी साँस भरकर कहतीं, "आह! मैं अग्निदेवता के प्रति कोई अनुचित कार्य करना सहन नहीं कर सकती।"

"किन्तु अब यदि हमारे लिये सभी परिस्थितियाँ कठिन होती जा रही हैं तो सचमुच मैं यह सोच भी नहीं सकती कि अग्निदेवता हमें दोषी ठहरा सकेंगे।" मेरी दूसरी बहिन अपनी राय प्रकट करती। "अब हमें सोयाबीन का दूध अधिक पीना चाहिए और ठोस भोज्य पदार्थों का प्रयोग कम करना चाहिए। यदि हम कटे हुए प्याज के टुकड़ों के साथ सोयाबीन पनीर अधिक खायें और व्यंजनों की संख्या कम कर दें तो इससे ही काफी बचत हो जायेगी।"

माँ को इन बातों से थोड़ा सन्तोष मिलता। वे कहतीं, "तू बहुत बुद्धिमान लड़की है। ठीक है, हम अपने खर्चे में कटौती करेंगे। अब तुम यहाँ से जाओगी या मैं उठूँ?"

"दादी, आप आराम कीजिए, मैं जाती हूँ।"

मेरी माँ सिक्कों और कागज के नोटों को कई हिस्सों में अलग-अलग बाँट देतीं और मेरी बहिन को देती हुई कहतीं, "जैसे ही तुम यह पैसा उन लोगों को भुगतान कर दो तुरन्त वापस आ जाओ। मैं जानती हूँ, तुम्हारे बालों में अब भी गोटा लगा है, किन्तु अब तुम बच्ची नहीं रह गयी हो। जब तुम प्येनईफाङ रेस्तराँ जाना तो मैनेजर वाङ को अपनी नाक न खींचने देना, उससे साफ कर देना कि अब तुम बड़ी हो गयी हो।"

"हेई! मैनेजर वाङ तो अब लगभग सत्तर वर्ष का बूढ़ा है। इससे क्या फर्क पड़ता है!" यह कहते हँसते हुए मेरी दूसरी बहिन सावधानी के साथ पैसा लेकर बाहर चली जाती। जब कोई बूढ़ा व्यक्ति किसी बच्चे की नाक को अपने अँगूठे और तर्जनी से पकड़कर हिलाता है तो वह एक स्नेह सूचक व्यवहार माना जाता है।

मेरी बहिन के चले जाने के बाद मेरी माँ खाङ पर रखे हुए पैसे के उस छोटे से ढेर की ओर टकटकी लगाए सोचती रहतीं कि इसे महीने के अन्त तक किस प्रकार चलाया जा सकेगा। क्योंकि वे सिलाई कर सकती थीं, कपड़े धो सकती थीं और

कठिन परिश्रम करने के लिये भी तैयार थीं, इसलिये बहुधा वे मैनेजर वाङ जैसे पुराने मित्रों से यह पूछने का विचार मन में लाती थीं कि क्या उनके योग्य कोई काम है जो पर्याप्त धनोपार्जन करा सके जिससे उनके परिवार को सोयाबीन के दूध के खर्च पर कटौती न करनी पड़े।

मेरी बहिन का भी लगभग ऐसा ही विचार था और उसके पास भी कुछ ऐसे गुण थे जैसे कपड़े के जूतों के तल्ले बनाना, मोजों में प्योंदे लगाने से लेकर कढ़ाई करना और बटन बन्द करने का काज बनाना। यह भी हो सकता है कि वह ऐसे भी किसी आदमी का काम करे जिसने उसकी नाक घसीटी हो, जैसे मैनेजर वाङ या बकरे का गोश्त काट कर बेचने वाले चाचा चिन। यद्यपि मैनेजर वाङ एक हान चीनी थे और चाचा चिन मुसलमान, फिर भी हमारे परिवार के साथ उनके बड़े अच्छे सम्बन्ध थे और इसलिये उनमें से किसी के भी घर का काम करने में कोई अपमानजनक बात नहीं थी।

इसके अतिरिक्त मेरी सबसे बड़ी बहिन ने उसे एक भेद की बात बताई थी कि जब चाचा चिन ने उसके श्वसुर को दो मोटी-मोटी भेड़ें भेंट की थीं, तो उन्होंने चार औंस चाँदी माहवारी वेतन का एक रिक्त पद प्राप्त करने में चाचा चिन की सहायता की थी। दूसरी बहिन को यह सुनकर आश्चर्य हुआ। उसने कहा, "चाचा चिन? किन्तु वे तो मुसलमान हैं।" सबसे बड़ी बहिन ने कहा, "यह सही है! किन्तु इस बात का ढिंढोरा न पीटना। यदि बड़े अधिकारी यह जान जायेंगे तो मेरे श्वसुर को निश्चित रूप से नौकरी से निकाल दिया जायेगा।" दूसरी बहिन ने इस बात को अपने तक ही सीमित रखा और मेरी सबसे बड़ी बहिन के श्वसुर को अपनी नौकरी से हाथ नहीं धोना पड़ा।

मेरी छोटी बहिन के मन में इस कहानी ने यह विचार पक्का कर दिया कि मानचू, हान और मुसलमान सभी एक बड़े परिवार के सदस्य हैं और यदि उनकी इच्छा हो तो वे एक दूसरे का कार्य कर सकते हैं। वह यह भी सोचने लगी कि जब कुछ भेड़ों के व्यापार से राजकीय सेवा में कोई पद प्राप्त किया जा सकता है तो एक ऊँट आपको राजकुमार भी बना सकता है। कुछ दिनों बाद जब मुझे अधिक सांसारिक ज्ञान प्राप्त हुआ तो मैंने यह अनुभव किया कि मेरी दूसरी बहिन के विचारों में अत्यधिक समझदारी थी।

किन्तु मेरी बुआ मेरी माँ और दूसरी बहिन को बाहर काम पर जाने से बिल्कुल रोके थीं। उनका मैनेजर वाङ या मिस्टर चिन से कोई विरोध नहीं था, बल्कि इसके विपरीत उनके साथ उनका लेन-देन हम लोगों से कहीं अधिक था। जब कभी वे अतिथियों को आमंत्रित करतीं, तो प्येनईफाङ रेस्तराँ से पके हुए गोश्त के सूचओ फैशन के डिब्बे माँगना न भूलतीं और बादलों से घिरे आकाश अथवा वर्षा के दिनों

में मिस्टर चिन की दुकान से मन्द आँच में पका बकरे के पेट या गर्दन का अच्छे से अच्छा गोश्त अवश्य मँगातीं। हम यदि इतनी अच्छी चीजें मँगा सकने की स्थिति में भी होते, तो उन्हें खाने के आदी नहीं थे।

मेरी बुआ का मुख्य सिद्धान्त था कि किसी भी सम्भ्रान्त महिला को किन्हीं दूसरे लोगों के लिये सिलाई या धुलाई जैसे शारीरिक श्रम के कार्य नहीं करने चाहिए। वे कहती थीं, "अगर तुम जाकर ऐसे कार्य करने लगो तो 'तीन नदियों वाली काउण्टी' की बूढ़ी नौकरानियों और तुम में क्या अन्तर रहेगा?" वास्तव में मेरी माँ जानती थीं कि जो बूढ़ी नौकरानियाँ पेइचिङ में "तीन नदियों वाली काउण्टी" से आती थीं, वे निर्धनता के कारण कोई काम ढूँढ़ने के लिये विवश थीं और जैसे सम्राट की पुत्रियाँ जन्मजात राजकुमारी होती हैं उसी प्रकार भाग्य ने उन्हें नौकरानी बनने के लिये ही पैदा किया था। किन्तु मेरी माँ उनके सामने ऐसा नहीं कह पाती थीं। इसके बजाये मेरी माँ इसे हँसकर टाल देतीं और इस विषय पर फिर उनसे चर्चा नहीं करती थीं।

उन चिन्ताओं से भरे दिनों में पिता का वेतन-भत्ता इकट्ठा कर लेने के बाद यदि मेरी माँ को यह पहले ही ज्ञात हो जाता था कि कुछ दिनों बाद उनके पड़ोसी चाङ की पुत्री का विवाह होने वाला है या ली के पुत्र की पत्नी आने वाली है तो वे न जाने कितने गर्म चाय के प्याले पी जाया करती थीं। ऐसे समय पर वे कभी भूखी नहीं रहती थीं बल्कि सदा अपने को प्यासा महसूस करती थीं। केवल मेरी बुआ से बात करने के अतिरिक्त वे पूरे दिन कभी मुस्कराती नहीं थीं, बेचारी मेरी माँ!

मैं नहीं जानता कि जब मेरी माँ नौजवान थीं, तब वे कैसी लगती थीं। चूँकि मैं उनकी चालीसवीं वर्षगाँठ के बाद पैदा हुआ था, इसलिये मुझे उनकी वृद्धावस्था का पुत्र माना जाता था। किन्तु जब से मैंने होश सम्भाला और उस दिन तक जब उनकी मृत्यु हुई, मैंने सदा यह विश्वास किया कि मेरी माँ बीस या तीस वर्ष की आयु में मेरी सबसे बड़ी बहिन के समान ही सुन्दर रही होंगी। लगभग पचास की होने पर भी वे इतनी निर्मल और सम्मानित थीं कि उनको देखने से यह जान पड़ता था कि जीवन में उन्हें कभी एक दिन का भी कष्ट उठाना नहीं पड़ा होगा।

मेरी माँ बहुत लम्बी नहीं थीं, लेकिन चूँकि वे अपने को सम्भाल कर रखती थीं इसलिये वे छोटी भी नहीं जान पड़ती थीं। उनका रंग साफ था और चाहे वे प्रसन्न हों अथवा उदास, सदा ही उनके चेहरे से शान्ति झलकती थी। अकेले उनके चेहरे पर छोटी सीधी नाक और काली चमकती आँखों, जो कभी तिरछी नहीं होती थीं, को देखकर सभी यह कह सकते थे कि मेरी माँ पूर्ण रूप से एक नैतिक चरित्रवान महिला हैं, जिनके मन में रत्तीभर भी किसी के प्रति कोई दुर्भावना नहीं है। पहली दृष्टि में तो ऐसा लगता था कि उनके शरीर में शक्ति नहीं है, लेकिन ढेर सारे कपड़े धोते

हुए देख लेने के पश्चात आप यह मत बना सकते थे कि वे चाहे कितना ही हतोत्साहित रहीं हों वे अपने उत्तरदायित्व से भागती नहीं थीं।

सच ही जिस दिन मेरा जन्म हुआ था, वे बिल्कुल टूटी सी थीं और उनके होंठ पीले हो गए थे और मेरे जन्म के बाद अपने को रोक नहीं सकीं और पुनः चिड़चिड़ाने लगीं। वे सामान्य परिस्थितियों में कभी खुशी या शोक के अवसरों पर लोगों के यहाँ उपस्थित रहना न भूलती थीं, चाहे उनकी कुछ भी चिन्ताएँ या परेशानियाँ रही हों। अब चूँकि उनका स्वयं का प्यारा पुत्र पैदा हो गया था, इसलिये उनके तमाम मित्र और रिश्तेदार शीघ्र ही आने वाले थे। उन्हें चिन्ता थी कि वह किस प्रकार उनका आतिथ्य सत्कार कर सकेंगी। मेरे पिता अब भी ड्यूटी पर थे और उनका पहले महीने का वेतन भत्ता भी अभी नहीं मिला था। मेरी माँ बुआ जी से सहायता माँगने में संकोच कर रही थीं। मेरी दूसरी बहिन से परामर्श करना व्यर्थ था क्योंकि वह अभी छोटी बच्ची ही थी। उसने अपने बगल में पड़े हुए एक अत्यन्त दुर्बल और पतले शिशु की ओर एक बार देखा जिसके कारण उसका जीवन भी समाप्त होते-होते बचा था। यह देखते ही उन्होंने साहस खो दिया और जोर से रोने लगीं।

3

दूसरे ही दिन प्रातः मेरी मामी मेरे ममेरे भाई फूहाए के साथ बड़े ताम-झाम के साथ आ पहुँचीं। मैं यह कभी न जान पाया कि उन्हें मेरे जन्म की सूचना कैसे प्राप्त हो गयी। फिर भी किसी न किसी समय तो मामी को आना ही था। उन दिनों की रीति के अनुसार जो स्त्री प्रसूतिगृह में होती थी, उसकी देखभाल उसके अपने परिवार के सदस्यों को ही करनी पड़ती थी। यह उस बात का एक और प्रमाण है कि किसी के यहाँ कन्या का जन्म होने का अर्थ था धन की क्षति। दुल्हन के परिवार को पूरे वर्ष के लिये कपड़ों की व्यवस्था करनी पड़ती थी, सोने, चाँदी, जवाहरात के आभूषण, सन्दूक, अलमारी, मेज, कुर्सी, पक्षियों के पंख से बने डस्टर बनवाने पड़ते थे और साथ ही बच्चा होने तथा उसके बाद भी किसी को उसकी देखभाल के लिये रखना पड़ता था।

मामी छोटे कद की महिला थीं किन्तु उनका खाँसना बहुत तेज और गुंजायमान होता था। सर्दी के दिनों में वे दमा की बीमारी से पीड़ित रहती थीं और तब वे पूरे मौसमभर खाँसती ही रहती थीं। जब उनका खाँसना थोड़ा सा रुकता था, तो वे थोड़ी देर अपना हुक्का गुड़गुड़ातीं और फिर खाँसने को तैयार हो जाती थीं। अभी वे और फूहाए हमारे घर से लगभग आधा ली दूर पर ही थे कि मेरी दूसरी बहिन ने माँ से

कहा : "मामी आ रही हैं, मामी आ रही हैं!" मेरी माँ सोचती थीं कि मामी का इस प्रकार खाँसना केवल अपने को बचाए रखने का एक गुण है, तो भी उन्होंने मुस्कराते हुए उनका स्वागत किया।

जोरों की सर्दी और हवा का साहस के साथ सामना करते हुए मेरी मामी पहली रिश्तेदार थीं, जो मेरे जन्म के बाद हमारे घर आई। उन्होंने मेरी माँ को यह दिखाने का प्रयास किया कि उनके अपने पक्ष मे परिवार के सदस्य मेरी माँ की कितनी चिन्ता करते हैं। मामी के आगमन ने यह सिद्ध कर दिया कि परिवार की विवाहिता पुत्रियों का अर्थ किसी बर्तन से फेंके गए गन्दे जल से कहीं अधिक है। मेरी माँ कुछ बोलने का प्रयास करते हुए होंठ हिला रही थीं, किन्तु मेरी बहिन ने कुछ नहीं सुना और मामी का स्वागत करने के लिये तेजी से दौड़ पड़ी।

ममेरे भाई फूहाए और दूसरी बहिन ने बूढ़ी महिला को सहारा दिया और उनको बाहरी फाटक से अन्दर के आँगन तक लाने में लगभग बीस मिनट लग गए। दूसरी बहिन ने उन्हें एक हाथ से सहारा दिया और दूसरे हाथ से उनके खाँसने पर उनकी पीठ सहलाती रही इसलिये वह उनका हुक्का और सुनहरा खाने का डिब्बा (जिसमें कुछ खाँड़ और अण्डे थे) और एक पैकेट में बँधे दाल-चीनी के कुछ केक तथा आटे के लड्डू लाने में फूहाए की सहायता नहीं कर सकी।

अन्त में थोड़ा दम लेते हुए मामी ने धीरे-धीरे कुछ शब्द कहे। ममेरे भाई ने खाने का डिब्बा और पैकेट मेरी दूसरी बहिन को दे दिया और अपनी माँ को मेरी बुआ से भेंट कराने ले गए। अपनी साँस की चिन्ता न करते हुए मामी ने यह याद रखा कि पहले किससे मिलना चाहिए। वह इस बात से भी पूरी तरह सावधान थीं कि खाने की चीजें पहले दूसरी बहिन को दे दी जायें जिससे कि कहीं बुआ उन पर बलपूर्वक अपना अधिकार न कर लें। बुआ के शिष्टाचार में कोई कमी नहीं थी। किन्तु जब कभी वे सुनहरा खाने का डिब्बा और केक का पैकेट देख लेती थीं तो उनके मन में यही विचार उठता था कि वे वस्तुएँ उन्हें ही मिलनी चाहिए।

मेरी बुआ से मामी की भेंट होना केवल एक शुद्ध औपचारिकता थी। केवल थोड़ा खाँसते हुए उनसे मिलकर शुभकामनाएँ अर्पित करना आवश्यक समझती थीं और इसी से उनका उद्देश्य पूरा हो जाता था। मेरी बुआ के लिये उस समय केवल मुस्करा देना ही पर्याप्त था। किन्तु चूँकि वहाँ ममेरा भाई फूहाए था, इसलिये उन्हें उनका विधिवत स्वागत करना पड़ा।

हमारे तमाम सम्बन्धियों में ममेरा भाई फूहाए सबसे अधिक लोकप्रिय था वह कद में छोटा किन्तु हृष्ट-पुष्ट, दृढ़ किन्तु शिष्ट, चतुर किन्तु ईमानदार था। उसका चेहरा गोल, रंग हल्का, आँखें बड़ी-बड़ी तथा पलकें दोहरी थीं। उसके बोलने से पहले ही आप यह अनुमान कर सकते थे कि वह कोई चमत्कारपूर्ण एवं विवेकपूर्ण बात

कहने जा रहा है। जब वह बोलता था तब उसकी आँखें चमक उठती थीं और चेहरा मुस्कराता सा रहता था। यद्यपि वह सचमुच चमत्कारपूर्ण बातें करता था, तो भी उससे किसी की भावनाओं को आघात नहीं पहुँचता था। यद्यपि वह अच्छे मस्तिष्क का व्यक्ति था, किन्तु डींग कभी नहीं मारता था। उसके माथे के ऊपर की चमड़ी बहुत काली थी तो भी वह ऐसा स्वस्थ और सजीव दिखलाई पड़ता था जैसे कि नए वर्ष की तस्वीरों में बना हुआ कोई नीले सिर वाला बच्चा हो। वह कढ़ा हुआ एक बड़ा चोगा पहने था, जो न तो कसा था और न ढीला और जिसके कारण ऊपर से देखने में वह एक शान्त, गम्भीर एवं सभ्य शहरी जान पड़ता था।

किसी का औपचारिक रूप से अभिवादन करने का उसका ढंग देखने योग्य था। उस समय वह आपकी आँखों में आँखें डालकर देखता, फिर अपना सिर झुकाते हुए दो पग आगे बढ़कर सीधे आपके सामने खड़ा हो जाता। अपने दोनों हाथ एक घुटने पर रख लेने के बाद वह झुक जाता, आधा घुटना झुकाते हुए एक पाँव सामने रखकर वह आपके सामने नत मस्तक होता। कुछ क्षणों तक वह इसी स्थिति में रहता जैसे कि वह श्रद्धा की बड़ी गम्भीर मुद्रा में हो। अपने इस प्रकार के हार्दिक तथा घनिष्ठतापूर्ण प्रणाम के बाद वह बोलता, बुआ जी! आप का स्वास्थ्य कैसा है?" इसके पश्चात वह फुर्ती से पीछे हट जाता और सीधा होकर सावधानी से एक ओर खड़ा हो जाता और अपने हाथ पीठ की ओर कर लेता। जिन वृद्ध महिलाओं के प्रति वह इस प्रकार सम्मान प्रदर्शित करता वे सदा झुककर उसके ऐसे शिष्टाचार का स्वागत करतीं और मन ही मन कहतीं : "काश! मेरा लड़का भी ऐसे ही उत्तम व्यवहार वाला होता!"

फूहाए, चाहे लोगों का स्वागत करता हो या बैठा हो या चल रहा हो या घोड़े पर सवारी कर रहा हो, वह सदैव आकर्षक जान पड़ता था। उस समय वह और भी भला जान पड़ता था जब रणकला का प्रदर्शन करता हुआ बच्चों के मनोरंजनार्थ एक पैर पर खड़ा चकोर की या घोड़े की काठी पर बैठने की मुद्राएँ दिखाता था।

ममेरा भाई फूहाए एक सच्चा मानचू ध्वजवाहक था, जिसे घुड़सवारी तथा निशानेबाजी की कला में दक्षता प्राप्त थी। इस कला में दो सौ वर्षों के बीच विशेष प्रगति हुई थी और उसमें अनेक प्रकार के हान, मँगोली तथा मुस्लिम रीतियों को अपना लिया गया था। वह लेखनी और तलवार दोनों ही में सिद्धहस्त था। सांस्कृतिक रूप से उसमें मानचू और हान गुणों का मिश्रण था। वह एक अच्छा धुड़सवार और धनुष चलाने वाला था तथा कहानियों के कुछ पद (किन्तु केवल कुछ ही) संगीत के साथ गा भी सकता था। वनचाओ दर्रा नामक आपेरा के वाङ स्कूल के भाषान्तर की कुछ पँक्तियाँ भी वह गा सकता था।

वह कुछ-कुछ रेखाएँ खींचकर शकुन निकालना और लोगों की जन्मपत्री बनाना

भी जानता था। वह कबूतर, मधुर गीत गाने वाले पक्षी, खच्चर तथा चीन की सुनहरी मछली पालना जानता था, किन्तु ऐसे किसी प्राणी को पालता नहीं था। उसको करने के लिये अनेक अधिक महत्वपूर्ण कार्य भी थे, जैसे कफन पसन्द करने में किसी सम्बन्धी की सहायता करना और किसी मित्र को किसी बावर्ची से परिचित कराना, जिनके कारण उसे अपने आमोद-प्रमोद के लिये कोई समय न मिल पाता था। यद्यपि त्वोफू अपने को कबूतर पालने-उड़ाने और बाजों को अभ्यास कराने में अत्यन्त योग्य समझते थे, किन्तु जिस समय उनको फूहाए मिल जाता तो वे इस कार्य में अपने को उससे पराजित मानकर यह सोचने लगते कि उन्हें अपने सभी कबूतरों को, जिन्हें वे "उड़ती हुई चाँदी की ईंटें" कहा करते थे, किसी भी मूल्य पर बेच देने का निर्णय कर लेना चाहिए।

ममेरा भाई फूहाए जुआ खेलने, पासा खेलने, कपों के नीचे पासे का अनुमान लगाने, ताश में चाँस खेलने, गुट्टी खेलने, ताश खेलने या गेंद खेलने में निपुण था। किन्तु वह कभी पैसा कमाने के लिये नहीं खेलता था। जब बूढ़ी स्त्रियों को ताश खेलने में किसी खिलाड़ी की आवश्यकता पड़ती, तो वह केवल आनन्द के लिये उनका साथ देता था। वह कभी ज्यादा जीतता नहीं था और अधिक हारता थी न था। यदि वह कुछ सौ (रुपये) नकद जीत लेता तो उनसे बच्चों के लिये मिश्रीयुक्त सेम, या बड़े-बड़े खट्टे बेर खरीद लेता था।

वास्तव में यह पूर्ण रूप से अनुभवी बैनरमैन कदाचित आधा या एक तिहाई बैनरमैन था। ऐसा उसके पूर्वजों के कारण न था। वह कुछ साधारण मानचू भाषा जानता था ओर सदा ही बोलने में तथा कभी कुछ लिखते समय चीनी भाषा (हान भाषा) का ही प्रयोग करता था। वह न तो क्लासिकी कविता लिख सकता था और न औपचारिक निबन्ध या राजनीतिक प्रवचन ही लिख पाता था। यदि उसे किसी छोटे गीत के लिखने की आवश्यकता पड़ती या नए वर्ष की दो पँक्ति का छन्द, तो वह मानचू भाषा के प्रयोग की सम्भावना पर विचार किए बिना सदा चीनी भाषा में ही सोचता, जब उसके सामने चीनी और मानचू दोनों ही भाषाओं में लिखी कोई समारोह सम्बन्धी धातु की बनी प्लेट पड़ जाती तो वह चीनी (हान) रेखाक्षरों की सुन्दरता तथा स्पष्टता की मन ही मन प्रशंसा करता, किन्तु अपनी आँखों के एक कोने से मानचू शब्दों को भी केवल देख लेता था जैसे कि वह उनसे कुछ दूरी बनाए रखना चाहता हो।

फूहाए पेइचिङ बोली इतनी अच्छी तरह बोलता था कि लोग यह विश्वास कर लेते थे कि वह उस महान भाषा के प्रवर्तकों में से एक है ओर यदि ऐसा नहीं भी है तो कम से कम उसे पेइचिङ बोली के रचियता होने के सम्मान का भागीदार अवश्य होना चाहिए। कारण यह कि उसके पूर्वजों ने न केवल मानचू वाक्यांशों को

हान भाषा में प्रचलित किया था, अपितु उनकी प्रवाहपूर्ण रोचक शैली की विकसित भी किया जो उनकी पीढ़ी के समय में इतनी अधिक प्रवाहपूर्ण तथा चित्रात्मक बन गयी कि कभी-कभी अन्य प्रान्तों के लोग उसे समझने में कठिनाई का अनुभव करते थे।

सबसे बड़े आश्चर्य कि बात थी फूहाए का घर में रंग-रोगन करने वाला कारीगर होना। यद्यपि उसके पिता अर्थात मेरे मामा तीसरी श्रेणी के कर्नल थे, जो चमकीले नीले बटन वाली सरकारी टोपी पहने रहते थे; लेकिन चूँकि उनका बेटा फूहाए घर में रंग-रोगन करने वाला कारीगर बन गया था, इसलिये उन्हें अर्ध-ध्वजवाहक से अधिक कुछ नहीं कहा जा सकता था।

मेरे यही मामा मेरी सबसे बड़ी बहिन के विवाह के मध्यस्थ बने थे। यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि मेरी बहिन की सास एक वाइकाउण्ट की पुत्री और एक कैप्टन की पत्नी थीं, जो अपने पुत्र का विवाह एक मानचू सैनिक की कन्या के साथ कदापि करने को तैयार न होतीं भले ही वह कितनी सुन्दर या चतुर क्यों न होती। यहाँ पर मेरे मामा की बटनदार सरकारी नीली टोपी ने मामला सरल बना दिया। मेरी बहिन के श्वसुर मात्र चतुर्थ श्रेणी के अधिकारी थे। मेरी बहिन के विवाह के अवसर पर उसको ससुराल पहुँचाने का कार्य मेरे मामा को सौंपा गया था। वे अपने साथ चमकीली बटनदार नीली टोपी पहने एक अन्य कर्नल तथा दो लाल बटनवाली टोपी पहने दो अन्य अधिकारियों* को भी ले गए थे। इन चार अधिकारियों के शामिल होने से, जो नीली और लाल बटनों वाली मोरपंख लगी टोपियाँ पहिने थे, दुल्हन की बारात अत्यन्त असाधारण बन गयी थी।

मेरी बहिन की सास ने प्रारम्भ में यह योजना बनाई थी कि दूल्हे की बारात का प्रतिनिधित्व करने के लिये लाल बटनों वाली टोपियाँ पहने चार अधिकारी आमंत्रित किए जायें; किन्तु दुल्हन की प्रभावशाली बारात सजाने के सम्बन्ध में उन्हें हमारी क्षमता पर सन्देह था, इसलिये उन्होंने किसी दुखद लज्जास्पद स्थिति से हम लोगों को बचाने हेतु पंचम श्रेणी के चार अधिकारियों को आमंत्रित कर दिया था। जैसा कि बाद में जाहिर हुआ, हमने स्पष्ट रूप से एक अधिक उच्च प्रदर्शन प्रस्तुत किया जो हमारे लिये अति सन्तोषजनक था। इस हार के कारण, मेरी बहिन की सास को मेरी माता से बड़ी विनम्र होकर बात करनी पड़ती थी। और इस विजय के पश्चात मेरी बुआ बड़े पवित्र भाव से यह कहने लगीं कि मेरे मामा (वे जो एक हान चीनी हो सकते थे) द्वितीय श्रेणी के अधिकारी रह चुके थे।

वर्षों बाद, मेरी सबसे बड़ी बहिन ने मुझे चेतावनी दी कि मैं उसकी सास से कभी यह न कहूँ कि मेरा ममेरा भाई फूहाए रंग-रोगन करने वाले कारीगर के रूप में

---

* सर्वोच्च श्रेणी के अधिकारी।

प्रशिक्षणार्थी रहा है। यदि बूढ़ी महिला फूहाए के पूर्व इतिहास को जानती होतीं तो मेरे मामा की वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करवाने की सामर्थ्य व्यर्थ जाती, यद्यपि मेरी बहिन के लिये उसके परिणाम अनिवार्यतः बुरे न होते।

यह फूहाए की दूरदर्शिता थी कि उसने एक व्यवसाय सीख लिया था। हमारे फौजी नियमों के अनुसार, ध्वजवाहक को कोई वास्तविक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं थी। वे अपने मूल ध्वज (बैनर) को त्याग नहीं सकते थे और न पेइचिङ के बाहर यात्रा ही कर सकते थे। यद्यपि किसी बैनरमैन के लिये कोई व्यवसाय सीखने पर कोई बंधन न था, किन्तु जो ऐसा करते थे उनको अधिकाँश व्यक्ति हेय दृष्टि से देखते थे। एक ध्वजवाहक से राजकीय सेना में भरती होने, घुड़सवारी करने, तीर चलाने और छिङ वंश की रक्षा करने की अपेक्षा की जाती थी। तो भी बैनरमैनों की आबादी बराबर बढ़ रही थी और ध्वजवाहक सिपाहियों की कुल संख्या सीमित थी इसलिये रिक्त स्थान, परिवार के दो सबसे बड़े पुत्रों द्वारा भरे जाते थे और आधिकारिक वेतनभोगियों की सूची में बने रहते थे, जबकि तीसरे, चौथे पुत्र बेकार रहते थे*। यदि किसी परिवार में एक से अधिक व्यक्ति बेकार होता था, तो उसके कारण जीवन अत्यन्त कठिन हो जाता था।

इस व्यवस्था ने बैनरमैनों को ऐसा समर्थ बना दिया था कि वे चीन में उत्तर से दक्षिण तक अपना प्रभुत्व स्थापित करके समूचे देश को अपने शासन के अधीन ला सके। लेकिन इसका परिणाम यह भी हुआ कि उनकी स्वतंत्रता और आत्मसम्मान धीरे-धीरे कम होता जा रहा था और उनमें से अनेक को जीवनपर्यन्त बेकारी की स्थिति में रहना पड़ रहा था। इसके साथ ही ऐसे शाही वेतनभोगी लोगों ने, जो कोई काम न करते थे, ऐसे नवयुवकों की सेवा के अवसरों को कम कर दिया जो रिक्त स्थानों की पूर्ति करने की प्रतीक्षा में थे। उदाहरण के लिये मेरी बुआ, जो मात्र एक विधवा थीं, न जाने कितने लोगों का आधिकारिक भत्ता प्राप्त करती थीं।

मेरे तीसरे मामा के पाँच ईमानदार और कुशल योग्य पुत्र थे, जिनमें से किसी को कोई पद प्राप्त न हो सका था। चूँकि वे नगर के बाहर "घनी पर्वत-मालाओं के बीच सम्राट से बहुत दूर" रहते थे, इसलिये ये वीर नवयुवक खेती करते थे और किन्हीं व्यवसायों की शिक्षा प्राप्त करके अपना जीवन बड़े सुख से व्यतीत कर रहे थे। सम्भवतः यही कारण था जिसने फुहाए को भी अपना स्वयं का व्यवसाय सीखने के लिये प्रोत्साहित किया। उसने पूरी स्थिति को भली भाँति समझ लिया था। इस तथ्य ने कि उसके बड़े भाई की नौकरी से चार औंस चाँदी वेतन के रूप में प्राप्त होती थी, उसके स्वयं के अवसरों को उल्लेखनीय रूप से कम कर दिया था। यह बहुत

---

* मानचू बैनरमैन खेती या मजदूरी के कार्य नहीं कर सकते थे। यद्यपि इस समय तक इस नियम का पालन सख्ती से नहीं किया जाता था।

बुरा होता कि अगर उसके जैसा बुद्धिमान और योग्य व्यक्ति सदैव सामान्य नागरिक का ही जीवन व्यतीत करता रहता और कदाचित कभी विवाह योग्य भी न बन पाता।

वह एक असाधारण प्रतिभाशाली घुड़सवार तथा तीरंदाज था। किन्तु अब अपनी इन योग्यताओं को लेकर वह अधिक से अधिक यह कर सकता था कि किसी कुलीन वंशी कुबड़े या अपंग के लिये अपने को स्थानापन्न के रूप में किराए पर दे देता और शाही प्रतियोगिताओं में स्पष्ट लक्ष्य भेदन करके उसके लिये कोई अति लाभप्रद स्थान प्राप्त करता। स्थिति यह थीः उसमें आवश्यक योग्यताएँ थीं किन्तु रिक्त स्थान की पूर्ति करने का कोई जरिया न था। यदि किसी कुबड़े या अपंग व्यक्ति ने कुछ नकद पैसा खर्च किया होता और कुछ तिकड़म लगाई होती, तो वह किराए के इस अचूक लक्ष्य भेदी की सहायता से सेना में भरती होकर शाही भत्ता प्राप्त कर सकता था, फिर भी फूहाए को केवल एक जोड़ा साटन का जूता या कुछ औंस चाँदी ही मिलती।

किन्तु बात अब उसकी समझ में आ गयी थी : इस पर कोई आश्चर्य न होना चाहिए कि फ्रांसीसी और अँग्रेजों की संयुक्त सेनाओं ने पेइचिङ नगर के फाटकों को तोड़ दिया था और शाही य्वानमिङय्वान उद्यान को जला दिया। चीन के लिये शत्रु के आक्रमण का सामना कर सकना कैसे सम्भव होता जबकि उसकी सेना में सुरक्षा बजट पर आश्रित रहने वाली विधवाएँ, कुबड़े और अपंग हों और सेना के कैप्टन व अश्वरोहियों में मेरी सबसे बड़ी बहिन के श्वसुर और उनके बेटे जैसे लोग रहे हों। फूहाए ने कोई व्यवसाय सीखने के लिये अपना मन बना लिया था। इतिहास के कुछ स्थलों पर, फूहाए के समान व्यक्ति सदा ही रहे हैं जो दूसरों की अपेक्षा एक दो कदम आगे की बात सोच सकते थे।

दुर्भाग्यवश फूहाए का बड़ा भाई बीमार हुआ और मर गया। फूहाए ने उस अवसर से लाभ उठाया और उस रिक्त पद को प्राप्त कर लिया। वह निर्धारित घण्टों में अपनी ड्यूटी करता था और अपने बचे हुए समय में पेण्टर का कार्य करता था। इनमें से कोई काम एक दूसरे का बाधक न था। जब उसके मित्रों या सम्बन्धियों को रंगे हुए ताबूत की या शीघ्र विवाहित होने वालों के लिये कमरे सजाने की आवश्यकता पड़ती, तब वे सदा ही उसे बुलाते थे। वह मजदूरी और सामान पर खर्च में उन लोगों के पैसे की बचत करवा देता था और अपना काम अत्यन्त ध्यानपूर्वक करता था।

जब फूहाए रंगसाजी करता था तो लगता था कि जैसे वह भूल गया हो कि उसके पिता बैनरमैन कर्नल हैं और वह स्वयं एक शाही भत्ता पाने वाला मानचू सिपाही है। उसके पेण्टर की साज सज्जा, अपने कार्य के प्रति उसकी सच्ची लगन और अपने वरिष्ठ एवं कनिष्ठ साथियों के प्रति उसके स्नेह इन सबने उसे एक भिन्न व्यक्ति के रूप में बदल दिया था—एक हान चीनी, एक शिल्पी और एक इस प्रकार का

बैनरमैन जिसकी किसी मानचू सम्राट ने कल्पना भी नहीं की होगी।

ममेरा भाई फूहाए "श्वेत कमल सम्प्रदाय" (जो उत्तरी चीन में एक गुप्त संगठन था) का सदस्य था, यद्यपि किसी विद्रोह अथवा साम्राज्य को उलटने के षड्यंत्र में भाग लेने का उसका कोई मंतव्य न था। बल्कि उसने "पूर्ण विरति संगठन" की सदस्यता ग्रहण कर ली थी, जो केवल अपने मदिरा और तम्बाकू के प्रयोग पर नियंत्रण रखने के लिये उसी सम्प्रदाय की एक शाखा थी। यदि कभी उसके मित्र मद्यपान अथवा धूम्रपान कर रहे होते, तब उसके लिये अपनी सुँघनी की शीशी से चाय की पत्तियों जैसे रंग की थोड़ी सी सुँघनी निकाल कर अपने नथुनों में डाल लेना ही पर्याप्त था। खानपान में संयम रखने वाले उस जैसे व्यक्ति को अपनी प्रतिज्ञा तोड़ने के लिये कोई विवश नहीं कर सकता था।

फूहाए यह स्वीकार न करना अधिक पसन्द करता था कि वह "पूर्ण विरति संगठन" का सदस्य है, अपितु वह कहता था, "मैं 'श्वेत कमल सम्प्रदाय' का सदस्य हूँ।" "पूर्ण विरति संगठन" तथा "श्वेत कमल सम्प्रदाय" के बीच कुछ न कुछ सम्बन्ध अवश्य था, किन्तु अनेक व्यक्तियों के मतानुसार खानपान में संयम रखने वाले लोग तो मान्य थे जबकि "श्वेत कमल सम्प्रदाय" के सदस्य अपेक्षाकृत भयावह थे।

मेरी माँ ने एक बार उससे कहा था, "फूहाए तम्बाकू और मद्यपान से दूर रहना अच्छा है, किन्तु जब भी तुम 'श्वेत कमल सम्प्रदाय' का नाम लेते हो तो लोग भय खाते हैं।"

तब फूहाए हँसी रोकते हुए बोला था, "महोदया, यद्यपि मैं 'श्वेत कमल सम्प्रदाय' का सदस्य हूँ, किन्तु सम्भवतः मैं कोई विद्रोह नहीं करा सकता।"

माँ ने अपना सिर हिलाते हुए कहा, "हाँ, यह ठीक है। मुझे ऐसी ही आशा है।"

मेरे बहिनोई त्वोफू भिन्न मत रखते थे। वे कई प्रकार से फूहाए का सम्मान करते थे किन्तु एक पेण्टर के रूप में उसका कार्य करना तथा अपने को 'श्वेत कमल सम्प्रदाय' का सदस्य कहना उन्हें नहीं भाता था। त्वोफू फूहाए से एक इंच लम्बे थे, यद्यपि फूहाए उनसे छोटा कदापि नहीं जान पड़ता था, त्वोफू जो बहुत लम्बे नहीं थे, भद्दे जान पड़ते थें उनके सभी कार्य उत्तेजनापूर्ण तथा झटका देने वाले होते थे। जब वे शान्त बैठे होते थे तब अपने लम्बे चेहरे, सीधी नाक और बड़ी-बड़ी आँखों के साथ सुन्दर और प्रतिष्ठित जान पड़ते थे। किन्तु वे ऐसे बालक की भाँति चंचल थे जो यह नहीं जानता कि अपने हाथों या पैरों से क्या करे।

जब त्वोफू पढ़ने की इच्छा करता तो वह "पाँच व्याघ्र सेनापतियों द्वारा पश्चिम में शान्ति की स्थापना" की प्रति उठा लेता। उसकी अलमारी में जो कुछ अन्य पुस्तकें थीं, वे थीं "तीन राज्यों की वीर गाथा", कथात्मक काव्यों के चार पाँच छोटे भाग और

"छः अक्षरों की कविता वाली बालपोथी" जिसे उसने बाल्यावस्था में पढ़ा था। जैसे ही उसने "पाँच व्याघ्र सेनापतियों" को पढ़ना शुरू किया, वैसे ही अपने कबूतरों को बाहर निकालने का विचार उसके मन में आया और पुस्तक को खिड़की की चौखट पर रखकर वह बाहर आँगन में चला गया। कबूतरों से छुट्टी पाकर जब वह लौटा, तो हर जगह पुस्तक की खोज करने लगा और उसे न पाकर अपने पैर पटकने व चिल्लाने लगा। फिर उसने जैसे ही उस पुस्तक को खिड़की की चौखट पर रखा देखा, उसके सम्बन्ध में सब कुछ भूल गया और मन ही मन कुछ कहता हुआ सड़क पर जाती हुई किसी शवयात्रा को देखने बाहर चला गया।

त्वोफू उस "स्वतंत्रता" को बहुत मूल्यवान समझते थे जो उनकी इच्छानुसार उनको सब कुछ करने दे। इस विश्वास के साथ कि यह "स्वतंत्रता" उन्हें अपने पूर्वजों से विरासत के रूप में प्राप्त हुई है और इस प्रकार "अपने बच्चों और अपने बच्चों के बच्चों के उपभोग के लिये" सदा आगे चलती जायेगी।

अतः वे विश्वास करते थे कि फूहाए ने एक रंगसाज के रूप में कार्य करने के कारण अपने ध्वजवाहक के आत्मसम्मान की भावना को त्याग दिया है और अपने को 'श्वेत कमल सम्प्रदाय" का सदस्य कहकर अपनी सहानुभूति विद्रोहियों के साथ सीधे स्थापित कर ली है। त्वोफू जानते थे कि "श्वेत कमल सम्प्रदाय" ने भूतकाल में किसी समय विद्रोह किया था, किन्तु किस वर्ष, यह वे स्मरण नहीं कर पाते थे।

मेरे जन्म के कई माह पूर्व, मेरे मामा जी, त्वोफू तथा उनके पिता, सभी बड़ी उत्तेजनात्मक स्थिति में थे। वे 1898 के सुधारों का प्रबल विरोध कर रहे थे। मेरे मामा का एक अत्यन्त सरल एवं विश्वसनीय तर्क था, "हमें अपने पूर्वजों द्वारा प्रवर्तित नियमों को परिवर्तित नहीं करना चाहिए।" मेरी सबसे बड़ी बहिन के श्वसुर के पास इस आलोचनात्मक टिप्पणी से अधिक उत्तम कुछ भी कहने को न था कि "कोई भी परिवर्तन निकृष्टतर स्थिति की ओर ले जाने वाला परिवर्तन ही होगा।" वास्तव में इन दोनों अधिकारियों में से कोई भी नहीं जानता था कि कौन से नियम परिवर्तन की प्रक्रिया में हैं, किन्तु उन्होंने सुन रखा था कि जब परिवर्तन होंगे तो मानचू बैनरमैन को हटाना पड़ेगा और अपना जीवकोपार्जन स्वयं करना होगा तथा भविष्य में सम्राट का शासन उन्हें किसी प्रकार का भत्ता नहीं देगा।

मेरे ये मामा पचास वर्ष से बहुत अधिक आयुवाले न थे, किन्तु शारीरिक दृष्टि से वे अपनी पत्नी से अधिक हृष्ट-पुष्ट भी न थे। उन्हें अपनी चोटी में तमाम नकली बाल लगाने पड़ते थे, जिससे कि उनमें आवश्यक लम्बाई लाई जा सके। चूँकि वर्षों से उनका दाहिना कन्धा आगे झुक गया था, अतः उनकी चोटी बहुधा बाएँ कन्धे पर लटकी रहती थी जिसके कारण वे एक सेनानी कदापि न लगते थे। सुधारों की घोषणा होने के साथ ही उनका दाहिना कन्धा और आगे झुक गया जिसके कारण

वे एक कटी पतंग की भाँति लगभग तिरछे झुक कर चलने लगे।

मेरी बहिन के श्वसुर अब भी स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त थे। उनकी भाव भंगिमा अत्यन्त आकर्षक तथा रंग लाल था। प्रति दिन सूर्योदय के समय वे अपने पक्षियों के पिंजड़ों के साथ लगभग छः ली तक टहलने जाते थे। यह उनका स्वभाव बन गया था और ऐसी कसरत के बिना वे अपने पूरे शरीर में जकड़न अनुभव करते थे तथा उनकी चिड़ियाँ भी नहीं गाती थीं। इस तथ्य के बावजूद कि वे अभी अपनी युवावस्था में थे और अपने मस्तिष्क में कोई चिंता न रखते थे, उनकी बँधी आय में कमी होने की सम्भावना की सूचना ने उन्हें ऐसा चिन्तित कर दिया कि उनकी खाँसी में संगीतात्मकता की कमी हो गयी।

एक बार वे मेरे मामा जी से भेंट करने आए। अपने पिंजड़े नीचे रखने से पूर्व, उन्होंने पूछा कि यहाँ निकट में कहीं कोई बिल्ली तो नहीं है। यद्यपि सुधार आन्दोलन एक महत्वपूर्ण विषय था, फिर भी यदि कोई बिल्ली उनके एक भी नीलकण्ठ पक्षी को घायल कर देती तो वह एक गम्भीर बात होती। इतना आश्वस्त होने के बाद कि उस स्थान पर कोई बिल्ली नहीं है, उन्होंने अपने पिंजड़े नीचे रख दिए और कुछ शीघ्रता में बोल उठे, "माननीय युन!" मामा जी का कविता लिखने का नाम युनथिङ (मेघ मण्डप) था।

उन दिनों बैनरमैन अपने को बैनरमैन बनाए रखने की जितनी ही अधिक आकांक्षा करते थे और अनगिनत पीढ़ियों तक यह व्यवस्था जीवित रखना चाहते थे, उतना ही अधिक वे हान चीनियों का अनुकरण करने का प्रयास करते थे। सर्वप्रथम उच्च वर्ग के बुद्धिजीवियों ने अपने मूल नामों में काव्यात्मक और संगीतात्मक उपनाम जोड़ने आरम्भ किए। धीरे-धीरे यह विचार नीचे की ओर भी फैलने लगा और यहाँ तक कि शाही सेना के कर्नल तथा कैप्टन भी अपने काव्यमय नाम रखने लगे। यह उनके कपटाचार की उच्चतम सीमा थी।

अपने अतिथि की शंकाओं का अनुमान लगाते हुए, मेरे मामा ने सीधे ही उनसे प्रश्न नहीं किया। उनका पद अपने यहाँ आने वाले अतिथि के पद से ऊँचा था, अतः बड़ी निश्चिंतता का भाव व्यक्त करते हुए जो उन्होंने एक अधिकारी के रूप में कार्य करते हुए एक लम्बे अनुभव के द्वारा प्राप्त कर लिया था, उन्होंने सर्वप्रथम पक्षियों का अवलोकन किया तथा एक पारखी की भाँति उनकी प्रशंसा की। मेरी बहिन के श्वसुर द्वारा दो बार "युनथिङ" कहकर सम्बोधित किए जाने के पश्चात ही वे अन्त में मुख्य विषय पर आए।

"माननीय चङ।" मेरे मामा ने कहा। (चङ छन या स्वामिभक्त अधिकारी बुजुर्ग व्यक्ति का दूसरा काव्यात्मक नाम था।), "मैं भी ऐसी सूचनाओं के कारण भयानक रूप से चिन्तित हूँ। यदि स्वयं पर निर्भर रहने की स्थिति आई तो तनिक मुझे देखें.

.. मैं अभी पचास से ऊपर का हो चुका हूँ, मेरे आधे से अधिक बाल झड़ चुके हैं और मेरे कन्धे प्रतिदिन और अधिक झुकते जा रहे हैं। वे मुझसे क्या चाहते हैं? वे नियमों में सुधार नहीं करना चाहते, वे तो मुझे मार डालने पर तुले हैं।''

''यह सही है।'' माननीय चङ ने अपने गले को खाँसते हुए दो बार साफ किया, किन्तु अपनी स्वाभाविक संगीतात्मकता के बिना। ''यह सही है, इस प्रकार के विचार रखने वालों को काटकर टुकड़े-टुकड़े कर देना चाहिए। माननीय युन, मेरी ओर देखें। मैं एक कानून का पालन करने वाला नागरिक हूँ। मैंने बचपन से ही कभी चाँद-सितारों की माँग नहीं कर। किन्तु मुझे कम से कम अपने कपड़े तो साफ रखने ही चाहिए। क्या मैं गलत कह रहा हूँ? मुझे चावल के साथ थोड़ा भुना हुआ गुर्दा या सुअर का मांस की बोटियाँ तो चाहिए ही और मैं अपने नीलकण्ठ पक्षियों को प्रतिदिन थोड़ा मुलायम बकरे का मांस खिलाए बिना भी तो नहीं रह सकता। क्या मुझे यह सब नहीं करना चाहिए? निश्चय-ही मुझे करना चाहिए!''

''मेरे प्रिय मित्र, हम दोनों ही ने कभी निश्चित सीमा के बाहर कोई काम नहीं किया है।''

''यह सही है। यदि उन्होंने हमारा भत्ता देना बन्द कर दिया तो मैं बाहर जाऊँगा और...बेच दूँगा...'' माननीय चङ ने अपने कान हाथों से बन्द कर लिये और आँखों में आँसू भरकर एक शलजम बेचने वाले की भाँति उच्च स्वर में चिल्ला उठे, ''नाशपाती की भाँति मीठे, यदि ये कड़वे हो तो बदल लें। मैं, मैं...'' वे आगे कुछ कह सकने में शारीरिक रूप से असमर्थ थे।

''माननीय चङ आपकी हड्डियाँ मेरी हड्डियों से कहीं अधिक मजबूत हैं। यदि टूटी मूँगफलियों पर भी उतर आना पड़े, आपके पैसे के लिये अधिक मैं उसे कदापि न बनाऊँगा।''

''माननीय युन, मेरी बात सुनें। क्या हमारी सारी समस्याएँ हल हो जायेंगी यदि वे हम सबको एक-एक सौ मू भूमि बोने के लिये दे दें?''

''यदि आप मुझसे पूछें तो मैं कहूँगा, नहीं। यदि मैं एक फावड़ा या कुदाल किसी तरह उठा भी लूँ तो मुझे विश्वास है कि मैं सीधे अपने पैर के अँगूठे को काट डालूँगा।''

कुछ आगे वाद-विवाद के पश्चात ये दोनों बुजुर्ग सज्जन थ्येनाथाएश्वेन रेस्तराँ चले गए, जहाँ उन्होंने डेढ़ केटी चावल की ''स्प्रिंग साइड ब्रेवरी'' वाली देशी मदिरा तथा साथ में कुछ खाने की वस्तुओं का आर्डर दिया (जैसे कि उबाला हुआ सुअर का मांस तथा अधिक भुने मांस के टुकड़े)। जब वे खा चुके तथा अपनी इच्छा भर मदिरा पी चुके, तो उन्होंने आध घण्टे से अधिक समय इस वाद-विवाद में बिता दिया कि खाने-पीने का बिल किसके हिसाब में लिख दिया जाये; उनमें से कोई भी अपने

साथ कुछ भी पैसे नहीं लाया था और प्रत्येक खाने-पीने का बिल अपने उधार-खाते में लिखवाना चाहता था।

जब मेरा जन्म हुआ, उस समय तक सुधार नियमों पर बहस बन्द हो चुकी थी और सुधारों के कुछ पक्षधर मार डाले गए थे। इससे माननीय युन और चङ के मस्तिष्क शान्त हो गए थे और वे निरन्तर थ्येनथाएश्वेन रेस्तराँ में मिलते रहते थे। किन्तु जब भी वे बाहर किसी शलजम बेचते फेरीवाले को "नाशपाती के समान मीठे, यदि वे कड़वे हों तो बदल लें" की आवाज लगाते सुनते तो हमेशा कुछ लज्जित अनुभव करते। अनुभवी अधिकारी के नाते, उन्हें अपनी मनोभावनाएँ अपने तक ही सीमित रखनी चाहिए थीं।

पुनः पीछे देखते हुए, जब सुधार आन्दोलन का ज्वार अपनी चरम सीमा पर था, फूहाए के प्रति त्वोफू अधिक सम्मान व्यक्त करने लगे और अपना अधिकाँश समय अन्दर एक कोने में बैठकर "छः अक्षरों वाली कविता की बालपोथी" की पँक्तियों को याद करने के प्रयास में व्यतीत करने लगे। उस समय वे बिल्कुल गम्भीर थे जब उन्होंने अपनी पत्नी से कहा, "ममेरे भाई फूहाए में बड़ी दूरदर्शिता है। हमें भी मार्ग ढूँढ़ना चाहिए।"

"प्रयास अवश्य करें। हम किसी न किसी प्रकार अपना काम चलाते रहेंगे।" जब भी किसी कठिन समस्या का सामना करना पड़ता, मेरी बहिन इसी दृढ़ता के साथ उत्तर देती।

"किन्तु मुझे भय है कि इस बार हम नहीं चला पायेंगे।"

"त्वोफू! यदि तुम कुछ जानते हो तो मुझे उस सम्बन्ध में बताओ।" अपने पति को उसके कविनाम से सम्बोधित करना उस शिष्टता तथा वाक्पटुता की अनुभूति कराता था।

"त्वोफू? मुझे बड़ा त्वोफू (सोयाबीन पनीर) कहकर पुकारो।"* वह जोर से हँस पड़े।

"आजकल हमारे कुछ बैनरमैन राजगीरी, बढ़ईगीरी, बावरची तथा स्क्रॉल पर चित्र चिपकाने का काम कर रहे हैं।"

"अच्छा अब आप सोच रहे हैं..." मेरी बहिन मुस्कराई, जैसे कि यदि वे बाहर जाकर कोई धन्धा सीख लें। तो वह बुरा नहीं मानेगी। वह उन स्त्रियों में थी जो प्रत्येक दशा में अपने पति का साथ दे सकती थी।

"मेरे लिये अब प्रशिक्षणार्थी बनने का समय बीत चुका है। जितनी अधिक आयु मेरी हो चुकी है, उस आयु के किसी व्यक्ति को कौन लेगा? सुनो, मेरे लिये सबसे अच्छा यही रहेगा कि मैं कबूतरों का धन्धा करने लगूँ। किसी सीमा तक कबूतर मेरी

---

* यहाँ सोयाबीन पनीर से मतलब है बिल्कुल बेहूदा, निकम्मा।

रुचि के विषय भी है। यदि कोई व्यक्ति किसी विशेष पक्षी में रुचि नहीं दिखाता, तो वह उपहार के रूप में उसे नहीं लेगा। यदि वह उसे पसन्द करता है, तो उसे पाने के लिये दस औंस चाँदी खर्च कर देगा। मुझे बहुतेरे पक्षी बेचने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, यदि प्रतिमाह मैं कुछ अच्छी बिक्री कर सका तो हम दोनों अपनी गाड़ी भली भाँति चला ले जायेंगे।"

"बात तो कुछ ढंग की लगती है!" मेरी बहिन ने उन्हें प्रोत्साहित किया, यद्यपि उसे पूरा विश्वास नहीं था।

त्वोफू ने अपने पक्षियों के समूह को दो दिन तक देखा और शायद कुछ बेमन से बैंगनी-काले सिरवाले पक्षियों का जोड़ा पहली बार बिक्री हेतु निकाला। उनकी अपने पक्षियों से अलग होने की कोई हार्दिक इच्छा न थी किन्तु अब जबकि राजवंश अपने नियमों में सुधार करने वाला था, उनके सामने अपनी कमर कस लेने के अलावा और चारा भी तो न था। जब वे कबूतरों की हाट में पहुँचे, तो सभी पक्षी विक्रेता जिन्हें वे जानते थे एक-एक करके "श्रीमान त्वोफू" कहकर उनका अभिवादन करने लगे और इसके पूर्व कि उन्हें ज्ञात हो सकता, वे दो जोड़ी कबूतर की घण्टियाँ और पौराणिक "अमरपक्षी" के सिर वाले एक जोड़ा चित्तीदार पक्षी खरीद चुके थे। जब वे घर पहुँचे, तो भली-भाँति परीक्षण करने पर ज्ञात हुआ कि उन पक्षियों के सिर पर पंख चिपकाकर उन्हें "अमरपक्षी सिर" का रूप दिया गया था। उन्होंने इस विषय पर अपनी पत्नी से चर्चा करने का साहस नहीं किया और चुपचाप कबूतरों के व्यवसाय में जाने का अपना निर्णय बदल दिया।

सुधार आन्दोलन का प्रबल ज्वार जब कम हुआ, तो त्वोफू ने अपनी ढीली मोटी चोटी खोल दी और अपने बालों की कसी चोटी बना ली, जो शाही गोदाम के पहरेदारों जैसी थी। ये सड़कों पर अकड़ कर अपनी भौंहें चढ़ाए घूमते रहते, जैसे कि वे स्वयं सुधारवादियों का सफाया करने का उत्तरदायी हों। और अब फूहाए के प्रति उनके मन में कोई प्रशंसा का भाव नहीं था। वे अब उसको एक द्विपक्षी व्यक्ति समझने लगे थे; एक ऐसा व्यक्ति जो राजकीय भत्ता उपलब्ध होने पर एक सैनिक था, और जब भत्ता उपलब्ध नहीं हो रहा तो वह एक रंग रोगन करने वाला कारीगर बन गया—उसे एक सच्चा बैनरमैन नहीं माना जा सकता था। इसके अतिरिक्त यह बात भी असम्भव नहीं थी कि वह विद्रोही "श्वेत कमल सम्प्रदाय" का एक सदस्य रहा हो।

आइए, अब हम अपनी कथा की ओर वापस चलें। मेरी मामी जब मेरी बुआ से मिलने गयीं, तो वे और फूहाए घर के हमारे हिस्से में आ गए। उन्होंने मेरी माँ से प्रश्नों की झड़ी लगा दी, जिनका उत्तर मेरी माँ अपनी दुर्बलता के कारण कठिनाई से दे सकीं। यह देखकर दोनों महिलाओं के नेत्र अश्रुपूर्ण हो उठे। अपने आँसुओं

को पोंछने के पश्चात, मामी जी मेरी भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगीं : "कितना सुन्दर बच्चा है! कितनी सुन्दर नाक है इसकी! और इतनी बड़ी-बड़ी आँखें व मोटे-मोटे कान!"

ममेरा भाई फूहाए हँसा। "महोदया, ये छोटे महाशय वैसे ही कुरूप हैं जैसा कि जन्म के समय मैं था। आप इतनी आसानी से यह नहीं कह सकतीं कि एक नवजात शिशु जब बड़ा होगा तब कैसा होगा। कभी-कभी आप वृद्ध महिलाएँ..."कहते हुए उसने बात रोक दी और हँसा।

मेरी माँ ने कोई टिप्पणी नहीं की, केवल रोकते हुए कहा, "फूहाए"।

"हाँ?" उसने तुरन्त उत्तर दिया, यह भली-भाँति जानते हुए कि मेरी माँ बाद में क्या कहेंगी। "आप थोड़ा आराम करें और मुझे स्वयं हर काम देखने दें। कल इसके तीसरे दिन का स्नान हैं और आपके सभी ममेरे-चचेरे आदि भाई, बहिनें और बुआ-चाची यहाँ आएँगे। आपकी छोटी बेटी तम्बाकू के पाइप और चाय आदि भरने का काम कर लेगी और 'लिटिल सिक्स'(मैं अब तक नहीं जान सका कि यह लिटिल सिक्स कौन था) और मैं भोजन बना लूँगा। प्रत्येक अतिथि को पानी मिली दो गिलास मदिरा, एक प्लेट भुनी हुई सेम, एक प्याला गरमागरम मटनयुक्त सिवइयाँ और सिरका-लवण युक्त बन्द गोभी का शोरवा दिया जायेगा। इसका कोई महत्व नहीं कि उसका स्वाद कैसा होगा, कम से कम वह बहुत गरम होगा और उससे भाप निकलती होगी! यह कैसा रहेगा?"

माँ ने सिर हिलाया।

"यदि कोई ताश खेलना चाहेगा, तो मैं हर दाँव में चार सिक्के नकद लगा दूँगा। आपको किसी बात की चिन्ता नहीं करनी होगी। मेरे ऊपर सब छोड़ दीजिए। जब सब समाप्त हो जायेगा, मैं बताऊँगा कि कितना खर्च हुआ है। मैं आपसे वायदा करता हूँ, यह आपके कानों में संगीत सा जान पड़ेगा।" वह अपनी माँ की ओर मुड़ा और बोलाः "मुझे दक्षिणी नगर में कुछ काम है। मैं गोधूलि वेला तक आपको ले जाने के लिये वापस आ जाऊँगा।"

वृद्ध महिला ने कहा कि वे हम लोगों के साथ ठहरना चाहेंगी और नवजात शिशु की माँ की देखभाल करेंगी।

ममेरा भाई पुनः हँसा। "प्यारी दादी, इतना बहुत है। एक बार आपका खाँसना आरम्भ हुआ कि आप थोड़ा विराम के लिये भी नहीं ठहरेंगी। क्या आप उस पूरे समय तक उनसे बैठे रहने की आशा करती हैं?"

मेरी माँ यही शब्द सुनना चाहती थीं। उन्हें विश्राम और नींद की आवश्यकता थी, अपनी भावज की अविराम चलने वाली खाँसी की नहीं।

जब फूहाए चला गया, तब उसकी माँ यह बड़बड़ाए बिना न रह सकीं: "वह

शैतान, वह छोटा शैतान!"

"वह छोटा शैतान" इतना चतुर था कि उसने तीसरे दिन के पूरे स्नान कार्यक्रम को वृद्ध महिला की नियमावली के किसी अधिनियम का उल्लंघन किए बिना बड़ी मितव्ययिता से पूरा किया।

4

मेरी सबसे बड़ी बहिन की चिन्ता दो बातों पर थी। एक तो मेरी माता के स्वास्थ्य और दूसरी मेरे जन्म के तीसरे दिन के स्नान सम्बन्धी उत्सव में भाग लेने के सम्बन्ध में। इसके अतिरिक्त ऐसे अवसर पर उसका अपने घर वापस आना, उसका ब्याही पुत्री के रूप में स्वागत तथा उस स्थिति में समुचित सम्मान प्राप्त होना भी एक कारण था। हमारे परिवार का प्रत्येक सदस्य सोचता था कि वह एक सौभाग्यशाली नवयुवती है, कम से कम परिवार के हमारे पक्ष की ओर से उसे कभी लज्जास्पद स्थिति में नहीं रहना पड़ा। जैसे ही वह स्वयं माँ बनी, वह भी महिलाओं की पुरानी पीढ़ी में सम्मिलित मानी जायेगी और आगे चलकर अपनी सास का स्थान प्राप्त कर लेगी जो देर-सबेर अपनी कब्रगाह की शरण लेगी।

अपने घर में आने की उसकी कितनी तीव्र आकांक्षा थी, यदि वह केवल कुछ घण्टे ही अपने मायके में रह पाती तो उसे सन्तोष मिलता। वह यह भी सोचती थी कि यदि वह कुछ अधिक समय तक कठोर परिश्रम कर सके, तो वह अमर आत्माओं के मार्ग को प्राप्त कर लेगी और मेरी बुआ की भाँति खाङ के किनारे बैठी सुगन्धित तमबाकू पीने का साहस नहीं कर सकती थी। यद्यपि वह पान की सुपारी चबाना जानती थी, जिसका अर्थ था कि वह शीघ्र ही चिलम पीने वाली बन जायेगी।

अपने विचारों में अनेक समस्याओं में उलझी मेरी बहिन कम सो पाती और बहुत पहले उठ पड़ती थी। आसमान पर तीन नक्षत्रों को देखे बिना ही वह बाहर जाती और लच्छीदार मालपुआ तथा तिलपट्टी प्रातः अपनी सास के नाश्ते के लिये खरीद लाती थी। उन दिनों चावल का माड़ बनाने वाली दुकानों में बड़े तड़के ठीक तीन बजे से ही लच्छीदार मालपुओं को पकाना तथा तिलपट्टी भूनना आरम्भ कर देते थे। ऐसा कहा जाता था कि मानचू राजकुमार, ड्यूक और मंत्रीगण सम्राट के साथ सूर्योदय से पूर्व होने वाली बैठक में सम्मिलित होने से पहले प्रातःकाल के नाश्ते में लच्छीदार मालपुआ तथा तिलपट्टी का सेवन करते थे और तब वे सम्राट के दरबार में उपस्थित होते थे। मेरी बहिन की सास के पिता जो वाइकाउण्ट थे, इन बैठकों में सम्मिलित होते थे अथवा नहीं, यह मैं नहीं जानता। किन्तु उनकी पुत्री अवश्य

ही अत्यन्त शीघ्र जाग जाने और अपना मुँह धोकर बाल सँवार लेने के बाद नाश्ता कर लेने की परम्परा का पालन करती थी, इसके बाद वह फिर थककर बहुधा सो जाया करती थी। ऐसा लगता था कि जैसे यह परम्परा केवल मेरी बहिन को पीस डालने के लिये थी।

उत्तर-पश्चिमी हवा इतनी तेज नहीं थी जितनी कि चुभने वाली और कुछ ही क्षणों में मेरी बहिन की नाक और कान खूब लाल हो जाते थे। वह लगभग अजाने ही कहती, "आह! आज बड़ी ठण्ड है।" पेइचिङ के शुष्क जाड़े की ऋतु अक्सर आनन्दप्रद रूप में शीतल होती थी। यद्यपि मेरी बहिन की ढेर सारी शिकायतें थीं, किन्तु वह गर्व के साथ चिल्लाए बिना नहीं रह सकती थी। वह अपने काम की गति तीव्र कर देती और जैसे ही अपने को कुछ गर्म अनुभव करने लगती, उसी समय ठण्ड के कारण उसके शरीर में प्रकम्पन आ जाता था जो उसके हृदय से आरम्भ होकर उसके चारों अंगों में फैल जाता और उसे एक ऐसी सुखद संवेदना होती मानो उसने बर्फ का एक छोटा टुकड़ा निगल लिया हो। वह आसमान की ओर निहारती और देखती कि सभी नक्षत्र उतने ही चमकीले, निर्मल तथा ज्योतिर्मय हैं जैसे कि किसी बच्चे के भोले-भाले निश्छल नेत्र हों। वह अपने मन में मुस्कराई और बुदबुदाई, "यदि हवा न चली तो दिन सुन्दर रहेगा। मेरा छोटा भाई कितना भाग्यशाली है कि उसे तीसरे दिन के स्नान हेतु इतना अच्छा मौसम प्राप्त हो सका!" ऐसे समय उसकी इच्छा होती कि वह सीधे घर जाये और अपने छोटे भाई को गले से लगाकर प्यार करे। अपने घर जाने की भले ही उसकी कितनी प्रबल इच्छा क्यों न हो वह अपनी सास के घर जाने के लिये अवकाश माँगने का साहस नहीं जुटा पाती थी। यदि वह किसी प्रकार ऐसा करने का साहस जुटा पाती, तो वह जानती थी कि उसकी सास उत्तर में केवल यही कहेंगी, "जाओ काम करो, जाओ काम करो!" वाइकाउण्ट की पुत्री के नाते उसकी सास अविवेकपूर्ण आचरण नहीं कर सकती थीं ओर न अपनी बहू को मायके जाने से रोक सकती थीं। किन्तु मेरी बहिन जानती थी कि यदि उसकी सास "जाओ काम करो" का वास्तविक आदेश देतीं तो उसका हृदय कटुता की भावना से विषाक्त हो जाता। तब वह सोचती, नहीं, बेहतर यही होगा कि वह अपनी सास के आदेश की प्रतीक्षा करती रहे।

किन्तु अभी कोई आदेश नहीं मिल रहा था। प्रथम तो यह कि मेरी माता ने केवल एक बच्चे को जन्म दिया था किन्तु अगर उन्होंने जुड़वाँ बच्चों को भी जन्म दिया होता और यदि मेरी बहिन की सास ने यह निश्चय किया कि मेरी माँ पर विषाक्त धुएँ का बुरा प्रभाव पड़ा था तथा इसी कारण वह मूर्छित हो गयी थीं तो भी इस सम्बन्ध में कोई दो भिन्न मत नहीं हो सकते थे। दूसरी बात यह कि यद्यपि उनकी आर्थिक नीति साहस के साथ उधार सामान खरीदने की थी, बिना इसकी चिन्ता किए कि

इस ऋण का भुगतान करना होगा, फिर भी द्वार पर तमाम ऋणदाताओं का आना एक वाइकाउण्ट की पुत्री और कैप्टन की बीबी की प्रतिष्ठा को आघात पहुँचाने वाली बात तो थी ही। ऐसे विचार ने उनकी मनोदशा को विकृत कर दिया। एक कटोरा चावल की लपसी गले से नीचे उतार लेने और टिकियाँ तथा तिलपट्टी खा लेने के बाद वे अपने "वृद्ध पुरुष" को खोजने और एक तमाशा खड़ा करने के लिये चल पड़ी। किन्तु इस प्रातः वे नित्य से कुछ पूर्व ही अपने पक्षियों को लेकर घूमने के लिये बाहर निकल गए थे। ऐसी निराशा में उनके क्रोध का पारा कई अंश ऊपर चढ़ गया, इसलिये उन्होंने अपने घोड़े को घुमाया और अपने बेटे घुड़सवार को जीवित पकड़ लाने के लिये चल पड़ीं। किन्तु वह घुड़सवार अपनी पत्नी के दो नए वर्ष के बैंक नोट लेकर भाग गया था और उसको दो प्लेट केक जिनमें बीन और मीठे छुहारे पड़े होते थे, उन्हें खिलाने तथा एक प्याला बादाम की चाय पिलाने के लिये तड़के ही निकल पड़ा था। चारों ओर कोई पुरुष अधिकारी न पाकर उन्होंने महिला जनरल को चुनौती देने का निश्चय किया। खाङ पर बैठकर उन्होंने कोई स्पष्ट आदेश न देते हुए केवल बड़बड़ाना आरम्भ कर दिया। "यह कैसी जिन्दगी है? मैं ही क्यों ऐसी अकेली हूँ कि जिसे हर बात की चिन्ता करनी पड़ती है? आप ठीक उसकी नाक के सामने कोई वस्तु रख दें तो भी वह उन्हें नहीं देखती। क्या उसके अपने सर पर आँखें भी हैं? क्या उसकी आँखों की पुतलियाँ वहीं हैं जहाँ उन्हें होना चाहिए? क्या वे ठीक काम कर रही हैं? मुझे अपनी चिन्ता करने के लिये किसी की आवश्यकता नहीं पड़ती, किन्तु इन बुद्ध जी का क्या हो? किसी न किसी को तो इन बुद्ध जी की चिन्ता रखनी चाहिए? आज का दिन लगभग नव वर्ष के दिन के सदृश है, लेकिन मेरी पूजा के स्थान पर रखे जाने वाले सुगन्धित धूपदान और दीपदान में अभी तक पालिश भी नहीं की जा सकी है!"

मेरी बहिन तुरन्त काम में लग गयी। वह बड़ी सावधानी से चूल्हे से राख निकालने लगी, जिसका प्रयोग वह बुद्ध की पूजा के स्थान पर रखे जाने वाले पीतल के बर्तनों को चमकाने के लिये करती थी। जैसे ही वह राख लेकर पूजा की मेज तक पहुँची, उसकी सास की बातचीत पवित्र विचारों की ओर से अपवित्र विचारों की ओर मुड़ गयी। "क्या इसे इन सन्दूकों, अलमारियों और दराजों के पीतल के हैण्डलों तथा तालों को भी साफ करने की ओर थोड़ा ध्यान नहीं देना चाहिए? जब मैं जवान थी, मेरी सास को कभी एक शब्द भी नहीं कहना पड़ता था। मैं वह सब करती थी जो मुझे करना चाहिए था।"

मेरी बहिन अपना मुँह खोलने का साहस नहीं करती थी। यदि उसमें साहस था भी, तो उसका उत्तर कितना ही मधुर क्यों न रहा हो, उसका यह कार्य अनुशासनहीनता तथा शिष्टाचार के नियमों को उल्लंघन करने वाला माना जाता था। किन्तु यदि वह

सर झुकाकर काम में लगी रहती और एक शब्द भी न बोलती तो भी उसकी सास यही कहती, "मैं समझ रही हूँ, वह अपना क्रोध दीपदान पर निकाल रही है। इसके मस्तिष्क में कदाचित यही इच्छा होगी कि मैं मर जाती या मुझे निर्लज्ज बूढ़ी औरत कह रही होगी। अच्छी बात है, ईश्वर करे इस पर तो पाँच बार बिजली गिरे।"

मेरी बहिन आँखों में आँसू भरे, पालिश किए जाती और सोचती कि कोई ठीक अवसर हो तो वह सास जी से पूछ ले कि वह यह काम या वह काम कैसे अच्छे ढंग से करे। उस समय तो उसने घर वापस जाने का विचार पूर्णतया छोड़ दिया। थोड़ी देर में अपने आँसुओं को पूरी शक्ति और प्रयास से रोकते हुए उसने अपने चेहरे पर मुस्कान लाने की सफल चेष्टा की और कहा, "दादी जी, देखिए, क्या इन सब पर मेरी की हुई पालिश ठीक आई है?" उसकी सास केवल इतना बोली, "हूँ ..." वह इससे अधिक और कुछ कहने का साहस न कर सकी, क्योंकि उन्होंने अपने पूरे जीवन में पूजा के स्थान पर रखी किसी भी वस्तु पर कभी पालिश नहीं की थी।

जान पड़ता था कि दिन सुहावना होगा और प्रातः नौ बजे तक वायु में कुछ उष्णता आ गयी थी। आकाश इतना नीला और निर्मल था और सूर्य इतना चमक रहा था कि पेड़ों पर कौओं के पतले घोंसले किसी पेण्टिंग में चित्रित से लगते थे। चंचल मैनाओं का समूह पेइचिङ की शरद ऋतु के सूर्य के प्रकाश की प्रशंसा में गीत गाते हुए इधर-उधर उड़ रहा था।

मेरी बहिन की सास बड़बड़ाती रहीं और फिर कुछ समय रुककर बाहर आँगन की ओर चली गयी ऐसा लगता था कि जैसे वे सूर्य और आकाश से प्रश्न करने जा रही हों, "आप दोनों किसलिये इतने तेज चमक रहे हैं?" किन्तु उन्होंने बाहर सबसे पहले जो चीजें देखी वे त्वोफू के कबूतर थे, अतः उन्होंने अपने निन्दा के शब्द काले जेड रंग के पंखों वाले पक्षियों की ओर मोड़ दिए : "तुम्हारे जैसे पक्षियों का पालने से क्या लाभ? जैसे भी हो तुम्हें कुछ न कुछ खाना है! थोड़ा रुको, जब तक मैं स्वस्थ होकर तैयार हो जाऊँ, फिर तुम्हारे पूरे झुण्ड को हलाल कर दूँगी!"

मेरी बहिन अन्दर खड़ी थी और साँस लेने का भी साहस न कर पा रही थी। उस घर में उसे आह भरने का भी अधिकार न था।

आइए, अब हम अपने परिवार के पक्ष की ओर लौटे चलें। मेरी माता अपनी सबसे बड़ी बेटी को देखने के लिये बेचैन थीं। पिछली रात के पूर्व वे मरणासन्न सी हो गयी थीं। अब जब कि ईश्वर ने उन पर कृपा कर दी थी, उनकी इच्छा थी कि उनका पूरा परिवार उनके सामने हो, विशेष रूप से उनकी ब्याही हुई बेटी। किन्तु मेरी माता यह जानती थीं कि वह न आ सकेगी। "हमारी कोई शिकायत नहीं हो सकती, क्योंकि उनके कैप्टन-स्तर के परिवार से हमारे परिवार का स्तर नीचा है।" इसलिये मेरी माँ ने कुछ नहीं कहा और इसीलिये उनके चेहरे पर प्रसन्नता का कोई

चिह्न न था।

ऐसा जान पड़ता था कि रात ही को मेरी बुआ ने कोई योजना गढ़ ली है। उन्हें विश्वास था कि यदि यहाँ कोई उत्सव हो रहा हो और उसमें उनके द्वारा कोई गति न लाई गयी, तो पूरा कार्य एक अत्यन्त नीरसतापूर्ण स्थिति में रह जायेगा। इसलिये ठीक नौ बजे यह देखकर कि मेरी बहिन अब तक नहीं पहुँची है, उन्होंने ऊपर सूर्य की ओर देखा और विचार किया कि यदि उन्होंने अपनी झुँझलाहट शीघ्र ही व्यक्त न की तो वे उस चमचमाती निर्मल धूप के प्रति न्याय करने का एक अवसर खो देंगी।

सूर्य की ओर मुँह करके वे कहने लगी, "मैं कहती हूँ, अब बहुत देर हो गयी है, मेरी भतीजी अभी तक क्यों नहीं दिखाई पड़ी? यही हुआ होगा कि उस गोल मटोल बेर जैसी आँखों वाली बुढ़िया ने उसको घर से निकलने न दिया होगा। मैं जाकर वहाँ उसको समझाऊँगी और अगर उसनें ध्यान न दिया तो मैं उसकी बेर जैसी आँखें निकाल लूँगी।"

यह सुनकर मेरी माँ परेशान हुई। उन्होंने मेरी छोटी बहिन से फूहाए को बुलवाया, जिससे मेरी बुआ को तसल्ली दी जा सके और कहा, "देखो, तुम एक भी शब्द न बोलना, फूहाए को ही बात करने देना"

ममेरा भाई फूहाए और "लिटिल सिक्स" शराब में पानी मिलाने के काम में लगे थे। उन्होंने शराब थोड़ी ही खरीदी थी लेकिन पैसा बचाने के लिये एक तरकीब खोज ली थी, जिससे वह कभी समाप्त न हो।

मेरी दूसरी बहिन ने फूहाए की आस्तीन खींची और बाहर की ओर संकेत किया। उसने शराब का बर्तन उठाया और बुआ के कमरे में ले गया और बड़े प्रेम से उन्हें सम्बोधित किया, "आदरणीया, एक घूँट इसका लीजिए, क्या इसमें शराब जैसी महक आती है?"

"शराब जैसी? निश्चय ही आती है। तुम कौन सी चालाकी करने वाले हो।"

"यों समझिए, यदि इसमें शराब की महक तेज हो तो हम इसमें कुछ और पानी मिला दें।"

मेरी बुआ खुलकर मुस्कराई और बोलीं, "फूहाए तेरी माँ तुझको नन्हा शैतान सही कहती थीं। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है।"

"माननीया! जब एक निर्धन व्यक्ति दूसरे निर्धन को दावत दे, तो प्रत्येक व्यक्ति को प्रसन्न करना ही सबसे महत्वपूर्ण बात होती है। क्या ऐसा नहीं है?" किन्तु जब उसने देखा कि बुआ उसके विचारों से प्रभावित नहीं दिखाई दे रहीं, तो वह तेजी से बोला, "भोजन समाप्त होने पर देखना मैं आपसे चार चाँदी के टुकड़े जीत लूँगा और यह होते ही सबके लिये कुछ पाउडर मिली-जुली मिठाई खरीदने जा रहा हूँ।

माननीया! क्या आपको मेरी चुनौती स्वीकार करने का साहस है?"

"नौजवान! तुम्हारा सौदा हो चुका।" ताश का नाम सुनते ही वे "बेर जैसी आँखों" को एकदम भूल गयीं।

जब मेरी माता ने यह सुना तो उन्होंने सन्तोष की एक गहरी साँस ली और बार-बार भानजे फूहाए के प्रति अत्याधिक आभार अनुभव किया। लगभग नौ बजे के पश्चात सभी भतीजे, भतीजियाँ, बुआ, बहिनें, जिनकी आशा थी, एक एक कर आने लगे। मेरी दूसरी बहिन सबका स्वागत करती थी और उन्हें चाय बनाकर देती, यद्यपि वह सबको पहचानती भी न थी। वह अत्याधिक मानसिक तनाव में थी। उसका चेहरा लाल पड़ गया था और नाक पर पसीना आ गया था। और चूँकि उसने एक शब्द भी नहीं कहा था बल्कि उचित क्षणों पर केवल मुस्करा देती थी, इसलिये फूहाए ने उसे एक नया नाम दे दिया "छोटी नौकरानी।"

मेरी बुआ ने सबसे आग्रह किया कि शीघ्र भोजन कर लें जिससे कि तुरन्त खेल आरम्भ हो सके। तभी फूहाए चिल्लाया, "सब तैयार है।"

इसका अभिप्राय यह था कि एक थाली में बड़ी लम्बी पतली मछली, जिसमें अचार मिश्रित सरसों और हरा साग-पात व चर्बी में भुनी सेम पड़ी थी तथा दूसरी में मसालेदार सेम की चटनी, सुअर की चर्बी में तली हुई खाने के लिये रखी थी। मदिरा में पानी इतनी मात्रा में मिश्रित कर दिया गया था कि उसके एक हजार गिलास पीने पर भी कोई व्यक्ति नशे में न आता। यों तो दावत साधारण थी, किन्तु अतिथियों को बिठाने में शिष्टाचार अत्यन्त औपचारिकता पूर्ण था। "कृपया उस बड़ी मेज पर स्थान ग्रहण कीजिए।" कोई कह रहा था, "अरे मैं इस सम्मान के योग्य कहाँ हूँ, नहीं, नहीं, वास्तव में मैं इस योग्य नहीं हूँ" "देखिए, यदि आप वहाँ स्थान ग्रहण नहीं करेंगे तो कोई वहाँ नहीं बैठेगा।" यह बातें चल रही थीं कि फूहाए ने उच्च स्वर में कहा, "आप लोग शीघ्र बैठ जाइए, भोजन ठण्डा हो रहा है।" सुनते ही सब बड़ी श्रद्धा के साथ आज्ञा पालन करते हुए अपने-अपने स्थान पर बैठ गए। तीन बार मद्यपान का दौर शिष्टाचारपूर्वक चला (तो भी कोई उन्मत नहीं हुआ), और दो दौर भोजन के (चौड़ी फलियाँ और मसालेदार सुअर की चर्बी) दावत चरम बिदु पर पहुँच ही रही थी कि गरम गरम भाप निकलती सिवइयों का शोरबा परोसा गया। तभी ऐसा लगा कि मानो प्रत्येक व्यक्ति जो वहाँ उपस्थित था उसने सब शिष्टाचार छोड़ दिया हो और बोलना बन्द कर दिया हो। सिवइयाँ सुड़कने और शोरबा पीने की ध्वनि से कमरा गूँज उठा। वहाँ का वातावरण ऐसा था कि जैसे एक भूचाल आया हो या समुद्री ज्वार उठा हो या एक साथ सिंहनाद हो रहा हो या ड्रैगनों के चिल्लाने की आवाज आ रही हो। फूहाए को पसीना आ गया। "लिटिल सिक्स, यह लोग जैसे खा रहे हैं, इतनी सिवइयाँ देर तक नहीं चलेंगी।" "लिटिल सिक्स" ने तुरन्त

उपाय सुझाया, "थोड़ा पानी मिला दो।" किन्तु फूहाए ने डाँट दिया, "वाह! यदि पानी मिलायेंगे तो सिवइयाँ शराब तो है नहीं, ये तो लपसी हो जायेंगी।" फूहाए ने जेब में हाथ डाला (उसने खर्च का यह पैसा मेरी माँ से कभी देने को नहीं कहा था।) "शीघ्र चिन साहब के यहाँ दौड़ जाओ, यदि वे कुछ पकौड़े सेंक दें, तो पाँच कैटी ले आना। यदि वहाँ विलम्ब लगे तो तिलपट्टी के केक ले लेना, तुरन्त जाओ।" उन दिनों अधिकाँश मुसलमान कसाई तिलपट्टी और भाप में पकाए कबाब या तले हुए दूसरे सामान बेचा करते थे।

"लिटिल सिक्स" चतुर था। यह देखकर कि पानकेक को पकाने में अधिक समय लगेगा, वह बड़ी थालीभर ताजी भुनी तिलपट्टी, दो तश्तरी मांस और गोभी मिश्रित पकौड़े खरीद लाया। किन्तु जिस प्रकार वायु के वेग से बादल उड़ जाते हैं उसी प्रकार सारे भोज्य पदार्थ क्षण मात्र में समाप्त हो गए। अब फूहाए और "लिटिल सिक्स" के खाने की बारी थी। किन्तु क्या अब कुछ बचा भी था? फूहाए जोर से हँसा और "लिटिल सिक्स" को निर्देश दिया, "मेरे बच्चे, अच्छा होगा कि अब तुम अपने घर ही जाकर खा लो।" आज तक मैं यह न जान सका कि यह "लिटिल सिक्स" कौन था। किन्तु जब कभी मैं अपने तीसरे दिन के स्नान की याद करता हूँ तो मैं अनुभव करता हूँ कि मुझे उससे क्षमा याचना करनी चाहिए। मैं कभी चिन्ता नहीं करता कि फूहाए को कुछ खाने को मिला है अथवा नहीं, क्योंकि मुझे इसमें कोई सन्देह न था कि वह एक साधनसम्पन्न व्यक्ति है।

दोपहर तक मौसम अधिक अच्छा हो गया था। चमकते हुए बादल नीले आकाश में हवा के हलके झोंके से सीधी धारियों जैसे बने तैर रहे थे। उत्तर-पश्चिमी हवा के थोड़े से झोंके के साथ, सुन्दर श्वेत बादल रेशमी रिबनों के रूप में परिवर्तित हो गए। जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया वे और लम्बे तथा और अधिक पतले बन गए। धीरे-धीरे एक धुएँ के अनन्त बादल के रूप में परिवर्तित हो गए, इसके पूर्व कि वे पूर्णतया आँखों से बिल्कुल ओझल न हो जायें। हवा के हलके झोंके के साथ नए वर्ष के उत्सव हेतु विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को घुम-घुमकर बेचने वालों के स्वर कानों में पड़ रहे थे : "कागज के फूल, तेजपात की डालियाँ, नए वर्ष के चित्र..." उनमें से कुछ स्वर चुभीले थे, दूसरे गहरे और प्रतिध्वनित होने वाले थे। वे स्वर निकट-दूर प्रत्येक दिशा से सुनाई पड़ रहे थे। बीच-बीच में पटाखों के फटने की आवाजें तथा ग्राहकों को आकर्षित करने के लिये भ्रमणशील नाइयों की करतलध्वनि भी सुनाइ पड़ रही थी ; इस अद्‌भुत उमंग से परिपूर्ण पेइचिङ की सम्पूर्ण जनसंख्या नए वर्ष की तैयारी में व्यस्त थी। कुछ लोग खरीद रहे थे और कुछ बेच रहे थे, कुछ केवल क्रोध प्रगट कर रहे थे, दूसरे आत्महत्या कर रहे थे ; अनेक लोग नए वर्ष के पूर्व इस हर्षोल्लास का लाभ उठाते हुए अपने विवाह कर रहे थे। उनकी बारातों में

बजने वाली शहनाई और ढोल की ध्वनि से सड़कें गूँज रही थीं। इन तमाम गतिविधियों के मध्य केवल मैं ही अपने खाङ के बीच में कुछ रूई के टुकड़े के ऊपर शान्तिपूर्वक पड़ा था और किसी विशेष वस्तु पर ध्यान केन्द्रित नहीं कर रहा था।

जाड़े में प्रायः मेरे घर में प्रत्येक दिशा से वायु अपना प्रवेश कर लेती थी। खाङ पर ठण्ड थी और कप की तली में पड़ी चाय रातभर में जम गयी थी। किन्तु उस दिन जब मैं अत्यन्त आकस्मिक रूप से खाङ के बीच में पड़ा था और किसी विशेष वस्तु पर मेरा ध्यान केन्द्रित नहीं था, पूरा घर एक बड़े रंगारंग समारोह में व्यस्त था। अन्दर गर्मी थी तथा खाङ पर पड़ते सूर्य के प्रकाश में मेरे पैर चमक रहे थे। खाङ के नीचे एक टीन का चूल्हा जल रहा था। खाङ और सूर्य के प्रकाश की गर्मी लोगों के शरीर में चिनचिनाहट उत्पन्न कर रहा थी, विशेष रूप से कानों के ऊपर तथा हाथों के पिछले भाग में। खिड़कियों से निकलती प्रकाश की किरणें अत्याधिक मात्रा में धूल के कणों को सतरंगी रूप में तरंगित कर रही थी, जो मेरे सिर के चारों ओर इस प्रकार उड़ रहे थे जैसे कि पकड़ में न आने वाले असंख्य नक्षत्र हों।

उसी समय बड़े-बड़े अधिकारियों तथा प्रमुख नागरिकों के घरों में खिड़कियों के नीचे फूच्येन के नरगिस के पुष्प धूप खा रहे थे। बड़े-बड़े पीतल के चूल्हों की गर्मी या छोटे लोहे के चूल्हे जो खाङ के नीचे रखे थे, उन्होंने मेजों पर रखे गमलों के हरे और लाल आलूचों की मंजरियों को पुष्पित कर दिया था। चमकते प्रखर सूर्य के प्रकाश में लम्बी कलँगी वाले टिड्डे अपने पन्ने जैसे हरे रंग वाले पंख फड़फड़ा रहे थे और अपने पिंजड़ों में चहचहा रहे थे, जो छोटे से गर्म खाङ पर रखी लकड़ी की चौकियों पर अनेक विशिष्ट कलात्मक वस्तुओं के साथ सजे हुए थे। दूसरे पिंजड़े में जो इन घरों के बरामदों के छज्जों के नीच लटके थे, गाने वाले पक्षी अपने पर धूप में फैलाए थे और उन्होंने अपने गीतों का सम्पूर्ण कोष खोल दिया था। रसोइए और नौकर भीतरी मँगोलियाई हिरन और मानचूई चकोर का मांस नए वर्ष की दावत के लिये तैयार कर रहे थे। चकोर के परों पर सूर्य का प्रकाश पड़ रहा था और उनके अनेक रंगों को प्रतिबिम्बित करता था।

हम लोंगों को भी पौधे पसन्द थे, किन्तु आलूचे के फूलों या नरगिस को रखने की हमारी आर्थिक स्थिति न थी। वहाँ बेर के दो वृक्ष हमारे आँगन में तिरछे खड़े थे, एक सामने की दीवार के पीछे जो घर के सामने के फाटक के पीछे थी और दूसरा दक्षिणी दीवार के नीचे। हमें छोटे जानवर भी पसन्द थे किन्तु मैना या नीलकण्ठी पालने की हमारी स्थिति नहीं थी और न समय था कि हम चमकते हरे रंग के लम्बी कलगी वाले टिड्डों की देखभाल कर सकते जो जाड़ों में ही रहा करते थे। कभी-कभी एक या दो गौरैयाँ हमारे बेर के पेड़ों पर या उड़कर हमारी खिड़की के चौखट पर बैठ जातीं और फिर घर के अन्दर आ जातीं। हो सकता है कि वे गौरैयाँ यह समझती

थीं कि मैं आलूचों या नरगिस के गुच्छों के फूलने और नीलकण्ठ या लम्बी कलगी वाले टिड्डों के फुदकने-गाने की प्रतीक्षा नहीं कर रहा था, अपितु सूर्य के प्रकाश के एक बहुत ही छोटे स्थल पर पड़ा अपने "तीसरे दिन के स्नान" पर किन्हीं निर्धन बैनरमैनों के आशीर्वाद की प्रतीक्षा में था।

बाहर के कमरे में मेरे सम्बन्धी दालचीनी की शाखाओं और मोक्सा की पत्तियों को उत्सव के लिये उबाल रहे थे। उनकी सुगन्ध भरी भाप और महिलाओं के हुक्कों से निकला सुगन्धित धुआँ गर्मी पैदा कर रहा था जिसमें कुछ तीखापन भी था और जो सम्भवतः शुभ था। हम सब दाई के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उसके आशीर्वाद से मैं निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बनता, जिसे कभी भूख या ठण्ड पीड़ित न कर सकती थी।

मेरी बुआ एक बार कमरे में चक्कर लगा गयीं। उन्होंने खाङ की ओर एक बार देखा, फिर फूहाए तथा अन्य खेलने वालों के साथ खेल की व्यवस्था की और खेल में संघर्ष की तैयारी के लिये अपने कमरे में चली गयीं। वे अपने मन में मुझे आशीर्वाद दे रही थीं या श्राप, इसे कोई कभी नहीं जान सकेगा।

ठीक बारह बजे हमारे घर के अन्दर चमकती धूप हल्के प्रवेश करते हुए हवा के झोंकों के साथ दाई के अनेक आशीर्वाद लेकर आई। दाई छोटे कद और सुदृढ़ शरीर वाली लगभग पचास और साठ वर्ष के आयु वाली थी। उसके साफ-सुथरे और व्यवस्थित व्यक्तित्व को एक बार देखने से ही ऐसा लगता था कि वह दस लड़के और लड़कियों को जनवाने की योग्यता रखती है। उसमें आत्मश्लाघा की प्रबल भावना के साथ ही विनोदप्रियता का भी गुण था। यदि हमारे आस-पड़ोस का बीस वर्ष की आयुवाला कोई व्यक्ति उससे ठिठोली करने का साहस करता तो वह कहती, "तुम्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि तुम्हारा तीसरे दिन का स्नान किसने कराया था?" वह बहुत सादा और रुचिकर लिबास पहनती थी किन्तु अपने सुन्दर साटन के सिर के फीते के पीछे वह एक अनार जैसा लाल रेशम का चमकता फूल एक कोने पर लगाए रहती थी।

जिसने दो दिन पूर्व मेरे जन्म की परिचर्या की थी वह दाई की बहू या छोटी दाई थी। वह भी अत्यन्त सुसज्जित एवं स्वच्छ थी, यद्यपि अपनी सास की तुलना में कुछ कम अनुभव रखती थी। अपनी समझ के अनुसार मेरे जन्म की रात्रि के समय जो विपत्ति आई उसमें उसका कोई दोष न था, अपितु मेरी माता की शारीरिक दुर्बलता और पौष्टिक भोजन का अभाव मुख्य कारण थे। चूँकि ऐसा वह सीधे मेरी माँ से कहना उचित नहीं समझती थी, अतः बूढ़ी दाई ने व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर मेरे तीसरे दिन का स्नान कराने का निश्चय किया था। बूढ़ी दाई का नाम दूर-दूर तक प्रसिद्ध था। जिस घर से भी वह निकलती लोग उसे देखकर यह समझ लेते

थे कि किसी वंशानुगत उच्च अधिकारी के कोई बेटा या किसी सम्भ्रात व्यक्ति के यहाँ किसी बेटी ने अभी-अभी जन्म लिया है। मेरे तीसरे दिन के स्नान के लिये बूढ़ी दाई की भाँति प्रतिष्ठित व्यक्ति द्वारा अनुष्ठान कराना हमारे घर के लोगों के प्रति उसके क्षमाप्रार्थी होने के समान था। यह तथ्य सभी के सामने स्पष्ट था, इसलिये उसके सम्बन्ध में उसने कुछ नहीं कहा। मेरी माँ कुछ कहना चाहती थीं, किन्तु उस पर विचार कर लेने के पश्चात उन्होंने अनुभव किया कि यदि कहीं उस बात की चर्चा से दाई इतना नाराज हो गयी कि उसने मुझे आशीर्वाद देने या मेरे बारे में शुभ वचन कहने में कोई कसर छोड़ दी तो उससे कोई बड़ी आपत्ति आ सकती है। इसीलिये मेरी माँ ने एक शब्द भी नहीं कहा।

मेरी बुआ ने ठीक उसी समय अपने हाथों में ताश की एक अच्छी बाजी उठाई और सन्देश भेज दिया, "मेरी प्रतीक्षा न करें।" किन्तु मेरी माता इन आदेशों का पालन करने का साहस नहीं कर सकती थीं। कुछ क्षणों के पश्चात उन्होंने मेरी बुआ को बुलाने के लिये मेरी छोटी बहिन को भेजा किन्तु जो संदेश वह लाई वह थी, "जब मैं कहती हूँ कि मेरी प्रतीक्षा न करें तो मेरा तात्पर्य है कि मेरी प्रतीक्षा न करें।" और इस प्रकार समारोह आरम्भ हुआ।

ग्रेनी पाए (दाई) पालथी मारकर खाङ पर बैठ गयी। एक बड़ा से पीतल का बर्तन (जिसे ममेरे भाई फूहाए ने दिया था) अन्दर लाया गया तथा उसे दाल चीनी और मेक्सा के गर्म पानी से भर दिया गया, जिससे खूब गरम भाप निकल रही थी। पहले वृद्ध महिलाओं तथा युवा पत्नियों ने कुछ ताम्बे के सिक्के न्यौछावर करके आशीर्वाद देते हुए बर्तन को भरा। फिर अनेक मूँगफलियाँ तथा कुछ लाल व सफेद अण्डे उसमें गिरे, इस प्रकार के शुभ वाक्यों के साथ जैसे "ऐसे ही पुत्र रत्नों को जन्म देती रहो।"

वे सिक्के तथा पूर्ववर्णित अन्य वस्तुएँ कार्यक्रम समाप्त होने के पश्चात दाई की सम्पत्ति बनने वाली थीं। यद्यपि मैंने उन्हें गिना नहीं था, फिर भी मैं जानता था कि उस बर्तन में बहुत अधिक पैसा नहीं है। यही कारण था कि हम सभी लोग ग्रेनी पाए के द्वारा हमारे घर व्यक्तिगत रूप से आने की स्वीकृति देने के प्रति अत्यन्त आभारी थे। उसके आगमन ने यह भी प्रमाणित कर दिया कि युवा दाई के कारण जो आपदा आ गयी थी वह कोई साधारण बात न थी।

मुझे स्नान कराने के साथ ही ग्रेनी पाए एक भी शब्द छोड़े बिना, वही आशीर्वाद पढ़ती जाती थीं, जो वे अनेक अवसरों पर देती रही थीं :

> सर्वप्रथम हम तुम्हारा सिर धोती हैं,
> तथा जानती हैं कि किसी दिन तुम राजकुमार बनोगे,
> इसके पश्चात हम तुम्हारी पीठ साफ करती हैं,

तुम्हारे वंशज सौभाग्यशाली होंगे,
इसके पश्चात हम शीघ्र ही तुम्हारे अण्ड धोती हैं,
तुम काउण्टी मजिस्ट्रेट की श्रेणी में सम्मिलित होगे,
अन्त में तुम्हारे नितम्ब हमारे सामने धोने को हैं
और पूरे प्रान्त का शासन तुम्हारे अँगूठे के नीचे होगा।

यह सुनने के पश्चात ग्रेनी पाए के प्रति सभी के मन में और अधिक सम्मान की भावना जागी। क्योंकि यद्यपि वह जानती थी कि पीतल के बड़े बर्तन में उनके लिये बहुत अधिक पैसे न होंगे, तो भी उसने पूरे प्रयास तथा परिश्रम के साथ वह शुभ गीत बिना किसी त्रुटि के सुनाया। यह वास्तव में कठिनाई से सम्पन्न होने वाला काम था।

यद्यपि मैं काउण्टी मैजिस्ट्रेट या प्रीफेक्ट कभी न बन सका, तो भी मैं ग्रेनी पाए के प्रति उनके द्वारा अत्यन्त स्वच्छता से स्नान कराने के लिये आज भी कृतज्ञ हूँ, इतना स्वच्छ कि जितना कोई काउण्टी मजिस्ट्रेट या प्रीफेक्ट भी कभी नहीं हुआ।

इसके पश्चात ग्रेनी पाए ने मेरे मस्तक तथा तमाम महत्वपूर्ण जोड़ों पर अदरक और मोक्सा का गरम मिश्रण लगाया। इसका ही फल है कि साठ वर्ष की आयु हो जाने पर भी मुझे गठिया रोग ने नहीं सताया। उसने एक बिल्कुल नए काले कपड़े को ताजी चाय में भिगोया और उससे मेरे मसूड़ों को दबाकर रगड़ा। उस समय मैं जोर से रो पड़ा। वह किसी मन्तव्य से नहीं किया गया, जैसा कि जान पड़ा, किन्तु वह रोना अत्याधिक शुभ लक्षण था। दाई के शब्दकोश में उसे "बर्तन की प्रतिध्वनि" कहा जाता था। मैं नहीं कह सकता कि कभी कहीं कोई ऐसा बच्चा भी हुआ है जो इस प्रकार की प्रक्रियाओं के मध्य कभी रोया न हो और इस प्रकार अपने सौभाग्य से वंचित रहा हो। अन्त में ग्रेनी पाए ने एक बड़ा प्याज लेकर "एक बार स्फूर्ति के लिये और दूसरी बार बुद्धि के लिये" पढ़ते हुए उससे मुझे तीन बार मारा। यह भविष्यवाणी अन्ततः सत्य सिद्ध हुई क्योंकि कभी-कभी मेरी बुद्धि इतनी तीक्ष्ण हो जाती है जितनी कि प्याज की तीक्ष्णता होती है।

परम्परा के अनुसार नवजात शिशु के पिता को वही प्याज घर की छत पर फेंक देना चाहिए और उसी महत्वपूर्ण क्षण पर मेरे पिता घर आए। कक्ष में अवर्णनीय उत्साह था। जैसे ही वे अन्दर आए, वहाँ उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति ने उन्हें तुरन्त बधाइयाँ दीं। क्षण मात्र के लिये भी खाङ के मध्य भाग से अपनी दृष्टि हटाए बिना, उन्होंने प्रत्युत्तर में सभी को अनेक बार अभिवादन किया तथा अनगिनत बार धन्यवाद दिया। निश्चित रूप से मैं अपने पिता के निरीक्षण में उत्तीर्ण हो गया। मै। सिर से पैर तक पूरी तरह स्वच्छ था, मेरे शरीर से तेजपात तथा मोक्सा की कड़वी

और मधुर सुगन्ध आ रही थी। और मेरे बाल यद्यपि न तो लम्बे बाल ही थे और न घने, उन पर भी कंघी कर दी गयी थी। मेरा रोना भी प्रभावित करने वाला तथा राजसी था। पिता इतने प्रसन्न थे कि उन्होंने अपनी कमर के बटुए से दो से अधिक नकद चाँदी के टुकड़े निकाले तथा ग्रेनी पाए को दे दिए।

उस समय मेरे पिता के उत्साह का अनुमान लगा लेना सरल था। इसके पूर्व मेरी माँ दो पुत्रों को जन्म दे चुकी थीं, किन्तु उनमें से कोई जीवित न रह सका और यद्यपि उन्होंने प्रथम पुत्र को "श्याम" नाम दिया था तथा उसके कान छेद दिए थे (याद रखें कि लड़कियाँ हीन तथा लड़के उच्च माने जाते हैं और हीन के जीवित रहने की अधिक आशा होती है), किन्तु वह भी अधिक समय तक जीवित न रह सका। दूसरे पुत्र का जन्म नववर्ष की पूर्व संध्या पर हुआ। जिस समय पूरा परिवार च्याओचि* के लिये बैठा था, माँ बाहर गयीं और कहा, "नन्हें श्याम, नन्हें गौराँग, खाङ के निकट आइए और अपने च्याओचि खाइए और इस प्रकार नन्हें गौराँग अस्तित्व में आ गए। किन्तु इसके पूर्व की उसे च्याओचि खाने के अनेक अवसर मिलते, नन्हा गौरांग जिसकी पृष्ठभूमि इतनी असामान्य थी "वहीं चला गया जहाँ से आया था।" उसकी मृत्यु का वास्तविक कारण आज तक अज्ञात है, यद्यपि यह कहानी सत्य है।

तत्पश्चात जब कभी भी मैं अपने आप सो नहीं सका, मेरी माँ मुझे यह कहानी सुनाया करतीं कि वे किस प्रकार बाहर गयी और पुकारा, "नन्हें श्याम और नन्हें गौराँग।" उस समय मैं सदा ही अपना सिर कपड़ों में छिपा लेता था और सोने का बहाना करता था। मुझे भय था कि कहीं नन्हें श्याम और नन्हें गौराँग मुझे पकड़ न लें।

मैं नहीं बता सकता कि मेरे पिता देखने में कैसे लगते थे, क्योंकि जब मैं कुछ बड़ा होकर समझने लगा तब मेरे पिता की मृत्यु हो चुकी थी। इस विषय पर मैं बाद में बताऊँगा, इसलिये हमें इस सम्बन्ध में अभी यहाँ कुछ और अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि वे पाण्डु वर्ण के थे तथा दाढ़ीविहीन मानचू बैनरमैन थे। जब मैं आठ या नौ वर्ष का था, मैंने उनके उस बिल्ले को देखा था जो वे शाही नगर के अन्दर या बाहर जाते समय लगा लेते थे। उस पर चार बड़े अक्षर चिन्हित थे, "पाण्डुवर्ण तथा दाढ़ीविहीन मुखाकृति।"

यद्यपि उस दिन कुछ कमियाँ रह गयी थीं, जैसे मेरी बड़ी बहिन कदापि नहीं आई। "लिटिल सिक्स" को कुछ भी खाने को नहीं मिला और मेरी बुआ ने "न्योछावर पात्र" नहीं भरा यद्यपि उन्हें भेंट स्वरूप कुछ नकद सिक्के मिल गए थे। किन्तु सम्पूर्ण दृष्टिकोण से मेरे तीसरे दिन का स्नान-कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

---

*एक प्रकार का व्यंजन, जिसे आटे के अन्दर मांस भरकर और पानी में उबालकर पकाया जाता है।

और फूहाए तथा उसकी "जलयुक्त मदिरा" की प्रशंसा की जाये, तो न वहाँ कोई गम्भीर निन्दा के रूप में टीका टिप्पणी हुई और न मदिरा से उन्मत्त लोगों में कोई झगड़ा ही हुआ। यदि मुझसे पूछा जाये कि उस दिन की कौन सी घटना इतिहास में रहने योग्य है तो मैं प्येनईफाङ रेस्तराँ के वयोवृद्ध प्रबन्धक वाङ के आगमन का ही चयन करूँगा, क्योंकि वे न केवल मुझे देखने आए थे अपितु सुअर की गोड़ी का जोड़ा भी अपने साथ लाए थे।

प्रबन्धक वाङ का जन्म पूर्वी शानतुङ प्रान्त में हुआ था। जब वे आठ या नौ वर्ष के थे, वे पेइचिङ आ गए और उन्होंने सुअर की गोड़ी पकाने तथा बत्तखों को बलपूर्वक भोजन देने व उससे सम्बन्धित सारा कौशल सीख लिया था। मेरे तीसरे दिन के स्नान के समय उन्हें पेइचिङ में रहते साठ वर्ष से अधिक व्यतीत हो चुके थे, इस अवधि में वे एक प्रशिक्षाणार्थी से मुख्य विक्रय गृह सहायक तथा अन्त में विक्रय गृह से बाहर के व्यापार सम्बन्धी कार्य के सहायक प्रबन्धक बन गये थे। जब उन्होंने अपना तीसवाँ जन्म दिन मनाया, "जब व्यक्ति को अपने पैरों पर खड़ा हो जाना चाहिए", उन्होंने अपनी ही छोटी सी मांस की दुकान खोलने का विचार किया, जो उनका निजी एक ठिकाना हो तथा जहाँ वे अपनी कूटनीति सम्बन्धी समस्त शक्तियों की परीक्षा कर सकें। तो भी भली भाँति परीक्षण करने पर ज्ञात हुआ कि वे छोटी और अभी हाल ही में खोली कई मांस की दुकानें उतनी ही शीघ्र बन्द हो गयीं जितनी शीघ्रता से वे खुली थीं, क्योंकि उन्हें बाजार में कभी पैर जमाने का अवसर न मिल सका। उस समय प्येनईफाङ रेस्तराँ के मालिकों ने रेस्तराँ के व्यक्तिगत भोजन कक्ष बन्द करने का निर्णय ले लिया तथा भविष्य में ग्राहकों को "पेइचिङ बत्तख" का भोजन देना बिल्कुल बन्द कर दिया। उसने यह भी देखा कि उसके पुराने ग्राहक, विशेष रूप से मानचू बैनरमैन द्वारा मांस का क्रय निरन्तर कम होता गया, जिन्होंने विक्रय पटल के पीछे कार्य करने वाले लोगों को मांस के टुकड़े काटने की विधि में एक नया ढंग अपनाने की प्रेरणा दी। कच्चे मांस को कागज के समान पतले बड़े-बड़े टुकड़ों में काटना होता था, जिससे कम मांस भी देखने में अधिक जान पड़े तथा तौल कम रखी जा सके। इसका कारण था कि उन दिनों अधिकाँश ग्राहक केवल एक या दो सौ ताँबे के सिक्के मूल्य का मांस ही एक साथ क्रय कर सकते थे। (पेइचिङ में ताँबे के सौ छोटे सिक्के एक बड़े ताँबे के सिक्के के बराबर थे और दस बड़े ताँबे के सिक्के एक चाँदी के सिक्के के बराबर थे।)

प्रबन्धक वाङ क्रुद्ध हुए, किन्तु उनकी बात हृदय को स्पर्श करने वाली थी, जब उन्होंने अपने पूर्वी शानतुङ की मौलिकता से अत्यधिक प्रभावित पेइचिङ की बोली में कहा, "सारा पैसा कहाँ चला गया? वह सब किधर गया?"

उन दिनों प्रबन्धक वाङ उन लोगों में थे जिन्हें अच्छे वस्त्र पहिनने का अधिकार

न था, क्योंकि समाज में व्यापारी वर्ग तिरस्कृत था। जब वे साठ के होने आए तभी उन्होंने अपने लिये पुराना साटन चढ़ा भेड़ के फर वाला एक लम्बा लबादा (गाउन) खरीदा, यद्यपि जब भी वे उसे पहिनते तो वह उसके बिल्कुल ऊपर एक घर का बुना नीला चोगा डाल लेते थे जो अत्याधिक माँड़ी लगी रहने के कारण लोहे के समान कड़ा हो गया था। वास्तव में वे घर के बने उस सूती कपड़े को बहुत अधिक पसन्द करते थे। जब बाजार से यह कपड़ा किसी न किसी कारण से गायब हो जाता था तब बाध्य होकर उन्हें आयतित सूती चोगा लेना पड़ता जिसमें खरखराहट की ध्वनि होती थी। जब कभी वे इस कपड़े का बना अपना हल्का चोगा पहिनते तब पड़ोस के तमाम कुत्ते चाहे वे अवारा हों या पालतू, बड़ी तेजी से भौंकते थे। जब एक प्रकार से पेइचिङ के सभी लोग यही आयातित कपड़ा पहिनने लगे और जब इस कपड़े के बने परिधान सामयिक तथा औपचारिक दोनों ही रूपों में सार्वजनिक पोशाक बन गए थे तो पालतू और आवारा दोनों ही कुत्ते धीरे-धीरे उनसे परिचित हो गए तथा उनका भौंकना बन्द हो गया।

जब प्रबन्धक वाङ अपनी थैली लेकर अपना उधार खाता वसूलने निकलते थे, तब यह देखकर उन्हें कुछ कुछ धक्का लगता था कि नगर की लगभग सभी नई दुकानों के नामों में "विदेशी" शब्द जुड़ा था जैसे "विदेशी सामान की दुकान", "विदेशी तम्बाकू की दुकान" इत्यादि। यहाँ तक कि पाँच और दस सेन्ट की चीजें बेचने वाली छोटी दुकानें भी विदेशी कागज और विदेशी तेल (मिट्टी का तेल) बेच रही थीं; और जहाँ पुरानी चाल की मोमबत्तियों या धूपबत्तियों की दुकाने थीं जो श्रृंगार सामग्री तथा अपने ही घर का हंस की चर्बी से निर्मित साबुन बेचती थीं, व अब विदेशी फेस पाउडर, विदेशी साबून तथा विदेशी फेस क्रीम प्रदर्शन के लिये रखने लगी थीं। साथ ही स्त्रियाँ, जो पुराने जूते या कागज की रद्दी क्रय करने "हूथुङ" जाया करती थीं तथा सामान की बिक्री हेतु जो पहले चिल्लाकर कहा करती थीं, "बदले में बालों में लगाने का तेल ले लो" उन्होंने अब अपना कहने का ढंग बदलकर यह कहना आरम्भ कर दिया था, "बदले में विदेशी दियासलाइयाँ ले लो।"

जब कभी प्रबन्धक वाङ उन्हें "विदेशी दियासलाइयाँ ले लो" चिल्लाते सुन लेते थे, तो वह बदले की भावना से अपनी लोहे की सलाई से चकमक पत्थर रगड़ते थे तथा क्वानतुङ तम्बाकू से भरी चिलम को जला लेते थे। किन्तु उससे क्या लाभ था? विदेशी साटन, विदेशी सूत, विदेशी फेस पाउडर, विदेशी दियासलाई, विदेशी दीवार और हाथ की घड़ियाँ यहाँ तक कि विदेशी राइफलें, चीन में ज्वार की भाँति आ रही थीं और उनके पास ऐसा कुछ नहीं था कि वे अपनी लोहे की सलाई को चकमक पत्थर से रगड़कर उस बाढ़ को रोकने के लिये कुछ कर सकते। वे एक व्यापारी थे और इसलिये उन्हें पैसा कमाने के लिये किसी उपयुक्त अवसर पर अपनी दृष्टि

रखनी चाहिए थी। किन्तु वे "विदेशी मांस की दुकान", भुने मुर्गे तथा सुअर की मांस बेचने के लिये तो दुकान नहीं खोल सकते थे। इसके साथ ही वे विदेशी तेल और विदेशी दवाइयाँ बेचने के लिये सब एक साथ ही तो रख नहीं सकते थे। एक व्यापारी के नाते अपने मालिकों के लिये लाभ कमाना उनका कर्तव्य था। यदि उनका अपना व्यापार होता तो उन्हें अपने ही लिये धन कमाना अच्छा लगता। किन्तु सारा धन "विदेशी" शब्द की दिशा की ओर बढ़ रहा था, जो सागर पार जाने का मार्ग था। क्या वे कुछ कर सकते थे?

"सारा धन कहाँ चला गया?" सम्भवतः वे इस प्रश्न का उत्तर जानते थे। उन्होंने अपनी निजी मांस की दुकान खोलने का विचार त्याग दिया, अपनी महत्वकाँक्षाओं का, जिनमें एक बड़ा व्यापार चलाने का विचार था, परित्याग कर दिया तथा वे विदेशी शब्द से दिन प्रतिदिन अधिक से अधिक घृणा करने लगे। यद्यपि वे इस सम्बन्ध में कुछ कर नहीं सकते थे कि उनका सूती चोगा विदेशी धागे, विदेशी कपड़े और विदेशी सुइयों से सिला था, तो भी उन्होंने पराजय स्वीकार न की। उन्होंने जनता के बीच घोषणा की, "मैं यह तमाम विदेशी कूड़ा-कबाड़ सहन नहीं कर सकता!" जब उन्होंने अपने जन्म स्थान पूर्वी शानतुङमें मिशनरियों से सम्बन्धित मुकदमें चलने की सूचनाएँ सुनी और विदेशियों तथा उनके चीनी दलालों, जो उनके नगरवासियों की पीठ पर बैठे थे तथा विदेशियों से साँठगाँठ किए थे, के बारे में खबरें सुनीं, तो यह समझ लिया कि अब विदेशी कूड़ा-कबाड़ ही उनका घृणा का विषय न रह गया था।

जब प्रबन्धक वाङ सर्वप्रथम पेइचिङ आए, बैनरमैन की पोशाकों की शैली, उनके रीति-रिवाज और उनकी बातचीत तथा व्यवहार करने का ढंग, उनके नेत्रों तथा कानों में अशान्ति उत्पन्न करता था। यहाँ तक कि कभी-कभी वह उन्हें क्षुब्ध कर देता था। प्रत्येक अवकाश के दिन भोजन पर उन लोगों का निरन्तर हल्ला-गुल्ला देखकर तथा उनकी इस प्रवृत्ति पर कि वे विशेष अवसर पर विशेष व्यंजनों के भोजन का आनन्द लेने के लिये ही अत्याधिक व्यय करते थे उनका धैर्य छूट जाता था। वे यह भी पसन्द नहीं करते थे कि जिस ढँग से लोग अपने पालतू पक्षियों के पिंजड़े लेकर चलते थे, जैसे कि अमर देवता बादलों के बीच विचरण कर रहे हों। किन्तु जब वे तीस वर्ष के हो गए, प्रबन्धक वाङ स्वतः चंडूल पक्षी पालने लगे और जबें कभी वे मानचू बैनरमैन के साथ पक्षी पालन सम्बन्धी नियमों के विषय में विचारों का आदान-प्रदान करते थे, उनके विचार-विनिमय अत्याधिक गम्भीर तथा अन्तरंग जान पड़ते थे और जो प्रायः दिनभर चलते रहते थे। जब वे उनसे मिलने आते वह उन्हें एक साथ नमन (चीनी विधि से) तथा औपचारिक स्वागत-अभिनन्दन (मानचू विधि से) करना चाहते थे। इस प्रकार उन्होंने अर्ध नमन एवं अर्ध अभिनन्दन के द्वारा सम्मान प्रदर्शित करने

की एक विलक्षण विधि का सूत्रपात किया। जब उनकी दुकान में बैनरमैन सुअर के मांस की आधी कैटी खरीदने आते, तो कभी-कभी वह उन्हें अपनी हार्दिक अनुभूति के साथ परामर्श देते कि वे उसके स्थान पर एक अच्छी मांसल मुर्गी खरीद लें। जब वह उनमें सँकोच देखते तब वह सामने आकर कहते, "इसे अपने साथ घर ले जाइए, हम इसे आपके बिल में जोड़ लेंगे।"

यदि उनके सिर में पीड़ा होती या उन्हें ज्वर हो आता, तब उनके पक्षियों के पिंजड़ों को बलपूर्वक घसीटने वाले मित्र उन्हें देखने आते और उन्हें ज्वर उतारने वाली टिकियाँ खिलाते। स्त्रियाँ भी उनकी बीमारी का हाल पता लगाने के लिये अपने बच्चों को भेजती थीं। अब वह शानतुङ के "छोटे आदमी" कदापि न थे, अपितु अब मैनेजर वाङ, बड़े भाई वाङ या चाचा वाङ बन गए थे। वे अब इन लोगों को मानचू बैनरमैन बिल्कुल नहीं मानते थे, क्योंकि अब वे स्वयं उनके मित्रों में से एक थे। जब वे "तीन उत्सवों" के समय अपने बिलों के भुगतान की वसूली के लिये आते तब भी उन्हें पकड़ पाना सरल न था, किन्तु जैसे ही वे किसी बच्चे के जन्म या बच्चे के जन्म के एक माह पूरा होने वाले समारोह की सूचना पा लेते, वे सदा ही किसी उपहार के साथ वहाँ दिखाई पड़ते थे। वे सदा प्रत्येक व्यक्ति से यह स्पष्ट कर देते कि "व्यापार, व्यापार है और मित्र, मित्र हैं।" वे इस रूप में सोचते थे, "यह एक बात है कि छिङ वंश का सम्राट हान चीनियों के साथ किस प्रकार का व्यवहार करता है। किन्तु हम सभी जब एक साथ हैं, तब कोई कारण नहीं कि सभी एक दूसरे के मित्र बन कर न रहें।" इसलिये जब कभी उनकी इच्छा होती तब वे न केवल बैनरमैन के घरों में उनसे भेंट करने और उनसे प्रेमपूर्वक खुलकर बातें करने जाते थे, अपितु उन्होंने वहाँ बालक-बालिकाओं की नासिका खींचने का विशेषाधिकार भी पा लिया था। अपनी बातचीत में बैनरमैन सैनिक उन्हें बताते थे कि किस प्रकार अधिकारी उनका वेतन जेब में रख लेते हैं, किस प्रकार वे अवैध वेतन इकट्ठा कर लेते हैं और किस प्रकार वे घूस लेते तथा धोखाधड़ी करते हैं एवं रिक्त पदों को बेचते हैं। प्रबन्धक वाङ, हान चीनियों द्वारा सहन किए जाने वाले अपमान का वर्णन करते हुए अपना विरोध तथा विदेशियों एवं विदेशी सूत के सम्बन्ध में अपनी अप्रसन्नता व्यक्त करते थे। इन विचारों-विनियमों से उनकी पारस्परिक समझदारी बढ़ी तथा उनकी मित्रता का बंधन सुदृढ़ हुआ।

प्रबन्धक वाङ जब मेरे तीसरे दिन के स्नान समारोह पर आए तब वे अपने साथ सुअर की गोड़ी का जोड़ा भी ले आए। किन्तु मेरे ममेरे भाई फूहाए के अनुनय के बावजूद भी उन्होंने अन्दर आना अस्वीकार कर दिया। उन्होंने कहा, "आप जानते हैं, वर्ष समाप्त होने को है। मेरा कार्यालय इतना व्यस्त है..." जब फूहाए ने उनसे "वर्ष की समाप्ति" शब्द सुने उसने तुरन्त ही आगे कहा, "इस वर्ष सभी जगह पैसे

की तँगी है। यदि आप चाहें..." मैनेजर वाङ ने ठण्डी साँस लेते हुए कहा, "जब पैसे की तँगी है तो भी हमें तो अपने बिल वसूल ही करना है। व्यापार, व्यापार है और मित्र, मित्र हैं।" इतना कहते हुए वह तेजी से चले गए। क्योंकि शायद उनके कपड़ों से सुअर की चर्बी की बू आती थी इसलिये हमारे बड़े सुनहरे कुत्ते ने प्येनईफाङ रेस्तराँ के सामने के दरवाजे की पूरी दूरी तक बड़ी सरलता से उनका साथ दिया।

5

मैं उस घटना को कभी भुला न सकूँगा। इसलिये नहीं कि मैनेजर वाङ एक रेस्तराँ के मैनेजर थे या वे अपने साथ सुअर की गोड़ी का एक जोड़ा लाए थे, अपितु इसलिये कि वे एक हान चीनी थे। उन दिनों कुछ हान चीनी जो वास्तविक सम्पत्ति के मालिक थे वे अपने मकानों को खाली पड़ा रहने देना अधिक पसन्द करते थे अपेक्षाकृत इसके कि वे उसे किसी मानचू या मुस्लिम को किराए पर उठा देते। दूसरे दुकानदार जो शानशी और शानतुङ से आए थे और निर्धन हान चीनी, जो अपने श्रम को बेंचकर जीवित रहते थे, वे हम जैसे निर्धन हुए बैनरमैन सैनिकों से अभिन्न थे जैसे कि हम सभी एक परिवार के सदस्य हों। कुछ धनी तथा प्रभावशाली मानचू जो हान चीनियों और मुसलमानों से घृणा करते थे वे लोग हम लोगों का अपने हान चीनी और मुसलमान पड़ोसियों के यहाँ प्रायः आना जाना पसन्द नहीं करते थे। किन्तु हम दोनों ही विचारों के लोग अपना-अपना जीवन अपनी रुचि के अनुसार व्यतीत करते थे। जनता में सच्ची मित्रता के प्रवाह को कोई शक्ति नहीं रोक सकती थी।

मेरे तीसरे दिन के स्नान समारोह के समाप्त हो जाने के पश्चात ही नए वर्ष का समारोह मनाने का समय आ गया था। मेरी बुआ अत्यन्त परेशान थीं। उनके पास खरीदारी के लिये एक लम्बी सूची थी, किन्तु चूँकि मेरी माँ प्रसूतिगृह में थीं इसलिये वहाँ कोई अन्य व्यक्ति ऐसा न था जो उनके लिये खरीदने जाता। हमारे सौभाग्य से मेरे पिता घर पर थे, जिसके कारण उनके द्वारा कोई विवाद खड़ा करना स्वयं उनके लिये ही परेशानी का कारण होता। तो भी उनकी भौंहें तनी थीं और बारबार उनके कपोल फूल उठते थे। मेरी दूसरी बहिन ने जान लिया कि ज्वालामुखी अभी फूटने वाला है। इसलिये उसने तुरन्त ही पिता से बात की। उन्होंने बुआ जी की सहायता करने का भार मेरी बहिन पर डालने का निश्चय किया। मेरी बहिन जानती थी कि यह कार्यभार एक निकृष्टतम दायित्व है, जिसकी कल्पना की जा सकती है, तथापि वह यह भी जानती थी कि उसके सामने और कोई मार्ग नहीं है।

"शानशी की दुकान से मेरे लिये आधी केटी अच्छा सिरका ले आना। अपने जूतों के तल्ले घिस जाने की चिन्ता न करना और कुछ भी करो, किन्तु उन छोटी तेल और नमक की दुकानों से इसे न खरीदना। तुमने मेरी बात सुन ली न?" अनेक बार पैसे गिन लेने के पश्चात मेरी बुआ ने बड़ी अनिच्छा से वे पैसे अपनी छोटी सहायिका को दे दिए।

दूसरी बहिन सिरका लेकर लौट आई किन्तु इसके पूर्व ही कि वह थोड़ा आराम कर सके, मेरी बुआ जी ने दूसरा आदेश जारी कर दिया, "अब हमें कुछ तिली के तेल की भी आवश्यकता पड़ेगी। मैं पत्थर के कोल्हू को पेरा हुआ तेल चाहती हूँ, समझी?"

सम्भवतया आप कह सकते हैं कि मेरी बुआ अधिक नकद पैसा हाथ में देना या एक साथ अनेक वस्तुएँ खरीद लाना पसन्द नहीं करती थीं। उनका विचार था कि खरीदारी करने का यह कम खर्च करने का एक मार्ग है। मेरी दूसरी बहिन उनके साथ बड़ा धैर्य रखती थी और मेरी बुआ जी का प्रत्येक आदेश का पालन करती थी। उसमें होने वाली परेशानियों की उसे कोई चिन्ता न थी, किन्तु उसे अपने जूते घिस जाने की चिन्ता में अधिक परेशानी होती थी। जब कोई अधिक मूल्यवान वस्तु आवश्यक रूप से खरीदने का अवसर आता तब मेरी बुआ जी के सामने स्वयं जाने के अतिरिक्त और कोई विकल्प न रह जाता। वे मेरी दूसरी बहिन को अधिक पैसा देने से हिचकिचाती थीं और इसके लिये बहुत कम तैयार रहती थीं कि उसे जान लेने दें कि वे इतनी अधिक मूल्यवान वस्तुएँ खरीदती हैं। आँगन में कोई नहीं है, ऐसा देखकर वे घर से बाहर ठीक वैसे ही निकल गयी जैसे कि कोई छोटी मछली जाल से बाहर निकल जाये। जब वे नगर में पहुँची तो ऐसा लगा कि वे सामने पड़ने वाली सभी वस्तुएँ खरीद लेना चाहती हों, किन्तु वे यह भी सोचती थीं कि प्रत्येक वस्तु बहुत कीमती है। वे कोलाहलपूर्ण सड़कों के बीच से अपना मार्ग बनाते हुए गईं और सावधानी से प्रत्येक स्टोर को देखती रहीं कि उन्हें कहीं अधिक पैसा न देना पड़ जाये। अन्त दो-तीन घण्टे इधर-उधर दुकानों में घूमने के पश्चात वे खाली हाथ वापस आ गईं। नए वर्ष की पूर्व संध्या पर जब खरीदारी के लिये बहुत देर हो चुकी, वे संघर्ष के लिये चल पड़ी और मेरी दूसरी बहिन को अपने साथ लेकर बाहर निकल गईं। मेरी दूसरी बहिन खाली बोतलों और जारों से भरी डलिया लिये चल रही थी। इस बार मेरी बुआ ने सारी सावधानी बरतने की बात छोड़ दी और तमाम प्रकार की वस्तुएँ एक ही दुकान से खरीद लीं जहाँ कीमतें सस्ती नहीं थीं। तो भी उन्होंने यह कहकर लोगों को भयभीत कर दिया कि जो वस्तुएँ उन्होंने खरीदी हैं वे बहुत कीमती है। इसलिये जब मेरी दूसरी बहिन ने मेरी माँ को बताया तब उसे अपना मुँह मेरी माँ के कान के निकट जहाँ तक सम्भव था उतना निकट लाना पड़ा और आश्वस्त

होने के लिये अपने हाथ से मुँह को पूरी तरह ढक लिया जिससे कि इसके पूर्व कहीं थोड़ी हँसी न फूट पड़े।

हमारा नववर्ष का समारोह अपेक्षाकृत साधारण था। चूँकि माँ खाङ को नहीं छोड़ सकती थीं और मेरी दूसरी बहिन प्रतिनिधि के रूप में कार्य करने में व्यस्त थी, अतः नववर्ष के धार्मिक अनुष्ठान कार्य को पूरा करने का दायित्व मेरे पिता पर आ पड़ा। मेरे पिता एक बैनरमैन सैनिक थे किन्तु पृथ्वी को प्रकम्पित करने की गरिमा, जो हमारी जाति का पिछले दो सौ वर्षों का गौरवशाली इतिहास का प्रमाणांक रहा है, उसमें कुछ कमी आ गयी थी। यदि उनके सामने कोई मार्ग होता तो मेरे पिता माननीय चन की भाँति अपना समय व्यतीत करना पसन्द करते अर्थात वे नीलकण्ठ पालते-उड़ाते, चाय घरों में बैठते, कभी-कभी भुने हुए मुर्गे का जोड़ा उधार खरीदते या कुछ आपेरा राग या लोकप्रिय गीत गाते रहते। उनको चीनी टोपी या मोरपंख पहनने का अवसर कभी नहीं मिला। नगर के उत्तरी उपनगर में बीस या तीस "मू" भूमि जो कभी हमारी थी वह भी कई पीढ़ी पूर्व बेची जा चुकी थी, केवल एक "मू" से कुछ अधिक भूमि छोड़कर जहाँ अब कुछ कब्रों के पत्थर लगे थे। घरों के हमारे भाग जो बैरनमैन को बाँटे गए थे पहले गिरवी रख दिए गए और शीघ्र ही हमारे पूर्वजों द्वारा कुछ भुनी हुई बत्तखों के बदले बेच दिए गए। ऐसी कहानियाँ भी मेरी परदादी के सम्बन्ध में कही जाती थीं कि वे युननान और दूसरे दूर-दूर के स्थानों में उच्चपदस्थ मानचू अधिकारी के पास बैठने के लिये या सम्पर्क रखने के लिये यात्रा करती थीं। यह निश्चय करने के लिये कोई मार्ग नहीं है कि उस अधिकारी ने चाँदी की कितनी सिलें इकट्ठी कर ली थीं। बहुत सम्भव है कि मेरी परदादी का काम बड़े आदमियों की श्रीमती की डोली को अन्दर या बाहर ले जाने में सहायता करना और उनके लिये चाय डालना या उनके लिये अफीम की चिलम बनाना रहा हो। हम बहुधा अपनी परदादी के काम के प्रकार की चर्चा नही करते थे, किन्तु हम यह कभी नहीं भूल सकते थे कि यह घर जिसमें हम रहते थे वह उन्होंने खरीदा था।

एक बात जिसके सम्बन्ध में मेरे पिता को कोई चिन्ता नहीं करनी पड़ती थी वह थी घर का मासिक किराया देना। यद्यपि गर्मी की वर्षा ऋतु में जब आँगन की दीवारें जो टूटी ईंटों की बनी थीं, कई स्थानों पर गिरने लगतीं, तब वे साहस खो देते थे। मेरे पिता में कोई बुरी आदतें नहीं थीं। वे न तो तम्बाकू ही पीते थे और न जुआ खेलते थे और जब कभी वे छुट्टी के दिनों में एक आध प्याली मदिरा पी लेते तब अपना प्याला नीचे रखने के पूर्व ही उनका मुँह एक बड़े बेर की भाँति लाल हो जाता था। उन्हें पौधों और फूलों से प्रेम था। प्रत्येक गर्मी की ऋतु में वे न्यूनतम मूल्य वाला बरबीना (एक प्रकार का पौधा) खरीद लेते थे, जिसमें बूढ़ी दादियों या बाबाओं को भी न कोई रुचि न थी। "पर्सलेन" और गुल अब्बास जैसे पौधे पानी पाये बिना

भी प्रतिवर्ष बढ़ आते थे और ठीक समय पर पल्लवित-पुष्पित हो जाते थे। घर पर चूँकि वे अधिक नहीं पढ़ सकते थे, अतः पढ़ने में वे कोई समय नहीं लगाते थे। उनके सम्पूर्ण कला संग्रह में व्यापारिक कलाकार की केवल वह प्रति ही थी जिसका नाम "वाङ शीचि अपनी प्रिय हंसिनी पालते हुए" था, जिसे वे केवल विशेष अवसरों पर ही निकालते थे। अतः नववर्ष की पूर्व संध्या तक वे उसे दीवार पर नहीं टाँगते थे जहाँ वह चन्द्रमास के पहले उन्नीसवें दिन* तक टँगा रहता था। जब वे घर पर रहते तब लकड़ियाँ चीरते, अपनी बरबीना की देखभाल करते या पानी का हौज साफ करते थे। जब उन्हें कोई सम्बोधित करता, तब वे अत्यन्त मैत्रीपूर्ण रहते और बहुत ही संक्षिप्त तथा विनम्रतापूर्वक उत्तर देते थे। यदि उनसे कोई न बोलता तो वे अपने चेहरे पर आधी मुस्कान लिये चुप रहते, यहाँ तक कि वे पूरे दिन कुछ भी न बोलते। वे सदैव शिष्ट रहते थे, तो भी जब वे सड़क पर चलते तब अपनी आँखें ठीक अपने सामने गड़ाए रखते। जब तक कि उनके मित्रगण उनका अभिवादन न करते तब तक न वे उन्हें सम्बोधित करते और न उनका अभिवादन करते थे। जब कभी मेरी माँ उन्हें मित्रों या रिश्तेदारों से भेंट करने भेजतीं तब वे खुशी से चले जाते थे, किन्तु थोड़े ही समय बाद वे पुनः अपने घर की ओर चल पड़ते थे। "अरे आप इतना शीघ्र कैसे लौट आए?" मेरी माँ प्रश्न करतीं। पिता तेजी से मुस्कराते और अपने जूतों की धूल किसी कपड़े के डस्टर से साफ कर देते थे। उन्होंने अपने जीवन में कभी न तो किसी से लड़ाई की और न वाद-विवाद ही किया। वे इतने ईमानदार थे जितना कोई हो सकता है, तथापि किसी ने भी उनसे लाभ उठाने का प्रयास नहीं किया। वे शाही महल में एक मानचू गार्ड थे जिनकी कमर में एक परिचय बैज लटका रहता था।

जब मैं लगभग दस वर्ष का था तब मैं अपनी माँ को यह बताने के लिये बाध्य करता रहता था कि मेरे पिता देखने में कैसे लगते थे। यदि उस समय उनकी मनोदशा ठीक रहती तब वे ऊपर बताए गए तमाम लक्षणों को गिना देती थीं। मैं सदा यह महसूस करता कि मेरे पिता एक अत्यन्त निराले बैनरमैन सैनिक थे।

जब मेरे पिता न प्याज को (जिससे ग्रैनी पाए ने मुझे मारा था) घर की छत पर फेंक दिया, उस समय वे अत्यन्त प्रसन्न थे। उस क्षण से जब तक कि उन्होंने अपनी "वाङ शीचि अपनी प्रिय हंसिनी पालते हुए" की प्रति नहीं निकाली और उसे नहीं लटकाई, तब तक वे लगातार मुस्कराते रहे और यहाँ तक कि लोगों से बातें करने लगे। इसके पूर्व कि वे उनसे कुछ कहते, उन्होंने सभी से एक ही प्रश्न किया, "हम अपने बच्चे का क्या नामकरण करें?"

लम्बे विचार-विनिमय के पश्चात भी नववर्ष की पूर्व संध्या तक यह निश्चय न

---

* नववर्ष पर्व की समाप्ति का दिन।

हो सका जब प्रत्येक व्यक्ति अपने पूर्वजों तक पहुँचाने के लिये कागजी मुद्रा* जलाता था। तब कहीं मेरे पिता ने मेरा अधिकृत नाम छाङ्शुन (अनवरत भाग्यशाली) रखना निश्चित किया और मेरा दूध का नाम "गँजू" रखा। थोड़े समय तक मेरा कोई शिष्टाचारी नाम नहीं रहा।

अन्य समस्याओं की ओर ध्यान देते हुए मेरे पिता ने नववर्ष के लिये कोई विशेष वस्तु नहीं खरीदी, जिसका मुख्य कारण था धन का अभाव। वे देवताओं और बुद्ध की अवहेलना नहीं करते थे, फिर भी वे बड़ी भक्ति भावनापूर्वक धन के देवता तथा अग्निदेवताओं की कागज की तस्वीरें, लम्बी-लम्बी धूपबत्तियाँ, छोटी और बड़ी लाल मोमबत्तियाँ और आधी भुनी हुई केक्स से भरी पाँच प्लेंटे खरीद लाए। उन्होंने नववर्ष के कुछ चावल भी पकाकर एक छोटे से विशिष्ट चावलदान में रख दिए। चावलों को कुछ बेरों और सूखे आलूचों से सजा दिया और फिर उस पर उन्होंने छोटी सी देवदार की डाली गाड़ दी जिसमें सोनें के वर्क के अनेक छोटे-छोटे सुनहरे टुकड़े चिपकाए गए थे। यह पूर्ण निर्मित वस्तु वास्तव में एक समारोह जैसी आनन्दप्रद थी। उन्होंने बड़ी सरलता से अपनी हार्दिक प्रसन्नता की अभिव्यक्ति की : "हम क्या खाते हैं, यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है। किन्तु देवताओं और बुद्ध के प्रति हमारा व्यवहार अभद्र न रहना चाहिए। यह देवता और बुद्ध ही हैं जिनकी कृपा से मुझे वृद्धावस्था में पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई है।"

नववर्ष की पूर्व संध्या पर मैं और मेरी माँ बहुत गहरी निद्रा में डूबे थे, मानो हम नववर्ष के समारोह में कोई रुचि न रखते थे। नववर्ष का भोजन बनाने में मेरी दूसरी बहिन मेरी बुआ जी की सहायता में लगी थी। मेरी बुआ जी काम के साथ ही शिकायतें भी करती जाती थीं और अधिकतर शिकायतें मेरे प्रति होती थीं। "वह छोटा गंजा भेदिया, क्या वह कुछ पहले या विलम्ब से जन्म नहीं ले सकता था? यह ठीक नववर्ष के समय पैदा हुआ और अब सारा कार्य अव्यवस्थित कर रहा है।" जैसे ही मेरी बुआ जी ने कटू वाक्यों की झड़ी लगाई मेरे पिता उनके पास मुस्कराते हुए गए और कहा, "मेरी प्रिय बड़ी बहिन, क्या मैं आपकी कुछ सहायता कर सकता हूँ?"

"तुम?" मेरी बुआ जी ने मेरे पिता को ऐसे देखा जैसे कि उन्होंने उनको इससे पूर्व पहले कभी न देखा हो। "तुम बिना सोचे-समझे अपना मुँह खोलने लगते हो। कुछ देर इस पर विचार करो। विचारो, तुम क्या काम कर सकते हो?"

मेरे पिता ने क्षणभर विचार किया और मुस्कराए और तब ऐसा लगा कि जैसे वे बैनरमैन, कैप्टन या कर्नल पद से अवकाश ले रहे हों, वे कमरे से बाहर निकल

---

* प्राचीन मान्यता थी कि मृत व्यक्तियों के नाम पर जलाई जाने वाली कागजी मुद्रा परलोक में उनके पास पहुँच जाती थी, जिससे वे अपना दैनिक खर्च चलाते थे।

गए।

बाहर सड़कों पर देवताओं की पूजा के लिये पटाखे छोड़ने की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही थी। तंग गलियाँ मांस काटने की ध्वनि से गूँज रही थीं, क्योंकि प्रत्येक परिवार च्याओचि में भरने के लिये कीमा बना रहा था। इन सबको मिलाकर ऐसी तीव्र ध्वनि उत्पन्न हो रही थी कि जैसे दस हजार घोड़े तीव्र गति से भाग रहे हों या किसी सागर के ज्वार की लहरों का गर्जन हो रहा हो। किन्तु यदा-कदा आप एक ऐसी ध्वनि भी सुन सकते थे जो अन्य सभी को पराभूत कर सकती थी। यह अपना ऋण वसूलने वालों द्वारा लोगों के द्वार खटखटाने की ध्वनि होती थी, जो इतनी जोर से भड़भड़ाते थे कि दरवाजे और उनकी कुण्डियाँ दोनों ही लगभग टुकड़े टुकड़े हो जाते। यह तीव्र ध्वनि भय के कारण लोगों के शरीर कँपकँपी उत्पन्न कर देती थी तथा पुष्ट से पुष्ट कुत्तों को भी कँपा देती थी जो उस समय इतना भयभीत हो जाते थे कि किंचित मात्र भौंक भी नहीं सकते थे। इस ध्वनि के कारण असंख्य प्रकार की निम्न स्तर की गिड़गिड़ाहटों, विवादों और स्त्रियों तथा बच्चों की चिल्लहाट की मिली-जुली आवाज सुनाई पड़ती थी। वहाँ कुछ लोग ऐसे थे जो नितांत किंकर्तव्यविमूढ़ होने के कारण अपना मुँह छिपाने के लिये इन आवाजों को सुनते ही भाग खड़े होते थे और इसी रात्रि को जब तमाम देवता और बुद्ध स्वर्ग से नीचे उतरते थे और जब पूरा आकाश शुभ बादलों से घिर जाता था तब वे वहाँ से नगर की दीवारों के निकट किसी कोने में खिसक जाते थे और चुपचाप अपना जीवन समाप्त करते थे।

मेरे पिता शाकाहारी च्याओचि स्वयं बना रहे थे। वे अत्यन्त विक्षुब्धता की स्थिति में थे। शाकाहारी च्याओचि नववर्ष की पूर्व संध्या पर बनाना एक पारिवारिक रीति थी, यह बुद्ध के प्रति भक्ति प्रदर्शन का एक भाव और साथ ही साथ सुअर के मांस पर खर्च से बचत का एक साधन भी था। जो वस्तुएँ बुद्ध को समर्पित की जाती थीं उनका रूप अत्याधिक सुन्दर होना चाहिए था। उदाहरण के लिये च्याओचि छोटे और सुन्दर होने चाहिए थे और उनके किनारे भली प्रकार मुड़े होते थे, जिनमें कलात्मकता तथा स्थायित्व होता था। यह एक अपशकुन माना जाता था कि पकाते समय कोई च्याओचि फूट जाये। जैसे ही मेरे पिता की घबराहट बढ़ी, च्याओचि टेढ़े-मेढ़े होते गए, कुछ छोटी-छोटी नावों और चुहियों के आकार के हो गए जबकि दूसरे उनके तमाम प्रयासों की अपेक्षा अपना मुँह फैलाए वहीं पसर गए।

इस तथ्य के अतिरिक्त कि मेरे पिता की पाक कला अधिक विकसित नहीं थी, सम्भवतः उनकी घबराहट का कारण इस तथ्य के साथ जोड़ सकते हैं कि उनका मन च्याओचि बनाने में नहीं लग रहा था। वे अपनी सबसे बड़ी पुत्री के लिये चिन्तित थे। उन्होंने स्वयं मई माह का अनाज अप्रैल में ही समाप्त कर डाला था। किन्तु वे इस भार का अनुभव करते थे और इसी कारण सदा योजना बनाते थे कि

एक-एक पैसा किस प्रकार खर्च किया जाये जिससे कि तीनों महोत्सवों के अवसरों पर ऋण वसूल करने वाले साहूकार उनके दरवाजे को खटखटाकर न तोड़ सकें। माननीय चङ, उनकी पत्नी और त्वाफू के लिये उधार पर वस्तुएँ खरीदना बिना मूल्य के खरीदने के समान था और वे अपना उधार वापस देने पर कोई ध्यान ही नहीं देते थे। यदि कोई पेइहाए पार्क का सफेद पगोडा भी उन्हें उधार खरीदने के लिये कहता, तो वे निःसंकोच हस्ताक्षर कर देते। पिता जी यह कल्पना भी न कर सकते थे कि नववर्ष मनाने के लिये वे कौन से चतुरतापूर्ण साधन अपनाएँगे और इसी विचार ने उनके मन में अपनी सबसे बड़ी बेटी के सम्बन्ध में मानसिक तनाव उत्पन्न कर दिया था।

माँ पड़ोसी के दरवाजे पर थपथपाहट की आवाज सुनकर जाग पड़ीं। वे अपनी बेटी के कारण बहुत कम सो पाई थी, तो भी मेरे पिता के साथ इस विषय पर विचार करने के लिये पर्याप्त शक्ति नहीं बटोर पा रही थीं। वे उनसे केवल यही कह सकीं, "आप कुछ देर सो क्यों नहीं जाते?"

पिता जी को इस सुझाव से धक्का लगा। पीढ़ियों से हमारे परिवार ने नववर्ष की पूर्व संध्या पर पूरी रात्रि जागने और बैठे रहने की परम्परा का दृढ़ता से पालन किया था। वे केवल बुदबुदाए और च्याओचि लपेटने के लिये वापस चले गए। उन्होंने एक छोटा सिक्का निकाला, उसको चमकाया और उसे च्याओचि में भर दिया, जिससे कि यह निश्चय हो सके कि परिवार का कौन सदस्य भाग्यशाली बनेगा अर्थात जो व्यक्ति इस भाग्यशाली च्याओचि को खाएगा और सिक्के को नहीं निगलेगा उसके लिये पूरे वर्ष अच्छा भाग्य निश्चित है। पिता जी ने नववर्ष के लिये रातभर बैठकर जागरण का निश्चय किया और विश्वस्त होने के लिये यह देख लिया कि तेल की बत्तियाँ लोहे की छोटी कुप्पियाँ तथा बुद्ध के सामने जलने वाली धूपबत्ती रातभर जलती रहें। अब उनके एक पुत्र हो गया था, जिस पर उनकी आशाएँ केन्द्रित थीं। उन्हें बत्तियों को तेज जलाए रखना चाहिए और पूरा वातावरण भव्य बनाए रखना चाहिए, जिससे कि उनकी सभी आकांक्षाएँ पूरी हो सकें। वे हरे रंग की चीनी मिट्टी की एक बड़ी नाँद ले आए, जिसमें हम लोगों ने नववर्ष के उत्सव का सारा बेकार पानी इकट्ठा कर लिया जो परम्परानुसार नववर्ष के पाँचवें दिन के बाद बाहर फेंक दिया जाता था।* दूसरी च्याओचि बनाने के बाद, जो चूहे के आकार जैसी लग रही थी, उन्होंने अपना पंचाँग बाहर निकाला और धन के तथा प्रसन्नता के देवताओं की स्थितियों का भली भाँति निरीक्षण कर लिया जिससे कि जब वे अगली सुबह को तड़के बाहर जायें तो सही दिशा की ओर जा सकें। एक बार पुनः उन्हें प्रसन्नता

---

* ऐसा विश्वास किया जाता था कि नए वर्ष के प्रथम पाँच दिनों में जो वस्तु बाहर फेंकी जाती थी उसके साथ परिवार का सौभाग्य भी बाहर निकल जाता था।

का अनुभव होने लगा। यदि वे केवल खायें और अन्य व्यय कम करें तो देवताओं तथा बुद्ध की सहायता एवं कृपा के द्वारा उनका प्रत्येक कार्य उनकी इच्छानुसार चलता जायेगा और उनका नववर्ष शान्तिपूर्वक व्यतीत होगा।

अर्ध रात्रि के समय पटाखों के फटने की आवाजें बढ़ती गईं। जैसे-जैसे दुकानदारों और मालिकों ने देवताओं को भेंट देना आरम्भ किया, मेरे पिता पुनः बुदबुदाए। उन्हें मालूम नहीं था कि युननान पूर्व की ओर है अथवा उत्तर की ओर है और यह अनुमान और भी कम था कि इंगलैण्ड संयुक्त राज्य अमरीका के किनारे है या युननान के निकट है। किन्तु जैसे ही उन्होंने पेइचिङ में फटते हुए पटाखों की धाँय-धाँय ध्वनि सुनी तो उन्हें विश्वास हो गया कि पृथ्वी पर प्रसन्नता और शान्ति स्थापित है।

मेरी दूसरी बहिन मुँह लटकाए अन्दर आई। वह नवम मास के नवें दिन वाले समारोह से लाए गए दो फूलों के केक पकड़े थी। उसकी आँखें डबडबाई हुई थीं। उसने मेरी बुआ की पिछले कुछ दिनों में सेवा करने में कोई संकोच न किया था और नववर्ष के उपहारस्वरूप कोई पैसा न मिलने की चिन्ता भी नहीं की थी। किन्तु जब नववर्ष की पूर्वसन्ध्या पर मेरी बुआ ने उसे वे दो सड़े से फूल वाले केक देकर टरका दिया जो पिछले नौवें माह से बचे रखे थे, तब मेरी बहिन बुरी तरह परेशान हो गयी। वह उन केकों को फर्श पर फेंकने ही वाली थी कि मेरे पिता ने उसे रोक दिया और कहा, "मेरी छोटी बच्ची! यह उचित नहीं है।" पिता ने दोनों पुराने धूल भरे केक ले लिये और उन्हें मेज पर रख दिया और कहा, "मेरी छोटी बच्ची, रो नहीं, रो नहीं! यह अपशकुन होगा।" दूसरी बहिन ने अपने आँसू थाम लिये।

पिता ने उसे कई सौ ताम्बे के सिक्के दिए और कहा, "जब छोटा ली इधर आए, तुम अपने लिये कुछ कैण्डियाँ और बीन खरीद लेना। यह तुम्हारा 'मिश्रित मिष्ठान' होगा।" वे जानते थे कि आज की रात छोटा ली अपनी कैण्डी बेचते हुए निकलेगा और सुबह तक बेचता रहेगा। ऐसे सभी बच्चे जो असली "मिश्रित मिष्ठान" खरीदने में असमर्थ थे, उसकी ही बाट जोह रहे थे।

अधिक समय नहीं बीता कि छोटा ली आ गया। जैसे ही दूसरी बहिन बाहर जाने को थी, मेरी बुआ ने अपने दरवाजे के बाहर झाँका और कहा, "अरे छोटी बिटिया कुछ देर पहले... अभी कुछ ही देर पहले वह... जो वस्तु मैंने तुम्हें दी थी... वह तुम कुत्ते को खिला सकती हो। यहाँ आओ, इधर मेरे पास आओ।" फिर उन्होंने दूसरी बहिन के हाथ में एक नया लाल बैंक नोट दबा दिया और भड़ाक से अपने दरवाजे को बन्द कर लिया। दूसरी बहिन बाहर गयी और कुछ मिश्रियाँ, बीन, बड़े जंगली छुहारे और सेव के रस से बनी मिश्री की दो लड़ियाँ खरीद लीं। जब वह लौटी तब बोली, "बुआ जी क्या आप सेव की रसयुक्त मिश्री पसन्द करेंगी, वहाँ सफेद सेव वाली मिश्री भी है", मेरी बुआ ने उत्तर दिया, "मैं अब सोने जा रही हूँ, अगले वर्ष

मिलूँगी।''

मेरे पिता जानते थे कि यदि मेरी बुआ इस प्रकार अपना पुराना वर्ष समाप्त करेंगी, तो जैसे ही नया वर्ष आरम्भ होगा उनका दुर्भाग्य का समय आना निश्चित था। वह उनके दरवाजे की ओर भागे और गिड़गिड़ाते हुए पुकारा, ''मेरी प्यारी दीदी, लिटिल वन और मेरे साथ ताश खेलना कैसा रहेगा।''

''तुम्हारे पास कितना पैसा बचा है?'' उन्होंने पूछा।

''हम लोग सेम के बीजों से खेलेंगे।''

मेरी बुआ बहुत जोर से हँस पड़ी और फिर अपनी फूँक से बत्ती को बुझा दिया। मेरे पिता मेरी बहिन के पास लौट आए और धीरे से बोले, ''मैंने उसे हँसा दिया है और इसलिये कम से कम कल तक हमारे ऊपर आकाश से बज्रघात नहीं होगा।''

पिता और पुत्री बैठकर बातें करने लगे और मिश्री तथा सेम खाने लगे।

''नववर्ष की छठवीं तारीख को हमें जाना चाहिए और बड़ी बहिन को घर ले आना चाहिए,'' दूसरी बहिन ने कहा।

''यही उचित होगा।''

''हम उसे खाने को क्या दे सकेंगे? उसकी सास और श्वसुर सदा ही अच्छे से अच्छा खाते हैं। वे बड़ी बहिन के लिये कोई अच्छी चीज नहीं छोड़ेंगे।''

पिता चुप थे। वे सच्चे मन से कुछ विशेष व्यंजन सबसे बड़ी बहिन के लिये तैयार कराना चाहते थे, किन्तु...।

''छोटे भाई के पूरे एक माह का हो जाने वाले उत्सव में यही होने जा रहा है...।'' दूसरी बहिन इतना कहते हुए रुक गयी और आगे कुछ कहने में सकुचा गयी।

मेरे पिता का आरम्भ से ही नववर्ष बहुत ही कम खर्च तथा हर्षोल्लास से मनाने का विचार था। किन्तु अब तमाम प्रयत्न करने के पश्चात भी वे प्रसन्नता का अनुभव नहीं कर पा रहे थे। उन्होंने इस बात पर कभी कोई सन्देह करने का साहस नहीं किया कि छिङ वंश का विशाल साम्राज्य अनन्त काल तक बना रहेगा। किन्तु यदि सम्राट सदा के लिये भी अपने सिंहासन पर बने रहे और यदि उनका पुत्र किसी रिक्त स्थान को भर दे और एक बैनरमैन सिपाही बने तो क्या? किसी को पुत्ररत्न प्राप्त होना अत्यन्त प्रसन्नता का अवसर होता है, किन्तु यह अत्यन्त दुखदायी भी हो सकता है।

''जब छोटा भाई बड़ा होगा तो वह कम से कम घुड़सवारों में स्थान पा लेगा और त्वोफू की भाँति ही उसे भी पहनने के लिये पाँचवी श्रेणी की टोपी मिलेगी।'' बहिन अपना बड़ा सा बीन कुतरते हुए कुछ अन्य बुद्धिमत्तापूर्ण बातें सोचने का प्रयास कर रही थी कि जिससे उसके पिता प्रसन्नता का अनुभव करें।

''तो फिर क्या?'' पिता अब भी उदास थे।

"अन्यथा, वह जाकर परिश्रम से पढ़ेगा, परीक्षाएँ देगा और एक "अग्रिम विद्वान*
बन जायेगा।"

"उसके लिये पैसा कौन देगा?" ऐसा कहते हुए उनके चेहरे पर मुस्कान का कोई चिह्न नहीं झलका।

"मैं समझ गयी, ममेरे भाई फूहाए की भाँति उसे भी कोई धन्धा सीखने दें।" दूसरी बहिन स्वयं आश्चर्यचकित थी कि उस संध्या पर वह अनेक नए विचार प्रस्तुत करने के योग्य बन गयी है। सम्भवतया उसके द्वारा खाई जाने वाली मिश्रियों और बड़ी-बड़ी बीन ने अपना प्रभाव डालना आरम्भ कर दिया था।

"हम बैनरमैन सदा ही यह सोचते आए हैं कि जब तक आप किसी धन्धे को सीखने के लिये विवश न हों तब तक उसे न सीखना ही सदा उचित होता है।"

पिता और पुत्री छोटे भाई के भविष्य के कार्यक्रम को निश्चित किए बिना ही प्रातः तीन बजे तक वार्ता में संलग्न रहे। दूसरी बहिन ने सेव की रसयुक्त मिश्रियाँ खाना समाप्त कर दिया, उढ़क गयी और गहरी नींद में सो गयी। पिता जी ने डोमिनो खेल की गोटें निकाली जिनके शेर का मोहरा न था और अपनी वृद्धावस्था के पुत्र के भविष्य पर विचार करने लगे।

जैसी कि आशा की जा सकती है, नववर्ष के दिन का सबसे पहला अतिथि ममेर भाई फूहाए था। जैसे ही उसने साष्टाँग प्रणाम किया, मेरे पिता ने पूर्ण माह का उत्सव मनाने का मार्ग में आने वाली कठिनाइयों की सूची बताना आरम्भ कर दी। फूहाए ने कुछ अप्रिय सा परामर्श दिया, "जब आप अपने नववर्ष में किसी से मिलने जायें, तब आप क्यों न अपने मित्रों और रिश्तेदारों से पूरे माह वाला उत्सव न मनाने के सम्बन्ध में क्षमायाचना कर लें।" उन्होंने यह अनुभव किया कि फूहाए का प्रस्ताव यों तो उचित था, किन्तु इसका अर्थ था पुत्र की अवमानना। वह पुत्र जिसकी बुद्धिमत्ता पूर्वजों के नाम में एक उज्ज्वल पृष्ठ जोड़ देगी। वह पूर्ण माह का उत्सव मनाए बिना किस प्रकार रह सकते हैं?

"तनिक सुनो, यदि तुम घूम-फिर कर भी हर एक को यह स्पष्ट कर देते हो कि समारोह स्थागित कर दिया गया है तो भी कुछ लोग आने से नहीं चूकेंगे। हम बैनरमैन इसी प्रकार के संस्कारों के पक्के अभ्यासी हैं।" यह सुनकर ममेरा भाई फूहाए हँसा और बोला, "किन्तु इससे तो कार्य और सरल हो जायेगा। यदि हम उन्हें पहले से यह बता देते हैं कि हमें पूर्णमाह वाला उत्सव नहीं मनाना है, फिर भी लोग आने के लिये जोर दें, तब उन्हें कुछ भी कहने का अधिकार न होगा। अतः यदि हम उन्हें केवल सादी चाय ही पिलायेंगे तो भी वे अधिक शिकायतें न कर सकेंगे।"

"हम उन्हें सादी चाय नहीं पिला सकते।" पिता ने अपनी भौहें सिकोड़ते हुए

* चीनी परीक्षा पद्धति में विद्वानों की तीन श्रेणियों में सर्वोच्च श्रेणी।

कहा।

"मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि इसका कोई महत्व नहीं कि हम उन लोगों को खाने में क्या देते हैं किन्तु वे कोई चिकचिक नहीं कर सकते कम से कम हम यह कहने की स्थिति में तो होंगे कि हमने छोटे भाई के एक माह का उत्सव मना लिया।"

पिता ने मुस्कराते हुए अपना सिर कई बार हिलाया।

"तुम बिल्कुल ठीक कहते हो, फूहाए तुम सही हो, तुम बिल्कुल ठीक कहते हो।" ऐसा लगता था कि जैसे लोगों के सामने केवल थोड़ा सा कुछ खाने के लिये रखने में कुछ भी व्यय करने की आवश्यकता न पड़ेगी। "छोटी बच्ची मेरा लबादा ले आओ! फूहाए आओ चलें! मैं सबको नववर्ष की बधाई भी देना चाहता हूँ।"

"इसमें जल्दी किस बात की है?"

"जितनी ही शीघ्र यह मेरे मस्तिष्क से निकल जाये उतना ही अच्छा होगा।"

मेरी दूसरी बहिन मेरे पिता का मैरून रंग वाला साटन का लबादा लाने चली गयी। वह दूसरी बहिन की आयु से भी दो वर्ष पुराना था, किन्तु पुराना जान नहीं पड़ता था क्योंकि वे उसे केवल नववर्ष तथा अन्य विशेष अवसरों पर ही पहना करते थे।

जब मेरी बड़ी बहिन पहले महीने की छठवीं तारीख को घर आई, निश्चय ही हमने दस प्रकार की सुगन्धों से भरे आलू मिला गरम पके मांस का आदेश नहीं दिया या प्येनईफाङ रेस्तराँ से उसके लिये सूचओ स्टाइल का मिश्रित मांस का डिब्बा भी नहीं मँगाया। मेरी बड़ी बहिन जिस ओर भी जाती मेरी माँ की आँखें उस पर लगी रहती थी, जैसे कि उसने अभी उसे जी भरकर न देखा हो। माँ ऐसा अनुभव करते हुए जान पड़ रही थीं कि किसी रूप में उसने मेरी बहिन को अपमानित सा किया है। बड़ी बहिन उसके साथ खुलकर बात करती थी। "माँ! इस प्रकार मेरी ओर घूरकर न देखो, मुझे आप जो कुछ भी खाने को देंगी वह सब अच्छा ही होगा। यदि मैं कुछ रातें सुख से सोकर बिता सकूँ और मेरे पैरों को थोड़ा सा विश्राम मिल जाये तो मैं बुद्ध को धन्यवाद दूँगी।" ऐसा बोलते समय उसके होंठ काँप रहे थे, किन्तु वह अपनी रुलाई पर नियंत्रण किए थी। वह अपने परिवार के सामने अपने तमाम दुख दर्दों को बताने से बचना चाहती थी, क्योंकि उसे भय था कि उसके आँसू नववर्ष की आशाओं और आश्वासनों की भावना पर पानी फेर देंगे। नवीं तारीख को वह अपनी ससुराल लौट गयी। घर जाते समय जब वह तेज हवा में फँस गयी तो रोने लगी। इस प्रकार रोने का दोष आँखों में धूल घुस जाने पर डाल देने से उसे रोने का सरल बहाना मिल गया।

छठी तारीख के बाद मेरी बुआ पुनः जुआ खेलने जाने लगी थीं। भाग्य उनका

साथ दे रहा था और वे कई बार जीत चुकी थीं। फलतः इस बार के नववर्ष पर यद्यपि भौतिक दृष्टि से कुछ कमी जरूर थी, किन्तु धार्मिक दृष्टि से वह भव्य था। कंदील उत्सव (चाँद के पहले महीने का पन्द्रहवाँ दिन) की शाम को मेरी बुआ ने मेरी दूसरी बहिन को कंदीलें दिखाने के लिये बाहर ले जाकर सभी को आश्चर्य में डाल दिया। वे उतनी दूर तक गयीं जहाँ नगर के पिछले फाटक के पश्चिम की ओर नगर के देवता का मन्दिर स्थापित था और जहाँ उन्होंने भूत-प्रेत उतारने वाले ओझा को अपने कानों, आँखों, नाक और मुँह से अग्नि उगलते हुए देखा। अन्तिम कुछ दिनों से मेरी बुआ मेरी छोटी बहिन पर विशेष ध्यान देने लगी थीं। सम्भवतया इसलिये कि दूसरी बहिन ने उनके दो सड़े-से-फूल वाले केक की भेंट को नववर्ष की पूर्व संध्या पर पूर्ण रूप से तिरस्कृत नहीं किया था। सम्भवतः वे इस प्रकार उसकी परीक्षा लेना चाहती थीं कि वास्तव में वह एक अच्छी और आज्ञाकारिणी लड़की है अथवा नहीं। यदि दूसरी बहिन ने वह भेंट स्वीकार करने से इंकार न कर दिया होता तो उसका फल होता हमारे आँगन में मेरी बुआ की प्रधानता से अस्वीकृति और जिसके लिये वह बुरी तरह दंडित की जाती।

हम अपनी ओर से एक भी मीठा मालपुआ* खरीद पाने में असमर्थ थे। इसलिये हमें अपने उन मित्रों और रिश्तेदारों के लिये जो चेतावनी देने पर भी हमारे पूरे माह की दावत में आ ही गए, कुछ खरीदने के हेतु पैसा बचाने में कमखर्ची करनी पड़ी।

सचमुच ही उस दिन अनेक व्यक्ति अपना सम्मान व्यक्त करने आ पहुँचे। मेरे बहिनोई त्वोफू उन आने वालों में प्रथम थे। वे पहले से कुछ दुबले जान पड़ रहे थे। पहली से उन्नीस तारीख तक वे पेइचिङ के प्रत्येक मन्दिर के मेले में उपस्थित रहने के कारण बहुत अधिक व्यस्त रहे थे। दूसरी तारीख को वे धन के देवता के मन्दिर में गए थे और चाँदी की सिल्लियों** के रूप में उधार लिया था, इस बात पर विश्वास करते हुए कि वे सचमुच ही एक पवित्र भावनाओं वाले व्यक्ति होने के कारण अगले वर्ष निश्चय ही धनवान हो जायेंगे। शुभ्र मेघ मन्दिर में उन्होंने बूढ़े ताओ पुजारी पर, जो सीढ़ी के नीचे बैठा था, कुछ सिक्के फेंक दिए और एक छोटी-सी लकड़ी से उस बूढ़े सुअर को पीट दिया जिसे किसी भक्त ने वहाँ यह देखने के लिये स्वतंत्र रूप से छोड़ दिया था कि वह चिल्लाएगा अथवा नहीं। उन्होंने छाङत्येन मेले में एक पतंग और एक डोर में गुँथा जंगली फलों का बड़ा गुच्छा खरीदा। विशाल घण्टा मन्दिर में उन्होंने खारे सोयाबीन का दूध पिया और जहाँ प्रत्येक व्यक्ति जीत जाता था वहाँ जुआ खेला। उन्हें जीतने पर उँगली के नाखून के बराबर तिलपट्टी का एक टुकड़ा इनाम में मिला। प्रत्येक मन्दिर के मेले में जहाँ वे गए, सभी स्थानों पर उन्होंने उन

* नववर्ष की प्रथम पूर्णिमा के अवसर पर खाया जाने वाला गोलाकार पुआ।

** ये सिल्लियाँ कागज से बनाई जाती थीं।

तमाम लोगों को पैसा दिया जो अपनी युद्धकला, हास्यवार्ता, कथात्मक नाटक और जादू का प्रदर्शन कर रहे थे और पैसा पाने पर दाता के प्रति अपनी सद्भावनाएँ व्यक्त करते हुए कह उठते थे कि वह "धन का देवता" है। शुभ्र मेघ मन्दिर के निकट वाले दौड़ के मैदान में ही उन्हें अपने गुणों के प्रदर्शन करने का अवसर मिला। प्रथम तो उनके पास कोई विश्वसनीय घोड़ा नहीं था और दूसरे यदि उनके पास ऐसा घोड़ा होता भी तो वे उस पर सवार नहीं हो सकते थे। बाहर से नगर में वापस आने पर उन्होंने बाद में एक काला गधा किराए पर लिया, जिसके गले में एक पीतल की घण्टी बँधी थी। उस पर बैठकर वे इतनी तेजी से भागे कि सड़क पर चलने वाले लोग तालियाँ बजाने लगे। जब उनका जोश और अधिक बढ़ा तब उस जानवर पर उनका नियंत्रण न रह सका, जिसके कारण वे एक बड़े कूड़े के ढेर पर गिर पड़े। चौदहवीं, पन्द्रहवीं और सोलहवीं तारीखों को उन्होंने अपनी संध्याएँ, पूर्व में सिंगल पीलू, पश्चिम में फोर पीलू और ड्रम टावर पर रेशम की बनी हुई भाँति-भाँति की लालटेनें, साँड़ की सींग की लालटेनें और बर्फ की लालटेनें तथा गेहूँ की बालियों से बनी अजदही लालटेनें देखते हुए बिताई। जिस समय वे शाही घराने के सुपरिटेण्डेण्ट के कार्यालय के सामने छुड़ाई जा रही "गुलदस्ता" आतिशबाजी को देखकर प्रसन्न हो रहे थे, उनकी विदेशी क्रेप वाली जैकेट में जल जाने के कारण छेद हो गया।

त्वोफू की हमारे यहाँ उपस्थिति का मुख्य कारण हम लोंगों को इस बात की सूचना देना था कि उन्होंने अनेक स्थानों में भ्रमण करने पर क्या सीख पाया था। यदि वे इन बातों का वर्णन मेरी माँ और मेरी दूसरी बहिन से करते तो वे दोनों उस बातचीत का कोई सूत्र न पकड़ पातीं, इसलिये वे मेरे पास आए और मुझे बताने का प्रयास किया। "छोटे भाई, शीघ्र बड़े हो जाओ और तब हम बाहर जाकर साथ-साथ खेलेंगे। हम बैनरमैन अन्य बातों में बुरे प्रदर्शित हो सकते हैं। किन्तु यह न भूलो कि जब हम भोजन करने, शराब पीने और आनन्द मनाने पर उतरते हैं तब हम सर्वोपरि रहते हैं।"

मेरे पिता ने त्वोफू से कई बार यह पूछने का प्रयास किया कि नववर्ष की पूर्वसंध्या पर उनके परिवार ने ऋणदाताओं से किस प्रकार मुक्ति पाई, किन्तु हर बार उनकी जबान पर यह शब्द आते, और पुनः वह उनका संवरण कर लेते। अन्त में त्वोफू ने स्वयं यह सूचना दी कि उन लोगों ने अपना घर गिरवी रख दिया है जिससे वे भरा-पूरा नववर्ष मना सकें। जब मेरे पिता ने यह सुना तो अपनी भवें सिकोड़ी। मेरे पिता की भाँति ही एक लकीर के फकीर बने मानचू बैनरमैन के मतानुसार किसी व्यक्ति के पास अपना एक घर अवश्य होना चाहिए था जहाँ उसकी जड़ें जमी रहें और वह सदा पेइचिङ में ही बना रहे, क्योंकि यदि किसी ने भी एक अधिकारी के

रूप में कुछ पैसा बना लिया हो, उसकी कुछ अचल सम्पत्ति—मकान—हो और जो उसके किराए से जीवनयापन कर रहा हो, वह सबसे अधिक सुरिक्षत है। यदि उन्होंने अपने रहन-सहन पर कम व्यय किया होता तो माननीय चङ और उनके पुत्र अपने वेतनों से अनेक छोटे-छोटे मकान खरीदने के योग्य बन गए होते जिन पर वे माहवारी किराया वसूल कर सकते थे। किन्तु अब तो उन्होंने अपना घर गिरवी रख दिया था। जब त्वोफू ने मेरे पिता की तनी भौंहों पर ध्यान दिया तो उन्होंने सफाई दी, "चिन्ता न करें, आप विश्वास करें कि घर को गिरवी करना उसे बेच डालने से बिल्कुल भिन्न है। जब हमें हमारे भत्ते प्राप्त होंगे तब हम तुरन्त अपना स्वामित्व पुनः वापस ले लेंगे।"

"यह ठीक है, यह कहीं ठीक है।" किन्तु मेरे पिता को पूरा सन्देह था कि उनके घर पर उनका स्वामित्व पुनःस्थापित भी हो सकेगा।

यह समझकर कि उनका वार्तालाप उन्हें किसी निष्कर्ष पर नहीं ले जा रहा और दावत में सम्मिलित होने के अवसर बहुत कम थे, त्वोफू अकस्मात वहाँ से अदृश्य हो गए।

फूहाए की माँ दमें की बीमार थीं। मेरा भाई फूहाए काम से गया था, इसलिये केवल मेरे मामा ही कुछ समय के लिये मिलने आए। हम लोगों ने उनसे रुकने और भोजन करने के लिये बहुत आग्रह किया, किन्तु उन्होंने दृढ़तापूर्वक मना कर दिया। तथापि उनके इस आगमन ने अपना कार्य पूरा किया। हमारे खाली बर्तनों और बुझे हुए चूल्हें को देखकर मेरी बुआ अपना व्यंग्यबाण चलाने को पूरी तरह तैयार थीं, किन्तु चूँकि मेरे मामा जो कि एक कर्नल थे जब उनके कमरे में उनसे मिलने गए तो उनके चेहरे पर मुस्कराहट आ गयी। जब वे चले गए तो मेरी बुआ ने मेरे पिता से कहा, "तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? मैंने कुछ औंस चाँदी निकाल कर दे दी होती। ऐसा उत्साहहीन स्वागत करना निन्दनीय हैं।" पिता ने कुछ बुदबुदाते हुए उत्तर दिया जो सुनाई नहीं पड़ा। वे सोच रहे थे, "मेरी प्रिय बहिन यदि तुमने मेरे पुत्र के पूरे एक माह के उत्सव के समय कुछ औंस चाँदी खर्च कर दी होती तो तुम कोस-कोसकर उसे खत्म करके ही चैन लेतीं।"

वसन्त ऋतु उस वर्ष सदा से कुछ पूर्व आ गयी थी। मेरे पूरे एक माह का हो जाने से कुछ दिन पूर्व ही पेइचिङ में दो तीन आँधियाँ आ चुकी थीं। ऐसा जान पड़ता था कि वसन्ती हवाएँ उस गति से वसन्त ऋतु का आगमन नहीं कर रही हैं जितनी तीव्रता से उसे उड़ा ले जाने का प्रयास कर रही हैं। उन दिनों लोग केवल पेड़ काटना जानते थे, उन्हें उगाना नहीं। धीरे-धीरे पर्वतश्रेणियाँ वनस्पतिविहीन हो गयी और मैदान बंजर बन गए। हमारे छोटे से कब्रिस्तान में देवदार के वृक्ष सदा उगे रहते थे, किन्तु मेरे पिता के समय तक वे वृक्ष केवल किवदंती बन कर रह गए। उत्तर में

वृक्षविहीन पर्वत उन भयानक झँझावातों को नहीं रोक पाते थे जो लम्बी दीवार की दूसरी ओर से बहते हुए अन्दर आ जाते थे और न ही नगर को घेरने वाली ऊँची दीवारें ही अपनी पर्याप्त मोटाई के बावजूद उन्हें रोक पाती थीं। ठण्डी हवाएँ बवण्डर की भाँति घूमकर पीली बालूका को उड़ाती थीं और नगर में भूतों की भाँति विलाप करते प्रेतात्माओं की भाँति उच्च स्वर में चिल्लाती तथा पृथ्वी और आकाश को छाया में ढकते हुए सूर्य तथा चन्द्रमा के प्रकाश को मन्द कर रही थीं। नीला आकाश पीला हो गया था और पीली बालूका की वर्षा कर रहा था। घोड़े के मूत्र तथा गधे की लीद में मिली काली मिट्टी, आकाश की ओर उड़ रही थी जहाँ वह मुर्गी के परों और लहसुन के छिलकों के साथ प्रसन्नता से नृत्य कर रही थी। काले और पीले बादल ऊपर नीचे चक्कर काट रहे थे, जो धीरे-धीरे भूरे और बालू भरे कोहरे के रूप में इकट्ठे होकर सूर्य के प्रकाश को अवरुद्ध कर रहे थे। स्वयं सूर्य भी पीली पृष्ठभूमि के बीच से एक लाल खण्ड के रूप में जान पड़ रहा था जैसे कि रक्त का एक जमा हुआ टुकड़ा हो।

ऊपर आसमान की ओर उठा हुआ फाएलओ (तोरण) दुकानों के बाहर वायु में जोर से कर्कश ध्वनि करने लगा और वहाँ जो कपड़े पर लिखे साइन बोर्ड लटके थे वे चिथड़े-चिथड़े होकर उड़ गए। आप घोड़ों की हिनहिनाहट तथा गाय-बैलों का रंभाना, वायु के झोंकों के साथ नगर में भी मीलों दूर से सुन सकते थे। लम्बे पेड़ों की फुनगियाँ अत्यन्त नीचे की ओर झुक गयी थीं, जबकि पृथ्वी पर चारों ओर सूखे डंठलों और तेजपात की फलियों के ढेर फैले हुए थे और कौओं के घोंसले टूट-टूट कर उड़ गए थे। नगर के मार्गों और गलियों की तमाम धूल और मिट्टी चारों ओर उड़ रही थी, जिसके कारण कोई भी राहगीर दिखाई न पड़ता था। जिन लोगों को बाहर जाना था वे मछली की भाँति आँधी में इधर-उधर डोल रहे थे। जो हवा के वेग के दिशा की ओर चल रहे थे उनके पैर स्वतः उठे जा रहे थे और जो उस वेग की दिशा के विपरीत चलने का प्रयास कर रहे थे उनका शरीर पीछे रह जाता था और वे पूरी तरह ऐसे धूल धूसरित हो गए कि जैसे अभी ही मिट्टी से खोदकर निकाले गए हों। उनकी लाल पड़ी आँखों से आँसू की धारा प्रवाहित हो रही थी, जिसके कारण उनकी नाक के दोनों ओर कीचड़ की गलियाँ जैसी बन गयी थीं।

अपने घरों के अन्दर निर्धन लोग दीवारों को हिलता सा अनुभव कर रहे थे, क्योंकि छत के ऊपर से खपरैल टूट-टूटकर गिर रहे थे और उन्हें भय था कि किसी भी क्षण वे और उनके घर हवा में उड़ जायेंगे। प्रत्येक दिशा से हवा बह रही थी, जिसके साथ वहाँ जो भी गर्मी थी वह भी समाप्त हो रही थी और बर्तनों का पानी दिन के समय भी जमा जा रहा था। सड़ी गन्ध भरी धूल ने मेजों और खाङ को ढक लिया था और उबलते हुए बीन के खारे दूध के बर्तनों में काले-काले गोले बन गए थे, जिनके बीच में सफेद फेन की लहरें उछल रही थीं।

एक क्षण हवा सीधी ऊपर की ओर दूर आकाश में बढ़ती चल जाती। दूसरे ही क्षण वह नीचे की ओर पृथ्वी की मिट्टी को बटोरती हुई आ जाती, जिसका प्रहार बरामदे की दीवारों पर पड़ता और गरज तथा पागलपन, प्रकोप की जैसी ध्वनि उत्पन्न करता हुआ कागज के टुकड़े और घास-फूस को उड़ाते हुए ले जाता जैसे कि उसे यह ज्ञान न था कि क्या करना चाहिए। जैसे ही हवा का बड़ा झोंका समाप्त होता, प्रत्येक व्यक्ति राहत की साँस लेता और उसके हृदय की धड़कनें सामान्य हो जातीं। तथापि यदि पवनवेग पुनः आरम्भ हो जाता तो लोग उस विचार से ही घबराने लगते। आकाश, पृथ्वी, शाही नगर की लाल दीवारें और यहाँ तक कि सम्राट का सिंहासन कक्ष काँपता सा लगता था। सूर्य ने अपनी चमक खो दी थी और पेइचिङ बालू तथा कँकड़ों के प्रहार का शिकार बन गया था। किन्तु आँधी सूर्यास्त से भय खाती है। प्रत्येक व्यक्ति यह आशा लगाए रहता था कि शीघ्रातिशीघ्र सूर्य अस्त हो जायेगा और सचमुच ही गोधूलि बेला में पूरी शान्ति हो जाती। वृक्ष सीधे खड़े हो जाते थे, यद्यपि अब भी कभी-कभी वे हिलते हुए कुछ झुक जाते थे जो आनन्द और निश्चिंतता का भाव जैसा था। आँगन साफ-सुथरे हो जाते जैसे उन्हें अभी-अभी बुहारा गया हो और बेकार के कागजों के टुकड़े किन्हीं अजाने स्थानों में उड़कर पहुँच जाते, यद्यपि कहीं-कहीं आप एक या तो दो टुकड़े आँगन के किसी कोने में खोज सकते थे। बालू के सूखे हुए छोटे-छोटे कण खिड़कियों के चौखट में जमा थे। पीली बालू की अनेक ऊँची नीची तहें खिड़की के शीशों पर इकट्ठा हो गयी थीं, जो ठीक वैसी ही प्रतीत होती थीं जैसे कि सागर की लहरें किनारे पर अपने चिह्न बना देती हैं। उस समय सामान्य रूप से लोग सन्तोष का अनुभव करते थे और सभी को आशा रहती थीं कि दूसरा दिन शुरू होने तक वायु थमी रहेगी। किन्तु इस सम्बन्ध में कोई भी निश्चित रूप से विश्वास नहीं कर पाता था। यह ऋतु सम्बन्धी भविष्यवाणियाँ जब से होने लगीं वे उससे पूर्व के दिन थे।

कोई क्या कहता है इसकी चिन्ता न करते हुए मैं वास्तव में एक भाग्यशाली बालक था। उस दिन जब मैं एक माह का हो चुका तब वहाँ न केवल पवन ही अनुपस्थित थी, अपितु स्वच्छ नीले आकाश में कोई भी व्यक्ति जंगली हंसों को दक्षिण की ओर से प्रवजन करते हुए सदा से कुछ समय पूर्व ही देख सकता था। यद्यपि वे संख्या में कम थे किन्तु उनके तीव्र स्वर पूरे परिवार को बाहर आँगन में खींच लाए थे। उनकी ओर देखकर इंगित करते हुए वे विजयोल्लास में गा रहे थे, "सातवें 'नवें' समय पर नदियाँ थम जाती है और आठवें 'नवें' समय पर जंगली हंस उड़ने लगते हैं*, इसी समय उन्होंने ईंटों के बीच में पड़ी हुई दरार से अँकुरित होते हुए एक छोटे

* शींत ऋतु के संक्रान्ति काल के आरम्भ से चीनी लोग नौ-नौ दिनों की नौ अवधियाँ गिनते हैं जो नववर्ष की पहली तिमाही तक चलती है। प्रत्येक अवधि की अपनी अलग-अलग

से हरे मुलायम सोमराज पौधे का पता लगाया। मेरी दूसरी बहिन तुरन्त अपनी रूईदार जैकेट उतारने लगी किन्तु मेरी माँ ने उसे रोक दिया, "इसे मत उतारो! वसन्त में अपने शरीर को भली भाँति ढके रखो। ऋतु परिवर्तन के समय मोटे कपड़े उतारने में विलम्ब करो। बीमारी से बचने के लिये अभी इन्हें उतारने से अपने को रोक रहो।*

इसी समय हमारी गली में एक घोड़ागाड़ी खड़खड़ाती आई और हमारे घर के दरवाजे के सामने खड़ी हो गयी। थोड़ी ही देर पश्चात हँसी के स्पष्ट तथा जंगली हंस की बोली से भी अधिक तीखे स्वर आँगन में सुनाई पड़ने लगे। इसे सुनकर सभी आश्चर्यचकित रह गए।

6

इस हँसी के साथ ही एक इन्द्रधनुष प्रत्येक दिशा में अपनी आकर्षक दीप्ति बिखेर रहा था, जिसने हमारी ओर बढ़ना आरम्भ किया। उसकी टोपी की सिंदूर के समान लाल बटन चकाचौंध कर रही थी, काली साटन वाली टोपी भी चमक रही थी, टोपी के किनारे लगा बड़ा मोती भी दमक रहा था, आपस में जुड़े अजदहों के आकार में कढ़ा और गिलहरी के फर वाला हल्के नीले रंग का साटन का गाउन चमक रहा था, बिना आस्तीन की क्रीम रंग वाली साटन की जैकेट चमक रही थी, जामुनी रंग का कमरबन्द भी चमक रहा था तथा उसके सफेद रंग के तल्ले वाले सरकारी जूते भी चमक रहे थे। जब इस इन्द्रधनुष के चारों ओर एकत्रित भीड़ में प्रत्येक व्यक्ति ने उसका अभिवादन किया तथा उसके स्वास्थ्य का हाल पूछा, उसके पश्चात ही यह देखा जा सका कि उसका गोल, सुन्दर-गोरा चेहरा तथा उसके उल्लास भरे अत्यन्त काले नेत्र भी चमक रहे थे। यद्यपि उसका स्वर अत्यन्त स्पष्ट था, तथापि कोई यह नहीं कह सकता था कि वह इन्द्रधनुष क्या कह रहा था। चूँकि बीच बीच में उसके "हा हा हा" या "अ हा हा" करने के कारण उसकी बात में निरन्तर व्यवधान पड़ रहा था, तब कोई भी व्यक्ति यह देख सकता था कि उसकी हिमवत श्वेत दन्तपँक्ति भी अत्याधिक चमक रही थी।

यह जगमगाहट अन्दर आई, खाङ की ओर बढ़ी और मेरे चेहरे पर अपनी ज्योति डालने लगी। "हा हा हा! अति सुन्दर! अति सुन्दर!" उसने बैठने से इंकार किया और चाय का एक घूँट भी पीना अस्वीकार कर दिया। उसने अपनी सामने की जेब अपने सफेद मुलायम मोटे हाथों से टटोली, दो औंस चाँदी के मूल्य का एक बैंक नोट निकाला और मेरे निकट ही खाङ पर रख दिया। वह एक शिकारी पक्षी जैसी

विशेषताएँ होती हैं।

* परिवर्तित होते मौसम में रोग से बचाव के लिये।

धनुर्धारी के अगूँठे वाली हरितमणि से बनी एक अँगूठी पहने थी, जिससे एक ऊष्ण एवं कोमल आभा निकल रही थी। "अति सुन्दर! अत्याधिक सुन्दर! हा हा हा!" जब हँसी बन्द हो गयी, तब ज्योति की वह मूर्ति द्वार की ओर बढ़ने लगी। "कृपया मुझे विदा करने बाहर मत चलिये! मुझे विदा करने मत चलिये! हा हा हा!" वह हँसता हुआ सड़क की ओर खुलने वाले फाटक की दिशा में चला गया। जब वह अपनी चलती हुई गाड़ी पर बैठा, तब वह हँसा। उसकी चाबूक की आवाज के साथ गाड़ी के पहिए घूमने लगे, "गेडेंग गेडेंग..." और जैसे ही गली (हूथुङ) के बाहर गाड़ी निकल गयी हँसी समाप्त हो गयी, और अपने मार्ग पर उड़ती धूल का एक बादल जैसा छोड़ गयी।

मेरी बुआ तेजी से अन्दर खाङ के पास आई और दो औंस चाँदी के मूल्य वाले बैंक नोट को गुमसुम सी निहारने लगीं, जैसे कि उन्हें अपने नेत्रों पर विश्वास न हो रहा हो। जब सभी लोग अन्दर वापस आ गए, उन्होंने कहा, "मास्टर तिङ! मास्टर तिङ! उसे यहाँ कौन सा विचार ले आया? उसे यह किस प्रकार ज्ञात हुआ?"

प्रत्येक व्यक्ति अवाक् था। यह पहला अवसर था जब हमारी गली (हूथुङ) में इतनी सुन्दर गाड़ी ने प्रवेश किया। इसके अतिरिक्त हममें से किसी को कभी दो औंस चाँदी "हर्ष के प्रतीक" के रूप में प्राप्त नहीं हुई। उन दिनों दो औंस चाँदी दस व्यक्तियों को उच्च कोटि का भोजन कराने के लिये पर्याप्त थी। किन्तु मेरे पिता को खेद था और उन्होंने कहा, "मैं उनसे मिलना और उसे नववर्ष की बधाई देना कैसे भूल गया?"

मेरी बुआ ने उत्तर दिया, "यदि तुम उसे नववर्ष की बधाई देने नहीं गए तो फिर उसे इस सम्बन्ध में सूचना देने कौन गया होगा?"

मेरी माँ ने धीरज बँधाने का प्रयास करते हुए कहा, "इस सम्बन्ध में अधिक चिन्ता न करें। चूँकि वे यहाँ आए तो इसका अर्थ है कि वे हमसे अप्रसन्न नहीं होंगे। मास्टर तिङ का हृदय इतना विशाल है कि मानो एक समुद्र हो जिसमें नाव खेई जा सकती है।"

मेरी बुआ ने अपनी पूछताछ जारी रखते हुए कहा, "किन्तु इस सम्बन्ध में उससे कहा किसने?" चूँकि इस प्रश्न का उत्तर कोई न दे सका, अतः मेरी बुआ बिना कुछ कहे अपने कमरे में चली गयी। मेरे प्रति उनका सम्मान एक सीढ़ी ऊपर हो गया, किन्तु वह कुछ ईर्ष्यालु भी हो उठीं। वे सोच नहीं पा रही थीं कि उन्हें अब क्या करना चाहिए, इसलिये वह शतावरी सुगंधित तम्बाकू से अपनी पाइप पूरी तरह भरकर पीने लगीं और बार-बार "बेईमान, छोटा गंजा" शब्दों को दोहराने लगीं।

मैं पहले ही कह चुका हूँ कि मेरी परदादी एक बारद एक महत्वपूर्ण मानचू अधिकारी की अर्दली में युननान तथा पश्चिम के दूसरे स्थानों की यात्रा पर गयी थीं।

मैं ये भी बता चूका हूँ कि वह अधिकारी अपने साथ चाँदी की सिलों के बड़े-बड़े असीमित ढेर लाया था। हाँ, मास्टर तिङ उसी बड़े अधिकारी के सगे वंशज थे, जो जहाँ कहीं भी गए वहीं चाँदी की सिलों के ढेर के ढेर इकट्ठा करते रहे।

उसकी सरकारी सील पर तिङ्लू नाम खुदा था। उसके कुछ औपचारिक नाम भी थे : जैसे, य्वीचाए (समृद्धि का मन्दिर), फूछन (समृद्ध दरबारी), शाओफू (जवान आदमी) और कभी-कभी वह अपने को केवल "स्वच्छ हिम का वृद्ध पुरुष" कहता था, यद्यपि आयु में बीस वर्ष से अधिक का न था। जब उसकी आयु छः वर्ष की थी जब उसे पढ़ाने के लिये तीन ख्याति प्राप्त विद्वान पारिश्रमिक पर रखे गए थे। पहला विद्वान उसे मानचू भाषा पढ़ाता था, दूसरा चीनी शास्त्रीय ग्रन्थ और इतिहास पढ़ाता था। और तीसरा चीनी गद्य और पद्य पढ़ाता था। उनके निवास स्थानों की लम्बाई-चौड़ाई की सूची न बताते हुए मैं केवल यह बताऊँगा कि उनका पारिवारिक पुस्तकालय ही छः बड़े कमरों में था, जिनके साथ आच्छादित बरामदे लगे हुए थे। पुस्कालय के बाहर एक कृत्रिम पहाड़ी, बड़ी सुन्दरता के साथ निर्मित की गयी थी। जब "स्वच्छ हिम का वृद्ध पुरुष" अपनी तरंग मे आता था तब वह उस पहाड़ी की चोटी पर चढ़ जाता था और अपने हाथों के बल वहाँ खड़ा होकर अपने पैर आसमान की ओर उठा लेता था। पहाड़ी के बगल में ही दो पियोनिया लगाने की क्यारियाँ थीं, जिनमें प्रत्येक वसन्त ऋतु में फूलता सोमराज तथा कड़ी घास प्रचुर मात्रा में निकल आती थी। इस वर्ष उस "वृद्ध पुरुष" ने केवल प्रयोग मात्र के लिये सभी पियोनिया उखाड़ डाले थे, केवल यह निश्चय करने के लिये कि क्या वे पुनः मिट्टी के बिना हरे-भरे हो सकते हैं। पुस्तकालय के पूर्व की ओर एक सफेद पुती हुई दीवार खड़ी थीं, जिसके सामने हरे बाँसों का एक झुरमुट उगा था और उसके पश्चिम की ओर एक लाल कली की झाड़ी थी। बाँस और लाल कली की झाड़ी दोनों ही तब भी हरे-भरे थे। महत्वपूर्ण मानचू अधिकारियों के अनेक पुत्र और धनी हान चीनी परिवारों की दो-तीन संतानों अपने अध्ययन के लिये यहाँ एकत्रित होते थे। इनमें से कुछ लोग अपनी स्थानीय परीक्षाओं में उपाधियाँ प्राप्त करते थे, कुछ अन्य सरकारी नौकरियों में जाते थे, किन्तु उस "स्वच्छ हिम के वृद्ध पुरुष" ने उन सबसे बाजी मार ली थी क्योंकि वह पेइचिंङ आपेरा का सम्पूर्ण गीत "गदा की गिरवी तथा अश्व का विक्रय" गा, सकता था। इससे वह अपनी साहित्यिक तथा सैनिक अध्ययन सम्बन्धी प्रतिभा को प्रमाणित करता था।

उसे सुलेख का अभ्यास करने में रुचि थी और जब वह प्रसन्नचित रहता तब अपने बाल सेवक को बुलाकर उससे अपने लिये एक बहुत बड़े कटोरे में स्याही तैयार करने को कहता, जिससे वह तीन फुट लम्बे अक्षरों में "प्रसन्नता" या "दीर्घजीवन" लिखे, जिन्हें वह अपने सहपाठियों को भेंट कर देता था। यदि वह

प्रसन्नचित्त नहीं होता था तो छः माह तक लेखनी पर हाथ भी नहीं लगाता था, यद्यपि आवेश में लिखे जाने पर कहीं कहीं अक्षर का कोई भाग छूट जाता था या फालतू भाग लग जाता था। उसे कविता में भी रुचि थी। जब वह उत्साहित होता, तब एक कविता की प्रथम पँक्ति लिखकर शेष पक्तियों की पूर्ति करने के लिये अपने सहपाठियों से कहता। उसने न तो कभी मानचू भाषा पर ही अधिकार किया और न कभी चीनी भाषा ही अधिक सीखी, किन्तु उसे विश्वास था कि यदि वह प्रयास करेगा तो दोनों पर कुछ ही समय में अधिकार पा लेगा। इसलिये अभी कुछ समय तक वह ऐसा प्रयास करने की शीघ्रता में नहीं था। कभी कभी वह क्लासिकी साहित्य की एक या दो प्रसिद्ध पँक्तियाँ याद कर लेता था, उदाहरण के लिये, "संध्या के गुलाबी बादल तथा एकाकी बत्तखें साथ-साथ उड़ती हैं, शारदीय सरिताएँ तथा विशाल व्योम एक ही वर्ण के हैं," जब भी वह इस प्रकार की पँक्तियाँ सुनाता, उसका स्वर इतना स्पष्ट होता था जैसा कि किसी परिष्कृत विद्वान का। जब वह प्रसन्न होता तब वह शास्त्रों के अनेक सम्प्रदायों तथा सैद्धान्तिक ज्ञान का अनुसरण करने लगता और तीन धर्मों* तथा सिद्धान्तों (दर्शन) के नौ सम्प्रदायों** के विद्यार्थियों से मिलने के लिये उत्सुक रहता था। वह अपने को आधुनिक शैली का बैनरमैन मानता था—संस्कृति में गहरी अभिरुचि तथा साथ ही साथ उदार विचारों वाला। वह खाङ यओवेइ और ल्याङ छीछाओ के सिद्धान्तों तथा सुधार सम्बन्धी विधियों का भी समर्थन करता था। वह दयालु तथा अच्छे स्वभाव का व्यक्ति था और यदि कोई उसे "स्वामी" सम्बोधित करने के लिये सहमत होता तो उसे कई औंस चाँदी पुरस्कार के रूप में मिल जाने का अच्छा अवसर प्राप्त हो जाता था।

उसे निश्चित रूप से ज्ञात नहीं था कि उसके बाबा और पिता दोनों में से कौन अधिक धनवान था और न वह यही जानता था कि जो सम्पत्ति वे छोड़ गए थे, उसका मूल्य कितना था। उसका मुख्य प्रबन्धक उसके मासिक व्यय से सम्बन्धित संक्षेप में सूचनाएँ देता रहता था, किन्तु वह यह जानने की चिन्ता कभी नहीं करता था कि वे वस्तुएँ कितने मूल्य की रही होंगी। यदि उसे किसी वस्तु की इच्छा होती तो कितना ही मूल्य होने पर भी वह उसे खरीद लेता था। जब वह बच्चा था तब से ही सोने और चाँदी की ढली सिल्लियाँ, गोमेद और किंगफिशर जेड (मूल्यवान हरित मणि) उसकी खेलने की वस्तुएँ थीं, अतः वह उनकी बहुमूल्यता से पूर्णतया अनभिज्ञ था। फलस्वरूप अनेक बौद्ध भिक्षु तथा ताओ पंथी पुजारी उससे कहते थे कि उसमें एक सन्त जैसी प्रतिभा छिपी है, कि उसका मस्तिष्क सागर तथा आकाश के समान

* कन्फ्यूशियसवाद, बौद्ध धर्म तथा ताओवाद।

** कन्फ्यूशियसवादी, ताओवादी, इन-याङ, न्यायवादी, तर्कवादी, मोहिवादी, राजनीति कूटवादी, सर्वदर्शन सारवादी तथा कृषिवादी।

असीमित है तथा उसका जीवन एक अनुकरणीय विश्रांति तथा सन्तोष का जीवन है। जब वह अन्य व्यक्तियों को अपने जीवन के प्रति चिन्तित अथवा हताश देखता था तब वह उन्हें समझाता था कि यह उनका संकीर्ण दृष्टिकोण है जो उन्हें इस पार्थिव संसार के उलझाव से बचने में बाधक होता है।

यद्यपि बहुत स्पष्ट तो नहीं किन्तु उसे अपने पूर्वजों की दुर्बलताओं और सामर्थ्य का स्मरण था तथा इस इतिहास का भी कि किस प्रकार उन्होंने इतनी चाँदी की सिल्लियाँ एकत्र की थीं। जहाँ तक उसे स्मरण था उसने अपने को रेशम और साटन के कपड़े से लदा पाया तथा पुरुष और स्त्री दास-दासियों को प्रतीक्षा करते पाया। इसे वह अपना निजी सौभाग्य, अपनी स्वाभाविक क्षमता तथा भाग्य का खेल मानता था। वह अपने को मानचू होने से नकारता नहीं था, किन्तु उसे इसका अधिक गर्व भी न था और कभी-कभी वह बैनरमैन के प्रति चुटीले व्यंग्य करता था। उसके मन में एक धुँधली सी यह धारणा भी थी कि वह एक विशिष्ट प्रकार का मानव है जैसा कि इतिहास में कभी नहीं हुआ। उसने कुछ मानचू शब्द याद कर लिये थे और एक या दो चीनी कविता की पँक्तियों की रचना करना भी जानता था, इसके अतिरिक्त जो वह जानता था वह यह कि थोड़ा प्रयत्न करने पर ही वह अमर अथवा बुद्ध की कोटि में आ सकता है। वह अभी तक एक विद्वान की भाँति यश की उपलब्धि नहीं कर सका था और न वह कोई सरकारी उपाधि क्रय करने में ही रुचि रखता था। वह केवल तमाम चिन्ताओं और बन्धनों से मुक्त रहने का प्रयास करता था और एक विश्रांतिपूर्ण जीवन बिताने की कामना करता था, किन्तु किसी मँडराते हुए बादल अथवा बहती धारा की भाँति सक्रिय भी बना रहना चाहता था।

उसके साथ हमारा सम्बन्ध एक प्रकार से विचित्र सा था। यद्यपि मेरी परदादी ने उसके परिवार की सेवा की थी, तथापि हम निश्चित रूप से उसके पारिवारिक दासों में न थे। उसके बाबा और पिता तथा मेरे बाबा और पिता बहुधा एक दूसरे के साथ मिलते रहते थे, तो भी उन दोनों का एक दूसरे से वस्तुतः बहुत कम लेना देना था। यह विशेष प्रकार का सम्बन्ध ठीक तब तक बना रहा जब मास्टर तिङ अपने घर के स्वामी बन गए। जब हम उनसे मिलने जाते थे तब उनके समक्ष उपस्थित किए जायेंगे अथवा नहीं यह पूर्णतया उनकी मनःस्थिति पर निर्भर करता था। कभी-कभी उनके मन में हमारे पास आने और भेंट करने की इच्छा जागती थी। उनके आगमन के पीछे वास्तविक कारण यह था कि जब वह मेरे पूरे एक माह का हो जाने वाले दिन पर आए, तो जैसा कि मुझे बाद में ज्ञात हुआ, मेरे जन्म से एक दिन पूर्व उनकी पत्नी ने एक कन्या को जन्म दिया था। वह इतना अधिक प्रसन्न थे कि समझने लगे कि वह और उनकी पत्नी केवल दो ही प्राणी इस संसार में हैं जिनमें यथेष्ठ सौभाग्य तथा गुण हैं जिससे कि वे एक कन्या को जन्म दे सके। मेरे

जन्म की सूचना सम्भवतः उस समय बाहर फैल चुकी थी जब प्येनईफाङ रेस्तराँ के प्रबन्धक वाङ, तिङ के निवासस्थान पर अपना बिल देने गए थे। "ठीक उस समय जब प्रत्येक व्यक्ति अग्निदेवता की पूजा कर रहा था तब या तो साहित्यिक प्रतिभाशाली नक्षत्र का जन्म हुआ था अथवा एक पुच्छलतारे* का निर्धन मानचू सैनिक के घर में पुनर्जन्म हुआ था।"

मैनेजर वाङ के सम्बन्ध तिङ के मुख्य प्रबन्धक के साथ अच्छे थे। जब कभी मास्टर तिङ की तन्दूदरी मुर्ग या भुनी बत्तख खाने की तीव्र लालसा होती, उसका प्रबन्धक मैनेजर वाङ को आर्डर भेज देता था जो दो या तीन पकी बत्तखें या मुर्गे भेज देता था, यद्यपि वह उसके हिसाब में चार या छः लिख लेता था। वर्ष के अन्त में जब उधार वसूलने का समय आता तब मैनेजर वाङ तथा प्रबन्धक दोनों ही, यदि केवल तीन या चार चिड़ियों का मूल्य निकलता तो इस अतिरिक्त राशि को आपस में बाँट लेते थे। कभी-कभी मैनेजर वाङ के मन मे नैतिकता की हल्की चुभन उठती थी, क्योंकि इस प्रकार वह बेईमान सिद्ध होते थे। किन्तु तिङ के प्रबन्धक ने कहा, "आप इसे इस प्रकार समझें, यदि प्रत्येक तीन माह में हमारे ऊपर आपकी केवल एक औंस चाँदी उधार हो तो मैं कभी अपने मालिकों को यह सूचित नहीं कर सकता! क्योंकि मेरे मालिक कहेंगे, 'मेरे जैसे स्तर का कोई व्यक्ति केवल एक औंस ही उधार कैसे रख सकता है? असम्भव! उसे एक पैसा भी न दो!' बूढ़े वाङ, आप मेरी बात सुनें, उनसे कम से कम दस औंस वसूल करें, अन्यथा यह ठीक न जान पड़ेगा।" यह सीख पा लेने के पश्चात मैनेजर वाङ पर नैतिकता का प्रहार फिर कभी न हुआ और वे मास्टर तिङ के हिसाब को निश्चिन्त होकर इसी प्रकार लिखते रहे।

उस प्रथम आगमन के पश्चात मास्टर तिङ मुझे कभी न भूल सके। जब मैं सात वर्ष का हो गया, इसके पूर्व कि कोई भी मुझे विद्यालय में प्रवेश कराने अथवा न कराने पर विचार करता, मास्टर तिङ को एक बार पुनः प्रेरणा की तरंग आई और अकस्मात वे मेरे घर आ गए। कुछ समय तक "हा हा" और "आ हा" करने के पश्चात उन्होंने मुझे एक अच्छे व्यक्तिगत विद्यालय में डाल दिया और मुझसे कन्फ्यूशियस तथा अपने आध्यापकों को साष्टाँग प्रणाम करने को कहा। उन्होंने मेरे शिक्षण शुल्क की पहली किस्त भी अदा कर दी। दूसरे दिन उन्होंने एक आदमी के हाथ एक लिखने का ब्रश भेजा जिस पर "सर्वोच्च श्रेणी का साहित्यिक लालित्य" खुदा था, एक स्याही की छड़ी जिस पर "भद्र पुरुषों की रूप विधा में" अंकित था, प्रारम्भिक शिक्षा के लिये तीन शास्त्रीय पुस्तकें और दस फुट नीले रंग का कपड़ा जो किताबों का बस्ता बनाने के लिये था अथवा एक जोड़ी पैण्ट या जैकेट बनाने के लिये, यह मैं कभी न जान सकूँगा।

---

* पुच्छलतारा एक ऐसे व्यक्ति की संज्ञा होती है जो दुर्भाग्य लाता हो।

मास्टर तिङ के चमत्कारिक आगमन को मेरी बुआ तथा अन्य सभी कितना भी महत्व देते रहे हों, तथापि मैं आज भी सोचता हूँ कि चाचा चिन के आगमन का महत्व उससे कहीं अधिक था।

पेइचिङ तथा सम्भवतः अन्य स्थानों में भी किसी वर्ग को मानचू अधिकारियों के हाथों इतना पीड़ित नहीं किया गया जितना मुसलमानों को। जहाँ तक चौथे चिन की शारीरिक क्षमताओं का सम्बन्ध है, मेरे मतानुसार वह युद्धकला की शाही स्पर्धाओं में कम से कम प्रथम पुरस्कार पाने का अधिकारी था। उसमें आश्चर्यजनक क्षमताएँ थीं, मल्ल युद्ध की, मध्यम दूरी की घूँसेबाजी की ओर लम्बी दूरी के पादप्रहार व पादाघात कौशल की। दस हृष्टपुष्ट मनुष्यों को भी उससे दूर रहने का परामर्श दिया जाता था। वह अत्यन्त सुन्दर, स्वच्छ एवं निर्मल था। उसके पांडुवर्ण के मुख पर मांस अधिक न था, किन्तु वह इतना आकर्षक था कि बदली के दिनों में मुझे उसको देखते रहना अच्छा लगता था। उसकी स्वच्छता के सम्बन्ध में मैं उसके कपड़ों की तो कोई चर्चा ही नहीं करूँगा। वह अपने मांस काटने वाले लकड़ी के लट्ठे को इतना साफ धोता था कि आप उसकी लकड़ी के रेशों को साफ-साफ देख सकते थे। जब मैंने काम आरम्भ किया, मैं सदा उसी की दुकान से तिलपट्टी और मांस लाता था। उसकी दुकान इतनी स्वच्छ रहती थी कि मैं सोचता था कि यदि उसे पेइचिङ के प्रबन्ध संचालन का कार्य दे दिया जाता तो सड़कों पर तीन फुट ऊँची धूल न दिखाई देती, जैसी कि वहाँ उन दिनों भी जमा रहती थी जब हवा नहीं चलती थी। वह सारे काम इतनी सुगमता से करता कि जो काम अपने हाथ में लेता उसे सरल और सामान्य बना देता था। जब कभी मैं उसे देखता, मेरे मुँह से यही निकलता, "मुझे ऊपर झुलाओ" और वह तुरन्त मुझे अपनी बाँहों में दबाकर चिल्लाता "ऊपर", और मैं आकाश की ओर जाने लगता। उसके साथ इस प्रकार के उत्तेजनापूर्ण अनुभवों के होते हुए भी चाचा चिन के अतिरिक्त चाहे कोई कितनी ही बड़ी-बड़ी लोबिया खरीद कर देता, मैं उसे अपने को कभी ऊपर झुलाने न देता।

मैं समझ नहीं पाता कि राजकीय अधिकारी मुसलिम लोगों के साथ इतना कठोर व्यवहार क्यों करते थे। पेइचिङ में मुसलमानों को तिलपट्टी और मांस बेचने तक सीमित कर दिया गया था; वे छोटी ही दुकान खोल सकते थे, या अधिक से अधिक वे छोटे पैमाने पर मुसलिम रेस्तराँ चला सकते थे।

मैंने पूछा, "चौथे चाचा, आप युद्धकला के चैम्पियन क्यों नहीं हैं?"

उसकी चमकीली काली आँखें कई बार घूमीं और उसने मेरे सिर पर थपकी दी। "सम्भवतः, सम्भवतः, मैं किसी दिन इसमें प्रथम पुरस्कार का विजेता बनूँगा। मुण्डे, क्या तुझे मालूम नहीं, मुझे प्रतिमाह भत्ता मिलता है?"

उसके उत्तर का मेरे लिये कोई अर्थ नहीं था। मैंने अपनी माँ से बड़े विस्तार से

इस विषय में बातें कीं, किन्तु लम्बी वार्ता के पश्चात भी हम लोग किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सके। माँ बोलीं, "यह ठीक है, हम उससे कुशल क्षेम पूछते हैं, बदले में वह भी हमारा अभिवादन करता है, जैसी कि मानचुओं की परिपाटी है। अब बताओं, ऐसा क्यों?"

मैंने तब ममेरे भाई फूहाए से इस विचार किया। वह भी चाचा चिन के लिये बड़ा आदर भाव रखता था। वह बोला, "हो सकता है कि ऐसा इसलिये हो कि वह एक भिन्न धर्म का अनुयायी है। किन्तु इस्लाम भी तो बड़ा प्राचीन धर्म है। सम्भवतः यह वैसी ही है जैसा कन्फ्यूशियसवाद, बौद्ध धर्म या ताओ धर्म।"

मैं उस समय ताओवाद, बौद्ध धर्म और कन्फ्यूशियसवाद क्या है, नहीं समझता था, इससे मैं फूहाए के तर्कों के सम्बन्ध में कोई निष्कर्ष नहीं निकाल सका। मुझे ऐसा जान पड़ा कि फूहाए को चाचा चिन से मेरी मित्रता करने में कोई आपत्ति नहीं है।

मेरे एक माह के हो जाने पर सायंकाल पाँच बजे के कुछ पूर्व जबकि सब लोग मास्टर तिङ के जीवन चरित्र और विशेष गुणों का जो भी वर्णन करना चाहते थे उसे समाप्त कर रहे थे कि चाचा चिन आ पहुँचे। किसी को बड़ा आश्चर्य नहीं हुआ, कम से कम उतना नहीं जितना मास्टर तिङ के आने पर हुआ था। यदि ऐसा लगता कि मास्टर तिङ सीधे स्वर्ग से उतरते तो तुलना की दृष्टि से चाचा चिन का आना एक अति सामान्य मैत्रीपूर्ण कार्य होता। एक दो मुसलिम शब्दों को छोड़कर जो वे यदा-कदा प्रयोग करते थे, चाचा चिन प्रायः हम लोगों की भाँति ही बोला करते थे। वह हमारे विशेष मानचू शब्दों को, जैसे "न्यूलू"*, "च्याला"** या "केके"*** पूर्ण शुद्धता से हमारी भाँति ही बोलते और समझते थे। कई अवसरों पर कुछ शब्दों में वे, यदि वे शब्द मानचू और चीनी दोनों भाषाओं में समान हों, उदाहरणार्थ चीनी में "न्यूलू" शब्द जिसका अर्थ नायक होता है, मानचू ध्वनि वाला शब्द ही प्रयोग करते थे। यही एक कारण था कि किसी को उनके भत्ता लेने पर आपत्ति न थी। स्वभावतः उनकी उपस्थिति में हम इस विषय पर कोई बात न उठाते, यद्यपि वे स्वयं इस प्रसंग को यदा-कदा वार्ता का विषय बनाते थे। उनका विचार था कि यह इतना हास्यास्पद है कि प्रायः वे स्वयं खुलकर हँस देते थे।

उस दिन उन्होंने मुझे दो चाँदी के सिक्के दिए थे और मेरे "दीर्घ जीवन" की कामना की थी। उन्हें बैठने को स्थान देने या चाय पिलाने के लिये सभी खड़े हो गए। चाचा चिन ने धार्मिक सिद्धान्तों के आधार पर हमारी चाय पीने से मना कर

* कैप्टन।

** मेजर।

*** युवा महिला।

दिया। किन्तु इससे उनके प्रति हम लोगों की श्रद्धा और बढ़ गयी। प्रत्येक व्यक्ति यह अनुभव करता था कि यद्यपि वे सरकार से भत्ता पाते थे तो भी वे एक अच्छे सिद्धान्त प्रिय मुसलिम थे। जब भिन्न-भिन्न धर्मों के लोग एक दूसरे के साथ निरन्तर सम्पर्क में नहीं रहते, तो उनके विशिष्ट स्वभाव और रीतियाँ आपसी द्वेष का कारण बन जाती हैं। किन्तु जब वे अच्छे मित्र बन जाते हैं तब एक धर्म द्वारा किन्हीं निश्चित नियमों का कड़ाई से पालन करना दूसरे धर्म के लोगों के लिये सम्मान का साधन बन जाता है। मेरी माँ ने आगे कहा, "चौथे चाचा, यदि मैं हत्थेदार चाय का कोई प्याला विशेष रूप से आपके लिये अलग रख लूँ तथा उसे किसी अन्य को न छूने दूँ, तब क्या आप हमारी चाय पी लेंगे?" चाचा चिन का उत्तर अत्यन्त समयानुकूल था: "मैं स्वयं अपना ही कटोरा ले आऊँगा और उसे यहीं छोड़ दूँगा।"

चाचा चिन का स्वर लयात्मक था। वे "श्रीमती सानन्याङ अपने सौतेले पुत्र को एक पाठ पढ़ाती हैं" नामक आपेरा की अनेक पँक्तियाँ जानते थे। यद्यपि वे सारंगी से स्वर मिलाकर भली-भाँति गाने योग्य न थे, तो भी प्रत्येक व्यक्ति उन्हें प्रोत्साहित करता था। "आपके जैसे स्वर वाले को एक अच्छा गुरु आपेरा का सितारा बना सकता है।" किन्तु चूँकि उन्हें कोई प्रख्यात गुरु न मिल सका, इसलिये जब भी वे नगर की दीवारों के चारों ओर घूमते थे, कुछ पँक्तियाँ गाते हुए स्वयं अपना मनोरंजन कर लेते थे।

आज के अवसर को जीवन्त बनाने के लिये सभी ने उनसे गाने की प्रार्थना की।

"हाँ! किन्तु मैं केवल कुछ ही पँक्तियाँ जानता हूँ।" चाचा चिन हँसे, किन्तु इसके पूर्व कि कोई कुछ और कह पाता, उन्होंने गाना प्रारम्भ कर दिया।

उस समय मैं इतना बड़ा नहीं था कि आपेरा देखने जा सकता, न मैं संगीत का कोई बड़ा पारखी ही था, अतः चाचा चिन के गाने के सम्बन्ध में कोई मत नहीं दे सकता था। तो भी यहाँ एक बात है, जिस पर मुझे सदा गर्व रहेगा कि मेरे पूरे एक माह का हो जाने वाले उत्सव में एक मुसलिम मित्र सम्मिलित हुआ था।

7

मानचू केक बनाने में मक्खन का प्रयोग सदा ही किया जाता था और सम्भवतः मेरे पूर्वजों के भोजन में गाय का दूध, घोड़ी का दूध और यहाँ तक कि मक्खन तथा क्रीम-पनीर भी सम्मिलित थे। किन्तु कई पीढ़ियाँ पेइचिङ में रहने के पश्चात सम्भवतः उन्होंने दूध पीने की आदत धीरे-धीरे छोड़ दी थी। मुझे नाश्ते में केवल बादाम की चाय या बाजरे आदि की आटे की चाय पीने की याद है, और मेरे परिवार के वे सदस्य जो दूध पीने की सामर्थ्य रखते थे, जैसे मेरे मामा तथा मेरी सबसे बड़ी

बहिन के श्वसुर, वे शायद ही कभी डेरी की दुकानों में जाते रहे हों। मेरी बुआ कभी-कभार ही दूध पीती थीं, किन्तु वह भी हम सब लोगों को केवल यह दिखाने के लिये कि उनकी दूध पीने की सामर्थ्य है। उन दिनों किसी शिशु को गाय का दूध पिलाने की बात कहीं सुनाई न पड़ती थी।

किन्तु इससे मुझे बड़ा कष्ट उठाना पड़ा। सम्भवतः मैं किसी सम्राट के शिशु से किसी प्रकार भिन्न नहीं था जिसे एक अच्छे बच्चे की भाँति पेटभर दूध पीने की आवश्यकता होती है, इसके पूर्व कि वह सो जाये। मुझे चूँकि कभी पेटभर भोजन नहीं मिला, इसलिये मुझे नींद भी बहुत कम आती थी। मेरी माँ के भी बहुत कम दूध होता था और उन दिनों बच्चों के लिये गाय का दूध या सूखे दूध के पाउडर का नाम कहीं सुनाई न पड़ता था। इसलिये उस समय मुझमें जो भी प्रतिभा थी, उसे मैं रो-रोकर व्यक्त करता था। जब कभी मेरा पेट खाली होता मैं जोर से रोना प्रारम्भ कर देता था, किन्तु आँसू शायद ही कभी निकलते रहे हों। मेरी बुआ ने मेरे इस कार्य को "शुष्क क्रन्दन" नाम दिया था। उन्हें मेरे शुष्क रुदन से घृणा थी और वे यह भविष्यवाणी करती थीं कि इस आदत के कारण मैं पूरे परिवार को आपत्तियों में डाल दूँगा।

मेरा शुष्क रुदन और मेरी बुआ का बड़बड़ाना कम करने के लिये मेरी माँ याङ्छुन गाँव में बनाए गए कुछ बिस्कुट खरीद लाई और मेरे छोटे से मुँह को बन्द करने के लिये मेरे मुँह में बिस्कुट डाल दिया। मेरे बहिनोई इस विषय में अनेक चातुर्यपूर्ण हास्य-विनोद करते थे और कहते थे, "कोई बच्चा जो लपसी खिलाकर पाला गया हो कभी युद्ध कला में प्रथम पुरस्कार नहीं प्राप्त कर सकता।" जहाँ तक मेरी बुआ का सम्बन्ध है वह जब भी मेरे सर को अपने पाइप की चिलम से ठकठकाती थीं तभी वे शिकायत करती थीं कि यह इतना कड़ा नहीं है जितना कि इसे होना चाहिए।

एक सामान्य व्यक्ति से मेरी बुआ की बुद्धि अधिक गहन न थी और उनके द्वारा की गयी पूर्व घोषणा मेरे रुदन के अतिरिक्त अन्य किसी वस्तु पर आधारित न थी। किन्तु कोई भी जिसे अधिक गम्भीर विषयों की थोड़ी चिन्ता थी वह यह कल्पना कर सकता था कि भूखे बच्चों का रोना आँधी तूफान आने के पूर्व की गड़गड़ाहट के समान है। यदि आप ध्यानपूर्वक सुनते तो मेरे शुष्क रुदन के साथ आप साम्राज्य के कोने कोने से भूख से मरते, ठण्ड से ठिठुरते और बीमार या बेचे जाते हुए बच्चों के हृदय विदारक क्रन्दन को सुन सकते थे।

पीली नदी की बाढ़ अबाध गति से जारी थी, जो आकाश से किसी चट्टान के गिरने के समान थी या सागर से उठने वाले ज्वार भाटे की लहर के समान बढ़ रही थी। यह बाढ़ खेतों को नष्ट कर देती थी, घरों को दहा देती थी, पशुओं और भेड़ों को जल प्रवाह में और हजारों बालक-बालिकाओं, युवक-युवतियों एवं वृद्धजनों को

समान रूप से सागर में बहा ले जाती थी। जिन क्षेत्रों में यह बाढ़ नहीं पहुँचती थी वहाँ अनन्त वर्षों तक सूखा और अकाल कृषकों के समूह को विनष्ट कर देता था और माँ के गर्भ में पलते हुए असंख्य अजन्मे बच्चों को भूखों मार डालती थी। मेरा करुण रुदन पीली नदी की भयानक गर्जन तथा कृषकों के दुःखद विलाप में प्रतिध्वनित होता था।

पेइचिङ, थ्येनचिन तथा अन्य बड़े नगरों में, सत्ता का दुरुपयोग करने वाले अधिकारियों के दूसरों को गालियाँ देने के स्वर, खुशामदी टट्टुओं की चाटुकारितापूर्ण हँसी, लोगों द्वारा पद और उपाधियाँ चिल्ला-चिल्लाकर बेचने के स्वर, हजारों के दाँव एक ही बार में लगाने वाले जुआड़ियों की चिल्लाहटें, भालू के पंजे और ऊँट के कूबड़ जैसे स्वादिष्ट व्यंजनों को पकाने की आवाज, विलासी व्यक्तियों का कामुकतापूर्ण वार्तालाप, कारागार में बजती हुई हथकड़ियाँ और बेड़ियाँ तथा न्यायालयों में कोड़े मारने तथा यंत्रणा देने की ध्वनि ये सब एक में मिल गयी थीं और ऐसा दृश्य उपस्थित कर रहीं थीं कि मानो स्वर्ग और नर्क केवल एक अत्यन्त पतली दीवार से एक दूसरे से पृथक हो गए हों। कामी व्यक्ति का मनोरंजन तथा क्रूर मृत्यु एक दूसरे से केवल एक पग की दूरी पर ही थे। अकल्पनीय विलासिता तथा अकथनीय पीड़ा साथ-साथ अस्तित्व में थी।

उस समय विदेशी आक्रमणकारियों की तोपों की आवाज निरन्तर सुनाई पड़ती थी और चीन के भूखण्ड को विभाजित करने के सम्बन्ध में शोरगुल वायुमण्डल में गूँज रहा था। गाँवों और छोटे नगरों में अत्याचार, देशद्रोहियों की घोर निन्दा, तथा आक्रमणकारियों का चिल्ला-चिल्लाकर विरोध करने के स्वर भी एक भयानक ज्वार की भाँति बढ़ रहे थे। सहनशक्ति के परे उत्साहित किए जाने पर भी अत्याधिक ईमानदार और दयालु कृषक भी अपनी बँधी हुई मुट्ठियों, पत्थरों, काँटों और झाड़ुओं को हाथ में लेकर अपनी जीवन रक्षा के लिये लड़ने को उद्यत हो गए थे।

अपने इस अटूट रुदन की अवधि में हम सर्वप्रथम "धर्म परायण तथा समन्वयवादी मुष्टिका" नामक संगठन, जो बाद में "धर्मपरायण और समन्वयवादी समाज" (ई हो थ्वान)* के रूप में विख्यात हुआ, के विषय में सुनने लगे।

मैनेजर वाङ जैसे-जैसे वृद्ध होते गए उतना ही अधिक वे बहुधा कटने लगे, "मुझे घर वापस जाना चाहिए और घूमकर कुछ देख आना चाहिए।" किन्तु पिछले तीन वर्षों में उन्होंने अपनी घर जाने की छुट्टियाँ अपने ही कुछ साथियों को दे दी थीं। वह कहीं भी जाने की इच्छा नहीं करते थे। जितना ही अधिक वह गृहवियोग से दुखी होते गए उतना ही उनके लिये पेइचिङ छोड़ना कठिनतर हो गया। यह महान नगर उनके लिये न छूट सकने वाला आकर्षण था। वह कहते थे कि उनकी इच्छा है कि

* पश्चिम में यह संस्था "दि बाक्सर्स" के नाम से जानी जाती है।

उनकी बूढ़ी हड्डियाँ उनके घर के कस्बे में ही दफनाई जायें। किन्तु यदि उनसे कोई पूछता, "पेइचिङ में ही क्यों न दफनाई जायें?" तब वह सम्भवतः इस पर कोई कड़ी आपत्ति नहीं करते थे।

मैनेजर वाङ अपने छोटे पुत्र को संसार में सबसे अधिक स्नेह करते थे। उसके लिये शिछङ (क्योंकि यही शाब्दिक रूप में उसका नाम था "दस भाग", जिसका अर्थ है "पूर्ण") एक युवा व्यक्ति से भी अधिक था और वही एक प्रकार से उनका मापदण्ड बन गया। जब मैनेजर वाङ किसी तिथि विशेष की बात करते तब वे कहा करते थे, "जिस वर्ष शिछङ का जन्म हुआ था," अथवा "शिछङ के जन्म से तीन वर्ष पश्चात..." जब वे किसी वस्तु के आकार का वर्णन करते, वे कहते थे, "शिछङ से कुछ लम्बा" अथवा "शिछङ से एक फुट छोटा..." मुझे स्पष्ट कर देना चाहिए कि शिछङ, मैनेजर वाङ का तीसरा बच्चा था, किन्तु चूँकि "तीन भाग" में बुरी खेती का अर्थ निहित है, अतः उसका नाम शिछङ "दस भाग" रख दिया गया। हममे से कोई भी व्यक्तिगत रूप से शिछङ से नहीं मिला था, किन्तु जो भी मैनेजर वाङ से परिचित था, वह अनुभव करता था कि जैसे वह शिछङ को भली-भाँति जानता हो। जब कोई मैनेजर वाङ से पूछता था कि क्या उनके घर से उन्हें कोई पत्र प्राप्त हुआ है, वे कहते, 'शिछङ के पास से कोई पत्र?"

किसानों के अत्यन्त व्यस्त समय पर उस ग्रीष्म ऋतु में वाङ शिछङ अचानक पेइचिङ आ पहुँचा। मैनेजर वाङ को आश्चर्य भी हुआ और प्रसन्नता भी। यह बहुत अच्छा था कि वह आ गया था और वह इतना बड़ा तथा हृष्ट-पुष्ट हो गया था कि अपने पिता से भी लम्बा था, यद्यपि वह अभी केवल बीस वर्ष का ही था। किन्तु मैनेजर वाङ को आश्चर्य हुआ कि क्योंकि शिछङ, बिना किसी सामान के साथ, कीचड़ और धूल से सना एक जीर्ण-शीर्ण जैकेट पहिने पहुँचा था। मैनेजर वाङ बाहर गए और शिछङ के लिये एक सिली-सिलाई नीली सूती ज़ैकेट, पैंटें और काले कपड़े का एक जोड़ी जूता खरीद लाए और दो-तीन मानचू तथा चीनी परिवारों में उसे दिखाने ले गए। मुझे ज्ञात नहीं कि शिछङ ने अपने पिता से क्या कहा, किन्तु दो दिन पश्चात मैनेजर वाङ ने उसको इधर-उधर दिखाने के निमित्त आना-जाना बन्द कर दिया। कदाचित इस समय तक आस-पड़ोस वाले सभी लोगों ने यह हर्ष की सूचना सुन रखी थी और मैनेजर वाङ से बराबर पूछते रहे थे, "आप शिछङ को यहाँ हमसे मिलाने क्यों नहीं लाते? क्या हम इस योग्य नहीं हैं?" इसने उनके मर्म को स्पर्श किया, किन्तु इसके कारण उन्हें कुछ उलझन का भी अनुभव हुआ। अन्त में उन्होंने लोगों से भेंट करने का कार्यक्रम जारी रखने का निश्चय किया, किन्तु सीमित रूप में।

एक दिन दोपहर के बाद, मेरी माँ ठण्डी छाँव में कपड़े धो रही थीं, मैं अन्दर अर्ध

निद्रा में अपना अँगूठा चूसते हुए खाङ पर लेटा था और कुछ कुछ क्षुधा एवं तृप्ति के मध्य जैसी स्थिति की अनुभूति कर रहा था। हमारा बड़ा पीला कुत्ता बेर के पेड़ों के नीचे बैठा दहिने-बायें मक्खियों पर झपट रहा था, तभी मैनेजर वाङ और उनका बैटा वहाँ आ पहुँचे।

मैनेजर वाङ ने केवल कहा, "यह शिछङ है।"

माँ उन्हें अन्दर ले जाना चाहती थीं किन्तु उन्होंने अस्वीकार कर दिया, अतः वे आँगन में खड़े बात करते रहे। ग्रीष्म ऋतु में हमारा आँगन घर के अन्दर से अधिक प्रदर्शनीय था। हमारे दो बेर के पेड़ों में सदैव कुछ हरी पत्तियाँ निकलती रहती थीं, भले ही उनमें कोई बेर न फलते हों। कुछ चमेली के पौधे जो दीवार के किनारे खुद बखुद उग आए थे, इस वर्ष अत्यन्त शोभायमान लग रहे थे। मुझे अपने भोजन में कुछ अतिरिक्त मात्रा की आवश्यकता थी और इसके लिये पिता को बिस्कुट खरीदने पड़े। पिता जी की स्थिति इस बार वसन्त ऋतु में केवल एक गमले में लगा वरबीना लाने की थी। वह फूल रहा था किन्तु बड़े प्रयास के साथ। अबाबीलें इधर-उधर उड़ रही थीं और कभी-कभी लाल या पीले चिउरा नामक पतंगे हमारे आँगन में आ जाते थे। हमारे घर की छत पर लम्बी नुकीली घास के अनेक गुच्छे उग रहे थे और यद्यपि छत की खपरैलों के लिये वे हानिकारक थे, किन्तु उनकी पीली हरी पत्तियाँ देखने में सुहावनी लगती थीं। संक्षेप में हम कह सकते थे कि हमारे आँगन में सचमुच ही भरपूर सजीवता आ गयी थी।

यद्यपि ग्रीष्म ऋतु की गर्मी प्रारम्भ हो गयी थी, तथापि मैनेजर वाङ पूरा शिष्टाचार निभाते हुए एक भूरे रंग का सूती गाउन पहने थे जो उनको गर्दन से पैर तक ढके था। शिछङ अपना नया सूट पहने था। यद्यपि उसकी पैण्ट बहुत लम्बी थी और जैकेट बहुत छोटी, किन्तु इन वस्तुओं से एक विशेष प्रकार के नीले रंग के मसाले की गन्ध फैल रही थी। मेरी माँ ने मैनेजर वाङ को बैठने के लिये एक लकड़ी की बेंच दी और जब वह उस पर बैठ गए तब वह शिछङ को एकटक देखने लगे। शिछङ ने कहा कि सैन्य कला में प्रशिक्षित होने के कारण वह शीघ्र थकता नहीं है। मेरी माँ द्वारा अनेक बार आग्रह करने पर भी उसने बैठना अस्वीकार कर दिया।

माँ ने अपने माता-पिता तथा सास-श्वसुर द्वारा पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त किया था और यद्यपि वे अधिक बातूनी न थीं, किन्तु जब मित्र और सम्बन्धी आते थे तब सदा समयानुकूल बात करती थीं और सहज रूप से वे एक कुशल आतिथ्यकर्त्री थीं। किसी अन्य दिन, वह सदैव एक अक्षय शब्द भण्डार के साथ मैनेजर वाङ से ऋतु सम्बन्धी विचार करने के लिये सदैव तत्पर रहती थीं। किन्तु आज न जाने क्यों उनके पास कहने के लिये कुछ न था। उन्होंने देखा कि मैनेजर वाङ अपने पुत्र शिछङ के चेहरे तथा उसके शेष शरीर को एकटक देख रहे थे और उस युवक के सम्बन्ध में

कोई बात उन्हें परेशान कर रही थी। शिछङ वहाँ एक पुराने देवदार के वृक्ष के समान जड़वत खड़ा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह समझ नहीं पा रहा था कि अपने हाथों से क्या करें, कुछ क्षणों के लिये उसने उन्हें ऊपर उठाया और फिर नीचे झुका दिया। शिछङ की मुखाकृति संतुलित थी। उसके नेत्रों तथा मस्तक से एक ज्योति जैसी झलक रही थी, किन्तु उसने अपना मुख बिल्कुल ही बन्द कर रखा था मानो वह तब तक कुछ भी न बोलने जा रहा था जब तक कि ऐसा करने के लिये उसे बाध्य न होना पड़े। मेरी माँ समझ नहीं पा रही थीं कि क्या कहा जाये और वे अपने प्रिय विषय मौसम के सम्बन्ध में भी सब कुछ भूल गयीं। एक लम्बी शान्ति के उपरान्त शिछङ बैठ गया और अपने हाथों से अपना सिर थामे हुए किसी अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय के सम्बन्ध में विचार करता प्रतीत हो रहा था।

उसी समय फूहाए पहुँच गया। हमारा बड़ा पीला कुत्ता जाग गया और इधर-उधर दौड़ने तथा ऊपर-नीचे कूदने लगा। माँ ने उसे पुकारा और कहा, "गोल्डी, शान्त हो जाओ।" वह अपने स्थान पर जाकर बैठ गया और अपने पिस्सुओं को नोचने लगा।

जैसे ही फूहाए बैठा, शिछङ खड़ा हो गया। उसके कसकर बन्द किए हुए होंठ एक मुस्कराहट के साथ खुल गए और फूहाए का अभिवादन करते हुए कहा, "हलो, बन्धु।"

फूहाए ने एक बाँसों की खपच्चियों का काला पंखा लिया और अपने ऊपर झलने लगा। उसने कहा, "शिछङ, मैंने इस पर विचार कर लिया है। अच्छा होगा कि मुझे अलग समझो।"

"तुमको अलग समझें?" शिछङ ने अपने पिता पर दृष्टिपात किया और स्पष्ट रूप से अपनी लार निगलते हुए फूहाए की ओर मुड़ा और कहा, "यह तुम्हारा अपना निर्णय है।"

मेरी माँ यह नहीं जानती थीं कि फूहाए शिछङ से पहले कब मिल चुका था और न वह यह समझ पाई कि वे किस विषय पर वार्ता कर रहे थे। वे उनके लिये चाय बनाने चली गयीं।

मैनेजर वाङ प्रकट रूप में विचार करने लगे और उनके शब्द बहुत धीरे-धीरे निकले, "शिछङ, तुम जानते हो कि मैं विदेशी सूत के बने हुए इन लम्बे चोगों से कितनी घृणा करता हूँ। और मैं विदेशियों तथा उनके धर्म से उससे भी कहीं अधिक घृणा करता हूँ। किन्तु..."

शिछङ ने अपनी पैण्ट पर अपनी गदेरियों का पसीना पोंछा और कहा, "पिता जी! आप अनेक वर्षों से ग्रामीण क्षेत्र से दूर रहे हैं। आप नहीं जानते कि हमें किस प्रकार रहना पड़ा हैं विदेशी अपनी तमाम सूचनाएँ अपने चीनी चाटुकारों से प्राप्त करतें हैं तथा अधिकारी वही करते हैं जैसा विदेशी कहते हैं। अधिकाँश लोगों के

जीवन कुत्तों से भी गए बीते हैं।" शिछङ ने हमारे बड़े सुनहरे कुत्ते की ओर संकेत किया और कहा, "मैं सबसे अधिक घृणा जिससे करता हूँ वे वही चाटुकार चीनी हैं। उन्होंने अपने को बेच दिया है।"

बहुत देर तक मैनेजर वाङ तथा फूहाए शान्त बने रहे।

फूहाए ने कृत्रिम मुस्कराहट के साथ कहा, "हाँ, किन्तु उनमें से कुछ अभी नहीं बिके।"

"वे जो बिक चुके हैं विदेशियों के सबसे अच्छे मित्र हैं।" शिछङ ने सीधे फूहाए की ओर देखा, किन्तु फूहाए ने उसकी दृष्टि बचाई तथा बेर के पत्ते पर रेंगते भौंरे की ओर अपना ध्यान बँट जाने का बहाना किया।

मैनेजर वाङ अपनी धीमी गति में कहते गए, "क्या तुम...किन्तु तुम नहीं..."

फूहाए ने बीच में ही टोकते हुए शिछङ से कहा, "मेरे नौजवान दोस्त, इसे भूल जाओ।"

शिछङ ने फूहाए की ओर से अपनी दृष्टि नहीं हटाई और कहा, "मुझे जवान साथी मत कहो। मैं अब लड़का नहीं हूँ। मैं अपनी मुट्ठियाँ तानकर लड़ सकता हूँ, मैं तलवार लेकर लड़ सकता हूँ और मैं शस्त्र प्रहार को विफल करने का जादू सीख रहा हूँ। मैं किसी से भयभीत नहीं होता। किसी से भी नहीं।"

फूहाए ने जोर से हँसते हुए कहा, "किन्तु तुम लड़ाई जीत नहीं सके। तुम्हारा उद्देश्य कितना ही पवित्र हो, इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। सम्राट की सेनाएँ विदेशियों की सहायता कर रही हैं। पहले ही से परिस्थितियाँ तुम्हारे विरुद्ध हैं।"

मैनेजर वाङ ने अपनी बात जोड़ते हुए कहा, "यह सत्य है। हालत ऐसी ही है।"

"मैं इस पर विश्वास नहीं करता, एक क्षण के लिये भी नहीं। हम पराजित हो गए थे, किन्तु हम फिर लड़ सकते हैं।" यह कहते हुए शिछङ ने पहले से भी अधिक दृढ़तापूर्वक अपना मुँह बन्द कर लिया और उसके कपोल हिलने लगे मानो वह अपने दाँत पीस रहा हो।

मैनेजर वाङ ने बड़े धैर्यपूर्वक पुनः बोलना आरम्भ किया, "शिछङ! मेरी बात सुनो, यहाँ कुछ समय ठहरो। क्या यह अच्छा नहीं होगा कि तुम कोई आगे का कदम उठाने से पूर्व चारों ओर भली-भाँति निरीक्षण कर लो? मैं एक बूढ़ा व्यक्ति हूँ और तुम्हारे साथ यहाँ मेरे निकट..."

"शिछङ यही उचित है, तुम्हारे पिता सही कह रहे हैं।" शिछङ के प्रति फूहाए का अपार स्नेह था, किन्तु एक बैनरमैन सैनिक के नाते वह राज्य-विरोधी विचार किसी रूप में भी व्यक्त नहीं कर सकता था।

शिछङ पुनः पालथी मारकर बैठ गया और कुछ नहीं बोला। फूहाए ने अपना पंखा खटके के साथ खोल लिया और उसे हल्की तथा सरसराती आवाज के साथ बन्द

किया। उसने फिर खोल लिया और बन्द किया। वह मानसिक रूप से अत्याधिक अस्तव्यस्त था। अधिक गहन विचार किए बिना ही उसने पूछा, "शिछङ तुम्हारे पास कुल कितने आदमी हैं?"

उसने फूहाए पर कदाचित कड़ा दृष्टिपात करते हुए जवाब दिया, "हजारों! हजारों!! सभी अदम्य उत्साह के व्यक्ति हैं। शानतुङ में अभी स्थितियाँ असामान्य हैं। पहले हम लोग चिली* जायेंगे और फिर सीधे पेइचिङ पहुँचेंगे।"

मैनेजर वाङ उछल पड़े और लगभग चिल्लाते हुए बोले, "तुम्हें इस प्रकार बात न करनी चाहिए।"

माँ चाय का बर्तन लेकर वापस आ गयीं। बिना कुछ बोले शिछङ खड़ा हो गया और बाहर चला गया। अपना चाय का बर्तन अपने हाथ में लिये माँ स्तब्ध सी खड़ी देखती रह गयीं।

"आपको अनेक काम करने हैं। कृपया यह कार्य मुझे करने दीजिए।" यह कहते हुए फूहाए ने मेरी माँ के हाथ से चाय का बर्तन ले लिया और उन्हें वापस भेज दिया। उसने मैनेजर वाङ से बैठने का पुनः आग्रह किया। कुछ क्षण पूर्व शिछङ की सरलता ने सम्भवतः उसे चुप कर दिया था। अब, मैनेजर वाङ के साथ अकेला रहकर उसने पुनः अपना मुँह खोला। "मैनेजर वाङ एक प्याला चाय का लें! हमें अधिक व्यग्र न होना चाहिए। मैं शिछङ को यहाँ पेइचिङ में रोकने के लिये आपकी सहायता करूँगा।"

"क्या ऐसी बात है, क्या उसके लिये यहाँ रहना बिल्कुल उचित होगा?" मैनेजर वाङ ने पूछा।

"वह कोई चोर या हत्यारा नहीं है। नहीं? बहुत दिन पूर्व हमने शानतुङ में 'धर्मपरायण तथा समन्वयवादी समाज' द्वारा विद्रोह की सूचना सुनी थी, किन्तु मैंने यह भी सुना था कि अधिकारी वर्ग, जनसाधारण को कोई दुःसाहस करने का अवसर न देगा। अब चूँकि शिछङ यहाँ आ गया है, अतः हमें उसे यहाँ से वापस न जाने देना चाहिए। यदि वह यहाँ रुका रहेगा, तो हम उसे सही मार्ग पर ले आयेंगे। जब तक वह कोई परेशानी उत्पन्न नहीं करता लोग अधिक प्रश्न भी नहीं करेंगे।" यह कहने के पश्चात उसने चूके ल्याड़** की भाँति अपना सामान्य दूरदर्शी रूप ग्रहण कर लिया।

मैनेजर वाङ ने कटुता से मुस्कराते हुए कहा, "क्या आप उसे कोई गड़बड़ करने से रोक सकते हैं? वह जो कहता है उसमें तथ्य हैं, हम उसके विचारों में कभी कोई परिवर्तन नहीं ला सकेंगे।

---

* वर्तमान में हपेइ प्रान्त।

** तीन राजवंशों के समय का एक प्रधानमंत्री।

फूहाए ने अपना सिर झुका लिया। यह सत्य था। जो कुछ भी शिछङ ने कहा था वह पूर्णतयः तर्कसंगत था। फूहाए ने कहा, "मैनेजर वाङ, यदि मैं एक बैनरमैन सैनिक न होकर मात्र पेण्टर रहा होता तो मैं भी..."

मैनेजर वाङ ने एक ठण्डी साँस भरी और धीरे से आँगन के बाहर निकल गए।

मेरी माँ ने फूहाए के निकट जाकर कहा, "यहाँ क्या हो रहा है? शिछङ ने क्या भूल की है?"

फूहाए बहुधा चंचल रहता था, किन्तु वह झूठ बोलने से घृणा करता था। अतः उसने लजाते हुए कहा, "कुछ नहीं। कहीं कुछ भी नहीं। उसने कोई गलत काम नहीं किया है। परेशान होने की कोई बात नहीं है।"

माँ ने कहा, "मुझे ऐसा जान पड़ रहा है कि कुछ हो रहा है। तुम्हें अपनी सामर्थ्यभर मैनेजर वाङ की सहायता करनी चाहिए।"

फूहाए ने उत्तर दिया, "मैं वचन देता हूँ, मैं करूँगा।"

अपने "नन्हें सहायक" के साथ मेरी बुआ पश्चिमी मन्दिर से वापस आई। यद्यपि उन्हें पैसा बहुत प्रिय था, किन्तु वे कहीं भ्रमण करके खाली हाथ वापस आने में असुविधा अनुभव करती थीं। अतः उन्होंने घर लौटते समय दंतमंजन की एक पुड़िया खरीद ली थी।

मेरी बुआ ने मुस्कराते हुए कहा, "फूहाए ताश की एक बाजी हो जाये, तुम्हारी क्या राय है?"

परम्परा के अनुसार फूहाए को कुछ इस प्रकार प्रत्युत्तर देना चाहिए था, "महोदया, पहले आप बतायें।" किन्तु आज ताश खेलने का उसमें कदापि उत्साह न था। फूहाए, शिछङ के चेहरे को तथा जो कुछ भी उसने कहा था उसे भुला पाने में कष्ट का अनुभव कर रहा था। इसने उसे मानसिक रूप में अस्तव्यस्त, तनावपूर्ण तथा अपने प्रति कुछ लज्जित बना दिया। उसने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "महोदया! मुझे कुछ और कार्य देखना है।" कुछ और बेढंगी चर्चा करने के पश्चात उसने अपने पंखे को अपनी जाँघ पर पटका और कहा, "अच्छा, अब मुझे सचमुच जाना चाहिए।" इसके पश्चात वह बाहर चला गया।

जब वह सड़क पर पहुँचा, उसने अपनी चाल धीमी कर दी। उसे परिस्थितियों पर विचार करने के लिये समय की आवश्यकता थी। अन्तरराष्ट्रीय विषयों पर फूहाए को उतना ही कम ज्ञान था जितना तत्कालीन मानचू कुलीन तंत्र को। यद्यपि वह जानता था कि विदेशी राष्ट्र अत्यन्त शक्तिशाली हैं, तथापि वह पराजय स्वीकार करने के विरुद्ध था। यही कारण था कि उसके मन में शिछङ के प्रति अत्याधिक आदर था। तथापि उसका अनुमान था कि सम्राट की सरकार शिछङ के द्वारा किसी विदेशी को चोट न पहुँचने देगी। यदि शिछङ कुछ करता है तो उसे उसका फल भुगतना

पड़ेगा। फूहाए ने विचार किया, "मैं एक बैनरमैन सैनिक हूँ। क्या मुझे सम्राट की सरकार की सहायता न करनी चाहिए? या मुझे शिछङ की सहायता करनी चाहिए?" वह अपने को बन्धनों में बँधा अनुभव कर रहा था। परेशानी में उसके पूरे शरीर से पसीना छूट रहा था। उसकी जैकेट उसकी पीठ से चिमट रही थी तथा उसके मोजे उसके पैरों के तल्ले से चिपके जा रहे थे।

असमंजस में डूबा फूहाए प्येनईफाङ रेस्तराँ के सामने के द्वार पर पहुँचा। वह यह निश्चय नहीं कर पा रहा था कि अन्दर जाये अथवा नहीं। उसी क्षण शिछङ बाहर निकला। जब उसने फूहाए को देखा, वह अपने मार्ग पर निश्चल खड़ा हो गया और कसकर मुँह बन्द कर लिया, मानो वह कहने वाला हो, "यदि तुम मुझे बन्दी बनाना चाहते हो, तो आगे बढ़ो और बना लो।"

फूहाए हँसा और सरलता से बोला, "ऐसे शँकालु न बनो। आओ चलें, कहीं घूम आयें और कुछ बात करें।"

शिछङ के होंठ स्वतः सिकुड़ गए, किन्तु वह कुछ बोला नहीं।

फूहाए ने पुनः कहा, "तुम इतने अधिक शँकालु न बनो।"

"ठीक है, हम चलें। मैं अपने कार्यों के परिणाम को स्वीकार करता हूँ।" जैसे ही फूहाए उत्तर दिशा की ओर बढ़ा, शिछङ उसके पीछे चल पड़ा।"

फुर्ती से चलते हुए वे शीघ्र ही चीश्वेइथान पहुँच गए। वह एक शान्तिपूर्ण स्थल था। दो या तीन व्यक्ति पूर्ण शान्ति में सिवार भरे पोखर के किनारे मछली पकड़ रहे थे। दो छोटे लड़के दिखलाई पड़े और एक पतंगे का पीछा करते हुए दौड़ भागे। फूहाए एक पत्थर पर बैठ गया तथा अपनी भौंहों पर का पसीना पोंछा। शिछङ पालथी मारकर बैठ गया तथा धीरे-धीरे डोलती सिवारों की ओर टकटकी लगाए शून्य दृष्टि से देखने लगा।

फूहाए शिछङ से अपने सम्बन्ध में खोलकर स्पष्ट करना चाहता था, स्पष्टीकरण देकर उसे अलग करने का एक साधन बनाना चाहता था। उसने कहा, "शिछङ विदेशी, जिस प्रकार से हमें ठोकरें मार रहे हैं, उससे मैं भी घृणा करता हूँ। किन्तु मैं एक ध्वजावाहक सैनिक हूँ। मुझे आदेशों का पालन करना चाहिए। मैं अपनी इच्छा से कुछ नहीं कर सकता। किन्तु यदि किसी दिन संयोग से हमारी दोनों सेनाएँ एक दूसरे से लड़ने लगें और मैं तुम्हें दूसरे पक्ष में देखूँ, तो मैं तुम्हारे ऊपर कभी गोली न चलाऊँगा। शिछङ, तुम जानते हो, यदि मैंने सेना में अपनी नौकरी खो दी तो भी मैं धनोपार्जन कर सकूँगा। मैं एक रंग पेण्टर! हूँ।"

शिछङ ने फूहाए की ओर देखा और कहा, "एक पेण्टर! अब तुम क्या जानना चाहते हो?"

"मैं तुम्हारे धर्म के विषय में कुछ भी न पूछूँगा।"

"कौन सा धर्म?"

"क्या तुम 'अष्ट वर्णत्रयी सम्प्रदाय' के सदस्य नहीं हो? मेरा विचार था कि बाहरी लोगों के साथ धार्मिक विषयों पर चर्चा करने की तुमसे आशा नहीं की जा सकती।"

फूहाए सन्तुष्टि भाव से हँसा और बोला, "मैं 'श्वेत कमल सम्प्रदाय' का सदस्य हूँ। अतः समान आस्था के कारण हम भाई-भाई हैं।"

"तुमने 'श्वेत कमल सम्प्रदाय' की सदस्यता ग्रहण कर ली है, क्या फिर भी तुम विदेशियों से लड़ने में भय खाते हो? तब मुझसे समान आस्था के आधार पर भाई होने की अनर्गल बात मत कहो।"

फूहाए का विचार था कि शिछङ को समझाने-शान्त करने से उन दोनों के बीच खाई पाटने में सहायता मिलेगी। जब उसने पाया कि इससे विपरीत प्रभाव पड़ रहा है तो लजाते हुए कहा, "मैं, मैंने 'पूर्ण विरति संगठन' की सदस्यता ले ली थी।"

"यदि तुम 'पूर्ण विरति संगठन' के सदस्य हो तो तुमने अभी ऐसा क्यों नहीं कहा? फिर 'श्वेत कमल सम्प्रदाय' के सम्बन्ध में यह मूर्खतापूर्ण बात क्यों लाते हो?" शिछङ ने एक इंच भी झुकना स्वीकार न किया।

"ठीक है, तब इसे भूल जाओ।" फूहाए शान्त रहा, फिर बोला, "मुझे बताओ, तुम क्या करने जा रहे हो?"

"मैं यहाँ से जा रहा हूँ। वापस घर, हमारा पूरा गाँव विदेशियों तथा उनके गुर्गों की ठोकरें खाते ऊब चुका है, अतः हमने प्रतिरोध किया। सम्राट की सेनाएँ हमें निकाल देने के लिये निकल पड़ी तथा अनेक लोगों को जीवन से हाथ धोना पड़ा। अतः मुझे वापस जाना चाहिए तथा अपने मित्रों की खोज करनी चाहिए। हम फिर लड़ेंगे। हम सम्राट की सेनाओं तथा विदेशियों से एक साथ लड़ेंगे। हम सभी एक विचार वाले हैं तथा हमारा उद्देश्य सही है। हमें कोई रोक नहीं सकता।" शिछङ खड़ा हो गया और अपनी दृष्टि दूर की ओर इस प्रकार फेंकी कि जैसे वह शानतुङ की ओर का सम्पूर्ण मार्ग देख सकता था।

"क्या किसी प्रकार मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ?" फूहाए को इस नौजवान के प्रति अपने हृदय में अपार स्नेह उमड़ता जान पड़ा जो न तो आकाश से भयभीत था और न पृथ्वी से। पेइचिङ में जन्मा तथा पला फूहाए शिछङ की भाँति किसी अन्य स्पष्टवादी, सज्जन तथा निर्भय व्यक्ति से कभी नहीं मिला था।

"मैं सीधे जा रहा हूँ। कृपा करके तुम जाओ और मेरे पिता से बात करो। उस वृद्ध पुरुष को समझाओ कि हमारे लिये अन्त तक लड़ने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है। कृपया उन्हें यह विश्वास दिलाने का प्रयास करो कि इसमें कोई बुराई नहीं है। मैं इस संसार में कुछ अच्छाई लाने का प्रयास कर रहा हूँ। क्या तुम मेरे लिये ऐसा करोगे?" शिछङ ने सीधे फूहाए की आँखों में देखा।

"मैं करूँगा, शिछङ मैं करूँगा। क्या तुम जानते हो कि मेरे पूर्वज भी लड़ाई से भय नहीं खाते थे। किन्तु अब... आह, इसे भूल जाओ! अब इस पर चर्चा करने से भी क्या लाभ ? शिछङ, क्या मैं तुमसे पूछ सकता हूँ कि तुम्हारे पास वापस यात्रा के लिये पैसा है?"

"बिल्कुल नहीं। पैसे की किसे आवश्यकता है?"

"तुम्हारी इस बात का क्या अर्थ है कि पैसा कौन चाहता है? तुम्हें मुफ्त में तिलपट्टी कौन देने जा रहा है?" फूहाए पुनः परिहास करने लगा, किन्तु शीघ्र ही उसने अपने को नियंत्रित कर लिया। "मेरे कहने का तात्पर्य है कि मार्ग में तुम्हें थोड़े पैसों की आवश्यकता अवश्य पड़ सकती है।"

"इसे देखो!" शिछङ ने अपनी जैकेट के बटन खोल दिए, और एक चौड़े लाल कपड़े की पेटी* दिखाई दी जिस पर पसीने की वजह से हल्के और गहरे निशान पड़ गए थे।

"जब तक मैं इसे पहने रहूँगा, कभी भूखा नहीं रह सकता।" उसने तुरन्त अपनी जैकेट के बटन बन्द कर लिये।

"यदि किन्हीं गुर्गों या सम्राट के सिपाहियों ने यह देख लिया, तो क्या वे नहीं जानेंगे..."

"हाँ!" शिछङ जोर से हँसा। "क्या मैंने तुम्हारे सामने भली प्रकार कस कर जैकेट के बटन नहीं लगाए हैं? फूहाए, तुम एक अच्छे आदमी हो, यदि सभी सैनिक तुम्हारी ही भाँति होते तो हम लोगों के लिये सब काम बहुत सरल हो जाता। एक समय आएगा जब सम्राट लज्जा से अपना सर झुका लेंगे।"

फूहाए ने कुछ नकद पैसे जो उसके पास थे निकाले और कहा, "शिछङ, इन्हें ले लो, मैं तुम्हें ना न करने दूँगा।"

शिछङ ने वह पैसा स्वीकार कर लिया। "सुन्दर, मुझे इसे जोड़ लेने दो। यह मेरे हिसाब में लिख लो। जब हम विदेशियों को भगा देंगे तब मैं अपने गाँव खेती करने जाऊँगा। पहली फसल के पश्चात मैं इस रकम का भुगतान कर दूँगा।" बातें करते हुए उसने पैसे गिन लिये। "चार सौ अस्सी।" उसने अपने कोट के अन्दर पैसे रख लिये। "अब विदा दें, नमस्कार!" यह कहते हुए वह पूर्व दिशा की ओर चल दिया।

फूहाए दौड़कर उसके पास पहुँचा और पूछा, "क्या तुम रास्ता जानते हो?"

शिछङ ने तशङमन द्वार के बुर्ज की ओर संकेत करते हुए कहा, "क्या वह नगर द्वार नहीं है? एक बार मैं नगर के बाहर निकल जाऊँ, मैं अपना रास्ता पूछ लूँगा।"

शिछङ दृष्टि से ओझल हो गया, किन्तु फूहाए वहीं खड़ा रहा। चारों ओर का वातावरण आनन्दप्रद तथा शीतल था। वहाँ जलाशय, वृक्ष, नरकट तथा छोटी पहाड़ी

---

* "बाक्सर्स" के साथ सहानुभूति के चिह्न के रूप में पहनी जाने वाली।

थी, किन्तु फूहाए को बहुत गरमी लग रही थी। वह पुनः एक शिला पर बैठ गया। शिछङ के साथ अपनी वार्ता पर विचार करते हुए उसने समझा कि कुछ न कुछ गड़बड़ है और इसीलिये वह आतंकित भी हो रहा था। उसके माथे पर पसीने की बूँदें झलकने लगीं। एक ध्वजवाहक सैनिक को किसी स्थिति में भी विद्रोही का समर्थन न करना चाहिए। उसने सोचा कि उसके द्वारा एक महान भूल हो गयी है। यदि शिछङ पकड़ा गया और अधिकारियों को उसका नाम बता दिया तब क्या होगा? यदि उन्होंने उसे फाँसी न दी तब भी वे ध्वजवाहकों की सूची से उसका नाम निश्चय ही हटा देंगे और उसे शिनच्याङ या युननान भेज देंगे।

"आवश्यक नहीं कि ऐसा ही हो।" उसने अपने को सांत्वना दी। "यदि मुझे यह करना पड़ा, तो मैं कुछ धन व्यय करूँगा, कुछ तिकड़म लगाऊँगा तथा परिस्थितियों को अनुकूल बना लूँगा।" इस विचार के आधार पर उसने यह नहीं माना कि वह विद्रोहियों का समर्थन कर रहा है, इतना अधिक कि उसके लिये ऐसा करना ही अधिक स्वाभाविक था—थोड़े से भ्रष्टाचार का दूरगामी प्रभाव हो सकता था। एक नौकरी खरीदने के लिये, यहाँ तक कि अपना जीवन दान पाने के लिये पैसा काम आ सकता था। किन्तु क्या यह सीधा भ्रष्टाचार न होगा? उसने कन्फ्यूशियस के प्राचीन ग्रन्थ या इतिहास क बहुत अध्ययन नहीं किया था, किन्तु उसने अनेक पेइचिङ आपेरा देखे थे तथा अनेक कथाएँ सुन रखी थीं। क्या प्रत्येक साम्राज्य का पतन भ्रष्टाचार के कारण नहीं हुआ?

यह भी कि शिछङ विदेशियों के विरुद्ध लड़ना चाहता था। इसके लिये किसी भी अच्छे व्यक्ति को उसका सम्मान करना चाहिए। उसके साथियों ने बहुत अपमान सहन किया। यदि और कुछ नहीं तो फूहाए चीन-जापान युद्ध को कभी नहीं भुला सकता या फ्रांसीसी तथा अँग्रेजी सेनाओं के द्वारा य्वानमिङय्वान उद्यान का जलाना कभी नहीं भूलेगा। अब वह अधिक मानसिक शान्ति का अनुभव कर रहा था। शिछङ सही था, किन्तु इसी प्रकार वह स्वयं भी। जो लोग सही मार्ग पर होते हैं उन्हें सदैव मानसिक शान्ति मिलनी चाहिए। फूहाए धीरे से उठा, उसने वहाँ से जाने और मैनेजर वाङ से बात करने का निश्चय किया। उसने कुछ कदम बढ़ाए और रुक गया। नहीं, वह नहीं जा सकता। उसने मैनेजर वाङ को सहायता करने का वचन दिया था कि वह शिछङ को पेइचिङ में रुकने के लिये मना लेगा। चूँकि मैनेजर वाङ में अधिक बातें करने का स्वभाव है, अतः वे शीघ्र ही यह कहते हुए बात फैला देंगे कि "मेरा बेटा भाग गया और फूहाए सारी बात जानता है।" वह ऐसा कभी न करेगा।

किन्तु यदि मैनेजर वाङ से उसने स्थिति को स्पष्ट न किया तो वह वृद्ध व्यक्ति अपने बेटे को खोजना आरम्भ कर देगा, तब यह उससे भी बुरा होगा। फिर दूसरा मार्ग कौन है?

वह घर दौड़ गया और अपने बाएँ हाथ से एक पत्र लिखा।

मेरे आदरणीय पिता जी,

मैं खेती करने के लिये घर वापस जा रहा हूँ। इस भय के कारण कि आप मुझे इसकी स्वीकृति न देंगे, मैं आपसे मिले बिना ही जा रहा हूँ। मैं अपनी यात्रा का वर्णन जब मैं घर वापस पहुचूँगा, लिख भेजूँगा।

आदर के साथ,

आपका पुत्र,
शिछङ

जब उसने लिखना समाप्त किया और लिफाफे को बन्द किया, फूहाए ने अपने मन में कहा, "अरे नहीं, मैं तो यह भी नहीं जानता कि शिछङ लिख भी सकता है।" और उसने लिफाफे को खोल डाला।

देर तक विचार करने के पश्चात भी वह अपना मन पक्का न कर सका। अन्त में उसने कहा, "अच्छा, तब ठीक है मैं यह भेज दूँगा।" और उसने लिफाफे को फिर बन्द कर दिया। फूहाए ने जाने का निश्चय किया। उसने सोचा कि जब प्येनईफाङ रेस्तराँ बन्द हो जायेगा तब वह वहाँ दरवाजे की दरार से उस पत्र को अन्दर डाल देगा।

8

प्येनईफाङ रेस्तराँ के मैनेजर वाङ विदेशियों या विदेशी वस्तुओं को पसन्द नहीं करते थे, अतः जब उनका बेटा शिछङ उनसे विदा लिये बिना ही चला गया तब वे विदेशी गिरजाघरों तथा उनके चीनी आश्रितों से भी घृणा करने लगे। चूँकि वे पेइचिङ में अनेक वर्षों से व्यापार में लगे थे, अतः मैनेजर वाङ सभी के प्रति सदैव उदार रहते थे। उन बौद्ध साधुओं को जो उनसे सांसारिक विषयों पर कभी बात नहीं करते थे, उनको भी वे "हे महापुनीता" कहकर सम्बोधित करते थे। जैसे-जैसे शिछङ के प्रति उनकी चिन्ता बढ़ी, उन्होंने विदेशी गिरजाघरों से सम्बन्धित निरन्तर बढ़ती घटनाओं के सम्बन्ध में और अधिक जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया। उन्होंने ऐसे लोगों के प्रति जो विदेशी धर्म पर आस्था रखते थे अपेक्षाकृत कुछ कम विनम्र व्यवहार करने का निश्चय किया। जब कभी वह किसी गिरजाघर के पास से गुजरते, तब वह रुककर उसका भली-भाँति निरीक्षण करते थे तथा जितनी ही देर वह उसे देखते उतना ही अधिक हतोत्साहित हो जाते थे। ईसाई गिरजाघर न तो बौद्ध और

न ताओ मन्दिर से कोई सादृश्यता रखते थे। उनकी निकटस्थ भवनों से इतनी अधिक विषमता थी कि उनमें यदि विदेशी गोपनीय बातें तथा विदेशी दैत्य न भी रहे हों, तो वहाँ कम से कम विदेशी बन्दूकों के होने का सन्देह उन्हें अवश्य होने लगा। रविवार को वह यह देखने के लिये वहाँ अधिक समय तक रुकते थे कि गिरजाघर में जाने वाले लोग कौन थे। उनमें से अनेक लोगों को वह व्यक्तिगत रूप से जानते थे। उनमें से अधिकाँश व्यक्ति भले लोग थे, यद्यपि उनमें से कुछ उनके मूल्याँकन में निम्न स्तर के थे। इस सबके सम्बन्ध में कुछ अत्यन्त उलझाने वाली बात थी। भले लोग विदेशी धर्म पर क्यों विश्वास करते थे? और ईसाई गिरजाघर इतने अधिक व्यर्थ के लोगों को क्यों भरती कर लेते थे? वे यह कदापि समझ न पा रहे थे। किन्तु उससे अधिक हतोत्साहित करने वाला तथ्य यह था कि उन ईसाइयों में अनेक मानचू ध्वजवाहक भी थे। बौद्ध, ताओ तथा कन्फ्यूशियस धर्म के अतिरिक्त ध्वजवाहकों का अपना स्वयं का ही एक धर्म था। (यद्यपि वे यह नहीं कह सकते कि वह धर्म कौन-सा था), उनके मतानुसार ध्वजवाहकों के लिये चार ही धर्म पर्याप्त होने चाहिए थे और उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि वे एक विदेशी धर्म की भी आवश्यकता क्यों समझते हैं? वह जितना ही अधिक इसके विषय में सोचते थे उतना ही अधिक वह मानसिक रूप से अस्तव्यस्त हो जाते थें।

उन्होंने इन तमाम विषयों पर कनिष्ठ त्वो से बात करने का निश्चय किया। कनिष्ठ त्वो, प्येनईफाङ रेस्तराँ का नियमित ग्राहक था। वह पूर्ण सभ्य पुरुष था जिसको मैनेजर वाङ सबसे अधिक सम्मान देते थे। वह बीस या तीस वर्ष पूर्व प्रचलित वस्त्र पहिनता था—एक चौड़ी पेटी के साथ ढीली जैकेट और इस प्रकार वह एक विलक्षण व्यक्ति जान पड़ता था। मैनेजर वाङ कनिष्ठ त्वो के वस्त्रों के विशेष प्रशंसक थे, क्योंकि वे माड़ीदार सूती वस्त्रों की खरखराहट के प्रति अत्यधिक संवेदनशील थे। जब कभी वे दोनों एक साथ हो पाते वे लगभग मध्यान्ह के पश्चात पूरा समय केवल वस्त्रों से सम्बन्धित वार्ता में ही व्यतीत कर देते थे। कनिष्ठ त्वो एक मानचू सरकारी कार्यालय में सामान्य लिपिक के रूप में साधारण वेतन पर कार्य करता था। अतः उसके रुढ़िवादी वस्त्र पहिनने के वास्तविक कारण उसमें नए वस्त्रों के क्रय कर सकने की सामर्थ्य का अभाव था। मैनेजर वाङ द्वारा उसके वस्त्रों की निरन्तर प्रशंसा, कनिष्ठ त्वो के लिये एक अप्रत्याशित वरदान थी। जब कोई उससे कहता था कि वह आधुनिक चलन से अलग है या उसे "प्राचीन अद्‌भुत कला का नमूना" कहकर संबोधित करता तब वह उत्तर देता, "हुँ ऽ! मैनेजर वाङ तो मेरे इसी पुराने पहिनावे के प्रशंसक हैं।" जैसे जैसे उनकी मित्रता बढ़ी, कनिष्ठ त्वो ने फिर कभी एक बार भी मैनेजर वाङ से कोई वस्तु उधार क्रय करने का उपक्रम नहीं किया। जब मैनेजर वाङ कहते, "इसे अपने घर ले जायें, हम इसे आपके खाते में डाल देंगे,"

तब कनिष्ठ त्वो केवल मुस्कराकर अपना सिर हिलाकर कहता, नहीं श्रीमान मैनेजर, मैं कभी किसी से कुछ भी उधार नहीं लेता।" कनिष्ठ त्वो जीवन में अपनी यथास्थिति से ही संतुष्ट था। यद्यपि उसके वस्त्र अप्रचलित शैली के थे, तो भी वह उन्हें साफ-सुथरा रखता था। उसके कपड़ों का कोई भाग यदि फटने लगता था तो वह स्वयं उस भाग में थेगरी लगा देता था।

कनिष्ठ त्वो का चेहरा लम्बा तथा भौंहें घनी थीं। वह बोलने में संयमित रहता तथा कभी जोर से नहीं हँसता था। तो भी विश्वसनीय मित्रों के बीच वह एक श्रेष्ठ कहानी सुनाने वाला व्यक्ति था और अपने विनोदी स्वभाव को प्रदर्शित करने में प्रत्येक अवसर से लाभ उठाता था।

कनिष्ठ त्वो तथा उसका बड़ा भाई अलग अलग रहते थे। वरिष्ठ त्वो न तो आक्रामक स्वभाव का था और न महत्वकाँक्षी। वह कभी नियम भंग नहीं करता था, क्योंकि वह ऐसे व्यक्तियों में था जो भूले-भटके ही कोई खतरा मोल लेते हों। वास्तव में वह आलसी तथा सुख-सुविधा प्रिय व्यक्ति था, जो निरन्तर बिना परिश्रम की कमाई के प्रयास में रहता था। जब कभी वह किसी नए काम को हाथ मे लेता था, तो सदा प्रथम प्रभाव अच्छा छोड़ता था तथा लोगों में यह विश्वास उत्पन्न कर देता था कि वह एक ईमानदार तथा परिश्रमी कार्यकर्ता है जिससे कभी यह कहने की आवश्यकता नहीं कि उसे क्या करना है। किन्तु कुछ दिनों अपना पेट पूरी तरह भर लेने के पश्चात परिश्रमी होने के उसके वे सारे चिह्न अदृश्य हो जाते थे। वह इतना आलसी था कि सोने को जाते समय भी बत्ती नहीं बुझाता था। "मैं अँधेरे में नहीं सो सकता।" वह कहता था।

वरिष्ठ त्वो ने प्रोटेस्टेंट धर्म में सदस्यता ग्रहण कर ली थी। यद्यपि उसके पूरे परिवार ने विरोध किया तो भी वह अपने निर्णय पर दृढ़ रहा। उसने इस प्रकार तर्क दिए, "चूँकि धन तथा भोजन दोनों ही के देवता मुझे अपने आशीर्वाद से वंचित किए हैं, मेरा विचार है कि मैं एक बार उन विदेशी देवताओं की भी परीक्षा करूँ। आजकल, विदेशी वस्तुएँ सर्वोत्तम होती हैं, तनिक चारों ओर दृष्टि डालकर देखो तो!"

वह कनिष्ठ त्वो ही था जो सबसे कड़ी आपत्ति उठाता था। वह ईसाई धर्म के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं समझता था और न उसे उसके लाभ अथवा हानि का ही ज्ञान था। वह अपने मुख्य तर्क को निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत करता था : "बड़े भाई, मैं देखता हूँ कि आप अपने ही पूर्वजों को त्यागने के लिये तत्पर हैं। एक बार आपने विदेशी धर्म में अपना परिवर्तन कर लिया कि आप फिर कभी अपने पूर्वजों की समाधियों पर कागजी मुद्रा जलाने के अधिकारी न रह सकेंगे।" वरिष्ठ त्वो का चेहरा अपने भाई जैसा लम्बा न था, किन्तु जब भी वह आवेश में होता या हँसने लगता उसकी भौंहें, आँखें, नाक और मुँह उसके चेहरे के केन्द्र पर अवस्थित हो जाते

थे, जैसे कि किसी पके-सिंके पकौड़े की ऊपरी परत सिकुड़कर रह गयी हो। तभी उसका चेहरा फूले पकौड़े जैसा हो जाता था। "तो इससे क्या होता है यदि मैं समाधियों पर न जाऊँ! मेरे स्थान पर तुम जा सकते हो। हम दोनों पक्षों का अंसतुष्ट नहीं करना चाहते। क्या मैं गलत कह रहा हूँ? तुम जानते हो, भाई, यह सब तभी आरम्भ हुआ जब मैंने स्वप्न में एक देवदूत को देखा। कुछ दिनों मैं बड़ी तंगी में थी और तभी वह देवदूत आया और मुझसे बोला, 'नगर की दीवारों के बाहर सुअवसर उपस्थित है,' अतः मैं देखने के लिये बाहर गया। मैं नदी के किनारे टहल रहा था और मेंढकों की टर्र-टर्र सुन रहा था। मैंने सोचा, हो सकता है कि मेरा स्वप्न इसी सम्बन्ध में हो। अतः मैं आगे बढ़ा और उनमें से कुछ दर्जन मैंने काँटे और बंसी से फँसाकर अपने हाथ में पकड़ लिये। अब अनुमान करो मुझे कौन मिला होगा?" यह कहकर वह भाई के उत्तर की प्रतीक्षा में चुप हो गया।

कनिष्ठ त्वो का लम्बा चेहरा और लम्बा हो गया तथा वह चुप रहा।

"क्या फ्रांसीसी भवन में..."

"कैसा फ्रांसीसी भवन?" कहते हुए कनिष्ठ त्वो ने अन्त में अपना मौन तोड़ा।

"फ्रांसीसी दूतावास!"

"यदि तुम 'दूतावास' का नाम पहले लेते तो मैं समझ लेता कि तुम क्या कहना चाहते हो। तुमने 'भवन' क्यों कहा?"

"छोटे भाई, तुम इस प्रकार कभी धनवान नहीं बन सकते! तुम विदेशी मामलों को नहीं समझते।"

"विदेशी मामले? ली हुङ्चाङ विदेशी मामले समझता था, किन्तु सभी लोग उसे देशद्रोही कहते थे।"

"छोटे भाई!" वरिष्ठ त्वो का चेहरा सिकुड़कर गोल हो गया तथा पूर्व स्थिति में आने तक उसे पर्याप्त समय लगा। "तुम प्रधानमंत्री ली को ऐसा सम्बोधित करने का साहस किस प्रकार करते हो, अरे, इसे भूल जाओ, इसे भूल जाओ, गड़े मुर्दे हम न उखाड़ें! मेढकों की कुछ बातें फिर करें।"

"ठीक है, भाई साहब, आइए हम गम्भीर विषयों की ओर लौटें।"

"अरे हममें से कौन गम्भीर नहीं है? जैसा कि मैं तुम्हें बता रहा था, मैंने बड़े-बड़े मेंढक दर्जनों पकड़े और नगर की ओर लौट पड़ा। मैंने मन में विचार किया, 'अब मैं देखूँगा कि क्या स्वप्न सत्य हो सकता है?' उसी क्षण ज्यों ही मैंने सिर उठाया तो और कोई नहीं बल्कि वही छुनशान जो फ्रांसीसी दूतावास में बावरची था, सामने पड़ा। वही अपना पुराना बहुचर्चित पीला ध्वजवाहक। तुम्हें जानना चाहिए कि वह कौन था। उसका बड़ा भाई छुनहाए विदेशियों के लिये थ्येनचिन में बावरची का काम करता है।"

"मुझे यह भी ज्ञात नहीं।"

"हुँ ऽ! तुम विदेशी मामलों से सम्बन्धित किसी को भी नहीं जानोगे। एक दृष्टि उन मेढकों पर डालकर छुनशान मुझे एक ओर खींच ले गया तथा कहने लगा, 'वरिष्ठ त्वो, ये मेंढक मुझे बेच दो।' मैं समझ रहा था कि वह जैसी बातें मुझसे कर रहा है, यह एक अच्छा सौदा होगा, इसलिये मैं थोड़ा ठण्डा पड़ गया। मैंने कहा, 'यह मेंढक मैं औषधि के लिये शिकार करके लाया हूँ, मैं इन्हें बेच नहीं सकता,' किन्तु इससे वह और उत्तेजित हो उठा। वास्तव में, भाई, तुम जान लो, फ्रांसीसी लोग मेंढक खाना बहुत पसन्द करते हैं। भाई बोलो, स्वप्न सत्य प्रमाणित हुआ कि नहीं? जितना ही मैं बेचने से मना करता रहा उतना ही वह उन्हें क्रय करने का हठ करता गया। इसलिये अन्त में जब उसने दो नकद चाँदी की सिल्लियाँ निकाल लीं तब मैंने उन्हें ले जाने दिया। देखा, सौभाग्य नगर द्वार पर पुकार रहा है। सत्य सिद्ध हो गया। उस भाग्यशाली दिन से मैं उसके हाथ कई दिनों के अन्तर से बार बार मेंढक बेचने लगा। किन्तु जब शीत ऋतु आई और मेंढक जमीन में छिप गए, तो मैं इस पर चुप हो गया क्योंकि कुछ कर नहीं सकता था। ध्यान रखना कि मैं उस दूत को नहीं भूला और न दूत ने मुझे भुलाया। एक बार वह देवदूत मेरे स्वप्न में पुनः प्रगट हुआ। 'सौभाग्य, बूढ़े साँड़ के साथ भी आता है।' मैं ऐसे में क्या करता? मेंढ़कों को तो तुम बाहर जाकर पकड़ भी सकते हो, किन्तु तुम एक साँड़ पकड़ कर नहीं चल सकते। फिर भी एक दिन जब मैं इधर-उधर टहल रहा था, बर्फ पड़ रही थी। उस समय मैं अन्तिम पाई तक खर्च कर चुका था। मैं चला जा रहा था कि सड़क पर मुझे अचानक सामने से आता हुआ एक विदेशी दिखाई पड़ा। मुझे इससे अच्छा कुछ न सूझा, इसलिये मैंने चाल तेज की तथा उसके पीछे चलने लगा। तुम जानते हो, विदेशियों की टाँगे लम्बी होती हैं और वे बहुत तेज चल सकते हैं। जब मैं उसके पास पहुँचकर बराबरी में आने वाला था कि मेरे मुँह से धीमी आवाज में निकल पड़ा, 'सौभाग्य एक बूढ़े साँड़ के रूप में भी आता है।' इतने में विदेशी मुड़ा और मुझे देखने लगा। मेरी तो सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी। तब वह चीनी में बोला, 'तुमने मुझे पुकारा तो नहीं?' आह, कैसा स्वर था, कैसे वह बोला, इतना सुसंस्कृत, इतना सबसे पूर्णतया भिन्न जैसा मैंने पहले कभी नहीं सुना था। इसके पहले कि मैं कुछ कहने की बात सोच पाता, उसने अपना परिचय स्वयं दिया, "मैं न्यू यओशङ हूँ (पुनर्जन्मा साँड़)।' अब बताओ, यह कुछ बात हुई न? 'साँड़ के साथ सौभाग्य और पुनर्जन्मा साँड़' एक सी बातें हैं। उसका तो नाम ही न्यू यओशङ (पुनर्जन्मा साँड़) था। वह एक सच्ची अमरीकी है! मुझे जब पता चला कि वह तो पादरी है, मैं कहने लगा, 'पवित्र साँड़ जी (रेवरेण्ड बुल), मेरे से पाप हो गया।' देखो, मैं बड़ा चतुर बनता था? पादरी लोग पापियों को ऐसे पकड़ लेते हैं जैसे कबाड़ी ताँबा और लोहा ले जाते हैं। 'पवित्र साँड़'

मुझसे मिलकर अत्यन्त प्रमुदित था। वह मुझ पर बड़ा दयालु भी था। वह साँड़ था, मैं मेमना था। यह प्रारम्भिक सम्बन्ध बुरा न था। उसने मुझे प्रार्थना करना सिखाया और वह मेरे लिये प्रार्थना करता था। तब उसने मुझसे बाइबिल के अध्ययन की कक्षा में भाग लेने को कहा और मेरे लिये बिना मूल्य की बाइबिल ला दी। और फिर उसने दो नकद चाँदी की सिल्लियाँ भी दीं।"

"बड़े भाई, हम आज भी महान छिङ साम्राज्य की प्रजा हैं। मैं भले ही भूखा मर जाऊँगा, किन्तु उन दुष्ट विदेशियों में किसी के भी जूते न चाटूँगा।"

"महान छिङ साम्राज्य? हा!" बूढ़ा त्वो व्यंग्य में हँसा। "हमारा महान सम्राट तक विदेशियों से भय खाता है।"

"ओह, क्या ऐसा है? यदि वास्तव में तुम उस विदेशी धर्म पर विश्वास करना प्रारम्भ करोगे तो तुम फिर कभी मेरे घर नहीं आ सकते।"

"मैं शर्त लगाता हूँ कि तुममें साहस नहीं है! मैं तुम्हारा भाई हूँ, तुम्हारा अपना ही भाई और जब मेरी इच्छा होगी मैं यहाँ आऊगा।" यह कहता हुआ वरिष्ठ त्वो क्रोध में बाहर चला गया।

जब वरिष्ठ त्वो जैसे एक मानचू ध्वजावाहक ने, जिसे विश्वास था कि उसकी अपनी राष्ट्रीयता अन्य सभी से एक सीढ़ी ऊपर है, अपना आत्मविश्वास खो दिया, तब यह बिल्कुल वैसा ही है कि जैसे उसका किसी पर विश्वास न रह गया हो। वरिष्ठ त्वो अपने को इस पृथ्वी पर सबसे दयनीय प्राणी मानने लगा। वह सही या गलत जो भी करता, उस पर विचार न करके वह सदा क्षमाप्रार्थी बन जाता था। वास्तव में उसने धर्म से इतर कारणों से ईसाई धर्म स्वीकार किया था। यह समाज को उसकी अपनी व्यक्तिगत चुनौती थी कि जैसे वह कहता हो, "मेरी चिन्ता कोई नहीं करता, इसलिये मैं ईसाई बनने जा रहा हूँ। उसे अपनी पाइप में भरकर पी डालो।" उसका धर्म परिवर्तन किसी लम्बी योजना का फल नहीं था। यदि गिरजा उसकी आशाओं की पूर्ति न कर सका तो वह उसे छोड़ कर 'श्वेत कमल सम्प्रदाय' में सम्मिलित हो जायेगा, जब तक कि 'श्वेत कमल सम्प्रदाय' उसके लिये दो जून की रोटियों की व्यवस्था करता रहेगा। दो दिन से अधिक समय तक सोचने, विचार करने के पश्चात वह रेवरेण्ड बुल के पास गया और बाप्तिस्मा स्वीकार करने तथा बुरी राहों का परित्याग करके न्यायप्रियता के मार्ग का अनुसरण करने का अपना निर्णय सुना दिया।

गिरजा में एक चीनी पादरी था, जो वरिष्ठ त्वो जैसे व्यक्तियों को धार्मिक सत्संग में सम्मिलित करने के विरुद्ध था। उसने अधिक शिकायत नहीं की क्योंकि वह जानता था कि रेवरेण्ड बुल कहेंगे, "यदि हम इन पापियों की रक्षा न करेंगे तब हम किन की रक्षा करेंगे?" चूँकि गिरजा विदेशी पूँजी द्वारा सहायता प्राप्त एक विदेशी

संस्था है, अतः चीनी पादरी ने अपने तर्क की निष्फलता का अनुमान लगा लिया। अपनी दीक्षा प्राप्त करने के दिन से ही उसने केवल ईश्वर के समक्ष ही सब कुछ सत्य तथा रेवरेण्ड बुल के समक्ष असत्य बोलने का निश्चय किया। जब भी रेवरेण्ड बुल कुछ कहते वह सहमति में अपना सिर हिला देता, किन्तु साथ ही वह अपने मन में कहता जाता, "तुमने भूल की है और तुम नर्क में जाओगे। परमात्मा सब कुछ जानता है।"

पूज्य बुल घर में ही ईसाई धर्म की शिक्षा देते थे, क्योंकि वे इसके अतिरिक्त अन्य कोई कार्य कर सकने में अक्षम थे। उन्होंने कभी चीन का नाम सुन रखा था, किन्तु चूँकि उसका उनसे कोई सम्बन्ध न था, अतः वे शीघ्र ही उस सम्बन्ध में सब कुछ भूल गए। उनकी उत्सुकता जाग उठी जब उनके एक मामा वहाँ की यात्रा से वापस लौटे। उनके मामा जब जवान थे तब वे ढोरों की चोरी में फँस जाने के कारण अपना एक कान कटवाकर उस अनुभव से बाहर आए। वे चीन भाग गए और अफीम तथा अन्य अवैध वस्तुओं के धन्धे से उन्होंने अच्छा धन कमाया। जब वे घन वापस आए, उनके मित्र तथा सम्बन्धियों और विशेष रूप से वे जिन्होंने पहले उन्हें एक गुण्डा कहकर तिरस्कृत किया था, सभी इस बात पर एकमत हो गए कि वे एक अनुभवी चीन विशेषज्ञ हैं, यद्यपि उनकी उपस्थिति में वे सावधान रहते तथा "कान" का नाम नहीं लेते थे। वे लोग इस तथ्य से भी परिचित हो गए कि जब किसी गुण्डे के सामने अपनी सजा से छूटने के बाद जीवनयापन का कोई उपाय न रह जाये और वह धन कमाने के लिये चीन चला जाये तो उसके लिये इससे कोई अन्तर नहीं पड़ा कि उसके कितने कान थे। रेवरेण्ड बुल को इन कहानियों ने अत्याधिक प्रोत्साहित किया। उस समय, उनकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय थी, और क्रिसमस का त्योहार आ गया। उसे सन्देह था कि क्या वह भुनी पाताल मयूर (टर्की) का प्रबन्ध कर सकेगा। उनके मामा ने मार्ग बताया, "तुम चीन क्यों नहीं जाते? यहाँ अमरीका में तुम क्रिसमस के लिये एक पाताल मयूर का भी प्रबन्ध नहीं कर सकते, चीन में तुम प्रतिदिन मोटी मुर्गियाँ और बड़े-बड़े अण्डे खा सकते हो। यहाँ अमरीका में तुम कोई नौकर नहीं रख सकते हो। किन्तु चीन में शुरू से ही तुम एक नौकरानी तथा बावरची रख सकते हो। तुम चीन चले जाओ।"

अतः पूज्य बुल ने जाने का निश्चय कर लिया। सारा प्रबन्ध कर लेने के पश्चात उन्होंने पेइचिङ को प्रस्थान किया। उनके मामा ठीक कहते थे। उनका अपना निजी घर तथा साथ में नौकरानी और बावरची का प्रबन्ध भी हो गया था। मुर्गा और अण्डे इतने सस्ते थे कि एक प्रकार से वे हर तीसरे दिन क्रिसमस मना लेते थे। वे मोटे भी होने लगे थे।

वे अपने कार्य के सम्बन्ध में अत्यधिक उत्साहित नहीं थे, किन्तु अधिक आलसी

बनकर भी नहीं रहना चाहते थे। वे धनी बनना चाहते थे, किन्तु साथ ही सेवा कार्य तथा अफीम के व्यापार में अन्तर भी स्पष्टतया पहिचानते थे। यद्यपि वे जीवनयापन की व्यवस्था करने में भली-भाँति सक्षम न थे, फिर भी वे जानते थे कि यदि वे कुछ थोड़ा कार्य भी न कर सकें तो उन्हें बाध्य होकर अपने शरीर की हाल ही में बढ़ी चर्बी को त्याग देना पड़ेगा। फलस्वरूप अपने कार्य के सम्बन्ध में उनका सारा उत्साह ठण्डा पड़ गया। जिस दिन वे वरिष्ठ त्वो से मिले वे विकास की अवस्था पर पहुँचे ही थे और अपनी उपलब्धि के प्रतीकस्वरूप पेइचिङ में प्रत्येक पापी को ईश्वर की आँखों के समक्ष प्रस्तुत करने की तीव्र इच्छा का अनुभव कर रहे थे।

ऐसे ही अवसरों पर रेवरेण्ड बुल धनवान एव शक्तिशाली गिरजा संगठन के कैथलिक पादरियों के प्रति ईर्ष्या भाव प्रदर्शित करते थे। कैथलिक पादरी अपने धर्म में परिवर्तित लोगों को लालच देते थे और उनकी रक्षा के लिये गिरजा के प्रभाव को काम में लाते थे। यहाँ तक कि हथियार जमा करने के लिये उन्होंने अपने ही शस्त्रागार भी बनाए थे। पादरी लोग छोटे-मोटे सम्राट जैसा व्यवहार करते थे। जबकि रेवरेण्ड बुल एक प्रोटेस्टेन्ट मिनिस्टर के समक्ष कम रोबीले जान पड़े। तभी अपने मामा के शब्द उनके ध्यान में आए, "चीनी लोगों को कठिनाइयों में रखो। जितना ही अधिक उनसे कड़ाई बरतोगे वे उतने ही अधिक आज्ञाकारी होंगे।" यद्यपि रेवरेण्ड बुल कैथलिक पादरी न थे, तथपि कम से कम वे एक प्रोटेस्टेन्ट मिनिस्टर अवश्य थे, जिसे ईश्वर द्वारा पृथ्वी पर एक दूत बनाकर भेजा गया था। तब से ही आगे वे जब भी उपदेश देते, उनका नर्क, शैतान तथा संसार के अन्त कें सम्बन्ध में शब्दाडम्बर तथा प्रलाप पेइचिङ बोली में इतने उच्च स्वर में होने लगता कि उस छोटे से गिरजाघर की छत से धूल-मिट्टी गिरने लगी। इन आत्मा की शुद्धता वाले सत्रों के पश्चात वह सदा अपने को शान्त अनुभव करता था। यद्यपि इससे वह अधिक धनोपार्जन तो न कर सके, किन्तु कम से कम अपना रोब जमाने में अवश्य सफल रहे जो अपने आप में एक स्पष्ट विजय थी।

रेवरेण्ड बुल उन ईसाइयों से ऊब गए थे जो धीरे-धीरे गिरजा के अन्दर अपने सम्बन्धों का लाभ उठाकर धनी बन गए थे तथा विदेशी में उलझे थे। जैसे जैसे उनके लाभ बढ़ते गए, धर्म के प्रति उनका उत्साह घट गया। लेकिन रेवरेण्ड बुल वास्तव में उन्हें दोषी नहीं ठहरा सकते थे, क्योंकि वे वही लोग थे जिन्होंने क्रिसमस के समय उन्हें मूल्यवान उपहार दिए थे। दूसरी और गिरजा के अन्य सदस्य जो यद्यपि आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न न थे तो भी वे सरल, सभ्य तथा निर्मल हृदय वाले थे। वे नियमित रूप से गिरजा जाते थे तथा अपने को कभी रेवरेण्ड बुल का कृपा पात्र बनाने का प्रयास न करते थे। किन्तु जब रेवरेण्ड ने पाया कि चीनी लोग उनके मामा द्वारा निर्धारित स्तर से बहुत भिन्न हैं, तब उन्होंने उन लोगों पर नर्क भेजने के लिये

अत्यन्त कटु वचनों का प्रयोग करना आरम्भ कर दिया : "तुम ईसाइयों, जो अत्यन्त दम्भी हो गए हो, नर्क जाओगे! नर्क जाओगे!" वह वरिष्ठ त्वो जैसे लोगों को पसन्द करते थे जो उनके स्तर के अनुकूल बैठते थे—निर्धन तथा दिखावा न करने वाले लोग जो उसे अपने ध्यान द्वारा अभिभूत करते थे। उन सबकी उपस्थिति में रेवरेण्ड बुल अपने को एक छोटे सम्राट जैसा अनुभव करते थे।

रेवरेण्ड बुल नाटे न थे, किन्तु चूँकि कुछ दिनों से वह अच्छा भोजन कर रहे थे तथा अच्छी नींद ले रहे थे, इसलिये वे अपनी वास्तविक ऊँचाई से कुछ छोटे जान पड़ते थे। उनके सिर के कुछ बालों को छोड़ शेष लगभग सभी बाल भूरे थे और उनकी आँखें पीली तथा छोटी और चमकदार थीं। ऐसी मुखाकृति पाने के कारण वह अपने को भाग्यशाली मानते थे, क्योंकि चीन में अधिक पीले रंग वाला होना निश्चित रूप से एक असुविधा थी। उनकी हँसी असाधारण थी : "काह काह काह" के बोले वे अपने गले से मरोड़ के साथ ऐसे निकालते थे कि जैसे उनके गले में मछली की हड्डी फँस गयी हो। जब भी वे अपने धर्म के सदस्यों के बीच जाते, निश्चित रूप से कुछ देर "काह काह" करते, ठीक उसी प्रकार जैसे कोई वयस्क बच्चों के बीच में करता हो। ऐसा अवसर आने पर वे वास्तव में कभी हँसना नहीं चाहते थे किन्तु वह किसी प्रकार ऐसा करने के लिये अपने को बाध्य करते थे।

रेवरेण्ड बुल को न तो व्याख्यान मंच पर और न अपने नित्य प्रति के जीवन में ही कुछ गम्भीर कहने को था। वह कम पढ़े-लिखे व्यक्ति थे, किन्तु उनकी पदवी के लिये अधिक पढ़ना-लिखना अनावश्यक था। उन्हें विश्वास था कि चूँकि वह अमरीकी थे, केवल इस कारण ही लोग उनका सम्मान करते थे और इस प्रकार वे जन्मजात रूप में जनता के आदर के पात्र थे—यहाँ तक कि परमात्मा को भी उनसे दूरी रखनी पड़ती थी। इसी कारण उन्हें अपने भक्त-मण्डली के अधिक ईमानदार सदस्यों के साथ कम धैर्य से काम लेना पड़ता था। जब वे भक्तगण उनसे कहते कि चीन की एक महान प्राचीन संस्कृति है जिसने मानवता को चीनी मिट्टी के सुन्दर बर्तन, रेशम, कागज तथा चाय प्रदान की है, तब रेवरेण्ड बुल तुरन्त ही उसके प्रतिरोध में भाप के जहाज तथा रेलगाड़ी के नाम लेते तथा उनके चीनी मिट्टी के सुन्दर बर्तन आदि सम्बन्धी विचारों को ध्वस्त करके टुकड़े-टुकड़े कर देते। तब इसके पश्चात वह विजयोन्माद में "काह काह काह" करते हुए श्रेय प्राप्त कर लेते थे। जब वे उनसे कहते कि चीन ने य्वे फेइ और वन थ्येनश्याङ जैसे नायकों को जन्म दिया है तब वे अपनी छोटी-छोटी आँखें झपका देते, क्योंकि वे यह नहीं जानते थे कि ये लोग कौन थे। जब उन्हें ज्ञात हुआ, वह अत्यन्त कठोर हो गए। "तुम्हारे य्वे फेइ तथा वन थ्येनश्याङ किस काम के थे? किसी भी रूप में तुम सभी पापी हो। केवल ईश्वर ही तुम्हारी रक्षा कर सकता है।" ऐसे कठिन क्षणों में, वे शरमा जाते

और उनकी हथेलियों में पसीना आने लगता। वे यह कभी न जान सके कि क्यों, किन्तु वे अपना लाल चेहरा और फूली गर्दन लिये अपने को अत्यन्त आराम से अनुभव करते जैसे कि सत्य सम्बोधन करने की यही एकमात्र विधि हो।

वरिष्ठ त्वो जब भी रेवरेण्ड बुल से बात करने जाता, तब वह पर्याप्त सावधान रहता और य्वे फेइ या वन थ्येनश्याङ के नामों को छोड़ देना कभी न भूलता। जिस प्रकार चारों ऋतुएँ अपने क्रम से आती रहती हैं, उन्हीं के साथ वह भी निरन्तर अपनी बाइबिल को एक नीले रंग के सूती कपड़े में लपेट लेता और समझ-बूझकर अपनी बाँह के नीचे इस प्रकार दबा लेता कि जिससे बुल की दृष्टि उस पर पड़ सके। फिर वह बुल के सामने डोलने लग जाता और उनके द्वारा पहचान लिये जाने के लिये उनके "काह काह' की प्रतीक्षा में रहता। यही बुल के सामने उसके द्वारा बाइबिल खोलकर रखने का एक संकेत होता था, जिसके साथ धार्मिक उपदेश सुनने की तीव्र इच्छा व्यक्त होती थी। और यही एक मार्ग भी था कि बुल, जो अपने निजी ज्ञान की सीमा से भली-भाँति परिचित थे, तुरन्त ही अपने को विद्वान समझने लगते थे।

"रेवरेण्ड बुल, क्या यह सत्य है कि हम सब मिट्टी के बने हैं?" वरिष्ठ त्वो का स्वर सम्मान और समर्पण की भावना से भरा हुआ था।

"यही ठीक है, यही ठीक है। उत्पत्तिग्रन्थ में बहुत स्पष्ट रूप से यह कहा गया है और परमात्मा ने मनुष्य को धरती की धूल से गढ़ा, उसके नथनों से प्राणवायु फूँकी तथा मनुष्य एक जीवित आत्मा बन गया।" रेवरेण्ड बुल ने धर्मग्रन्थ से पढ़ते हुए उस अंश की ओर संकेत किया।

"रेवरेण्ड बुल! मिट्टी मांस के रूप में किस प्रकार परिवर्तित हो गयी?" वरिष्ठ त्वो ने पूर्ण अनभिज्ञता व्यक्त करते हुए पूछा।

"क्या ऐसा नहीं है कि ईश्वर ने उसकी नासिका से जीवन की साँस फूँकी हो?"

"आप सत्य कहते हैं, रेवरेण्ड, आप की बात सत्य ही होनी चाहिए। ऐसा मेरा भी विचार था, किन्तु मुझे भय था कि कहीं मैं भूल तो नहीं कर रहा।" वरिष्ठ त्वो ने बाइबिल के "इतिवृत्त" को खोलकर रेवरेण्ड बुल को दिखाया और पढ़ना आरम्भ किया, "आदम ने शेथ को जन्म दिया, शेथ ने इनोश को जन्म दिया, इनोश ने केनान को जन्म दिया, केनान ने मेहललील को जन्म दिया..."

"सुन्दर! सुन्दर!" रेवरेण्ड बुल इतने व्यग्र थे कि उन्होंने वाक्य के मध्य में ही टोकते हुए कहा, "मैं देख रहा हूँ कि तुम घर में अध्ययन करते रहे हो। चीनी लोगों के लिये इन सभी नामों को सीख पाना अत्यन्त कठिन है।"

"यह सत्य है! प्रथम तो तुम्हारी स्मरण शक्ति अच्छी होनी चाहिए और दूसरे तुम्हारा पाठन तेज होना चाहिए! रेवरेण्ड, एक और बात भी है जिसे मैं नहीं समझ पा रहा हूँ। यदि मैं आपसे एक अन्य प्रश्न करूँ तो आप कुछ सोचेंगे तो नहीं?"

"बिल्कुल नहीं! मैं तुम्हारा सेवक जो हूँ।"

वरिष्ठ त्वो ने बाइबिल के "बुक आफ रिविलेशन्स" को खोला। "रेवरेण्ड, मैं नहीं समझ पा रहा कि यहाँ क्या बात कही जा रही है। सिंहासन के मध्य में तथा सिंहासन के चारों ओर आगे और अनेक आँखों वाले चार जानवर थे। यह जानवर कौन हैं?"

"अच्छा क्या यह ऐसा नहीं कहा गया है, 'पहला जानवर सिंह के समान था, और दूसरा जानवर बछड़े के समान और तीसरे जानवर का मनुष्य की भाँति चेहरा था और चौथा जानवर उड़ती हई चील के समान था?"

"हाँ, यही कहा गया है, किन्तु वे अनेक आँखों वाले क्यों हैं?"

"देखो," उसने अपने कुछ शेष रह गए भूरे बालों को खरोंचा। "'रिविलेशन्स' को समझ पाना कठिन हैं। मेरे देश में वे कहते हैं कि यदि तुम 'रिविलेशन्स' की व्याख्या पर लिखी गयी सभी पुस्तकों को एक साथ रख दो, तो उनसे तुम अनेक गाड़ियाँ भर सकते हो। नहीं, चालीस या पचास गाड़ियाँ! तुम 'दि फोर गास्पेल्स' से क्यों नहीं आरम्भ करते? जब तुम उन्हें पर्याप्त रूप से समझ लोगे, तब तुम 'रिविलेशन्स' की ओर वापस जा सकते हो।" रेवरेण्ड बुल ने अपनी कुन्द तलवार तेजी से चलाई, किन्तु एक अच्छे ढंग से।

"आप कितना सत्य कहते हैं!" वरिष्ठ त्वो ने अपना सिर हिलाते हुए उत्तर दिया। ऐसे प्रोत्साहन से उत्साहित होकर उसने एक हार्दिक निवेदन किया : "रेवरेण्ड बुल मैं भली-भाँति पढ़ नहीं सकता। क्या आप मुझे पढ़ा देंगे?"

यद्यपि वरिष्ठ त्वो ने स्कूल में पढ़ने पर अधिक समय व्यतीत नहीं किया था, तथापि वह रेवरेण्ड बुल से चीनी भाषा अधिक जानता था। वरिष्ठ त्वो अपने को अत्यन्त गौरवान्वित अनुभव करता था। जब चापलूसी पर बात आ जाती तब उसका मस्तिष्क पूर्णतः स्वस्थ हो जाता और उसकी जिह्वा मिठास की सूक्ष्म प्रतिमूर्ति बन जाती थी। वह अपने को उस ताजे पुष्प की भाँति समझने लगता था जो अभी ही पूर्ण विकसित हुआ हो तथा जो और बड़ा होकर समय के साथ अधिक सुगन्धित हो जायेगा।

"निश्चय ही मैं तुमकों पढ़ाऊँगा, निश्चय ही।" रेवरेण्ड बुल के समक्ष केवल एक ही मार्ग था। उसने वरिष्ठ त्वो को चार चाँदी के सिक्के नकद दिए, यह सोचकर कि यदि उसने एक शिक्षक उपदेशक के रूप में अपने भाग्य का निर्माण न किया तो कम से कम वह कभी भोजन और वस्त्रों की कमी तो न अनुभव करेगा। इसके अतिरिक्त जब वह अमरीका लौटेगा तब वह एक प्रोफेसर बन सकेगा। क्या वरिष्ठ त्वो ने बाइबिल पढ़ने में सहायता करने के रेवरेण्ड बुल से नहीं कहा था और वह भी चीनी बाइबिल? इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता था कि रेवरेण्ड बुल चीनी संस्कृति का एक महान ज्ञाता थे और क्या उसका मामा जिसने जानवर चुराए थे,

सामान्य रूप से एक अनुभवी चीन विशेषज्ञ नहीं माना जाता था?

चार चाँदी के सिक्के नकद अपने हाथ में लिये वरिष्ठ त्वो ने अपने मानचू बैनरमैन होने के संकेत देने आरम्भ कर दिए और रेवरेण्ड बुल से कहा कि उसके बाबा लाल बटनदार टोपी वाले एक उच्च अधिकारी थे।

"ओह! क्या तुम्हारे परिवार का कोई शाही सम्बन्ध था?" उसने बड़ी गम्भीरता से पूछा।

रेवरेण्ड बुल शाही सम्बन्धों, सम्राटों या यहाँ तक कि वायसराय के सम्बन्ध में बहुत उत्सुक रहते थे। उसे पूरी आशा थी कि शाही रक्त के एक या दो सदस्य या कोई वायसराय उसके गिरजा का सदस्य बनेगा, जिससे कि वह अपने देश में इसकी सूचना भेजकर कि उसने चीनी शाही परिवार के सदस्यों को अपने ही हाथों से ईसाई बनाया है, यश प्राप्त कर सके।

"मुझे याद नहीं कि कोई शाही सम्बन्ध थे, किन्तु मैं भली-भाँति जानता हूँ कि वहाँ दो महासामन्त थे।" अपने प्रखर विचारों के साथ वरिष्ठ त्वो ने एक नए वंश वृक्ष की रचना कर डाली। उसने अपने वर्तमान सामाजिक स्तर को छोड़ने से इंकार कर दिया, केवल चाँदी के चार सिक्के स्वीकार करने के कारण। यदि वह वास्तव में एक महासामन्त का वंशज होता तब यह सामान्य रक़म एक विदेशी के द्वारा उपयुक्त अभिनन्दन मानी जाती।

"महासामन्त अत्यन्त प्रभावशाली थे, क्या वे नहीं थे?"

रेवरेण्ड बुल का वरिष्ठ त्वो के प्रति सम्मान अकस्मात बढ़ गया। कुछ देर "काह काह" करते हुए उन्होंने वरिष्ठ त्वो को पाँच सिक्के उपहारस्वरूप और दिए।

वरिष्ठ त्वो ने अपनी बाइबिल लपेट ली। चाँदी के चार सिक्के नकद पाकर उनके बोझ का अनुभव करते हुए वह अपने गिरजा से लगभग दस ली की यात्रा के लिये निकल पड़ा। जैसे ही वह चला, स्वर्ग के सम्बन्ध में सब कुछ भूल गया। आह! यह कितनी मादक सुगन्ध है! यदि मनुष्य धूल से बनाए गए थे, तो उस धूल को पानी के बजाय "अड़क्वोथओ" मदिरा से मिला दो! जब वह "अड़क्वोथओ" के पीपे के पास बैठा, तो वरिष्ठ त्वो लगभग अचेत हो गया। शराब भट्ठी से उठती भाप की भभक सारे शराबघर में भरी हुई थी और उसने उसके शरीर के सभी रक्त शिराओं को इस स्थिति में ला दिया कि वह चिल्ला उठे : "मेरे लिये 'अड़क्वोथओ' ले आओ।" जब वह कुछ शान्त हो गया, उसने कुछ तला मसालेदार बीनकर्ड कुछ नमकीन केकड़े तथा आधी कैटी "अड़क्वोथओ" लाने का आदेश दिया।

मदिरा पान के पश्चात उसके शरीर की समस्त रक्त शिराओं को गर्म होने तथा उसे अधिक से अधिक सन्तोष प्राप्त होने में अधिक समय नहीं लगा। वह अपने मन में ही बोला, "उनके शरीर आँखों से भरे हैं।" शराबघर से बाहर निकलने पर

उसने बड़ी होशयारी से सुअर के सर के मांस का टुकड़ा, कुछ भुने हुए अण्डे तथा कुछ गेहूँ के केक सामने की दुकान से लेना पसन्द किया। उसने पेट भरकर अच्छा भोजन किया और शराब पी और पूर्ण अनियंत्रित होकर अपने आपको भोजन करने से न रोक सका। फटे-पुराने नीले सूती टुकड़े से अपना मुँह पोंछने के बाद, जिसे वह बाइबिल के काम में लाता था, उसने शराबघर के पहरेदार से विदाई ली।

पैसे के मामले में एक उँगली डाल देने के पश्चात वरिष्ठ त्वो और भी अधिक महत्वकाँक्षी हो गया। उसने सोचा, "क्या यह आश्चर्यजनक न होगा कि यदि मैं भी उसी प्रकार प्रति माह गिरजाघर से कुछ औंस चाँदी इकट्ठा कर लिया करूँ जिस प्रकार मानचू बैनरमैन सरकार से माहवारी भत्ता प्राप्त कर लेते हैं?" उसने यह जानकारी प्राप्त की कि इस प्रकार के लाभ, यदि कोई प्रोटेस्टेन्ट चर्च का सदस्य हो, कठिनाई से प्राप्त हो सकेंगे। इससे वह निराश हो गया और उसने अपने आप को धिक्कारा कि उसने इतनी शीघ्र बपतिस्मा ग्रहण कर लिया, बिना यह पता लगाए कि ईसाई धर्म के लाभ क्या हैं।

किन्तु वह अभी तक पूर्णतः निराश नहीं हुआ था। उसने सोचा कि वह जैसी परिस्थिति होगी उसके अनुसार ही कार्य करेगा। उसे केवल यही करना होगा कि वह थोड़ा जोर देकर सोचे और कुछ नए समाधान निकाले। सम्भवतः वह रेवरेण्ड बुल के प्रभाव का लाभ उठाकर अमरीकी "भवन" में कोई छोटी नौकरी प्राप्त कर लेगा। किन्तु उसने तुरन्त ही यह योजना उलट दी। क्या वह अपने को स्थाई सरकारी नौकरी को समर्पित कर दे? असम्भव! वह पूर्ण रूप से अपना आराम का ही जीवन व्यतीत करने की इच्छा रखता था और अपनी आत्मा की संतुष्टि की सीमा तक खाना तथा पीना चाहता था, एक प्रधानमंत्री की भाँति जो रिटायर होकर अपने गाँव वापस चला गया हो। इतिहास ने वरिष्ठ त्वो के साथ अन्याय नहीं किया, यद्यपि उसके रक्त में अब सभी ज्वलनशील पदार्थ समाप्त हो गए थे। उसका सबसे बड़ा स्वप्न था कि गोश्त के टुकड़े आसमान से गिरें और वह भी संयोग से सीधे उसके मुँह के अन्दर।

उसे ज्ञात था कि गिरजाघर में अनेक परिवार, जिन्हें विदेशी सहायता प्राप्त थी, वे विदेशी वस्तुओं को बेचने वाले बड़े-बड़े प्रतिष्ठान चला रहे थे तथा अपार धन एकत्रित कर रहे थे। वह उनसे इस आशा से मिला कि उनके ईसाई भाईचारे पर प्रभाव डाल सके और अपने लिये भी कुछ थोड़ा धन कमा सके। किन्तु इन व्यापारियों का कल्याण कार्य इतना अधिक नहीं था जितनी वह आशा करता था, अतः उसके तमाम प्रयास व्यर्थ गए। इनमें से अनेक व्यापारी अँग्रेजी बोलते थे। वरिष्ठ त्वो सदा यही समझता था कि "आदम ने शेथ को जन्म दिया" ही अँग्रेजी थी, किन्तु दुर्भाग्यवश ऐसा नहीं था। यहाँ तक कि जब वह पेइचिङ् बोली में रेवरेण्ड बुल के

भाषण की नकल करता था तथा "आदम ने शेथ को जन्म दिया" को परिवर्तित करके "यादम ने सिथ को जन्म दिया" कहता था, तब भी वे हक्का-बक्का होकर अपना सिर हिलाते थे। जब वह "उनके शरीर अनेक आँखों वाले थे" वाले अंश पर बहस करना प्रारम्भ करता, इस प्रयास में कि जिससे उनमें ज्ञानार्जन के प्रति रुचि उत्पन्न हो, तब भी वे केवल यही उत्तर देते थे, "मैं इस सम्बन्ध में कुछ नहीं जानता।" उन्होंने उससे कभी एक प्याली चाय को भी नहीं पूछा। कितने आश्चर्य की बात थी!

वरिष्ठ त्वो निराश हो गया। जब उसने गिरजाघर के अधिक पवित्र तथा सरल सदस्यों से बात की, तो उन्होंने उसे याद दिलाई कि धर्म का उद्देश्य धन इकट्ठा करने के स्थान पर सत्य की खोज करना है। किन्तु एक पौंड सत्य के लिये भी इस प्रकार उसे कितना अधिक धन चुकाना पड़ेगा?

उसने अपनी ही तरह के अन्य लोगों से सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास करने का निश्चय किया, जो अपने धार्मिक विश्वास के कारण कुछ प्रभाव डालने के लिये पीड़ित हो रहे थे। किन्तु ऐसा प्रत्येक व्यक्ति जिसके पास वह गया, उसकी अपनी स्वयं की योजना थी या विशेष केन्द्रबिन्दु था और वे उसके साथ भागीदार बनने के अनिच्छुक थे। विदेशी सम्बन्धों से सहायता प्राप्त करके, उनमें से अनेक व्यक्ति अपने सम्बन्धियों और मित्रों के लाभ के लिये न्यायालयों में गड़बड़ कर रहे थे या सीधे सम्पत्ति का सौदा कर रहे थे और फलस्वरूप कुछ लाभ प्राप्त कर रहे थे। कुछ ने चोरी की वस्तुएँ क्रय कर रखी थीं जिन्हें भले लोग कभी छू भी नहीं सकते, और वे विदेशी बस्तियों में उन्हें बेचते थे। अन्य लोग विदेशियों के आदेश पर मन्दिरों में घुसपैठ करके बुद्ध की ताँबे की छोटी मूर्तियों को केवल कुछ पुरस्कार पाने के लिये उठा ले जाते थे। इनमें से प्रत्येक व्यक्ति की अपनी विशेष योजनाएँ थीं जिन्हे वे अजनबी लोगों को बताने से मना कर देते थे, विशेष रूप से वरिष्ठ त्वो जैसे लोगों को। वे उसके द्वारा पढ़े जाने वाले "आदम ने शेथ को जन्म दिया" तथा "उनके शरीर अनेक आँखों वाले थे" स्थालों पर उसके व्याख्यान को पसन्द नहीं करते थे, यद्यपि वे असहाय थे किन्तु उसे रेवरेण्ड बुल द्वारा जो नकद उपहार प्राप्त होता था उस पर वे सभी ईर्ष्या करते थे। वे यह भी अन्यायपूर्ण मानते थे कि विलम्ब से धर्म ग्रहण करने वाला एक व्यक्ति उनसे अच्छा व्यवहार प्राप्त कर रहा है। इसके कारण शीघ्र ही उन्होंने उसका नाम "अनेक नेत्रों वाला" रख दिया तथा रेवरेण्ड बुल के कानों के निकट ही उसके सम्बन्ध में परिवर्तित अर्थों वाली बातें कहने लगे। रेवरेण्ड बुल की नीति थी 'मतभेद उत्पन्न करो और विजयी बनो।" तिरस्कारपूर्ण प्रभाव डालने के बजाय वह वरिष्ठ त्वो की "खोजों" को केवल एक नकद चाँदी के सिक्के से घटा देते थे, बावजूद इसके कि वरिष्ठ त्वो इसका विरोध करता था कि उसकी

पोशाक उन चार पशुओं में से एक की भाँति बनती जा रही है जिसका "शरीर अनेक नेत्रों वाला" था।

इसके पश्चात वह क्या कर सकता था?

कुछ भी हो, उसे केवल इस सम्बन्ध में कुछ करना चाहिए था। उसने व्यर्थ में ही धर्म परिवर्तन नहीं किया था।

उसने कुछ आरम्भ करने का निश्चय किया। गिरजाघर में सम्मिलित होने के पूर्व, वह प्येनईफाङ रेस्तराँ में माहवारी उधार का व्यवहार चला रहा था। अन्य तमाम बैनरमैनों के साथ वह भी प्रतिमाह राजकीय अनुदान प्राप्त करके अपना उधार चुकाता था। अब उसने केवल प्येनईफाङ रेस्तराँ की प्रतिक्रिया जानने के लिये ऋण का भुगतान न करने का निश्चय किया। इससे पूर्व के अवसरों पर उसकी खरीदारी ताजे सुअर का मांस पर नकद दो सौ या दिन के भोजन पर नकद एक सौ साठ से अधिक की न होती थी। किन्तु इस अवसर के लिये उसने सोयासास युक्त सब्जीमिश्रित मुर्गी दाँव पर लगा दी।

जब कनिष्ठ त्वो से मैनेजर वाङ ने पूरी कहानी जान ली तब शिछङ द्वारा बताई बातों पर उन्हें कोई सन्देह न रह गया। उन्होंने सोचा, "अब इस समय यहा पेइचिङ में 'अनके नेत्रों वाला' है। किन्तु यदि वह कहीं नगर से बाहर निकल आया तब कौन ज़ानता है कि वह किस प्रकार की गड़बड़ कर बैठगा। कोई आश्चर्य नहीं कि शिछङ इसीलिये ईसाइयों से इतनी अधिक घृणा करता है।"

कनिष्ठ त्वो ने क्षमा याचनापूर्वक पूछा, "मैनेजर वाङ, पिछला ऋण भुगतान किए हुए उसे कितने महीने बीते होंगे?"

"तीन महीने से अधिक बीत चुके, उसने एक पैसा भी अदा नहीं किया।"

"मैनेजर वाङ! मैं... मुझसे जितना शीघ्र हो सकेगा, मैं तुम्हें भुगतान कर दूँगा। कुछ भी हो, फिर भी वह मेरा भाई है।" ऐसा कहते समय उसके नेत्र छलछला आए थे।

"तुम उसका प्रबन्ध किस प्रकार करोगे? तुम उसके साथ तो रहते नहीं, और स्वयं भी तुम्हारी स्थिति अच्छी नहीं है।"

"हम साथ नहीं रहते, किन्तु फिर भी हमारे पूर्वज तो एक ही थे।" कनिष्ठ त्वो ने बलपूर्वक अपने मुँह की लार निगली।

"इसकी आप तनिक भी चिन्ता न करें। मैं उसके साथ यह सब तर्कसंगत ढंग से सुलझा लूँगा।

"मैनेजर वाङ! ऐसा अपमानजनक कार्य मेरे भाई ने केवल इस कारण से किया क्योंकि उसे विदेशियों की सहायता प्राप्त थी। हम उनसे समानता नहीं कर सकते। मैनेजर वाङ। मैं उसके ऋण की एक-एक पाई तुम्हें अदा कर दूँगा। इसकी कोई

चिन्ता नहीं कि मुझे यह करने में किन परिस्थितियों से गुजरना पड़े, मैं तुम्हें भुगतान करूँगा।"

मैनेजर वाङ ने कुछ क्षण इस पर विचार किया और कुछ समय के लिये निश्चय कर लिया कि वह वरिष्ठ त्वो पर भुगतान के लिये दबाव न डालेगा क्योंकि वह इस विवाद में किसी विदेशी को नहीं डालना चाहता। मैनेजर वाङ यह सोच भी नहीं सकता था कि एक विदेशी ऐसे महत्वहीन विषय में पड़ना चाहेगा, किन्तु फिर भी वह विश्वस्त न हो सका। उसने अपने आपसे कहा, "दुखी होने से अच्छा होगा अपने को सुरक्षित कर लेना।"

उसी समय वरिष्ठ त्वो अपने मन में कह रहा था, "बहुत, बहुत सुन्दर! मैं सोचता हूँ कि मैंने अन्त में कुछ ऐसा प्राप्त कर लिया है कि जिससे काम बन सकता है। यदि मैं परेशानी में पड़ जाऊँ, मुझे विश्वास नहीं कि रेवरेण्ड बुल मेरी सहायता करेंगे। किन्तु अभी अभी इसके पूर्व कि मुझे रेवरेण्ड बुल कौ बीच में लाने का अवसर मिले और मैनेजर वाङ को नर्क के नाम से भयभीत किया जाये, उसने मुझे एक भी शब्द कहे बिना ठीक मेरे आज्ञाकारी पुत्र की भाँति एक समूचा सोयासासयुक्त मुर्ग दे दिया। यही ठीक है! यही सुन्दर जीवन है!"

वरिष्ठ त्वो उसे एक कदम आगे ले जाना चाहता था। "जब वायु बहे तब पाल खोल देने चाहिए। किन्तु क्या रेवरेण्ड बुल उसके साथ चल सकेगा?" वह आश्वस्त न हो सका। "अच्छा तब मैं थोड़ी सी मदिरा पिऊँगा और अपना पुराना साहस जुटाऊँगा।" एक बड़ा प्याला पीने के पश्चात उसका गोल चेहरा लाल हो गया। वह प्येनईफाङ रेस्तराँ के अन्दर गया। इस बार उसने दो प्लेटों का आर्डर देने के अतिरिक्त मैनेजर वाङ से चार चाँदी के सिक्के उधार माँगे।

मैनेजर वाङ ने अन्त में अपना धैर्य खो दिया। वह वरिष्ठ त्वो के साथ अधिक समय तक सम्बन्ध बनाए रख सकता था, किन्तु उसकी भी एक सीमा थी। यद्यपि मैनेजर वाङ अपने अधिकाँश जीवन में व्यापार ही करता रहा, वह हृदय से एक शानतुङ वाला था जिसका अर्थ है कि वह अत्यन्त स्पष्टवादी तथा हठी व्यक्ति था। वह पूरे दो मिनट तक सीधे वरिष्ठ त्वो की आँखों में ताकता रहा, इस आशा से कि वह उसके तात्पर्य समझेगा तथा दुर्दिन में अपना माँग को वापस ले लेगा। किन्तु वरिष्ठ त्वो वहाँ खड़ा रहा और केवल बुदबुदाता रहा। मैनेजर वाङ ने शान्ति भँग की।

"श्रीमान त्वो! मैं तुम्हें कोई वस्तु उधार न दूँगा। मैं तुम्हें चार चाँदी के सिक्के भी उधार न दूँगा। अपना बिल अदा करो या कृपा करके अपना मुँह बन्द रखो, किन्तु पहले अपना हिसाब साफ करो।"

अब वरिष्ठ त्वो के सामने केवल एक मार्ग था कि वह रेवरेण्ड बुल को बीच में डाले, "तब मैनेजर वाङ बहुत ठीक। तुम जानते हो कि वहाँ मेरा एक विदेशी मित्र

है । सम्भवतः वह कुछ ऐसा है कि जिसके सम्बन्ध में तुम्हें विचार करना ही चाहिए। किन्तु यदि तुम जानते हो कि तुम्हारे लिये क्या उचित होगा तुम वें वस्तुएँ तथा नकद पैसा तुरन्त मेरे सामने दरवाजे पर आकर दे जाओगे। मैं तुम्हारे शुभागमन की नम्रतापूर्वक प्रतीक्षा करूँगा।'' इतना कहकर वह बाहर चला गया।

कोई भी नहीं सोच सकता है कि मैनेजर वाङ के कार्य का अधिक भाग कंगाल बैनरमैनों के साथ मोलभाव करना और डूबे हुए ऋण को वसूल करना था। वह बहुधा किसी बहस में अपना स्वर तेज कर देता था, किन्तु अपना सन्तुलन शायद ही कभी खोता हो। नए वर्ष की पूर्व संध्या पर वह और उसके ग्राहक एक दूसरे के साथ गला फाड़कर चिल्लाते थे। किन्तु नए वर्ष के दिन वे एक दूसरे के पास जाते थे, कमर तक झुककर अभिवादन करते थे तथा एक दूसरे के लिये नए वर्ष की शुभकामनाएँ इस प्रकार व्यक्त करते थे जैसे कि इससे पूर्व वे कभी आपस में एक दूसरे के कारण शर्मिदा न हुए हों। किन्तु इस समय मैनेजर वाङ का क्रोध वास्तविक था। यदि वरिष्ठ त्वो एक विदेशी को बीच में डालकर उसे बदनाम करके ठगना चाहता है, तो वह इसे सहन न कर सकेगा। उसे शिछङ का ध्यान आया और एक ऐसे पुत्र का पिता होने पर गर्व का अनुभव करने लगा।

किन्तु यदि वरिष्ठ त्वो उस विदेशी को ले आया तब क्या होगा? अन्य अनेक लोगों की भाँति मैनेजर वाङ को विदेशियों की शक्ति और प्रभाव का बहुत कम ज्ञान था। यह ज्ञान जितना ही कम होता, विदेशी उतना ही अधिक भयानक बन जाते थे। शीघ्र ही अवसर पाकर मैनेजर वाङ कनिष्ठ त्वो से मिलने गया।

कई मिनट तक कनिष्ठ त्वो बिल्कुल चुप रहा। उसने स्वयं अपने क्रोध का अनुमान किया और उसे नियंत्रित करने के प्रयास हेतु अधिक प्रभावशाली योजना बनाने लगा। ''मैनेजर वाङ आप अपने रेस्तराँ वापस जायें। मैं जाकर उससे बात करूँगा।'' उसने यह विशेष योजना निश्चित की तथा उसे अविलम्ब क्रियान्वित करने का विचार किया।

''किन्तु तुम...''

''आप जायें मैं जाकर उससे बात करूँगा। आप रेस्तराँ में मेरी प्रतीक्षा करें।''

कनिष्ठ त्वो सामान्यतया दूसरों के विचारों के प्रति उदार रहता था, किन्तु जब क्रोध में होता था तब सब कुछ भूल जाता था।

वह अपने बड़े भाई से मिलने गया।

''आह! छोटे भाई आज कौन सी हवा तुम्हें इस ओर बहा ले आई?''

वरिष्ठ त्वो उपहास करने का प्रयास कर रहा था किन्तु वह इस प्रकार विचार भी कर रहा था, ''जब मैं गिरजाघर का सदस्य बना था तब तुम बहुत अप्रसन्न हो गए थे। किन्तु अब थोड़ा मेरी ओर देखो, मेरा जीवन पहले से कहीं अच्छा है। मसालेदार

सोयाबीन का पनीर, सुरक्षित छोटे केकड़ें, सुअर के सर का मांस, "अड़क्वोथओ" मदिरा और उसके साथ सोयासासयुक्त मुर्ग यह सभी कुछ कहाँ मिलेगा? मुझे दुख है, अब यह सब कुछ तुम्हें कहाँ प्राप्त है? मुझे देखो क्या मेरा वजन नहीं बढ़ा है?"

"भाई, मेरी बात सुनो।" कनिष्ठ त्वो की गम्भीरता तथा तत्परता ने वरिष्ठ त्वो के चेहरे की मुस्कराहट समाप्त कर दी। "तुम जानते हो कि प्येनईफाङ रेस्तराँ का तुम्हें उधार अदा करना है? मैं तुम्हारे लिये उसका भुगतान करने जा रहा हूँ। मैंने उन्हें अपने नाम का उधार-पत्र दिया है। कोई चिन्ता नहीं कि इसमें कितना समय लगेगा, लेकिन मैं उनकी एक-एक पाई का भुगतान करूँगा। भविष्य में यह अच्छा होगा कि तुम वहाँ से बिना पैसा दिए कोई वस्तु न खरीदो।"

"अनेक नेत्रों वाले" के दिल में एक टीस उठी। उसने यह कभी न सोचा था कि मैनेजर वाङ इतना शीघ्र उसके भाई से जाकर सब कुछ कह देगा। उस बूढ़े आदमी ने अपना सन्तुलन खो दिया होगा और भयभीत हो गया होगा। वरिष्ठ त्वो इस बात से विश्वस्त नहीं था कि रेवरेण्ड बुल कभी उसके पक्ष का समर्थन करेगा, किन्तु अब जबकि मैनेजर वाङ इतना घबराया हुआ था वरिष्ठ त्वो के समक्ष रेवरेण्ड बुल के पास जाकर सहायता माँगने के अतिरिक्त और कोई मार्ग न रह गया था। क्या इसका कोई सही कारण हो सकता है कि रेवरेण्ड बुल उसके साथ सहयोग न करे? और यदि उसने इस विवाद में साथ दे दिया, "अरे वाह," वरिष्ठ त्वो ने सोचा, "तब तो वर्णन नहीं किया जा सकता कि मेरा भविष्य कितना उज्ज्वल होगा।"

"भाई, तुम्हारे विचारों के लिये अनेक धन्यवाद, किन्तु मेरे विचार से यह अच्छा होगा कि यदि तुम अपना ही काम देखो। तुम अब भी विदेशी मामलों को नहीं समझते।"

वास्तविक क्रोध की तेजी में कनिष्ठ त्वो ने अपने भाई के समक्ष झुककर अभिवादन किया और फर्श पर पैर पटकता हुआ बोला, "अपने पूर्वजों के नाम पर कुछ आत्मसम्मान रखो। तुम्हें विदेशियों के द्वारा अपने ही लोगों को धमकी दिलाना बन्द कर देना चाहिए। तुम्हारी लज्जा कहाँ चली गयी, तुम्हें लज्जा का अनुभव क्यों नहीं होता?" उसका चेहरा एक कागज की भाँति सफेद हो गया और उसके हाथ बुरी तरह काँपने लगे। उसने चले जाने का प्रयास किया, किन्तु उसके पैर आगे नहीं बढ़ रहे थे।

वरिष्ठ त्वो शान्तिपूर्वक उसे देखते हुए बैठा रहा और हँसने लगा "छोटे भाई, छोटे भाई..."

"क्या बात है?" उसने उत्तर दिया इस आशा से कि उसका भाई अपनी बात वापस ले लेगा।

"क्या बात है?" वरिष्ठ त्वो पुनः हँसा और चिल्लाया, "यहाँ से निकल जाओ,

नर्क में जाओ, दूर हटो, चले जाओ।"

कनिष्ठ त्वो ने अपने बड़े भाई पर एक अन्तिम घृणापूर्ण दृष्टि डाली और धीरे से घर के बाहर चला गया। जैसे ही वह बाहर गया, उसका पूरा बोझ उतर गया। कनिष्ठ त्वो इस प्रकार का व्यक्ति था कि जो चींटियों पर पैर रखने से बचता था और कभी कोई ऐसी बात भी न कहता था कि जिससे राह के कुत्ते को भी आघात लगे। वह अपने भाई को अपने विवेकानुसार क्षमा भी कर देता था और प्रयास करता था कि वह ऐसे कार्यों को करने से बचे जिनसे उसके भाई को क्रोध आये। वह सोच भी नहीं सकता था कि वरिष्ठ त्वो इस प्रकार कायरतापूर्ण व्यवहार करेगा, विदेशी के जूते चाटेगा और अपने ही जनों के विरुद्ध हो जायेगा। वह क्रोधित हुआ और जोर जोर से बुदबुदाने लगा। "ऐसा कैसे हो सकता है? इस प्रकार की बात मेरे साथ कैसे हो सकती है? क्या एक मानचू बैनरमैन वास्तव में इतना नीचे गिर सकता है? क्या अपने उन पूर्वजों, जिन्होंने चीन के कोने कोने में दो सौ वर्ष पूर्व महान युद्ध किए थे।, के पापों के दण्डस्वरूप हम सभी को पशु और सुअर बन जाना चाहिए?" अन्त में उसे अपने घर का मार्ग मिल गया। जैसे ही उसने अपना सर तकिए पर रखा वह रोने लगा।

वरिष्ठ त्वो की अपनी स्वयं की कठिनाइयाँ थीं। "क्या अब मुझे रेवरेण्ड बुल को बुलाना चाहिए? यदि उसने मुझे सहायता देने से इंकार कर दिया तब क्या होगा? यदि मैंने अभी यह न किया तब मैं उन्हें किस प्रकार दिखाऊँगा कि मैं ही यह तमाशा कर रहा हूँ? हं अ... मैं अभी उसके पास जाऊँगा। मैं इसे करूँगा। यदि किसी संयोग से उसने कहा, नहीं, तो मैं उस गिरजा को त्याग दूँगा, और इतना अपमानित एवं लज्जित कर दूँगा कि वह अपने ईश्वर के सामने आँख न उठा सकेगा। यही ठीक है।"

"रेवरेण्ड बुल?" वरिष्ठ त्वो का स्वर इतना कोमल, स्नेहपूर्ण तथा उसके मुख और कण्ठ के लिये इतना शीतल-आरामदायक था कि वह पुनः यह कहने के लिये बाध्य हुआ, "ओह, रेवरेण्ड बुल?"

"यदि कुछ आवश्यक बात है, तो उस सम्बन्ध में शीघ्र कहो। मैं इस समय अधिक व्यस्त हूँ।" जब रेवरेण्ड व्यस्त होते थे, उन्हें अपनी खोई हुई भेड़ की देखभाल करने का भी समय न होता था और वास्तव में वे कई बार उसे छड़ी से मारकर भगा देना उचित समझते थे।

"यदि आप अभी व्यस्त हैं तब मैं बाद में फिर आ जाऊँगा," उसने यह बात साधारण रूप में कही, किन्तु उसकी अभिव्यक्ति तथा मुखाकृति से उसकी उलझन का इतना स्पष्ट संकेत मिल जाता था कि रेवरेण्ड बुल भी यह जान गए कि उसके मन में कोई अत्यन्त आवश्यक बात है।

"तब कहो, कहो।"

वरिष्ठ त्वो ने चीन के कुछ गिरजाघरों के सम्बन्ध में नाटकीय रूप में सूचनाएँ देना आरम्भ किया, विशेष रूप से व्यापक हिंसात्मक घटनाएँ, जिनसे मिशनरी सम्बन्धित थे। "मैं उन तमाम उपदेशकों और पुजारियों के सम्बन्ध में चिन्ता करना नहीं त्याग सकता। मैं अपने मस्तिष्क से उन्हें नहीं भुला सकता।"

"अब तुम एक अच्छे ईसाई हो गए हो। तुमने इतना अच्छा हृदय पाया है।" रेवरेण्ड बुल ने अपनी अतिशयोक्ति को पूरा करने के लिये अपना सिर हिलाया।

"हाँ, मैं नहीं कह सकता कि मैं अन्य व्यक्तियों से बहुत अच्छा हूँ किन्तु यह भी नहीं कह सकता कि मैं अन्य लोगों से बहुत बुरा हूँ। मैं सोचता हूँ कि आप कहेंगे कि मुझमें अधिक या कम अच्छी भावनाएँ विद्यमान हैं।" वरिष्ठ त्वो अपनी विशेष प्रशंसा एवं दोष मिश्रित बातों से अपने आप की ही चापलूसी करने लगा जो वह समझता था कि निशाने पर सीधी बैठ रही है। कुछ राष्ट्रीय समस्याओं पर सरसरी बात कहते हुए उसने अपना वार्तालाप व्यक्तिगत विषय की ओर मोड़ दिया। "पेइचिङ में इस समय क्या स्थिति है?"

स्वाभाविक है कि वरिष्ठ त्वो द्वारा बताई गयी व्यापक घटनाओं के सम्बन्ध में रेवरेण्ड बुल अत्याधिक ध्यान देते रहे थे। यद्यपि प्रत्येक मामले में गिरजाघर ही विजयी होते रहे, किन्तु परिस्थिति ने उसे गम्भीर रूप से चिन्तित बना दिया था। यह विजय प्रसन्नता व्यक्त करने का कारण हो सकती है, किन्तु यह स्पष्ट रूप से अलाभकर होगा, यदि सौदे में उसको अपना सर्वस्व गँवाना पड़ा। उसने अपने चाचा से परामर्श पाने के लिये पत्र लिखा। उसका मामा चीनी मामलों का एक पुराना मँजा हुआ विशेषज्ञ था जिसकी चीनी जनता के सम्बन्ध में ईश्वर से भी अधिक पक्की जानकारी थी। अपने पत्र में रेवरेण्ड बुल ने यह जानने के लिये लिखा कि "...यद्यपि चीनी मुर्गियाँ मोटी और स्वादिष्ट होती हैं, किन्तु उनके लिये अपने जीवन का बलिदान कर देना पूर्ण रूप से मूर्खतापूर्ण होगा।"

उसके मामा का उत्तर संक्षिप्त किन्तु मधुर था।

> यह अत्यन्त आश्चर्यजनक है, किन्तु मैंने अभी एक बिल्ली खोज निकाली है जो चूहे से भयभीत रहती है। मेरा तात्पर्य तुमसे है। यदि कोई झगड़ा उठ खड़ा होता है तो उसे देखने के लिये वहाँ सेना होगी। तुम वास्तव में किस कारण भयभीत हो रहे हो? एक बर्बर देश में जितनी ही अधिक अशान्ति होती रहेगी हम लोगों के लिये उतना ही अच्छा है। इस सम्बन्ध में अपने ईश्वर से पूछो। एक शब्द क्रियात्मक परामर्श का है। यदि वहाँ पर्याप्त झगड़े नहीं होते तो तुम स्वयं कुछ करा दो। क्या तुम छिपाने का प्रयास कर रहे हो। मुझे ऐसा प्रतीत

होता है कि तुम उतने ही अच्छे और उतने ही मँजे हुए हो जैसा कि कोई उपदेशक।

तुम्हें भी **शान्ति न मिले** और इस अभागे संसार को भी **शान्ति न मिले**!

यह पत्र पढ़ लेने के पश्चात रेवरेण्ड बुल ने अन्त में सत्य के दर्शन किए। इसका कोई महत्व नहीं कि पत्र में उसने क्या लिखा, किन्तु उसके मामा का भाग्य वास्तविक था इसलिये यह निष्कर्ष निकला कि उसके मामा का परामर्श भी सही होगा। रेवरेण्ड बुल ने कुछ दृढ़ निश्चय कर लिये। एक ओर उसने यह सोचा कि चीनी जनता कभी विद्रोह के लिये नहीं खड़ी होगी। किन्तु दूसरी ओर उसने दूतावास को परामर्श दिया कि आपातकाल के लिये वह सेना को तैयार रखे।

"यहाँ पेइचिङ में क्या स्थिति हैं? मैं तुम्हें बताऊँगा। यह नगर तथा यहाँ के समस्त निवासी गन्दे हैं और उनसे बदबू भी आती है। काह, काह, काह!"

वरिष्ठ त्वो के कानों के लिये यह तात्कालिक प्रिय तथा पूर्णतया सुबोध वक्तव्य संगीत जैसा लगा। उसका आनन्द उसके हृदय की पूरी गहराई तक पहुँचा और उस संचित अपार आनन्द की अभिव्यक्ति उसके मुख पर हो रही थी। अब रेवरेण्ड बुल उसका निकटम मित्र था। अन्यथा, वह ऐसी असंगत बातें इतने सीधे तरीके से उससे क्यों कहता? "लोहा जब गरम हो तब उसे पीटो।" वरिष्ठ त्वो ने अपना मामला प्रस्तुत किया, "प्येनईफाङ रेस्तराँ का मैनेजर वाङ एक मुनाफाखोर कुटिल व्यक्ति है जो अच्छे ईसाइयों को ठगता है और गिरजाघर को बदनाम करता है।"

"तब उसे न्यायालय में ले जाओ, उसे न्यायलय में ले जाओ।" रेवरेण्ड बुल ने कहा। अब उसके मामा उसे कभी चूहे से डरने वाली बिल्ली नहीं कह सकेंगे। अधिकाँश मिशनरियों वाली घटनाएँ कैथलिक पादरियों द्वारा भड़काई जाती थीं। अब रेवरेण्ड बुल के लिये यहाँ प्रोटेस्टेण्ट गिरजा के महत्व को बढ़ाने के लिये एक बड़ अवसर था। इसके अतिरिक्त अधिकतर विद्रोह ग्रामीण क्षेत्र में हुए थे, यदि वह पेइचिङ में गेंद लुढ़काता है तो इसकी सुचना दूर दूर तक फैलेगी और शीघ्र ही उसे यश तथा धन दोनों प्राप्त होंगे। इसके अतिरिक्त चूँकि पेइचिङ में ही दूतावास था, इसलिये वह राजदूत की ठीक नाक के नीचे एक छोटे पैमाने पर विद्रोह खड़ा करवा सकता है, इस पूरे आश्वासन के साथ कि सुरक्षा के लिये वहाँ सेना पहुँच जायेगी और तब...इस बृहत योजना के सभी विस्तृत विवरण यथास्थान हो गए। कौन क्या कहता है, इसकी चिन्ता नहीं, मैनेजर वाङ एक गन्दा मुनाफाखोर व्यक्ति था।

किन्तु अब वरिष्ठ त्वो निराश हो रहा था। मैनेजर वाङ के विरुद्ध वह कौन सा ठोस प्रमाण प्रस्तुत करेगा? कनिष्ठ त्वो गवाही के रूप में प्रमाणित करने के लिये बुलाया जा सकता है, किन्तु उसका साक्ष्य वरिष्ठ त्वो को केवल क्रोधित करेगा।

इसके बाद अब वह कहाँ जा सकता है। रेवरेण्ड बुल को उसने परामर्श दिया कि मैनेजर वाङ जनता के समक्ष क्षमाप्रार्थी के रूप में एक दावत दे। जब मैनेजर वाङ इसे अस्वीकृत करे तभी उसे न्यायालय ले जाया जाये।

रेवरेण्ड बुल आश्वस्त भी नहीं था कि कौन सा मार्ग अपनाना सर्वोत्तम होगा। वह उलझन में बैठा रहा तथा यह कहते हुए बात समाप्त की, "हमें प्रार्थना करनी चाहिए।" उसने अपना सिर झुकाया और आँखें बन्द कर लीं।

वरिष्ठ त्वो ने भी वैसा ही किया, किन्तु वह योजना बनाने से अपने को न रोक सका। "क्या हमें उससे औपचारिक दावत छ्येनमन फ़ाटक (सामने के फाटक) के बाहर शानतुङ रेस्तराँ में लेनी चाहिए या यह अच्छा होगा कि किसी बड़े चाय घर में सुअर का मांस स्वीकार करें?" दोनों ही विकल्प उत्तम थे और उसके लिये किसी शीघ्र निर्णय तक पहुँचना कठिन था। इस बीच प्रार्थना के लिये वह कुछ भी सोच नहीं पा रहा था।

"आमीन!" रेवरेण्ड बुल ने अपनी आँखें खोलीं।

वरिष्ठ त्वो ने अपनी आँखें और अधिक कसकर बन्द कर लीं। उसका मस्तिष्क शून्य था अन्यथा वह आज्ञाकारिता की प्रतिमूर्ति था।

"अच्छा अब पहले उससे हमें क्षमा मँगवानी चाहिए।" रेवरेण्ड बुल ने भी एक अच्छे भोजन के लाभों को प्राप्त करने का विकल्प चुना।

9

"अनेक नेत्रों वाला" विद्वान व्यक्ति न था, अतः विद्या के प्रति उसमें कोई सम्मान की भावना न थी। वह दृढ़ चरित्र का भी नहीं था, अतः चरित्र की दृढ़ता के प्रति भी उसमें कोई सम्मान की भावना न थी। उबले हुए सुअर के मांस की बोटियों को ही वह सबसे अधिक महत्व देता था।

वह न्यूनाधिक रूप में कुछ सच्ची ऐतिहासिक दन्तकथाएँ जानता था। उनके से एक ऐसी थी जिसे सुनाना वह सबसे अधिक पसन्द करता था, केवल इस कारण से कि उसमें सुअर के मांस का प्रसंग आता था। वह इस प्रकार थी—प्येनईफाङ रेस्तराँ में उबले हुए मांस को काटने के लिये जो लकड़ी का कुँदा काम में लाया जाता था वह एक वृक्ष के पूरे तने के आधे भाग से बना होता था। वह इतना लम्बा क्यों होता था? भूतकाल में जब मांस काटने के लिये लकड़ी के कुंदे सदा ही कम लम्बे होते थे, बैनरमैन को यह अभ्यास पड़ गया था कि वे मांस का जिस प्रकार का कटा हुआ टुकड़ा क्रय करना चाहते थे उसी विशेष प्रकार की ओर वे संकेत करते थे, चाहे वह मोटा हो या पतला। और इस प्रक्रिया में वे बहुधा कुछ टुकड़े या गुच्छे उठाकर

अपने मुँह में रख लेते थे। इसी स्वभाव के कारण उँगलियों और चलती हुई गड़ाँसियों में बहुधा एक दूसरे के साथ टकराव हो जाने पर कुछ थोड़ा खून-खराबा हो जाता था जिससे यदा-कदा गम्भीर झगड़े हो जाते थे, यहाँ तक कि न्यायलाय में जाने की नौबत आ जाती थी। जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया काटने वाले लकड़ी के कुंदे लम्बे और लम्बे होते गए, यहाँ तक कि वे ग्राहकों की लम्बाई से भी अधिक बड़े होने लगे जिससे कि भविष्य में उँगलियों और चलती हुई चाकुओं को टकराव से बचाया जा सकता था।

जैसे ही उसने यह चुटकुला सुनाया,"अनेक नेत्रों वाले" ने एक बाद भी लकड़ी के कुंदों की ऊँचाई बढ़ाने के सम्बन्ध में अपना कोई मत नहीं व्यक्त किया और इस प्रकार उँगलियों और चलती हुई चाकुओं के सम्बन्ध को ही समाप्त कर दिया।

किन्तु उसकी दूसरी दन्तकथा से हम कुछ अत्युक्तियाँ निकाल सकते हैं। वह कथा इस प्रकार है : अनेक बैनरमैन सुँघनी लेना पसन्द करते थे। जब कोई ग्राहक तम्बाकू की दुकान में प्रवेश करता और दुकान-कर्मचारी के हाथ में सुँघनी की बोतल देता तब वह कर्मचारी ग्राहक को सुँघनी का आनन्द देने के लिये थोड़ी सी सुँघनी काउण्टर पर रख देता था, फिर उसकी बोतल भरना शुरू करता। यह एक सही शिष्टाचार था। पेइचिङ में सारा व्यापार शिष्टाचार के सिद्धान्तों के अनुसार ही चलता था। किसी प्रकार का अशिष्ट तथा अशोभन व्यवहार वर्जित था। तो भी पुराने दिनों में दुकानों के कर्मचारी ग्राहकों को कृतज्ञतासूचक नमूना देने की रीति के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानते थे। जितनी देर उनकी बोतलें भरी जाती थीं, वे अपने ग्राहकों को केवल खड़ा छोड़ देते थे, जिनके पास और कुछ करने के नहीं होता था। तब इस समस्या के समाधान हेतु कुछ बैनरमैनों ने एक उपाय खोज निकाला। जब भी वे काउण्टर पर अपने लिये थोड़ी सी सुँघनी पड़ी न पाते, तभी वे कर्मचारी के मुँह पर एक चाँटा लगा देते थे। इस प्रकार शिष्टाचार का नियम सुँघनी के नमूने के सम्बन्ध में प्रचलित हुआ। थोड़े ही समय में यह एक रिवाज बन गया।

यदि हम मांस काटने वाले लकड़ी के कुंदे तथा सँघनी के कृतज्ञतासूचक नमूने से सम्बन्धित इन दोनों दन्तकथाओं पर विचार करें, तो मुझे विश्वास है कि हम एक न्यायसंगत आधार पर यह निश्चित निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि "अनेक नेत्रों वाले" का उस पहुँच के बाहर वाले लम्बे वृक्ष के आधे तने के सम्बन्ध में स्वयं का कोई मत अवश्य था। यदि उसकी ओर से कहा जाये, तो "यदि काउण्टर के पीछे वाले लोग प्येनईफाङ रेस्तराँ में सुअर के मांस के साथ कृतज्ञतासूचक नमूने भी देते तो यह निश्चित रूप से उनके सेवा कार्य में एक महत्वपूर्ण प्रगति थी।"

वरिष्ठ त्वो इसके लिये अधिक चिन्तित न था कि उसका नाम बैनरमैनों की सूची में रहे या बैनरमैनों को अपना आत्मसम्मान बनाए रखना चाहिए। किन्तु उसके मन

में जब भी सुँघनी के भेंट स्वरूप नमूने का विचार आता था तब वह सदा बैनरमैनों की जन्मजात श्रेष्ठता को स्वीकार करने के लिये तैयार रहता था। इसकी कोई चिन्ता नहीं कि कोई क्या कहेगा, किन्तु यह रीति, साथ ही साथ इसी प्रकार की अनेक रीतियों बैनरमैनों की अपनी ही रचना थीं। वरिष्ठ त्वो ने ईसाई धर्म में सम्मिलित हो जाने के पश्चात यह विश्वास करना आरम्भ कर दिया कि यद्यपि पेइचिङ के निवासियों की सृष्टि परमात्मा ने की है किन्तु वे बैनरमैन ही थे जिन्होंने शिष्टाचार का सृजन किया।

यह सही है, और उन्हें ऐसे नियम निर्मित करते रहना चाहिए था। यदि मैनेजर वाङ वरिष्ठ त्वो को हैम के दो टुकड़े और चार नकद चाँदी के सिक्के ऋणस्वरूप न दें तब वह उसे जनता के समक्ष क्षमायाचना के रूप में एक भोज देने के लिये बाध्य करेगा। यह केवल पहला कदम था, जिसके आगे और अनेक पग उठाने थे। प्रातः, मध्यान्ह तथा रात्रि को सदैव ही वरिष्ठ त्वो पकौड़े की भाँति प्रसन्नता में फूला रहता था, साथ ही यह पकौड़ा आकर्षक भी था जिसमें हैम, चिकन और झींगे भरे होते थे।

इतने पर भी मैनेजर वाङ ने क्षमा माँगने से इंकार कर दिया।

''अनेक नेत्रों वाला'' लगभग मूर्छित हो गया।

मैनेजर वाङ अधिक परेशान थे। वह पुनः कनिष्ठ त्वो से सहायता की याचना न करना चाहते थे। कनिष्ठ त्वो इतना अच्छा और सरल व्यक्ति था कि मैनेजर वाङ उसे और अधिक कष्ट न देना चाहते थे। वह जानते थे कि समस्या का वास्तविक कारण विदेशी थे, किन्तु उनके साथ व्यवहार करने का उन्हें कोई अनुभव न था। उन्हें सहायता की अत्याधिक आवश्यकता थी। उनके ध्यान में जो पहला व्यक्ति आया वह था फुफेरा भाई फूहाए। ऐसा इसलिये नहीं कि वह एक बैनरमैन था, अपितु इसलिये कि वह एक ऐसा मित्र था कि जो समय पर काम आ सकता था।

जब शिछङ पेइचिङ से चला गया, फूहाए मैनेजर वाङ से दूर रहता था। अतः जब मैनेजर वाङ मिलने आया फूहाए को बड़ा आश्चर्य हुआ। क्या शिछङ पेइचिङ में वापस आ गया है? या उस पर कोई दुर्भाग्य आ पड़ा है? जब मैनेजर वाङ ने अपने आने का कारण बताया केवल तभी फूहाए शान्त हुआ।

इस बार मैनेजर वाङ की समस्या पहले से भी अधिक कठिन थी। अब फूहाए के समक्ष स्पष्ट था कि मैनेजर वाङ तथा शिछङ दोनों की ही समस्याओं का श्रोत एक ही है। इसके साथ ही वह जानता था कि वह सहायता के सम्बन्ध में कुछ नहीं कर सकता। प्रान्तों में लगभग इस प्रकार की कठिनाई थी कि प्रिफेक्चरल और काउण्टी मजिस्ट्रेट बहुत भयभीत रहते थे। वह स्वयं मात्र एक बैनरमैन सैनिक था, साथ ही वह पेइचिङ में रहता था।

तो भी फूहाए मैनेजर वाङ की सहायता करना अस्वीकार न कर सका। उचित

प्रयास करने पर कोई भी किसी कठिनाई को पार कर सकता है, उसे केवल अधिकतम प्रयास करना चाहिए। "ना" कहकर आरम्भ करना सन्तोषजनक निष्कर्ष निकाल पाने का सबसे कम प्रभावी ढंग होगा। फूहाए सदा यह सोचता था कि शिछङ के समक्ष उसका सिर नीचा हो चुका है। अब वह मैनेजर वाङ की कठिनाई को सम्भालेगा, जिसका एक कारण था कि मैनेजर वाङ एक सच्चे वीर पुरुष का पिता था। दूसरे, "अनेक नेत्रों वाला" एक बैनरमैन था, जो अपने ही लोगों के अपमान का कारण बन गया था। इस कारण वह विशेष रूप से भर्त्सना का पात्र था। इन्हीं अनेक कारणों से वह सहायता करने के लिये वचनबद्ध था।

"मैनेजर वाङ मेरे पास एक विचार है। हम चलें और मास्टर तिङ से बात करें। आपका क्या विचार है?"

"क्या वास्तव में हम वैसा कर सकते हैं?" मैनेजर वाङ को मास्टर तिङ के विस्तृत प्रभाव पर कोई सन्देह न था, किन्तु वह कुछ लज्जा तथा कठिनाई का अनुभव कर रहा था क्योंकि नए वर्ष तथा छुट्टियों के दिन वह मास्टर तिङ के हिसाब को बढ़ाकर लिख देता था।

"इस सम्बन्ध में हम ऐसा करें। इस क्षेत्र में मेरी प्रतिष्ठा बहुत कम है तथा इसके अतिरिक्त मैं अल्पायु का होने के साथ ही साथ ऐसे विषयों में अनुभहीन भी हूँ। हम क्यों न जाकर अपने पिता तथा वृद्ध चङ से बात करें? उनमें से एक कर्नल है और दूसरा कैप्टन। यदि वे दोनों मास्टर तिङ से बात करें तो निश्चय ही वे कोई मार्ग निकाल लेंगे। हम कम से कम प्रयास तो कर सकते हैं। आप रेस्तराँ वापस जायें। चिन्ता न करें। मैं शीघ्र ही सम्पर्क स्थापित करूँगा।" देखिए, किस प्रकार मेरे "महान मामा मेघ मण्डप" ने उस बैनरमैन के प्रति अपनी घृणा व्यक्त की जिसने ही लोगों के प्रति विश्वासघात किया तथा ईसाई बन गया : "जब एक बैनरमैन ईसाई धर्म ग्रहण कर लेता है, एक हान चीनी उस सम्बन्ध में क्या कर सकता है?" दैनिक जीवन में "मेघ मण्डप" ने मानचू तथा हान चीनियों में कभी कोई अन्तर नहीं किया। केवल इस कारण से कि थ्येनथाएश्वेन रेस्तराँ में मैनेजर तथा सेवक हान चीनी थे, उन्हें वहाँ जाकर चाय पीने या भोजन करने में कभी आपत्ति न हो सकी और जब अधिक महत्वपूर्ण प्रश्नों पर बात आ पड़ी, जैसे क्या मानचू तथा हान चीनी अन्तर्जातीय विवाह करें अथवा क्या महान छिङ साम्राज्य की प्रजा ईसाई धर्म पर विश्वास करे, तब उनका उत्तर लगभग इस प्रकार होता : "मानचुओं को सदा ही हान चीनियों से अधिक प्रबुद्ध होना चाहिए। उनको उचित तथा अनुचित का अच्छा ज्ञान होना चाहिए तथा कभी पहले भूल न करनी चाहिए।" वे वरिष्ठ त्वो से घृणा करते थे, इस बात की उपेक्षा करते हुए कि चाहे वह "अनेक नेत्रों वाला" हो या "अनेक नासिकाओं वाला" हो।

किन्तु जब उन्हें ज्ञात हुआ कि प्रस्तुत संकट का सम्बन्ध विदेशियों से हैं, उन्होंने तुरन्त अपना सिर हिलाना आरम्भ कर दिया। उन्होंने फूहाए से कहा, "अपना काम देखो।" यह उनका तकिया कलाम था। जब वे अन्य व्यक्तियों से "अपना काम देखो" कहते थे, तब गर्व से एक अधिकारी के रूप में व्यतीत किए गए अपने दीर्घ जीवन तथा अपने अनुभवों के विस्तार एवं उनकी गहनता पर विचार करते थे।

इसके पश्चात फूहाए ने कुछ नहीं कहा। ऊपर से उनका पिता-पुत्र का सम्बन्ध एक उचित पित्रात्मक स्नेह तथा पुत्रवत भक्ति था, किन्तु इस शान्त तल के नीचे विकास की बहुत सम्भावना थी। फूहाए माननीय चङ से मिलने चला गया।

पेइचिङ में सबसे अच्छा मौसम अगस्त माह के अन्त में आता है। यह यदा-कदा तेज हवाओं का मौसम होता है, किन्तु वायु के झोंके अधिक वेगवान नहीं होते और जल्दी-जल्दी नहीं आते। उस समय वायु में शीतलता होती है, किन्तु वह सदा आनन्ददायक लगती है। जैसी कि एक प्राचीन कहावत है, "वर्ष के दूसरे तथा आठवें महीने में परिधान सम्बन्धी कोई नियम नहीं होते।" इस समय लोग चमकीले रंग वाले वस्त्र पहिनते हैं और गर्मी में पहिने जाने वाले रंगीन वस्त्र कम दिखलाई पड़ते हैं। गर्मी के अन्त में आने वाले फल तोड़ लिये जाते हैं तथा प्रान्तों से उनकी अनेक किस्में पेइचिङ भेजी जाती है जहाँ वे प्रारम्भिक शरदकाल में दुकानों तथा स्टालों को इन्द्रधनुषों रंगों में सजाती हैं। शाही महल की टाइल वाली पीली चिकनी छतें तथा श्वेत पगोडा के ऊपर सुनहरा आभूषण सूर्य के तेज प्रकाश में चमक उठता है। उस मौसम में न तो वहाँ अधिक वायु चलती है और न धूल उड़ती है तथा सामने के द्वार, दुकानों के साइनबोर्ड तथा और अधिक सम्पन्न संस्थाओं के अग्रभाग ताजे रंग से रंगा होता है। पिंजड़े में बन्द चिड़ियाँ, जिन्हें जीवित टिड्डियों का भोजन उनके स्वामियों के द्वारा पूरी गर्मी की ऋतु में दिया जाता रहा, अब लाल और सुनहरे रंगों के पंखों में प्रदर्शित हो रही होती हैं। ऊपर से नीचे तक ढीले और चमकीले उनके शरीर साटन की कान्ति की भाँति चमक रहे होते हैं।

फूहाए के घर के आँगन में कई बेर के पेड़ लगे थे और इस समय तक उनमें से कुछ पके लाल बेर डालियों पर लटक रहे थें उसने एक छड़ी से उनमें से कुछ तोड़ लिये और उनको माननीय चङ तथा उनकी पत्नी को उपहारस्वरूप देने के लिये एक कपड़े में लपेट लिये। उन दिनों जब मानचू बैनरमैनों के पास आराम के लिये पर्याप्त समय होता था, तब मित्रों तथा सम्बन्धियों का आना दैनिक जीवन की अत्यत महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक होता था। निरन्तर मिलते-जुलते रहने तथा सावधानीपूर्ण निरीक्षण के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति भली-भाँति जान लेता था कि किस व्यक्ति के घर में एक बड़ा सफेद छुहारे का पेड़ है जिसका तना झुका है या किसके यहाँ अन्दरूनी द्वार के ठीक बाहर सेब का पेड़ लगा है जो प्रतिवर्ष फूलता तो है

किन्तु फल नहीं देता। चूँकि ऐसी विस्तृत बातें सामान्य रूप से सभी को ज्ञात थीं, अतः प्रत्येक व्यक्ति इस ऋतु में मैत्रीपूर्ण किन्तु उचित उपहार पाने की आशा करता था। मेरी सबसे बड़ी बहिन की साम फलों का उपहार कदापित नहीं देती थी, क्योंकि जिन सफेद बेर तथा आड़ू के पेड़ों का उन्होंने कभी लगाया था वे उनकी पैनी दृष्टि के प्रभाव के कारण सूख गए थे। तब से उन्होंने प्रण कर लिया कि वे भविष्य में फलदार वृक्ष नहीं लगाएँगी। इससे उनकों अन्य व्यक्तियों के वृक्षों पर निकट से ध्यान देने का अवसर मिल जाता था और यदि उन्हें इन वृक्षों से कुछ पके फल न प्राप्त होते, तो वे अनुभव करती थीं कि उन पर कोई बड़ी आपत्ति आ पड़ी हैं। इसी कारण से फूहाए उनसे मिलने के लिये भेंटस्वरूप कुछ बेर साथ में लिये बिना नहीं जाता था। मेरा बहिनोई त्वोफू आँगन में अपने कबूत्तर निकाल रहा था। अपना सिर ऊपर उठाए हुए वह अपने उड़ते हुए पक्षियों को गर्दन मोड़कर देख रहा था। अपने नेत्र उन "उड़ती हुई चाँदी के ईंटों" पर गड़ाने के कारण उसकी गर्दन दर्द करने लगी थी, किन्तु "बिना कष्ट उठाए सुख प्राप्त नहीं होता"। अन्यथा वह अवर्णनीय रूप में उन्मादी था। जैसे-जैसे वह देख रहा था, उसके कबूतर ऊँचे और ऊँचे उड़ते जा रहे थे, जिसके कारण नीला आसमान और अधिक दूर दिखलाई पड़ता था—वास्तव में इतनी दूर कि छोटे नक्षत्र कबूतरों के पंखों के चारों ओर दिखलाई पड़ने लगे। निर्मल तथा अनन्त आकाश कबूतरों के काले और सफेद परों के बीच एक पूर्ण विषमता आरोपित कर रहा था, जिसके कारण त्वोफू ने अपने जबडे खोले और मुस्करा दिया। इससे ऐसा जान पड़ता था कि जैसे मनुष्य, कबूतर तथा आकाश एक दूसरे के साथ हर्षोत्फुल्ल तथा जीवन्त रूप में सीधे सम्पर्क में आ गए थे।

उस दिन त्वोफू ने केवल दो दर्जन पक्षी उड़ाए थे, जिनमें से अधिकाँश काले चित्तीदार सफेद रंग वाले काली पूँछ के नीलकण्ठी पक्षी थे। इनके अतिरिक्त कुछ बैंगनी चित्तीदार, एक काला कौवा का जोड़ा भी था, जिनके सिर, पूँछ और उनके परों के किनारे भी काले थे। यद्यपि वह झुण्ड बड़ा नहीं था। किन्तु उसने उन्हें बड़े ध्यान से छाँटकर रखा था। शरद ऋतु के प्रारम्भ का निर्मल आकाश तथा शीतल बयार उन श्वेत तथा श्वेत पूँछ वाले पक्षियों के झुण्ड की चमकती रोशनी की सुन्दरता के समक्ष ठहर नहीं पा रहा था। यदि आपने उन पूँछों का गहरा कालापन देखा होता तथा उनका बैंगनी रंग कुछ हल्का रहा होता, तब जेसे ही वे पक्षी मुड़कर उड़ान भरते उनकी पूँछे ऐसी ज्योति बिखेरती थीं जो केवल बैंगनी पूँछों के द्वारा सम्भव था। पूर्ण रूप से, पक्षियों के झुण्ड का रंग सम्भवतः कुछ-कुछ मिले-जुले हलकेपन की ओर था, तो भी कौवों के जोड़े के पंखों की विशेष कार्यविधि पर सावधानीपूर्वक विचार करें। उनके श्वेत शरीर तथा श्याम वर्ण के पंख, सिर तथा पूँछ ऐसे आकर्षक थे जैसे कि दो सुन्दर पुष्प हों। संक्षेप में रंगों का यही रूप पूरे वातावरण को अत्यन्त आकर्षक बनाये था।

हाँ यही वास्तविकता सुन्दरता थी। इतना सुन्दर पक्षियों का समूह चुनकर त्वोफू धनिक वर्ग के स्वभाव को तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से देखता था, क्योंकि उन लोगों के विभिन्न प्रकार के रंगों वाले कम से कम सौ पक्षी भी सदा बिना किसी योजना के उड़ा दिये जाते थे। किसी भी दर्शक को उन्मादी बना देने के लिये यह पर्याप्त था। "सेना का मूल्य उसके गुणों पर निर्भर करता है न कि उसकी संख्या पर।" उसने इसी प्राचीन कहावत का स्मरण किया और यद्यपि इसे वह किसी विशेष प्राचीन सेना पर लागू नहीं कर सकता था, किन्तु उसे प्राचीन ग्रन्थों को उद्धृत करने में गर्व का अनुभव होता था।

तथापि इस पूरे हर्षोल्लास के मध्य त्वोफू सावधान रहा। किसी भी व्यक्ति को अपने पूरे हृदय और मन से सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवरण की उपेक्षा किए बिना अपनी अभिरुचियों को विकसित करते रहना चाहिए। यद्यपि शरद ऋतु की शीतल पश्चिमी हवाओं ने अभी-अभी सभी वृक्षों की पत्तियों को उड़ाना आरम्भ कर दिया था, किन्तु त्वोफू ने अपने कबूतरों के पंखों में सीटियाँ कदापि नहीं बाँधी थीं, क्योंकि उसे भय था कि उनकी ध्वनि "नवें आकाश" तक पहुँचेगी जो प्रत्येक पतझड़ के समय पेइचिङ में उड़ते दिखाई पड़ने वाले गौरैया के शिकारी बाज की उपजाति बाघ बाजों को नीचे उतार लाएगी। बाघ बाज कबूतरों के पक्के शुत्र होते हैं और इसी कारण से त्वोफू अपनी सावधानी में किस प्रकार की ढील नहीं सहन कर सकता था। यदि यह छोटे बाज पेइचिङ में कुछ दिन पूर्व आ जाते तो क्या हो जाता? वह अपने पक्षियों के झुण्ड पर अपने नेत्र गड़ाए था। यदि उसका कोई पक्षी भय का तनिक भी चिह्न प्रदर्शित करता अथवा उनकी चक्राकार उड़ान की स्वभाविकता तथा तीव्रता में नाम मात्र का भी अन्तर जान पड़ता, तो उसका अर्थ होता कि उन्होंने किसी घुसपैठियों को देख लिया है। जब ऐसा होता, वह अविलम्ब उन्हें वापस बुला लेता जिससे कि किसी आसन्न संकट को टाला जा सके। किन्तु आज के दिन यद्यपि उसके कबूतर घबराहट का कोई चिह्न प्रदर्शित नहीं कर रहे थे, तो भी वह उन्हें अधिक ऊँची उड़ान भरने नहीं दे रहा था। बाघ बाज बहुधा हवा के बीच अधिक ऊँचाई में ही आक्रमण करते हैं। उसने अपने पिंजड़ों में से एक का द्वार खोल दिया और कुछ विश्वसनीय अनुभवी पक्षियों को छोड़ दिया, जो घर की छत तक उड़ गए। तुरन्त ही पूरे झुण्ड ने अपने पर समेट लिये और नीचे आना आरम्भ कर दिया। केवल तभी त्वोफू का हृदय शान्त हो सका।

फूहाए इस पूरे समय तक आँगन में खड़ा रहा। वह जानता था कि जब एक बार त्वोफू अपने कबूतरों पर ध्यान केन्द्रित करना प्रारम्भ कर देता है, तब वह अपने चारों ओर की प्रत्येक वस्तु की प्रति असावधान हो जाता है और विशेष रूप से किसी भी व्यवधान का विरोध करता है। जब उसका झुण्ड अन्त में उसके घर की छत पर

विश्राम करने आ गया तब फूहाए ने कहा, "त्वोफू वास्तव में यह अति सुन्दर है।"

"ओह! फूहाए !" त्वोफू को अपने आगन्तुक पर दृष्टि डालने के लिये अब समय मिला। साधारणतया, वह क्षमाप्रार्थी हो सकता था, किन्तु चूँकि वह अपने कबूतरों पर गहराई से ध्यान केन्द्रित किए था, अतः उसने केवल बात वहीं से पकड़ी जहाँ से फूहाए ने समाप्त किया था। "वह क्या था? अति सुन्दर? केवल अति सुन्दर? देखो कौन बात कर रहा है? वह वास्तविक विद्वता है। अभी देखो कि जब मैं उन्हें यहाँ नीचे बुलाता हूँ तब क्या होता है! इन पक्षियों में से तुम किसी को भी पूरे दिन देख सकते हो और कभी ने थकोगे।" उसने पिंजड़े की ओर एक मुट्ठीभर ज्वार-बाजरे के दाने फेंके और छत पर से पूरा झुण्ड नीचे उतर आया। "तनिक एक बार इन्हें देखो। यदि तुम एक बैंगनी या काली चित्तीदार का एक अच्छा नमूना देखना चाहते हो तो वे यहाँ हैं, देखो! यह सभी कलंगीदार हैं, सुन्दर कलंगीदार। इनमें से प्रत्येक सर्वथा परिपूर्ण है। थेह पूरी कुशलता से उड़ते तथा पूरी कुशलता से नीचे उतरते हैं। यही है जिसे तुम वास्तविक सूक्ष्म निरीक्षण कहते हो।" किन्तु इसके पूर्व कि फूहाए को उन सुन्दर कलंगी दार पक्षियों के महत्वपूर्ण बिन्दुओं का निरीक्षण करने का अवसर मिलता, त्वोफू बैंगनी बाघ पक्षियों के जोड़े की ओर पहले ही मुड़ चुका था। "फूहाए! इस अनमोल जोड़े को देखो। यह बाघ पक्षी पूरे रास्ते अपने कन्धों के बल नीचे उड़ता है। यह पूर्णतया सुडौल है तथा इनका एक भी पर बरबाद नहीं जाता। मैं तुम्हें बताता हूँ, तुम्हें ऐसे कबूतर कहीं न मिलेंगे।" उसने अपनी आवाज धीमी की, इस भय के कारण कि दीवार के भी कान होते हैं। 'क्या तुम राजकुमार छिङ का महल जानते हो? अच्छा, एक सेवक जिसका नाम श्यूछ्वेन है वह मेरे लिये एक जोड़ा अण्डा चुरा लाया था। यही वे पक्षी हैं जिन्हें राजकुमार उड़ाता है, तुम देखो और जो उन अण्डों से निकलते हैं वे मात्र कबूतर नहीं होते। वे कलंगीदार पक्षी होते हैं।"

"तुम सही कहते हो। वे वास्तव में विशिष्ट हैं। मैं शर्त लगा सकता हूँ कि तुमने निश्चय ही सेवक श्यूछ्वेन को इसके बदले एक या दो औंस चाँदी दी होगी।"

"तुम क्या बात करते हो? एक औंस चाँदी? वह कुछ भी नहीं हैं। पूरे सम्मान के साथ मैंने उसे तीन औंस चाँदी दी। किन्तु क्या तुम इन लघु कोषों का वास्तविक मूल्य जानते हो? फूहाए, यदि तुम्हें मुझ पर विश्वास न हो, तो मुझे दस औंस चाँदी देने के कहो और देखों कि क्या मैं इनको तुम्हें बेचने के लिये तैयार हूँ।"

"अच्छा इसके स्थान पर मैं अपना पैसा बचाऊँगा और अपने लिये एक पत्नी की व्यवस्था कर लूँगा।"

"और इतना ही नहीं," त्वोफू ने अपना स्वर और अधिक धीमा किया। "क्या तुम पो शङचि को जानते हो? वही है जिसने एक जोड़े नीलकण्ठ पक्षियों के बदले

अपनी पत्नी को बेच दिया। "उसी क्षण उसने वह बण्डल देखा जो फूहाए अपने हाथों में पकड़े था। "फूहाए, तुम अपने बगीचे से कुछ फल लाये हो। मैं तुम्हारे मीठे तथा छोटे बीज व कोमल छालवाले बेर पसन्द करता हूँ?"

"यह कितनी बड़ी बात है। मैं तुम्हें किस प्रकार धन्यवाद दे सकता हूँ?" उसने मानचू विधि से अभिवादन किया तथा फूहाए से बण्डल ले लिया।

जैसे ही वे बैठक में आए, फूहाए झुका, अभिवादन किया और बण्डल माननीय चङ तथा उनकी पत्नी को भेंट कर दिया। "वास्तव में यह कुछ नहीं है, केवल हमारे बगीचे के कुछ लाल बेर हैं।"

मेरी सबसे बड़ी बहिन आई और चाय रख गयी। कुछ शब्द कहने के पश्चात–यद्यपि कोई निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि वास्तव में उसने कुछ कहा भी है–उसने बड़ी सरलता से अपने लिये एक कोने में स्थान पा लिया तथा बगल में हाथ लटकाए खड़ी हो गयी।

त्वोफू का मन बेर खाने की ओर लगा था। वह बण्डल में अपना हाथ डालने की प्रतीक्षा में था। तभी उसकी माँ की घूरती दृष्टि ने उसका हाथ पीछे खींच लेने के लिये बाध्य किया। उसके पश्चात उसने निम्नलिखित आदेश दिया : "बहू, इन्हें मेरी अलमारी में रख दो।" जब मेरी बहिन उसके पास से वह बण्डल ले गयी, त्वोफू का मन डूब गया।

फूहाए में यह विवेक था कि वह प्रबंधक वाङ का मामला मेरी सबसे बड़ी बहिन की सास के समक्ष न प्रस्तुत करे, अन्यथा वंशानुगत राजकुमार की पुत्री उनके मार्ग में बाधा खड़ी कर सकती थी। उस समय की परिस्थिति को वह समझ सकती थी अथवा नहीं, किन्तु किस प्रकार समस्या हल की जाये उस पर वह सदा अपना परामर्श देती थी। जब वह अपने पति से कहती, "इस पर कोई ध्यान न दें" तो उसके सामने उसकी आज्ञा मानने के अतिरिक्त और कोई मार्ग न रह जाता था। किन्तु यह कहने से मेरा तात्पर्य ऐसा नहीं है कि माननीय चङ जोरू के गुलाम थे, अपितु वह इस सिद्धान्त के अनुसार कार्य करते थे कि "ध्यान न देना" निश्चित रूप से "ध्यान देने" से कम कष्टदायक होता है। फूहाए बड़ा धैर्यवान था। यदि मेरी सबसे बड़ी बहिन की सास वहाँ दिनभर बैठी रहतीं तो वह भी वहीं उनके साथ जब तक आवश्यक होता तब तक बैठा बातें करता रहता।

एक बिन्दु पर मेरी सबसे बड़ी बहिन ने बड़े आहिस्ते से अपना गला साफ किया। हमारे परिवार और मित्रों की पूरी गोष्ठी में एकमात्र वही थी जो धीरे से अपना गला साफ करके लोगों को उससे कोई सूचना प्राप्त करने के लिये आकर्षित करती थी और जो स्वर वह निकालती थी यदि उससे कोई विशेष अर्थ न भी समझ में आए तो भी उसे सुनकर प्रसन्नता का अनुभव होता था। यह उसका एक निराला गुण था।

मेरी बहिन की खखार सुनकर उसकी सास ने अपनी आँखें फैलाई और अपने स्थान से उठने लगीं। जब फूहाए ने उस हल्की खखार को सुना और देखा कि वह बूढ़ी औरत उठने ही वाली है, वह तुरन्त मुस्कराया और कहा, "यदि आप को कुछ काम करने हैं तो कृपया हमारी चिन्ता न करें।" उन्होंने अपने सम्मान को सुरक्षित रखते हुए कमरा छोड़ दिया और तब फूहाए ने अपने आने का वास्तविक कारण पर प्रकाश डालना आरम्भ किया।

त्वोफू ने जब पूर्ण रूप से तमाम तथ्यों को सुना, तो उसका क्रोध बहुत बढ़ गया। "यह क्या है? विदेशी? वे अपने को समझते क्या हैं, वे क्या हैं? मैं उनसे सीधे निबटूँगा। महान छिङ साम्राज्य पृथ्वी पर सबसे बड़ा राष्ट्र है। सभी विदेशी राष्ट्रों को उसके समक्ष झुकना चाहिए और उसकी सत्ता को स्वीकार करना चाहिए।" उसने एक पूर्व निर्धारित हल प्रस्तुत किया : "फूहाए, तुम्हें कुछ करने की आवश्यकता नहीं। सब हम पर छोड़ दो। खजाने के गार्ड में तीस या चालीस अच्छे लोग लड़ने को तैयार होंगे। जहाँ तक उस 'अनेक नेत्रों वाले' का सम्बन्ध है वह चाहे हजार नेत्रों वाले बुद्ध ही क्यों न हों, मैं उनमें से प्रत्येक को नोच लूँगा।"

"क्या तुम दलों के बीच मारपीट आरम्भ करना चाहते हो?" फूहाए ने परिहास में पूछा।

"यही उचित हैं। ठीक उसके पैर तोड़ डालो। उसे मारते रहो जब तक वह चिल्लाकर न कहे 'चाचा!' और यदि वह 'चाचा' कहकर नहीं चिल्लाता, हम उसे मार डालेंगे।" त्वोफू खड़ा हो गया और अपने कन्धे हिलाते हुए व अपनी मुट्ठियाँ हवा में झुलाते हुए उसने दो बार जोर से थूका।

"त्वोफू, अब बैठ जाओ।" मानचू संस्कृति ने इतना उच्च स्थान बना लिया था कि माननीय चङ अपने पुत्र को उसके औपचारिक नाम की अपेक्षा उसे उसके कवि नाम से पुकारते थे। त्वोफू के बैठ जाने के पश्चात माननीय चङ ने कुछ देर अपने गरजते किन्तु संगीतात्मक फैशन में खाँसा। उन्हें वास्तव में खाँसने की आवश्यकता न थी, किन्तु किसी कारणवश उन्होंने अनुभव किया कि ऐसा करने के लिये वही उपयुक्त अवसर था। जब उनका खाँसना समाप्त हुआ, उन्होंने फूहाए से पूछा, "क्या मास्टर तिङ इस मामले में पड़ने के लिये सहमत हैं?"

"मैं वास्तव में नहीं जानता। इसीलिये मैं आपसे सहायता हेतु कह रहा हूँ।"

"मैं समझा, मैं समझा, जिस विषय के बारे में तुम निश्चित नहीं हो सकते उसमें पड़ना कभी अच्छा नहीं होता।" माननीय चङ धीरे से बोले और विचारों में डूबे से जान पड़े।

"पहले हम संघर्ष करें और फिर देखें कि क्या होता है। इसमें भयभीत होनें की क्या बात है?" त्वोफू ने अपना विचार पक्का कर लिया था। "यह ठीक है! मैं कुछ

पुलिस वालों को साथ ले लूँगा, जिससे आश्वस्त हुआ जा सके कि लड़ाई समाप्त होन के पश्चात कोई समस्या नहीं उठेगी।''

माननीय चङ ने अपने पुत्र को चाँदी के चार सिक्कों के बराबर बैंक नोट दिए। ''त्वोफू यह लो और थोड़ा घूम आओ। यदि तुम्हें कुछ अच्छी छोटी सफेद नाशपातियाँ मिलें तो खरीद लेना। पिछले कुछ दिनों से मेरी नाक व मसूढ़ों में कष्ट बढ़ गया है।''

त्वोफू ने पैसा ले लिया, पीछे घूमा और जाने को तैयार हुआ। किन्तु अपनी भक्ति एवं कृतज्ञता प्रदर्शित करने के लिये उसने कहा, ''फूहाए जब तक मैं बाहर जाकर वृद्ध पिता के लिये नाशपाती खोज लाँऊ, तब तक तुम ठहरो। जब तुम लड़ने के लिये तैयार हो जाओ, केवल कह देना, मैं तुम्हारा साथ दूँगा। इसमें कहीं धोखा न होगा।'' इसके साथ ही वह अपने कन्धे आगे-पीछे हिलाता चल दिया।

''माननीय चङ, आप...''

''फूहाए, मेरे बेटे, मेरा सुझाव है कि हम ऐसी उलझनपूर्ण परिस्थितियों से अपनी नाव सुरक्षित रूप में खेकर निकाल ले जायें।'' यहाँ माननीय चङ तथा माननीय युन में अन्तर देखने का अच्छा अवसर है। जब युन ने फूहाए द्वारा सहायता की प्रार्थना को अस्वीकार कर दिया, तब उन्होंने फूहाए के समक्ष अपनी पद की श्रेष्ठता प्रदर्शन का निश्चय किया और इस प्रकार के उतावलेपन के कार्य के प्रति अपने अस्वीकार को न्यायसंगत सिद्ध किया। जहाँ तक माननीय चङ का सम्बन्ध है, वे अपने पक्षियों तथा आपेरा गायन में ऐसा डूबे थे कि यद्यपि उन्होंने सहायता करने से इंकार कर दिया था किन्तु उन्होंने यह अधिक सुन्दर ढंग से किया था जिसमें दोनों पक्षों के हितों का ध्यान रखा गया था। ''हम दोनों कहानी कहने का प्रदर्शन क्यों न करें? श्वाङ हओफिङ तथा हङ युङ्थुङ ''पश्चिम की एक यात्रा'' को अभिनीत कर रहे हैं। उसमें तुम्हारे सुनने योग्य कुछ अति सुन्दर है।''

''अच्छा, मैं...सम्भवतः फिर कभी। आज, मैं...'' फूहाए निराश हो गया, किन्तु इसे व्यक्त न होने देने का प्रयास किया। वह बरबस असामान्य रूप से हँसा। वह त्वोफू के ढोंगपूर्ण व्यवहार से घृणा करता था, जो अपनी असमर्थता से भली-भाँति परिचित था फिर भी अपना गर्व प्रदर्शन तथा डींग मारना जारी रखता था; वह कुछ ऐसा था कि जैसे मात्र बातों से ही अपने को श्रेष्ठ सिद्ध कर सकेगा। त्वोफू का दलों के बीच मारपीट आरम्भ करने का विचार ही पर्याप्त प्रमाण था कि वह कितना जड़बुद्धि था। क्या वह नहीं जानता था कि पूर्व में बैनरमैन द्वारा उपार्जित सम्मान अब तक बहुत घट गया था। किन्तु फूहाए माननीय चङ से और अधिक घृणा करने लगा। प्रत्यक्षतः जो परिस्थिति थी, उसके सम्बन्ध में कोई वास्तविक रुचि न दिखाकर यदि वे चिन्ता कर रहे थे तो केवल ''पश्चिम की यात्रा'' की कहानी सुनाने

वालों के कार्यक्रम में उपस्थित होने की चिन्ता।

मेरी सबसे बड़ी बहिन अपनी सास के पीछे कमरे में गयी और फूहाए के हाथ में उसका कपड़े का बण्डल दिया, जिसमें कुछ लपटा था। कोई भी आगन्तुक खाली बण्डल लेकर वापस नहीं जा सकता था। यह शिष्टाचार था और दोनों महिलाओं के वार्तालाप ने बाहर चलने वाली व्यक्तिगत वार्ता के लिये अधिक समय सुलभ कर दिया। मेरी सबसे बड़ी बहिन का सास को भोजन से प्रेम था, इसलिये घर में इधर-उधर उपहारों की कोई कमी न रहती थी। ऊँच-नीच पर विचार कर लेने के पश्चात वे बादाम के पाउडर का एक डिब्बा लेकर आईं, जिसका दिनांक था "क्वाङश्वी शासन का सोलहवाँ वर्ष।"* मेरी बड़ी बहिन ने अपनी सास का यह कहकर समझा दिया था कि "यह सुन्दर है, जब तक हम बण्डल में कुछ न कुछ बाँधते रहेंगे, हमें कोई दोष नहीं दे सकता।"

फूहाए ने बादाम के पाउडर के डिब्बे के साथ बण्डल को स्वीकार कर लिया, नमन किया अपने आतिथ्य को धन्यवाद दिया और क्षमा प्रार्थना की, घर के मुख्य द्वार से निकल कर उसने बण्डल खोला उसमें रखी वस्तुओं को देखा तथा तुरन्त ही उसे एक कूड़े के ढेर में डाल दिया। उन दिनों, प्रत्येक स्थान में कूड़े के ढेर थे—भेद खोलने के लिये अत्यन्त सुविधाजनक स्थान।

10

यहाँ फूहाए के चरित्र का एक सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत है: यदि यह अफवाह उड़ाई गयी हो कि "दिव्य सद्गुणों की रसायनशाला" ने "दस सहस्त्र उपचार बटी" का अपना सारा भण्डार बेच डाला है, तो भी वह स्वयं वहाँ जाकर उसे देखने का हठ करेगा। देखना ही विश्वास करना है, सुनना नहीं। फूहाए को तनिक भी आभास न था कि मास्टर तिङ उसकी अगवानी करेंगे अथवा नहीं। वह मात्र एक साधारण बैनरमैन सैनिक था। तो भी उसने जाकर अपने भाग्य की परीक्षा करने का निश्चय किया। यदि वह सफल हुआ तो अच्छा ही होगा। किन्तु वह जानता था कि यदि वह तिरस्कृत हुआ, तो कोई अन्य मार्ग खोजेगा।

फूहाए यह भी जानता था कि उसे मास्टर तिङ से मिलने के लिये थोड़ा सा भी अवसर पाने में तिङ के द्वाररक्षक को घूस देनी होगी। जब वह भुने मुर्गे का एक जोड़ा लेने प्येनईफाङ रेस्तराँ गया, उसने कुछ भी नहीं बताया कि मैनेजर वाङ के सम्बन्ध में क्या हो रहा था। प्रबन्धक वाङ की सहायता करने का अर्थ था उसमें पूरी तरह लग जाना, और वह किसी अतिरिक्त परेशानी से प्रबन्धक वाङ की रक्षा करना

---

* 1891, कहानी का क्रम 1899 में आरम्भ होता है।

चाहता था।

अपने हाथ में एक जोड़ा भुना मुर्गा लिये, जो एक एक स्वच्छ बुने हुए थैले में लपटे थे जिस पर प्येनईफाङ रेस्तराँ की काले अक्षरों में छपी हुई रसीद चिपकी थी, फूहाए अपने आपको किसी प्रकार न रोक सका और बुदबुदाया, "यह हँसी के लिये अच्छा है।" उसने भेंट देना और छोटी-मोटी घूस देना तिरस्कार के योग्य समझा, किन्तु इसके साथ ही वह वास्तव में इसमें स्वयं को उलझाने में प्रसन्नता का अनुभव कर रहा था। एक बैनरमैन के रूप में क्या बुने हुए थैलों तथा भुने मुर्गों के दुष्चक्र से बाहर निकल पाने का कोई मार्ग था?

फूहाए मास्टर तिङ के द्वाररक्षक के पास पहुँचा और उसे दो मुर्गे देकर समझाया कि वह प्रबन्धक वाङ की आरे से आया है। "प्रबन्धक वाङ की एक छोटी सी समस्या है। वास्तव में वह समस्या आलपिन की नोक से ज्यादा बड़ी भी नहीं है। उसे आशा है कि मास्टर तिङ उसके समाधान में सहायक होंगे। प्रबन्धक वाङ मात्र एक सामान्य व्यापारी हैं। वे मास्टर तिङ से व्यक्तिगत रूप से मिलने में संकोच का अनुभव कर रहे हैं अतः उन्होंने किसी अन्य को औपचारिक भेंट करने भेजा है।" घुमा फिराकर बातों बातों में फूहाए ने द्वार रक्षक को यह सूचित कर दिया कि उसके पिता एक कर्नल तथा तृतीय श्रेणी के टोपीधारी अधिकारी थे। वह जानता था कि मास्टर तिङ धनी होने के साथ ही प्रभावशाली हैं, किन्तु वे कभी कोई अधिकारी नहीं रहें। फूहाए ने द्वाररक्षक से यह भी स्पष्ट कर दिया कि वह इतना लापरवाह न रहेगा कि चाँदी की सिलों और नकद ताँबे या भुने मुर्गे के विनिमय मूल्य के सम्बन्ध में कुछ चर्चा करे। फूहाए भली-भाँति जानता था कि तिङ भवन में उपभोक्ता वस्तुओं की विनिमय दर तथा मूल्य अधिकतम थे और जो पूर्ण रूप से द्वाररक्षक के हाथों में थे। यदि संयोगवश मास्टर तिङ एक भुने मुर्गे का मूल्य पूछ बैठें, तो फूहाए निश्चय ही यह कहेगा कि "आजकल भुने मुर्गों का मूल्य आसमान छू रहा है।" स्वाभाविक है कि फूहाए ने ऐसी कोई सूचना नहीं दी कि जैसे वह किसी न्यायालय में खुली गवाही देने जा रहा हो। वह विवेकशील तथा कुटिल दोनों ही था, पहले कुछ इधर-उधर की बातें करके उसने द्वाररक्षक को उलझाया और फिर वार्ता को दूसरी ओर मोड़ दिया। इस प्रकार लगभग एक घण्टे तक वह द्वाररक्षक को उलझाए रहा, किन्तु तो भी द्वाररक्षक ने फूहाए को तनिक भी आभास न दिया कि वह उसकी सूचना पहुँचाने जा रहा था। इसी बिन्दु पर फूहाए ने उससे कहा कि वह मास्टर तिङ से भेंट करने के लिये तीन दिन और तीन रातों तक रुका रहेगा। फूहाए द्वारा लाए गए उन दो भुने मुर्गों को सामने पड़ा देखकर द्वाररक्षक उसे वापस नहीं भेज सकता था।

किन्तु द्वाररक्षक अब ऊब रहा था। वह अलसाय सा खड़ा रहा और बोला, "अच्छा ठीक है, मैं उनसे कहूँगा कि तुम आए हो।"

सौभाग्य से, मास्टर तिङ प्रसन्न थे और उन्होंने तुरन्त फूहाए को बुला भेजा।

मास्टर तिङ एक जागरूक मानचू बैनरमैन का जीवन व्यतीत कर रहे थे। उनके पिता तथा बाबा सरकिट अधिकारी थे और अपने सरकिट के प्रत्येक स्टाफ से उन्होंने सोने और चाँदी की सिल्लियाँ, मोती और गोमेद इकट्ठा कर लिये थे। मास्टर तिङ एक अधिकारी बनने के लिये उत्सुक न थे और चूँकि उनमें से अधिकाँश सिलें खर्च न हुई थीं, अतः वे तमाम चिन्ताओं व कष्टों से मुक्त होकर अपना अबाधित चिन्तामुक्त जीवन व्यतीत कर रहे थे। सन 1898 के सुधार आन्दोलन के समय सुधारवादियों के प्रति किसी न किसी रूप में उनकी न्यूनाधिक सहानुभूति थी। वे माननीय युन तथा माननीय चङ की भाँति इससे भयभीत न थे कि यदि सुधार आ जायेंगे तो उनका मासिक भत्ता समाप्त हो जायेगा। मास्टर तिङ को आर्थिक दृष्टि से चिन्तित होने का कोई कारण न था, क्योंकि उनके अपने पड़ोस के आधे मकानों पर उन्हीं का स्वामित्व था। वास्तव में वे केवल उन मकानों का किराया इकट्ठा करके ही अपना जीवन आराम से व्यतीत कर सकते थे। मास्टर तिङ का विश्वास था कि कोई साँसारिक चिन्ता उन्हें सता न सकेगी। वे यहाँ तक सोचते थे कि एक दिन वे "लाल भवन का स्वप्न" के नायक च्या पाओय्वी की भाँति एक बौद्ध साधु बन जायेंगे। आंशिक रूप में यही तथ्य व्यापार के प्रति उनकी उपेक्षा का परिचय देता है। उनके मित्र निरन्तर उन पर दबाव डालते रहे कि वे उनके व्यापार में पैसा लगाए, किन्तु ऋण देने के सम्बन्ध में उन लोगों के सारे निवेदन उन्होंने ठुकरा दिए। वे चीन में उद्योग लगाने के सम्बन्ध में ली हुङचाङ एण्ड कम्पनी की योजनाओं पर अपना मत व्यक्त करने के लिये तैयार नहीं थे, क्योंकि वे नहीं जानते थे कि कौन सा उद्योग किस कार्य के लिये होगा, यद्यपि वे अनुभव करते थे कि उद्योग शब्द ही इतना प्रचलित है कि जिसे सरलता से टाला नहीं जा सकता। मास्टर तिङ एक सम्पन्न परिवार के वंशज थे। जब समय का ज्वार इतनी तीव्र गति से उठा कि वे भी वह सब देखने से अपने को रोक न सके जो ठीक उनकी नाक के नीचे हो रहा था, तब कहीं जाकर वे संसार को परखने के लिये बैनरमैनों में अन्तर्निहित अपनी कुछ रीतियों का धीरे-धीरे पुनः संशोधन करने की विवशता का अनुभव करने लगे किन्तु उनकी सिलें तथा स्थावर सम्पत्ति ने उनकी दृष्टि पर पर्दा डाल दिया था तथा परिस्थिति को सम्पूर्ण परिप्रेक्ष्य में न अनुभव करने दिया। वे अस्थाई रूप में स्पष्टता का भी अनुभव करते थे किन्तु उनके पीछे सदा ही गहन अंधकारपूर्ण क्षण भी आ जाते थे। वह एक दस वर्षीय बालक की भाँति चतुर तथा अप्रत्याशित कार्य करने वाले थे।

मास्टर तिङ कम से कम एक सिद्धान्त पर विश्वास करते थे। महान छिङ साम्राज्य में पर्याप्त शक्ति एवं सम्पन्नता लाने के लिये शैक्षिक योजनाओं को लागू

करना आवश्यक था और इसे किस प्रकार पूरा किया जा सकता था? साक्षरता में वृद्धि के साथ ही पूरा समाज अधिक सुसंस्कृत बन सकेगा। वह जीवन कितना सुन्दर होगा जब अनेक व्यक्ति काव्य रचना करेंगे तथा छुट्टियों के दिनों, जैसे ड्रेगन नौका त्योहार, मध्य शरद त्योहार और नवें मास की नवीं तिथि का त्योहार पर चावल की मदिरा का पान करेंगे। यदि ऐसा हो जाये तो विश्व महान शान्ति और सम्पन्नता के युग में प्रवेश करेगा। व्यावहारिक पक्ष में अपने एक औसत लम्बाई-चौड़ाई के निवास को स्कूल में परिवर्तित करके और एक दूसरा मकान बेचकर उसके पैसे से मेज, कुर्सी तथा बेंचें खरीदकर, मास्टर तिङ एक स्कूल की सभी आवश्यकताएँ पूरी कर लेंगे। यह इतना सरल था कि वह केवल अपनी दो छोटी सम्पत्तियों को त्याग करके एक यश प्राप्त कर लेंगें कि "उन्होंने शिक्षा के हित में अपना घर तोड़ दिया।"

मास्टर तिङ ने फूहाए द्वारा कही गयी प्रत्येक बात को ध्यानपूर्वक सुना तथा उपयुक्त क्षण पर ही बीच-बीच में "अम्" "आह" कहते रहे। जब फूहाए ने बोलना आरम्भ किया, वह बहुत परेशान था किन्तु जैसे ही उसने मास्टर तिङ को अपनी बातों की ओर इतना गहरा ध्यान देते हुए देखा वह खुलकर मुस्कराया। उसने स्वतः कहा, "यदि मैंने स्वयं औषधालय जाकर न पूछ लिया होता, तो मैं न जान सकता था कि वह वास्तव में "दस सहस्त्र उपचार बटी" होगी कि नहीं। यद्यपि वह अब अधिक अशान्वित था, किन्तु फूहाए अपना मामला प्रस्तुत करते समय अधिक अतिशयोक्ति से दूर रहा, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि मास्टर तिङ अधिक उन्मत्त हो जायें प्रथम तो वह आत्मविश्वास की कमी अनुभव करता था तथा उसके अतिरिक्त मास्टर तिङ "स्वर्ग के प्रिय पुत्र" थे, जिनके साथ एक अजेय वंश का नाम जुड़ा था।

जब फूहाए ने अपनी रिपोर्ट देना समाप्त की, मास्टर तिङ ने कुछ क्षण ध्यानमग्न होने के लिये अपने नेत्र बन्द कर लिये। उन्होंने जब नेत्र खोले, तब अपनी चौड़ी जाँघ, अपने श्वेत मांसल हाथ से ठोकी (वे अब भी अपने अँगूठे में एक धनुर्धारी की हरित मणियुक्त अँगूठी पहने थे) और कहा, "आह! आह! मैं सोच रहा हूँ कि तुम बहुत अच्छे व्यक्ति हो! तुम मेरे स्कुल के संचालक क्यों नहीं बन जाते?"

"आह?" फूहाए पूर्ण रूप से आश्चर्य में पड़ गया।

"एक शब्द भी न बोलो, तनिक मेरी बात सुनो," मास्टर तिङ ने बड़ी अधीरता से कहा। "ऐसा क्यों है कि महान छिङ साम्राज्य...आह?" जब कभी वह प्रत्यक्ष रूप से कुछ कहने से बचना चाहते थे, वह बीच में "आह?" बोलते थे, जिससे कि उनके अतिथि यह अंदाज लगाते रहें कि वास्तव में उनके कथन का आशय क्या है? "जिस प्रकार के बैनरमैन के सम्बन्ध में तुम अभी वार्ता कर रहे थे, अनेक... वाला, उसका नाम क्या है? आह? उसे विदेशियों के तलवे क्यों चाटने पड रहे हैं? चूँकि उसने

जल्दी ही स्कूल छोड़ दिया था! उसने सही सोचना कभी नहीं सीखा। हमारा एक स्कूल होना चाहिए। हमारा एक स्कूल अवश्य होना चाहिए! और मेरे लिये तुम उसका संचालन करोगे। मैं कहता हूँ, तुम वास्तव में एक अच्छे व्यक्ति हो। तुम ही इस कार्य के लिये उपयुक्त व्यक्ति हो। हा, हा, हा।"

"मैं? स्कूल चलाऊँ? मैं तो यह भी नहीं जानता कि स्कूल कैसा होता है।" फूहाए को कठिनाइयों का कोई भय न था तो भी जब मास्टर तिङ ने उससे स्कूल चलाने के लिये कहा, वह लगभग घबरा गया। मास्टर तिङ पुनः हँसे। जो लोग निरन्तर उनके सम्पर्क में आते रहते थे, वे फूहाए के बोलने के तरीके से भिन्न प्रकार से बोलते थे। जब भी वह उन्हें कोई आदेश देते, चाहे वह उनके पूर्वजों की कब्र खोदने का आदेश ही क्यों न रहा हो वे सदा सिर हिलाकर तथा हाँ कह कर ही उत्तर देते थे। वे सभी जानते थे कि मास्टर तिङ ने जो अभी कहा वह भूल जायेंगे और अन्ततः उन्हें कोई कब्र खोदने की आवश्यकता न पड़ेगी। फूहाए एक बुद्धिमान व्यक्ति था, किन्तु मास्टर तिङ जैसे व्यक्तियों से उसका सम्पर्क शायद ही कभी हुआ हो। इस स्थिति में उनकी उपस्थिति में उसके लिये शान्ति का अनुभव करना कठिन हो गया। मास्टर तिङ के लिये फूहाए की बातें सुनते रहना एक असाधारण मनोरंजक अनुभव था। लगभग ऐसा मनोरंजक जैसे किसी निर्धन व्यक्ति के लिये भरपेट मक्के की गरम रोटी खाना। "तुम एक अत्यन्त विश्वसनीय व्यक्ति जैसे जान पड़ते हो। विश्वसनीय व्यक्ति प्रत्येक कार्य भली भाँति करते हैं। आह! मैं एक लम्बी अवधि से चारों ओर खोज में रहा और अनेक प्रकार के व्यक्तियों के पास गया, किन्तु उनमें से किसी पर विश्वास नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिये मेरे उस द्वाररक्षक को ही लो। आह! जब भी मैं एक छोटा खरगोश लाने का आदेश देता हूँ, वह उससे इतना पैसा बना लेता है कि जिससे एक ऊँट खरीदा जा सके। हा हा हा!"

फूहाए कहने वाला था, "अच्छा तब आप उसे निकाल क्यों नहीं देते?" किन्तु जैसे ही ये शब्द उसकी जबान पर आने को थे उसने उन्हें रोक लेने का निश्चय किया, केवल इस कारण से कि मास्टर तिङ पुनः कहीं जोर से न हँसने लगे।

"आह? मैं जानता हूँ कि तुम क्या कहने जा रहे थे। पाँच वर्ष पूर्व ही मैंने इसे निकाल देने का विचार किया था। किन्तु उसके बिना मैं क्या कर सकता था? मैं यह कैसे जान पाऊँगा कि एक नया आदमी कहीं एक खरगोश लाने में तीन ऊँटों के मूल्य के बराबर पैसा न बना ले?"

फूहाए हँसना चाहता था, किन्तु उसने अपने को रोक लिया। वह अब भी बड़ी परेशानी का अनुभव कर रहा था। वह अपने मूल उद्देश्य पर लौट आया। "अच्छा. .. अच्छा तब, मास्टर तिङ, आप का मैनेजर वाङ की समस्या हल करने के सम्बन्ध में क्या विचार है?"

"आह, वह शानतुङ का पुराना बूढ़ा आदमी है।"

इन शब्दों ने फूहाए के हृदय पर जैसे छुरी चला दी हो। उसने अपना सिर झुका लिया और चुप रहा।

"वह क्या है? वह क्या है?" मास्टर तिङ ने बड़ी व्यग्रता से उस पर दबाव डालते हुए पूछा। मास्टर तिङ घर में एक छोटे सम्राट की भाँति थे। फलस्वरूप वे बहुधा अपने को बिल्कुल अलग तथा अकेला अनुभव करते थे। वे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था तथा जनता के जीवनयापन की समस्याओं पर निकट से ध्यान देते थें, जिससे कि वे अपनी जानकारी को कोई अवसर आने पर तैयारी के साथ प्रस्तुत कर सकें। उन्हें याद था कि किस प्रकार चूके ल्याङ ने अवकाश ग्रहण करने के पश्चात भी वीरतापूर्ण कार्य किए थे। मास्टर तिङ बचपन से ही घर की चहारदीवारी में ही रहे थे और शायद ही कभी अपने घर के आँगन या बगीचे से बाहर मिकले हों। इसके फलस्वरूप उन्हें विश्वास था कि चावल, गेहूँ, मुर्गियाँ,बत्तखें, मछली तथा सुअर का मांस सभी कुछ उनके परिवार की रसोई में ही पैदा होते हैं और ताजी सफेद कमलं ककड़ी तथा आलूचों का खट्टा रस उनके बर्फ के डिब्बे में बनते हैं। उन्हें सामान्य जनों की समस्याओं तथा कठिनाइयों का सामना कभी नहीं करना पड़ा था। इससे उनमें और अधिक निराशा और एकाकीपन आ गया। घर में उनके तमाम आदेशों का पालन करने के लिये अनेक कर्मचारी थे और जब भी वे मित्रों या सम्बन्धियों से मिलने जाते थे उनके साथ ऐसा व्यवहार करते कि जैसे वही ब्रह्माण्ड का केन्द्र हैं। किन्तु यही सब लोग उसे सदा घेरे रहकर ऐसी ही अरुचिकर बातें किया करते थे। उनमें नए व्यक्तियों से मिलने की भूख थी तथा सच्चे मित्र बनाने की तीव्र कामना थी। फलस्वरूप जिन नए लोगों से वह पहले मिल पाते थे उन्हें वह अमूल्य निधि समझते थे और उनसे व्यक्तिगत सम्बन्ध बढ़ाने की आशा रखते थे, जिससे कि वे वास्तविक जीवन के सम्बन्ध में अधिक जान सकें। कोई भी नया माली या सुनहरी मछली पालने वाला नौकर भी उनकी अमूल्य निधि तुरन्त बन जाता था। तीन या चार दिन तक वे सुबह से रात उसके पीछे लगे रहते और फूलों तथा सुनहरी मछलियों के बारे में सब कुछ सीखते जाते थे। किन्तु वह उनके द्वाररक्षक की भाँति उनके साथ ऐसा अधिक शिष्टाचार बरतता था कि जिससे वे अनुभव करते कि वह उनकी कोई चिन्ता नहीं कर रहा है। उस व्यक्ति की नवीनता समाप्त हो जाने के पश्चात मास्टर तिङ उसके पीछे जाना बन्द कर देते थे और वह व्यक्ति चुपचाप अपने निश्चित कार्यों को करता रहता था तथा जब तक आवश्यकता न होती अपना सिर न उठाता था। भिन्न प्रकार के दो पक्षियों की भाँति इनमें से प्रत्येक एक दूसरे के अस्तित्व को स्वीकार करने को इच्छुक नहीं रहता था।

अपने वार्तालाप के थोड़े समय में ही फूहाए मास्टर तिङ की नवीन खोज बन

गया। वह देखने में सुन्दर था, उसकी बातचीत का ढंग निराला था और यद्यपि वह एक बैनरमैन था, तो भी दूसरे बैनरमैनों की भाँति जिन्हें मास्टर तिङ जानते थे, व्यवहार नहीं करता था, कम से कम उसके द्वाररक्षक की भाँति नहीं। वह द्वाररक्षक! पूरे वर्ष वही लम्बा गाउन पहने रहता था जो नीचे उसके पैरों तक लटकता था। वह दो पैरों वाली बिल्ली की भाँति तनिक भी ध्वनि किए बिना इधर-उधर डोलता रहता था।

किन्तु फूहाए अब दुविधा में फँसा था। वह क्या करें? इस पर विचार करने के पश्चात उसने यह अनुभव किया कि मास्टर तिङ अपनी कम्पनी के कैप्टन नहीं थे और इससे कुछ अन्तर नहीं पड़ता यदि वह उन्हें कोई चोट पहुँचाए। फूहाए ने उनके सामने सीधे ही बात रखने का निश्चय किया, "मास्टर तिङ! इसकी मुझे कोई चिन्ता नहीं कि मैनेजर वाङ शानतुङ से आए हैं या शानशी से, वे हमारे ही जैसों मे से एक हैं। उन्हें विदेशियों से किसी प्रकार की धमकी न मिलनी चाहिए। जिस प्रकार वे विदेशी हमारे लोगों के साथ निकृष्ट व्यवहार कर रहे हैं, क्या आप उसकी निन्दा न करेंगे?" फूहाए को अब चैन मिला। यह जीवन का एकमात्र अवसर था। यदि मास्टर तिङ ने उसे सीधे निकाल न दिया तो वह यह मान सकता था कि सब कुछ उसकी इच्छानुसार होगा।

मास्टर तिङ कुछ क्षण रुके और अपने मन में कहा, "यह दुष्ट क्यों सोचता है कि यह मुझे शिक्षा दे रहा है, मैं इसके लिये कुछ न करूँगा।" किन्तु उन्होंने अपने को रोक लिया जब उन्होंने यह अनुभव किया कि वह दुष्ट एक नव प्राप्त पुरस्कार था, अतः उसे इतनी सरलता से टाल न देना चाहिए। "उनसे घृणा करने से क्या लाभ? हमें उन्हीं का दाँव उन्हीं पर चलकर उन्हें परास्त करना पड़ेगा।" मास्टर तिङ अपने को सबसे अधिक बुद्धिमान मानते थे। वे अफीम नहीं पीते थे, क्योंकि वे जानते थे कि किसी समय लिन चश्वी* नाम का व्यक्ति रह चुका था। वे अभी अधिकारी न थे और इस प्रकार भ्रष्टाचार से मुक्त थे। यद्यपि धन व्यय करना उनका व्यसन था, उनका पैसा उन्हें अपने पूर्वजों से प्राप्त हुआ था, इसलिये जब कभी उनकी तीव्र इच्छा होती तब वे पानी में सिक्के फेंकते, बिना यह विचार किए कि कोई क्या कहेगा।

"मास्टर तिङ, आपने प्रान्तों में 'बाक्सर्स' (गुप्त चीनी संगठन के विद्रोहियों) के सम्बन्ध में सुना होगा?"

मास्टर तिङ के लिये यह आश्चर्यजनक बात थी कि फूहाए इस विषय पर चर्चा छेड़ेगा। उन्होंने अपने ऊपरी होंठ पर मुलायम काले बाल अपनी किंगफिशर जेड की

---

* लिन चिश्वी उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ के दिनों में सम्राट की सरकार द्वारा अफीम की समस्या के समाधान हेतु नियुक्त किए गए थे।

अँगूठी से रगड़े जिन्हें वह हर तीसरे दिन साफ करते थे। मास्टर तिङ को विश्वास था कि संसार में केवल वही अकेले व्यक्ति हैं जो राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय विषयों पर चर्चा करने की वास्तविक योग्यता रखते हैं। इस सम्बन्ध में तथ्य ये थेः वह अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों में अनेक उच्चपदस्थ कुलीन जनों को गिनते थे! कोई पूछताछ किए बिना ही तमाम वास्तविक महत्वपूर्ण घटनाओं की सूचनाएँ उनके कानों तक पहुँच जाती थीं। यदि वह सूचना उनके लिये हर्ष का विषय बनती तो वह उस पर विचार करते रहते और यदि नहीं तो वह उसे एक कान से सुनते और दूसरे कान से निकाल देते थे। इनमें से किसी विषय पर प्रसन्नतापूर्वक विचार करते वह राष्ट्रीय विषयों पर अपनी चिन्ता रखने का दावा कर सकते थे, किन्तु यदि उन पर विचार न करने का निर्णय करते तब वह अपने को परेशान होने से बचा सकते थे और ऐसी बातों को अस्तित्वहीन मान लेते थे। किसी प्रकार भी फूहाए नाम का यह व्यक्ति जो एक नगण्य बैनरमैन सैनिक था, उसे राष्ट्रीय विषयों पर इतने सामान्य रूप में चर्चा करने का कोई अधिकार न था। लम्बे समय से मास्टर तिङ प्रान्तों में विदेशी गिरजाघरों से सम्बन्धित अनेक घटनाओं के सम्बन्ध में सुनते आ रहे थे, किन्तु वे उन पर बहुत कम ध्यान देते थे क्योंकि वे पेइचिङ से बहुत दूर घटित हो रही थीं। जब वह इन घटनाओं के सम्बन्ध में उन मित्रों व सम्बन्धियों से चर्चा करते जो उच्च मानचू अधिकारी थे, तब वह उन लोगों के विदेशी-विरोधी दृष्टिकोण से तुरन्त सहमत हो जाते थे। किन्तु अपने मन में, यद्यपि उन्होंने कभी व्यक्त नहीं होने दिया, वह अपने उन सम्बन्धियों जो सम्पन्न उच्च कुलीन जन थे, के इस विचार से सहमत थे : "कुछ अपमान सहन कर लो किन्तु आर्थिक हानि न उठाओ।" आखिरकार विदेशी केवल कुछ व्यापारिक लाभ ही तो प्राप्त करना चाहते थे। इसकी उन्हें छूट क्यों न दे दी जाये? साधारण-सी तो बात थी। जहाँ तक "बाक्सर्स" का सम्बन्ध था, क्या कोई कल्पना कर सकता था कि उनके कारण अकाल पड़ जायेगा? मास्टर तिङ के लिये फूहाए को एक खण्डनात्मक उत्तर देने की आवश्यकता थी। "हाँ, मैंने इस सबके सम्बन्ध में सुन रखा है और वे सभी बातें झूठी हैं। तनिक विचार करो, विदेशियों को कुछ देहाती लफंगे अपनी गदा या लाठियों से कैसे परास्त कर सकते हैं? आह? आह?" सीधे फूहाए के पास जाकर, अपनी नाक को लगभग उसके मस्तक से छू आते हुए, मास्टर तिङ ने "आह? आह?" की पुनरावृत्ति की।

फूहाए खड़ा हो गया। मास्टर तिङ ने गहरे सन्तोष के साथ "हा, हा" किया। फूहाए न तो विदेशियों की शक्ति का अनुमान लगाने में समर्थ था और न ही वह महान छिङ साम्राज्य की शक्ति का ही अनुमान लगा सकता था। किन्तु जिस बात ने उसके लिये मास्टर तिङ के तर्क को काटना और अधिक कठिन बना दिया, वह थी अपनी निज की शक्ति को समझने की असमर्थता। सर्वोत्तम जो वह कर सकता

था वह था अपनी समझदारी में परिवर्तन करना। "मास्टर तिङ, आप हमारे समाज के सर्वाधिक सम्मानित व्यक्ति हैं। आप ही केवल मात्र ऐसे व्यक्ति हैं जो हमारी सहायता कर सकेंगे। यदि आप अपने हाथ पीछे बाँधे खड़े रहे तब हम गरीब लोग किससे सहायता माँग सकेंगे?"

मास्टर तिङ को यह विचार विशेष मनोरंजक लगा, किन्तु वे हँसे नहीं। "यह हर प्रकार से एक बड़ा झमेला है, अत्याधिक उलझन भरा।" अपना सिर हिलाते हुए उन्होंने कहा। फूहाए ने देखा कि यह सिर हिलाना केवल आडम्बर है, अतः उसने अपने तर्क को पुनः प्रस्तुत किया। "आप हमारी सहायता करेंगे, क्या नहीं करेंगे? निश्चय ही आप करेंगे।"

"मैं सहायता हेतु क्या कर सकता हूँ?"

फूहाए का मस्तिष्क पुनः शून्य हो गया। उसका विचार था कि मास्टर तिङ के केवल एक बार वहाँ जाने की आवश्यकता पड़ेगी और गिरजाघर का प्रभाव समाप्त किया जा सकेगा, किन्तु अब ऐसा जान पड़ रहा था कि मास्टर तिङ ऐसा कुछ न करेंगे। फूहाए को सहसा शिछङ का ध्यान आया। शिछङ सदा ही ठीक कहता था। यदि अधिकारीगण सामान्य जनता के कष्टों की अवेहलना करते रहेंगे, तब साधारण जनता को सब मामला अपने हाथों में लेना पड़ेगा। इस सम्बन्ध में दो मार्ग न थे।

"मुझे विचार करने दो," मास्टर तिङ अपने मन में विचार करने लगे। "मैं भोजन पर रेवरेण्ड को, उनका क्या नाम है, क्यों न आमन्त्रित कर लूँ? इससे सारी समस्या का समाधान हो जायेगा, क्या ऐसा न होगा? आह?"

फूहाए इस समाधान से पूर्ण सन्तुष्ट न था। तो भी चूँकि इस सीमा तक पहुँच पाने में वह अपना सौभाग्य मान रहा था, अतः इससे अधिक वह और कुछ न कह सकता था। "मैं वास्तव में आपको कष्ट देकर दुखी हूँ।" फूहाए ने मास्टर तिङ को नमन किया। वह वहाँ से जाने के लिये अत्यन्त व्यग्र हो रहा था। मास्टर तिङ के घर का फर्नीचर बहुमूल्य बर्मी लकड़ी का बना था तथा दीवारों पर प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा बनाए गए रंगीन चित्र तथा सुलेख के स्क्रोल लटक रहे थे। बीच-बीच में मास्टर तिङ का युवा भृत्य गरम पानी देने या चाय की पत्ती बदलने के लिये आ जाता था। मास्टर तिङ की चाय सेवा चिङतचन के सुन्दर पात्रों में की जाती थी और वे द्विगुणित चमेली की सुगन्ध युक्त अत्यन्त उच्च कोटि की चाय का प्रयोग करते थे। इन सुविधाओं के होने पर भी फूहाए अपने को मानसिक तथा शारीरिक दोनों ही प्रकार से अशान्त व पीड़ित अनुभव कर रहा था। सर्वप्रथम फूहाए यह नहीं जान पा रहा था कि मास्टर तिङ किस प्रकार के व्यक्ति थे और दूसरे वह यह नहीं जानता था कि उनसे किस प्रकार वार्ता करना उचित रहेगा। वह केवल शीघ्रताशीघ्र मास्टर तिङ के घर से बाहर जाना चाहता था। यद्यपि सड़कें गन्दी तथा कोलाहलपूर्ण थीं और

बाहर की वायु धूल तथा घोड़ों की पेशाब की गन्ध से भरी थी, किन्तु फूहाए के लिये वही घर जैसा था।

किन्तु मास्टर तिङ उसे नहीं छोड़ रहे थे। जैसे ही फूहाए जाने को हुआ, मास्टर तिङ ने पूछा, "तुम अपने खाली समय में क्या करते हो? तुम पुष्पपोषण करते हो या गोल्ड फिश? क्या तुम्हें झींगुर लड़ाना पसन्द है?" इसके पूर्व कि फूहाए कुछ कहे मास्टर तिङ ने पुष्पपोषण, गोल्ड फिश तथा न जाने किस किस के विषयों में मूर्खों की भाँति प्रलाप करना आरम्भ कर दिया, किन्तु तुरन्त ही उन्होंने अपनी बातों को नीली आँखों और सफेद लम्बे बालों वाली अपनी पालतू बिल्लियों के जोड़े के वर्णन की ओर मोड़ दिया। फूहाए कह सकता था कि मास्टर तिङ इस सूर्य के नीचे वाली प्रत्येक वस्तु के सम्बन्ध में कुछ न कुछ जानते थे। किन्तु वे इनमें से किसी के विशेषज्ञ न थे। फूहाए ने निश्चय किया कि वह उनकी बातें बिना टोके सुनता रहे जिससे कि उसे जान छुड़ाने का उपयुक्त अवसर मिल सके।

फूहाए ने यह भी देखा कि मास्टर तिङ की भाषा भी अत्यन्त निराली थी। सामान्यतया फूहाए स्वयं भी दो प्रकार की बोलियों का प्रयोग करता था। प्रथम थी नित्यप्रति की जाने वाली बोलचाल की लक्षणात्मक अथवा उपदेशात्मक, अर्थहीन चित्रकारिता तथा कुछ मानचू वाक्यों से युक्त शैली जिसे बैनरमैन सामान्य रूप से प्रयोग करते थे। किन्तु हान चीनी उसे सरलता से समझ लेते थे। उसे इसी प्रकार की बोली पसन्द थी, क्योंकि वह स्वाभाविक रूप से उसकी समझ में आती थी ओर जीवन्त तथा सरल दोनों ही थी। दूसरी प्रकार की सामाजिक व्यवहार में आने वाली अधिक औपचारिक भाषा थी, जिसे वह विशेष रूप से तब प्रयोग करता था जब उसे अपने कमाण्डिंग अधिकारियों से मिलना होता अथवा ऐसे अवसरों पर जब उसे महत्वपूर्ण अतिथियों का अभिनन्दन करना होता था। सम्राट के समक्ष वह कभी प्रस्तुत नहीं हुआ, किन्तु वह कल्पना करता था कि यदि कभी दरबार में राज्य सम्बन्धी विषयों पर विचार-विमर्श हेतु बुलाया गया तब वह इसी दूसरी प्रकार की शैली का प्रयोग सम्राट के समक्ष अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत करते समय करेगा। इस प्रकार की बोली के लिये वह अपने मामा "मेघ मण्डप" को एक आदर्श मानता था। यहाँ पर प्रथम आवश्यकता थी, भाँति-भाँति के सुन्दर वाक्यांशों के प्रयोग की, यथाः "आपका शुभ नाम" तथा "आपका प्रतिष्ठित निवास स्थान"। दूसरे, आपको इतने अधिक मानचू शब्दों का प्रयोग करना पड़ता था जितने सम्भव थे, जैसे क्वेइन्यूलू (कर्नल) तथा चीचालान (बटालियन) इत्यादि।...जब भी आप इन शब्दों का प्रयोग करते तब उनका शुद्ध उच्चारण होना आवश्यक था तथा आपके स्वर में कुछ माधुर्य का मिश्रण हो जाने पर वह अधिक प्रभावपूर्ण बन जाती थी। इसके अतिरिक्त इसमें बीच-बीच में "अह, अह" अथवा एक "हाँ, हाँ" जोड़ देने में अधिक सहायता

मिलती थी, जिसके कारण वह और अधिक विनम्र प्रतीत होने लगे। फूहाए को वास्तव में इस प्रकार की दिखावटी प्रभाव वाली भाषा पसन्द न थी और जब भी उसे इसके प्रयोग की आवश्यकता पड़ती तो उसे ऐसा अनुभव होता कि जैसे अपने श्रोताओं पर उसके द्वारा कुछ लादा जा रहा हो। उसमें एक गैर व्यक्तिगत विशेषता थी जो उसे एक नौकरशाही दुर्भाषा या अत्यधिक गर्वोक्तिपूर्ण भाषा बना देती थी।

फुहाए यह जानकर अत्यन्त निश्चिंत हो गया कि मास्टर तिङ न तो इस नौकरशाही भाषा का प्रयोग करते थे और न ही उन्होंने तृतीय अथवा चतुर्थ श्रेणी के अधिकारियों की दमघोटू दुर्गंध से ही मुक्ति पाई थी। किन्तु मास्टर तिङ के सम्बन्ध में दो बातें थीं, जिनके कारण वह परेशान था। मास्टर तिङ की भाषा पूर्णतया बोलचाल की थी जो वर्षों पूर्व प्रचलित थी, किन्तु वर्तमान बोली में उसका प्रयोग कम सुनाई पड़ता था। इससे फूहाए को यह अनुभव हुआ कि वह एक युवा व्यक्ति से कदापि वार्ता नहीं कर रहा था। वास्तव में मास्टर तिङ जब भी उनमें से किसी प्राचीन अव्यवहृत बोलचाल की भाषा के वाक्यों का प्रयोग करते थे, तब वह उसकी ओर देखते हुए गम्भीरतापूर्वक आश्चर्य में पड़ जाता था कि वह वास्तव में कितना वृद्ध थे। दूसरे, मास्टर तिङ बहुधा ऐसी भाषा का प्रयोग करते थे जो यद्यपि पूर्ण रूप से भद्दी तो नहीं थी किन्तु पूर्णतया सम्मानजनक भी न थी। फूहाए सोचता था कि मास्टर तिङ पुरानी बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हैं, क्योंकि वे बहुधा मध्यम तथा निम्न श्रेणी के लोगों से बिरले ही भेंट करते थे या इस कारण से कि वे परिस्थितियों के साथ नहीं चल पा रहे थे। किन्तु वह यह नहीं खोज पा रहा था कि एक अधिकारी वर्ग के परिवार का सुशिक्षित पुत्र किस प्रकार ऐसी भद्दी भाषा का प्रयोग करने में सिद्धहस्त बन सका। सम्भवतया जैसे-जैसे मध्यम श्रेणी के बैनरमैनों की बोली अधिकतम शिष्ट होती गयी, उच्च श्रेणी के मानचुओं की भाषा यदि अशिष्ट ा भी बन पाई हो, तो अधिक सुस्पष्ट अवश्य हो गयी। फूहाए के सामने यह सब समझने का कोई मार्ग न था।

किन्तु फूहाए को सबसे अधिक परेशानी यह थी कि मास्टर तिङ किस प्रकार बिना किसी तर्क-वितर्क के बोल रहे हैं। गोल्ड फिश के सम्बन्ध में बोलते समय वाक्य के बीच में ही उन्होंने अकस्मात तेजी से अपनी बात मोड़ दी और पूछा : "सुनो, जब मैं कल उस विदेशी को यहाँ भोजन पर आमंत्रित करूँ तो मैं उसे सामने के द्वार से आने दूँ या पीछे के द्वार से?" फूहाए ने इसका कोई त्वरित अथवा उपयुक्त उत्तर खोजने में कठिनाई का अनुभव किया। जैसे ही उसने इस विषय पर विचार करना आरम्भ किया, मास्टर तिङ ने स्वयं अपना ही समाधान प्रस्तुत किया। "ठीक है, वह पीछे के द्वार से आएगा। इस प्रकार वह आरम्भ से ही हमारा है। सुनो जब बात चातुर्य पर आ पड़ेगी, वे लाल बालों वाले दैत्य हमारे पास फटक भी न सकेंगे,

आह?"

मास्टर तिङ के घुमाने-फिराने वाले तर्कों को समझने के पश्चात फूहाए ने यह समझना आरम्भ किया कि वह बहुधा गम्भीर विषयों को सामान्य वार्ता तथा परिहास के साथ जोड़ देते हैं, केवल यह सिद्ध करने के लिये कि परिस्थिति पर उनका पूर्ण नियंत्रण है। फूहाए ने देखा कि यद्यपि मास्टर तिङ ऊपर से बिल्कुल अनाड़ी तथा सीधे-सादे प्रतीत होते हैं किन्तु वास्तव में अपने सम्बन्ध में उनकी अपनी धारणाएँ अवश्य थीं। सम्भवतः उन्होंने अर्ध-मूर्खतापूर्ण ज्ञान की गठरी को उच्च अधिकारियों तथा संभ्रान्त व्यक्तियों के साथ अपने लम्बे समय के दौरान संग्रह कर लिया था। फूहाए मास्टर तिङ के क्षण-क्षण परिवर्तनों को पसन्द नहीं करता था और उन प्रश्नों में कोई रुचि नहीं दिखाता था जैसे कि क्या वह विदेशी दैत्य घर में सामने के द्वार से प्रवेश करे अथवा पीछे के द्वार से। वह दो कारणों से वहाँ से जाने के लिये व्यग्र था : पहला, क्योंकि वह अधिकाधिक परेशान हो रहा था और दूसरा, क्योंकि उसे भय था कि मास्टर तिङ उससे स्कूल के संचालन का दायित्व सम्भालने के सम्बन्ध में पुनः आग्रह करेंगे।

11

रेवरेण्ड बुल को तिङ का निमंत्रण मिला। जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि मास्टर तिङ कौन थे, तब वह अधिक उत्तेजित हो गए। एक अमरीकी की भाँति रेवरेण्ड बुल के हृदय में धनी व्यक्तियों के प्रति अधिक सम्मान था। वह करोड़पतियों का आदर करते थे, यह विचार किए बिना कि उनका करोड़ों का धन कहाँ से आता था। चीन से जब उसका मामा अपने को सम्पन्न बनाकर लौटा तब यदि किसी ने भी उससे कहा, "वह बूढ़ा सैनिक का जारज पुत्र एक लफंगे के अतिरिक्त और कुछ नहीं है," रेवरेण्ड बुल उसे तपाक से उत्तर देते, "तुम अभी तक धनी क्यों न बन सके? अवश्य ही ऐसा होगा कि तुम स्वयं एक लफंगे से कोई अधिक अच्छे नहीं हो।" रेवरेण्ड बुल ने मास्टर तिङ का निमंत्रण अपनी दृष्टि से दूर न होने दिया। उसने स्वयं कुछ समय के लिये इस तथ्य को भुला दिया कि तिङ लू उन तिरस्करणीय चीनियों में से एक था। अकस्मात ऐसा लगा कि वह अत्याधिक लोकतांत्रिक भावना से पराभूत हो गया हो; पीली त्वचा वाले करोड़पति गोरी जाति वालों की मित्रता के लिये काफी अच्छे थे। वह सोच रहा था कि तिङ लू को किस प्रकार अपने वश में किया जाये और फिर उसके माध्यम से उच्च अधिकारियों के साथ सम्बन्ध बनाए जायें जो उसे गुप्त सूचनाएँ दे सकें और जिन्हें वह अपनी ख्याति बढ़ाने के लिये संयुक्त राज्य अथवा दूतावास को भेज सके। उसने अपने जूतों पर पालिश करने और सूट पर लोहा

करने के लिये अपने नौकर को आदेश देने के साथ ही ओल्ड तथा न्यू टेस्टामेन्ट की अच्छी प्रतियाँ निकाल लाने को कहा जिन्हें वह उपहार के लिये अपने साथ वहाँ ले जा सके।

वह यह नहीं जानता था कि उसे भोजन पर आमंत्रित करने का मास्टर तिङ का क्या मंतव्य था और न उसने इस पर अधिक विचार ही किया। "अनेक नेत्रों वाला" इसका एक तर्कसंगत अनुमान लगा सकता था, किन्तु वह कभी रेवरेण्ड बुल के साथ ऐसे विषय पर विचार नहीं कर सका। वह आने वाली घटना के सम्बन्ध में रेवरेण्ड बुल से कहीं अधिक उत्तेजित था। "रेवरेण्ड बुल! रेवरेण्ड बुल!! मैं शर्त लगा सकता हूँ कि यह शार्क मछली की दावत होगी। मैं आपसे शर्त लगाऊँगा। हेई।" वह पहले से ही शार्क मछली के स्वाद का रस लेते लेते मुँहभर लार निगल गया।

प्रत्याशित घटना के कारण सौभाग्य के भावी अनुमान से प्रेरित होकर "अनके नेत्रों वाले" ने प्रस्ताव किया कि जब रेवरेण्ड बुल दावत में सम्मिलित होने जायें, तब वह स्वयं उनके साथ एक प्यादे के रूप में जायेगा। एक अधिकारी की लाल फुँदनेदार टोपी पहनकर वह एक सफेद सुन्दर घोड़े पर बैठेगा और रेवरेण्ड बुल के उपहारों आदि का दायित्व सम्भालेगा। और यदि "अनेक नेत्रों वाला" घोड़े पर बैठेगा तो उसका अर्थ होगा कि रेवरेण्ड बुल को एक घोड़ागाड़ी पर सवार होना पड़ेगा। "यही ठीक है! रेवरेण्ड बुल! मैं एक गाड़ी भाड़े पर लाने जाता हूँ। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इससे आपकी शोभा बढ़ेगी। जब हम तिङ के महल में पहुँचेंगे, मैं जोर से पुकारूँगा 'ओयज'। तनिक मेरा स्वर सुनिए, मैं यह कार्य करने के लिये बिल्कुल ही उपयुक्त हूँ।" सामान्य परिस्थितियों में "अनेक नेत्रों वाला" रेवरेण्ड बुल से कभी इस प्रकार अनौपचारिक बात न करता था। किन्तु आज रेवरेण्ड बुल का उत्साह देखकर और इस बात से पूर्णतय विश्वस्त होकर कि उनके साथ उसका जाना बिल्कुल उचित था, उसने सामान्य व्यवहार की अपेक्षा कहीं अधिक साहस दिखाया। इसके अतिरिक्त उसे कुछ बचा-खुचा भोजन या कुछ नकद अतिरिक्त पुरस्कार पाने का भी अवसर था।

"एक घोड़गाड़ी?" रेवरेण्ड बुल के नेत्र अपने कोटरों में नाच उठे।

"यही उचित है, एक घोड़ागाड़ी।" तब "अनेक नेत्रों वाले" को मालूम न था कि यह अच्छा होगा या बुरा। उसने आगे कहा, "मास्टर तिङ सदा घोड़ागाड़ी पर ही सवार होकर बाहर जाते हैं। रेवरेण्ड! आप उसे अपने से श्रेष्ठ न सिद्ध होने दें।"

"यदि वह एक घोड़ागाड़ी पर सवार होते हैं तो मैं एक डोली पर चढ़कर जाऊँगा। मैं उसे उसके ही दाँव से परास्त कर दूँगा।"

"अनेक नेत्रों वाले" के मन में यह विचार कभी न आया था और कुछ क्षणों तक यह बोल न सका। "अच्छा, अह...अच्छा, एक डोली...ऐसा ठीक नहीं, कोई भी डोली

पर सवारी कर सकता है। -

"थोड़ा रुको और देखो। मैं तुम्हारे उस बूढ़े सम्राट से एक आठ वाहकों वाली बड़ी डोली मँगवाऊँगा।"

"रेवरेण्ड, यही उचित है। आपको एक प्रथम श्रेणी के अधिकारी की भाँति ही किसी वाहन पर सवार होना चाहिए। किन्तु यह न भूलें कि यदि आप लाल बटन लगी हुई टोपी पहनेंगे, तो आपको मुझे एक आधिकारिक उपाधि देनी होगी। रेवरेण्ड, मुझे इसी समय उसके लिये आपको धन्यवाद देने का अवसर दें।" रेवरेण्ड बुल के समक्ष "अनेक नेत्रों वाले" ने यथोचित नमन किया।

रेवरेण्ड बुल ने कुछ समय तक "काह काह काह" किया।

एक लम्बी वार्ता के पश्चात वे निम्नलिखित निर्णय पर पहुँचेः रेवरेण्ड बुल डोली पर सवार न होंगे और न "अनेक नेत्रों वाला" घोड़े पर उनका सहगमन करेगा। अपितु वे एक सुन्दर खच्चरगाड़ी किराए पर लेंगे। "अनेक नेत्रों वाले" ने इन योजनाओं की रूपरेखा बनाई : प्रथम, चूँकि वह आश्वस्त न हो सका कि वह घोड़े से न गिरेगा चाहे वह एक पुराना विश्वसनीय घोड़ा ही क्यों न हो, और दूसरे, यदि वह अपने मन की ही सब कुछ करता जायेगा तो रेवरेण्ड बुल अपनी योजना बदल सकते हैं तथा प्यादे का स्थान बिल्कुल ही समाप्त कर सकते हैं, जिसके कारण निःशुल्क भोजन तथा कुछ नकद पैसा पाने के उसके समस्त अवसर पूर्ण रूप से संकट में पड़ सकते थे।

दावत का समय ग्यारह बजे प्रातः निश्चित था। रेवरेण्ड बुल ने पहले यह योजना बनाई थी कि वे वहाँ कुछ विलम्ब से पहुँचेंगे, जिससे कि वह सभी को यह प्रदर्शित कर सकें कि एक अच्छे भोजन का उनके लिये कोई विशेष महत्व न था। तो भी वे प्रातः बहुत शीघ्र उठे और विशेष सतर्कतापूर्वक अपनी दाढ़ी बनाने लगे। उनके विचार में यह कभी न आया कि मास्टर तिङ के यहाँ उन्हें कुछ दर्लभ चित्र या चित्रात्मक सुलेख या अन्य बहुमूल्य प्राचीन वस्तुएँ देखने का अवसर प्राप्त हो सकेगा। वे केवल सोने के बड़े-बड़े ढेर, चाँदी के टुकड़े तथा बहुमूल्य सतरंगी मोतियों को देखने की कल्पना कर सके थे। वह इन विचारों में इतना उत्साहित थे कि दो बार उनसे अपनी ठुड्डी कट गयी।

"अनेक नेत्रों वाले" ने अपने पड़ोस के पहरेदार द्वितीय ते से अधिकारी का एक पुराना हैट उधार ले लिया। वह उसके सिर के लिये बहुत बड़ा था और जब उसने उसे पहना तो वह तनिक सा हिलने पर उसके सर के चारों ओर घूम गया। वह उस दिन गिरजाघर के सामने बहुत तड़के पहुँच गया। वहाँ से ऐसे कुछ देहाती लोगों को जो वहाँ विश्राम कर रहे थे और उन बच्चों को जो इधर-उधर फैले छोटे-छोटे कोयले के टुकड़े बीन रहे थे, उन्हें हटाना उसका प्रथम कार्य था।

"यह गिरजाघर है, यहाँ मटरगश्ती करने की आज्ञा नहीं है। भागो! एक मिनट में ही एक विदेशी बाहर आने को हैं, और यदि तुम नहीं जाते हो तो वह अपने बड़े-बड़े जूतों से तुम्हें अच्छा मजा चखाँएगे।" जैसे ही वे चले गए, "अनेक नेत्रों वाले" ने एक महान गौरव, सत्ता तथा आत्मसन्तोष का अनुभव किया। इसके पश्चात उसने रेवरेण्ड बुल के नौकर को बुलाया, "मैं कहता हूँ, सामने के फाटक के आसपास अभी तक झाड़ू क्यों नहीं लगी? जब रेवरेण्ड बाहर आकर यह देखेंगे. .. तुम जानते हो कि मेरा क्या अभिप्राय है?" साधारणतया, जब कभी उसकी इच्छा होती कि उसे एक कप चाय मिलने का सुविधाजनक अवसर मिले तब "अनेक नेत्रों वाला" नौकर के साथ अत्यन्त सरल व्यवहार करता था। किन्तु इस अवसर पर चूँकि वह एक अधिकारी का हैट लगाए था तथा रेवरेण्ड बुल के साथ एक दावत पर जाने वाला था, उसने सोचा कि उसको उस पर कुछ प्रभुत्व दिखाने का अधिकार है। बिना कुछ बोले रेवरेण्ड बुल के नौकर ने "अनेक नेत्रों वाले" के हवा की चक्की जैसे हैट को घूरकर देखा।

ठीक साढ़े दस बजे रेवरेण्ड बुल सजधजकर जाने को तैयार हो गए। वह अधीर होने लगे। अपने साधारण अस्तित्व की परिधि में उन्हें प्रतिदिन अपने दीन पैरिशवासियों का सामना करना पड़ता था। यद्यपि वे उनसे घृणा करते थे तथा उन्हें तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे, फिर भी वे लोग ही उनकी जीविका के एकमात्र श्रोत थे। उसे सुधारने के लिये यह एक ईश्वरीय साधन था। वे दूतावास के असैनिक तथा सैनिक अधिकारियों से ईर्ष्या करते थे, अपने आत्मविश्वास और गर्वपूर्ण व्यवहार के साथ उनमें से प्रत्येक पाश्चात्य सभ्य समाज का एक भद्र पुरुष था। और वे स्वयं कैसे भद्र पुरुष थे? उन्होंने यहाँ तक प्रार्थना की कि तिङ लू उनका मित्र बन जाये और उन्हें कुलीन तथा करोड़पतियों की मण्डली में सम्मिलित कर ले। एक बार उनमें सम्मिलित कर लिये जाने पर रेवरेण्ड बुल का स्थान उस मण्डली में अपने शेष जीवन के लिये निर्श्चित हो जायेगा। उन्हें अपने बाल्यकाल में पढ़ी हुई कुछ सस्ती "साहित्यिक कृतियों" का स्मरण हो आया। उनमें से सभी साहसिक घटना-प्रधान कहानियाँ तथा दासों के प्रेम व्यापार सम्बन्धी कथाएँ, कल्पना पर आधारित कथात्मक रचनाएँ न थीं। जब दासों ने विवाह कर लिया तब क्या प्रत्येक पति पूर्वी योरोपीय राजकुमार जैसा नहीं बन गया और क्या प्रत्येक स्त्री एक बड़ी सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी नहीं बनी? उनमें से कुछ कहानियाँ सत्य भी सिद्ध हुई।

उसी समय "अनेक नेत्रों वाला" अन्दर आया और यह सूचना दी कि गाड़ी आ गयी है "क्या अब हमें दावत में चलना चाहिए?" रेवरेण्ड बुल सदैव "अनेक नेत्रों याले" को तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे किन्तु उन्होंने निश्चय किया कि वे आज उसका उपयोग अपनी दया तथा उदारता एवं ईश्वर की अनन्त बुद्धिमत्ता और शक्ति

के प्रदर्शन के साधन के रूप में करेंगे। जब उन्होंने अपनी पहले की सस्ती प्रेम लीलाओं को स्मरण किया तो वह अनुभव करने लगे कि "अनेक नेत्रों वाले" में वास्तव में कुछ अच्छे गुण हैं। वह एक खजैले बूढ़े गधे की भाँति चालाक था तथा उपहास का पात्र था, जिससे यह जान पड़ता था कि उसमें कुछ मानवीय गुण भी थे। उनको "अनेक नेत्रों वाले" का फटा सरकारी हैट सबसे अधिक मनोरंजक लगा। उन्होंने सहसा निश्चय किया कि यदि वह कभी धनी बन सके, तो भाड़े पर चीनी सेवकों का एक बड़ा दल भरती करेंगे और उनकी पोशाक वह अपने मनचाहे नमूने पर बनवाएँगे जिसमें लाल फुनगी वाले हैट भी होंगे। जितनी ही बार वह ऐसे फटे पुराने हैट को देखते उतना ही कहकहा मारकर हँसते। "अनेक नेत्रों वाला" अपने ऊपर इस प्रकार ध्यान दिए जाने की स्थिति को कठिनाई से सहन कर सका। वह इतना प्रसन्न हो गया कि मुश्किल से अपने दो पैरों पर खड़ा हो सका।

पेइचिङ में शरद ऋतु उस समय अपने चरम उत्कर्ष पर थीं। मौसम आश्चर्यजनक रूप से निर्मल तथा समशीतोष्ण था। लगभग ग्यारह बजते-बजते हवा में तुषार के सभी चिह्न विलीन हो गए तथा उत्तर-पश्चिमी की दिशा से चलने वाली मन्द तथा कभी-कभी तेज हवाओं से छनकर आने वाली सूर्य के प्रकाश की तीखी किरणों से लोगों को गरमी की सुखानुभूति हो रही थी।

उन दिनों सड़कें बहुत खराब होती थीं। कुछ स्थानों में सड़क का उठा हुआ बीच का भाग दोनों किनारों पर चलने के मार्ग से दो या तीन फुट ऊँचा था। यह ऊँचा भाग प्रायः जल और कीचड़ के बड़े-बड़े कुण्डों से घिर जाता था। यदि कोई गाड़ी पलट जाती तो उसके सवार या तो झटके से जमीन पर या किसी बदबूदार कीचड़ के कुण्ड में गिर जाते। यद्यपि सड़क का ऊँचा मध्य भाग तुलनात्मक रूप से समतल था, तथापि वह प्रायः चारों ओर धूल और गर्द के गुबार से ढका रहता था। कभी-कभी सम्राट के जुलूस की तैयारी के लिये सड़कों पर पानी का छिड़काव किया जाता था तथा ऊबड़-खाबड़ भागों को मिट्टी से थोप दिया जाता था। यद्यपि इन सब कार्यों से स्थिति में सुधार हेतु केवल चार पाँच घण्टों की अवधि के लिये ही होता था।

"अनेक नेत्रों वाले" जो खच्चरगाड़ी किराए पर लाया था वह अपेक्षाकृत स्वच्छ थी। यह कल्पना करते हुए कि यदि उसने अन्तिम क्षण तक प्रतीक्षा की तो शायद ही कोई उपयुक्त गाड़ी मिल सके, उसने उसे एक दिन पहले ही आरक्षित करा लिया था।

बाइबिल के प्रति अपार श्रद्धा का प्रदर्शन करने के लिये अपने हृदय से लगाते हुए, "अनेक नेत्रों वाले" ने रेवरेण्ड बुल से गाड़ी पर बैठने का अनुरोध किया। किन्तु गाड़ी के अन्दर बैठने की अपेक्षा रेवरेण्ड बुल ने गाड़ी के एक ओर पैर लटकाकर बैठने पर जोर दिया।

"अनेक नेत्रों वाले" ने गम्भीरतापूर्वक कहा, "रेवरेण्ड बुल! कृपा करके अन्दर बैठें। यह अशिष्टता होगी कि गाड़ीवान तो गाड़ी के अन्दर बैठे और गाड़ी का स्वामी आपकी तरह बाहर पैर लटकाकर बैठा रहे।"

अब रेवरेण्ड बुल के लिये गाड़ी के अन्दर ही सिकुड़कर बैठने के अतिरिक्त कोई विकल्प न था। "अनेक नेत्रों वाला" गाड़ी के सामने की कोचवान की सीट से बड़ी चतुराई से लटक गया। उसने अपने मन में बड़े आनन्द का अनुभव किया। किसी विदेशी के प्यादे के रूप में कार्य करने का उसका सबसे सुन्दर स्वप्न साकार हुआ।

जैसे ही गाड़ी गति में आने लगी, दो आवाजें साथ-साथ रेवरेण्ड बुल के सिर और मुँह से निकलीं और उनके सिर पर एकदम एक बड़ा गुलमा उभर आया। जब एक दिन पूर्व "अनेक नेत्रों वाले" ने गाड़ी की व्यवस्था की थी तब अनेक गाड़ियाँ पँक्तिबद्ध पास-पास खड़ी थीं, किन्तु उसने यह नहीं देखा था कि जिस खच्चरगाड़ी को उसने पसन्द किया था उसके खच्चर की एक टाँग खराब थी। ऐसे लँगड़े खच्चर के लिये गाड़ी घसीटकर प्रारम्भ के दो-एक पग चलना भी सरल न था, इसलिये रेवरेण्ड बुल को आगे और पीछे से बार-बार झटके लग रहे थे जिससे उनकी पकड़ छूट गयी थी और उनका सिर गाड़ी के अन्दर टकरा गया था।

"ठीक है, कोई बात नहीं, ठीक है।" कोचवान घबराहट के साथ हँस पड़ा। "आप इधर-उधर अधिक न हिलें-डुलें। हम सड़क पर ज्योंही पहुँचेंगे, सब ठीक हो जायेगा। आप इसकी लँगड़ी टाँग पर कोई ध्यान न दें, बीस या तीस ली जाना इसके लिये कोई बड़ी बात नहीं। हम जितना आगे चलेंगे इसकी गति उतनी ही अधिक सुगम तथा और तेज हो जायेगी।"

रेवरेण्ड बुल जैसे ही अपना सिर रगड़ने लगे, "अनेक नेत्रों वाले" ने अपने को गाड़ी के अन्दर खींच लिया। उनमें से कोई भी एक शब्द नहीं बोला। शीघ्र ही वे सड़क के ऊँचे मध्य भाग पर आ गए। रेवरेण्ड बुल के लिये गाड़ी में अपने पैर फैलाने के लिये तनिक भी स्थान न था। पहले उन्होंने अपने पैर एक-दूसरे पर रख लिये और गाड़ी के फर्श की चटाई को एक हाथ से पकड़ कर दूसरे हाथ से अपना सर मलने लगे। कुछ देर इसी स्थिति में रहने के पश्चात उन्होंने अपना पैर फैलाने का प्रयास किया। ठीक इसी क्षण लँगड़ा खच्चर सड़क के बगल की ओर तेजी से मुड़ा और रेवरेण्ड बुल का पैर उनके नीचे से बाहर निकल पड़ा। "अनेक नेत्रों वाले" ने राहगीरों को अपनी मुखाकृति प्रदर्शित करने का अच्छा अवसर देने के उद्देश्य से अपने टोप के कोने को सहज भाव से सुव्यवस्थित किया ही था कि अकस्मात उसने अपनी कमर पर किसी तोप के गोले या लोहार के घन जैसी भयंकर चोट पड़ने का अनुभव किया। इसके पूर्व कि "अनेक नेत्रों वाले" को "अइया!" चिल्लाने का अवसर मिल पाता, इसका वर्णन करने में लगने वाले समय से भी कम समय में उसने

अपने को एक कीचड़ भरे गड्ढे की ओर गिरते पाया। उसने अपने गिरने के मार्ग को परिवर्तित करने का प्रयास किया, किन्तु इसके पूर्व ही वह कीचड़ गड्ढे के सबसे गहरे भाग में गिर गया। इस समय वह कुछ न कर सका, केवल बड़े जोर से चिल्लाया "बचाओ! बचाओ मेरी सहायता करो!"

अनेक राहगीर उसके चारों ओर शीघ्र ही इकट्ठा हो गए और उसे कीचड़ से बाहर निकाला। जब रेवरेण्ड बुल ने यह जाना कि गाड़ी के सामने की सीट रिक्त है, तब उन्होंने तुरन्त ही उस पर अधिकार कर लिया। राहगीरों ने जब उस गाड़ी को देखा तब उन्होंने "अनेक नेत्रों वाले" को एक शब्द बोले बिना ही पुनः कीचड़ के गड्ढे में ढकेल दिया। उन्होंने एक विदेशी के जूते चाटने वाले की रक्षा करने से इंकार कर दिया। रेवरेण्ड बुल ने गाड़ीवान को तेज चलने का आदेश दिया। काफी प्रयास के बाद "अनेक नेत्रों वाले" ने धीरे से अपने को गड्ढे से बाहर निकाला। वह सिर से पैर तक कीचड़ में सना था। हाथ में अपना सरकारी टोप लिये वह अपने घर जाते पूरे रास्ते भर बड़बड़ाता हुआ अपने को कोसता गया।

मास्टर तिङ के निवास के मुख्य फाटक के सामने अनेक सुन्दर खच्चरगाड़ियाँ पहले से ही खड़ी थीं। मास्टर तिङ ने पहले योजना बनाई थी कि वे अपने स्तर को थोड़ा ऊँचा सिद्ध करने और रेवरेण्ड बुल के आतंकपूर्ण प्रभाव को नीचा दिखाने के उद्देश्य से उसे अपने घर के अन्दर पिछले फाटक से लायेंगे। किन्तु घर की स्त्रियों ने उन्हें बाध्य किया कि उन्हें भी उस "विदेशी भिक्षु" की एक झलक पाने का अवसर दिया जाये। महिलाएँ "रेवरेण्ड" शब्द से अपरिचित थीं, यद्यपि उनकी एक अस्पष्ट धारणा थी कि उस शब्द का कुछ सम्बन्ध धर्मों से होगा। इसीलिये उन्होंने उसे "विदेशी भिक्षु" नाम दे डाला। मास्टर तिङ ने इसे अधिक मनोरंजक पाया और रेवरेण्ड बुल को सामने के फाटक से प्रवेश कराने का निश्चय किया। यद्यपि इस निर्णय ने एक विदेशी की प्रतिष्ठा को किसी सीमा तक पुर्नस्थापित किया, फिर भी यह तथ्य कि वह पहले से ही एक बड़े बन्दर की संज्ञा पा चुका था, वह उपलब्धि और यह उपहास दोनों ही भली-भाँति बराबर हो गए। एक तेरह-चौदह वर्षीय बाल भृत्य रेवरेण्ड बुल को आँगन में ले गया। वह अपनी किशोरवस्था के अनुसार बिना फर्श को स्पर्श करता हुआ बिना अस्तर का गाउन पहने था, जिससे वह अत्यन्त अनुभवी प्रतीत होता था—यद्यपि इसके कारण उसके शरारती होने का भाव छिप न सका। रेवरेण्ड बुल अपनी पीली आँखों से इधर-उधर देखने से अपने को न रोक सके और उन्होंने एक ठण्डी साँस ली। तुरन्त ही उन्होंने देखा कि उनके सामने एक गढ़ी हुई ईंटों की लम्बी ऊँची दीवार खड़ी है। लकड़ी का एक बड़ा चौखटा, जिसमें दो काले रंग के चीनी अक्षरों से अंकित एक बड़ा लाल कागज मढ़ा था, दीवार के बीच में लटक रहा था। रेवरेण्ड बुल न तो उस मढ़ाई की सराहना कर सके थे और न

उन बड़े काले अक्षरों को ही पढ़ सकें, किन्तु उन्होंने यह आभास अवश्य पा लिया कि वे कुछ असाधारण तथा एक वास्तविक करोड़पति के घर के सम्बन्ध में अनुभव करने जा रहे हैं। दीवार पर बने चित्र के दोनों ओर प्रवेश द्वार थे, जो अलग-अलग आँगनों की ओर खुलते थे।

"कृपया आप इस ओर चलें!" बाल भृत्य का स्वर न तो ऊँचा था और न नीचा तथा उसमें तनिक भी संवेग व्यक्त नहीं होता था। वह बाई ओर अन्दर के फाटक के ओर चलने लगा। चौखट की ऊँचाई अधिक थी, और चूँकि रेवरेण्ड बुल फाटक पर सुन्दर खुदे हुए फूलों को बड़े ध्यान से देख रहा थे, वे नीचे न देख सके और चौखट से टकरा गए, जिसके कारण उनके जूते के चमड़े का एक टुकड़ा कट गया। अन्दरूनी फाटक के अन्दर चौकोर ईंटों का बना हुआ एक मार्ग महल की मुख्य बैठक की ओर जाता था। मार्ग की किनारियाँ रंगीन कँकड़ों से सजी थीं और आस-पास का क्षेत्र काई से ढका था। दीवार के ऊपर बायीं ओर गहरे हरे बाँस दिखाई दे रहे थे। दाहिनी ओर के चन्द्राकार फाटक से एक कृत्रिम पहाड़ी कोई भी देख सकता था, जिसके कारण अन्दर के आँगन का शेष भाग अवरुद्ध हो रहा था। रेवरेण्ड बुल उस ओर से स्त्रियों के हँसने के स्वर सुन सकते थे। उन्होंने बाल भृत्य को देखा, जो उनकी ओर एक चालाक तथा शरारतपूर्ण ढंग से आँखें मिचका रहा था। यद्यपि वास्तव में वे निश्चय नहीं कर पाए कि उसने आँखें मिचकाई भी थीं।

वे अब दूसरे फाटक पर पहुँच गए। यह बड़ा नहीं था, किन्तु अन्दरूनी फाटक से अधिक सुन्दरतापूर्वक गढ़ा और रंगा था। यह उन्हें दूसरे बड़े आँगन की ओर ले जाता था, जिसके दोनों ओर चौड़ी गैलरियाँ थीं। यहाँ कोई मानव स्वर सुनाई नहीं पड़ रहा था, केवल आँगन के उत्तरी छोर पर आयताकार पिंजड़े में बन्द एक मैना की चहचहाहट की आवाज आ रही थी। दो बड़े-बड़े जंगली सेव के पुष्पयुक्त वृक्ष बैठक के सामने लगे थे, जिनकी डालों पर बड़े-बड़े गुलाबी फल लदे थे। पेड़ों के नीचे एक सफेद लम्बे बालों वाली बिल्ली एक पर के साथ खेल रही थी। जैसे ही उसने अपने निकट आने वाले पैरों की आहट सुनी वह भागकर अदृश्य हो गयी।

बैठक के उत्तर-पश्चिमी कोने की ओर से जाते हुए बाल भृत्य रेवरेण्ड बुल को पीछे के बगीचे में ले गया। मार्ग में उन्हें एक छोटे से प्रवेश द्वार के निकट बाँसों का एक झुरमुट मिला। रेवरेण्ड बुल को वहाँ पारिजात फूलों की सुगन्ध मिल रही थी। वह छोटा सा प्रवेश द्वार सीधे एक विशाल पुष्प बाटिका की ओर खुलता था। रेवरेण्ड बुल ने हिसाब लगाया कि वह उस समय तक बाहर के फाटक से पूरा एक ली पहले ही चल चुका था। इस प्रवेश द्वार के ठीक अन्दर एक लम्बा-पतला थाएहू झील के दुर्लभ पत्थर का नमूना था, जो एक सफेद संगमरमर के ऊपर रखा था। इसके आगे रेवरेण्ड बुल ने एक छोटी सी पहाड़ी देखी जिस पर अनेक प्रकार के बेढँगे

पत्थर के टुकड़े सजाये गए थे, जिससे कि उस पहाड़ी की चिकनी चोटियों में कुछ कोणात्मकता बढ़ाई जा सके। पहाड़ी पर अनेक प्रकार के पौधे तथा पुष्प लगे थे और उसकी चोटी पर एक छप्पर छाया मण्डप बना था। रेवरेण्ड बुल ने सोचा कि सम्भवतया उस मण्डप पर से कोई भी पश्चिमी तथा उत्तरी पहाड़ियों के हरे-भरे ढालों को देख सकता था। इस छोटी सी पहाड़ी के सामने एक कमल का तालाब था। कमल के बड़े पत्ते पहले ही अपने तनों से टूट चुके थे और अनेक छोटी पत्तियाँ पानी के ऊपर निकल आई थीं, जो फैलने लगी थीं। काई से ढके मार्ग पर आगे बढ़ते हुए, जो जलाशय के चारों ओर से घूमकर जाता था, वे पहाड़ी के दूर के छोर पर पहुँचे। वहाँ लताच्छादित देवदार के वृक्षों की छाया में एक तीन कमरों की बैठक थीं उसके सामने चार गमले थे, जिनमें दो पीले/रंग के और दो सफेद रंग के पारिजात पुष्प पूरी तरह खिले थे।

"ओयज!" बाल भृत्य चिल्लाया। अन्दर से आती खाँसी की आवाज को सुनते हुए उसने परतदार परदा उठाया जो कि द्वार का काम करता था और रेवरेण्ड बुल को अन्दर प्रवेश कराया। इसके पश्चात बाल भृत्य वृक्ष के निकट चला गया और वहाँ खड़े होकर उसकी सफेद पपड़ी को खरोचते हुए आगे के आदेशों की प्रतीक्षा करने लगा।

बैठक के अन्दर का सारा फर्नीचर तथा साज-सज्जा लाल भूरे रंग की "नानमू" लकड़ी की बनी थी, जिस पर नीले और हरे रंग की सजावट थी। "नानमू" लकड़ी के दो टुकड़ों पर विरोधात्मक अर्थ वाली दो पँक्तियों की एक कविता ऊपर की ओर लम्बाई में खुदी हुई थी, जिस पर हरे रंग के अक्षर अँकित थे। उनके ही साथ नीले अक्षरों वाली "नानमू" लकड़ी की एक तराशी हुई समतल पट्टी लटक रही थी। कमरे के समस्त चीनी मिट्टी के बर्तन नीले और सफेद थे जिनमें एक छोटा गमला भी था। उसमें दो लाल शरद ऋतु के गुलाब लगे थे। रेवरेण्ड बुल को अत्यधिक निराशा हुई जब उस कमरे में एक भी चाँदी या सोने की तश्तरी दिखाई न पड़ी।

इम्पीरियल अकादमी के दो विद्वानों के साथ मास्टर तिङ एक प्राचीन मसिपात्र का निरिक्षण कर रहे थे। जब रेवरेण्ड बुल अन्दर आए, मास्टर तिङ उनकी ओर मुड़े और उनसे हाथ मिलाकर परम्परागत नमस्कार किया और साथ ही साथ गम्भीर गरजते स्वर में घोषणा की, "रेवरेण्ड बुल, मेरा नाम तिङ लू है। कृपया बैठिए।" इसके पूर्व कि रेवरेण्ड बुल बैठ पाते उनके मेजबान ने अपनी बात जारी रखी, "आह, मुझे लोगों से आपका परिचय कराने की आज्ञा दें। ये लिन श्याओछ्यू हैं और ये हैं य्वीशङ। दोनों ही महानुभाव इम्पीरियल अकादमी के सदस्य हैं। कृपया बैठिए। कृपया बैठिए।"

एक विद्वान लम्बा था और दूसरा छोटा; एक मोटा था और दूसरा पतला; एक

मानचू था और दूसरा हान चीनी। दोनों ही विद्वानों के गुच्छेदार दाढ़ियाँ थीं। विद्वान लिन कुछ संकोची प्रकृति के थे। किन्तु इस संकोची स्वभाव के होते हुए भी उनके लिये मास्टर तिङ के भोजन का निमंत्रण अस्वीकार कर देना कठिन था, यद्यपि उन्हें एक विदेशी ईसाई पादरी के साथ भोजन करने की इच्छा भी नहीं थी। इससे वे बहुत परेशान थे। विद्वान ना एक छोटे कद और मोटे शरीर वाले मानचू थे। उनके पूर्वजों ने चीन पर विजय प्राप्त की थी। उन्होंने चीनी संस्कृति को बहुत कुछ आत्मसात कर लिया था और यहाँ तक कि इम्पीरियल अकादमी के सदस्य बन गए थे जो एक ऐसी उपलब्धि थी जिसके कारण वह विद्वान ली की अपेक्षा कुछ थोड़े ही कम गम्भीर थे। वह अनुभव करते थे कि वे देवलोक के चुने हुए व्यक्ति हैं तथा अपने अनेक गुणों के कारण वे संसार में किसी भी व्यक्ति अथवा किसी भी घटना से अपना सामंजस्य स्थापित कर सकते हैं। वास्तव में वह इस पृथ्वी पर प्रत्येक मानव जिनमे गोरे रंग और नीली आँखों वाले भी सम्मिलित थे, उन सबको वह अपने से एक या दो स्तर नीचे मानते थे। विद्वान ना अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति की राजनीति नहीं समझते थे, किन्तु उन्हें निश्चय ही विश्वास था कि विदेशी बन्दूकें और गोलियाँ चीन के लिये एक बड़ा खतरा है। इसीलिये वह विदेशी दैत्यों से कुछ-कुछ भयभीत थे। किन्तु विदेशी दैत्य केवल विदेशी दैत्य थे, कोई अन्तर नहीं पड़ता कि वे कितने खतरनाक आतंकवादी थे, तो भी वे बर्बर थे और उनके साथ कुछ सुरक्षा तथा शिष्टता का व्यवहार करके कोई भी उनके साथ प्रेम और शान्ति से रह सकता था। यदि कभी उनके साथ मुक्केबाजी करने या कुश्ती लड़ने की स्थिति आई तो विद्वान ना को विश्वास था कि वह उनके साथ व्यवहार करने के लिये समुचित प्रतिरोधात्मक युद्ध कौशल खोज लेंगे, भले ही वह कितनी ही भय की स्थिति में क्यों न हो। उन्होंने सुन रखा था कि विदेशी दैत्यों के पैर पूर्ण रूप से सीधे होते हैं। इस तथ्य की जाँच उसने रेवरेण्ड बुल के पैरों से आरम्भ की। यदि सभी विदेशियों के पैर, जैसा समझा जाता था वैसे ही सीधे होते, तो यदि कोई विदेशी एक बार पृथ्वी पर गिर पड़ता तो वह फिर उठ नहीं सकता था जिससे निश्चित रूप से उनके लिये उसका सामना करना अधिक सरल होता। उसके घुटने पर बाँस के डण्डे का आघात दिया कि वह नीचे गिर पड़ेगा। एक विदेशी को जीवित पकड़ लेना उतना ही सरल होगा जितना कि एक भँवरे या गुबरैले को पकड़ लेना जो पीठ के बल गिर पड़ा हो। रेवरेण्ड बुल के पैर छोटे खम्भे के समान कदापि नहीं जान पड़ रहे थे जिससे विद्वान ना बहुत निराश हुए और इसलिये उन्होंने अपना ध्यान पुनः प्राचीन मसिपात्र का निरीक्षण करने की ओर लगा दिया।

"आपके प्रतिष्ठित देश में मसिपात्रों के लिये किस-किस प्रकार का पत्थर सर्वश्रेष्ठ माना जाता है?" विद्वान ना ने यह प्रश्न रेवरेण्ड बुल से यह सिद्ध करने

के लिये किया कि वह विदेशियों से कदापि भयभीत नहीं होते। एक क्षण के लिये रेवरेण्ड बुल ने इस पर विचार किया किन्तु वे कोई अच्छा उत्तर न दे सके, इसलिये उसने कुछ देर "काह काह" किया और पूछा, "यह कितने मूल्य का होगा?"

"चनश्युचाए प्राचीन विलक्षण वस्तुओं की दुकान ने अभी-अभी इसे भेजा है। वे इसके लिये अस्सी औंस माँग रहे हैं, किन्तु मैंने अभी तक उन्हें उत्तर नहीं दिया। माननीय य्वी, आपके विचार से इसका क्या मूल्य होगा?" एक साँस में मास्टर तिङ ने रेवरेण्ड बुल के प्रश्न का उत्तर दे दिया और दूसरा प्रश्न विद्वान ना की ओर लक्षित कर दिया।

"मैं तो कहूँगा कि इसका मूल्य पचास औंस होगा।" लिन श्याओछ्यू की उपेक्षा करना न चाहते हुए विद्वान ना ने आगे कहा, "आपका क्या विचार है, माननीय छ्यू?"

बूढ़ा छ्यू जानता था कि वह उसी मसिपात्र को दस औंस में खरीद सकता था, किन्तु चूँकि वह मोलभाव निश्चित करने में मानचू बैनरमैन की सहायता करने के लिये तैयार न था इसलिये उसने केवल अपना सिर हिला दिया और कुछ न कहा।

रेवरेण्ड बुल की नाक पर पसीने की छोटी-छोटी बूँदे झलकने लगीं। उसने अनुभव किया कि उसके द्वारा एक भयानक भूल हो गयी है। यह कैसी अविश्वसनीय बात है कि यहाँ ऐसे लोग भी हैं जो एक टूटे पत्थर के लिये पचास औंस चाँदी खर्च करने को तैयार हैं। उसने "अनेक नेत्रों वाले" की भाँति निर्धन मूर्ख लोगों पर इतना समय नष्ट करने की अपेक्षा इन लोगों के साथ अपने सम्बन्ध पहले ही क्यों न स्थापित किए? उसने निश्चय कर लिया कि वह उनके साथ सहयोग करेगा, भले ही फलस्वरूप उसे कुछ सीमा तक नतमस्तक होना पड़े और झूठे वायदे करने पड़ें।

अपनी जेब में पर्याप्त धन हो जाने पर वह उन लोगों के प्रति पुनः अपनी घृणा की भावना प्रदर्शित करने में पूर्ण रूप से स्वतन्त्र होगा। उसने तुरन्त ही उन लोगों का कृपापात्र बनने का निश्चय किया। किन्तु तभी उसे एक हल्की खड़खड़ाहट की ध्वनि सुनाई पड़ी। उसने दूसरे कमरे में चुपके से दृष्टि डाली और देखा कि एक खिड़की के सामने एक बौद्ध भिक्षु और एक ताओ पुजारी गो नामक खेल खेल रहे हैं। वे उस खेल में ऐसे मगन थे कि उसकी उपस्थिति से पूर्णतया अनभिज्ञ जान पड़ते थे।

बौद्ध भिक्षु लगभग पचास या साठ वर्ष की आयु के बीच का जान पड़ता था और यद्यपि वह केवल एक ऊँचा कालरदार गेरूए रंग का साधुओं का चोगा पहने था, उसमें विशेष रूप से एक आध्यत्मिमकता का भाव झलक रहा था। उसका सिर पूरी तरह घुटा हुआ था और उसका माथा चमक रहा था। अधिकाँश अधेड़ पुरुषों से भिन्न उसका चेहरा पूर्णतया झुर्रियों से मुक्त था। ताओ पुजारी का चोगा तथा टोपी ऊपर

से नीचे तक भव्य थी, तथा उसका रंग काला होने के बावजूद उसके चेहरे पर एक दीप्ति थी। ऊपर से देखने में वह अपनी पचास वर्ष की आयु से कम जान पड़ता था, यद्यपि उसकी लम्बी पूरी दाढ़ी पूर्णतया श्वेत थी।

रेवरेण्ड बुल को अंकस्मात क्रोध आ गया। वह तथा उसके अन्य प्रोटेस्टेन्ट मित्र तथा सम्बन्धी सभी विश्वास करते थे कि उनके अपने माने हुए धर्म के अतिरिक्त अन्य कोई भी धर्म वास्तव में धर्म कहलाने के योग्य नहीं है—जिसमें यहूदी धर्म तथा कैथोलिक धर्म भी सम्मिलित है। जहाँ तक बौद्ध तथा ताओ धर्मों का सम्बन्ध है—वे तो दैत्यपूजा के और भी अधिक निम्न श्रेणी के रूप थे जिन्हें बहिष्कृत कर देना चाहिए था। रेवरेण्ड बुल ने अनुभव किया कि बौद्ध तथा ताओ धर्मावलम्बियों के साथ आज का भोजन का निमंत्रण स्पष्ट रूप से उसका अपमान करने तथा साथ ही साथ परमात्मा के अस्तित्व को अस्वीकार करने के प्रयास का एक प्रदर्शन था। उसनें उन सबको वहीं मूर्ख बनाकर भोजन का परित्याग करने और बाहर चले जाने का निश्चय किया।

एक युवा दासी ने तभी अपने हाथ में एक नीला और सफेद ढका हुआ चीनी मिट्टी का बर्तन एक छोटी सी नीली पालिशदार फूच्येन तश्तरी में रखे हुए प्रवेश किया। अपना सिर झुकाए हुए रेवरेण्ड बुल के बगल में एक नीची मेज पर धीरे से उसने उस कटोरे को रख दिया और सौम्यतापूर्वक कमरे से बाहर चली गयी।

रेवरेण्ड बुल ने चाय के कटोरे को खोला। पानी की सतह पर कुछ थोड़ी सी हरी चाय की पत्तियाँ तैर रही थीं। गाढ़ी क्रीम तथा शकर के साथ काली चाय पीने का अभ्यस्त होने के कारण वह इस प्रकार की अधिक अच्छी किस्म की चाय पीने के प्रति बहुत कम रुचि रखता था। वह निराश हो गया और वहाँ से उठकर जाने के लिये और अधिक उत्सुक हो उठा।

"ओयज!" बाल भृत्य ने बाहर से पुकारा।

दो लामा पुजारियों ने एक साथ प्रवेश किया। उनके लाल चेहरे, लम्बे साटन के चोंगे, कढ़े हुए झोले तथा कमर के बटुए उन्हें सिर से पैर तक अधिक आकर्षक तथा रंगीन बना रहे थे।

रेवरेण्ड बुल अब बैठने के लिये कदापि तैयार न था। उसका क्रोध भय में परिवर्तित होने लगा। दैत्यपूजा के इन दूतों ने यदि उसके साथ धर्म पर चर्चा आरम्भ कर दी तब क्या होगा? यदि ऐसा हुआ तब वह अपना बचाव किस प्रकार कर सकेगा? वह पूर्ण रूप से जानता था कि "अनेक नेत्रों वाले" को भी आतंकित करने के लिये उसके पास बहुत कम ज्ञान था।

पहला लामा कुछ स्थूल था और गम्भीर स्वर में बोलता था। उसके मुख पर एक स्थाई मुस्कराहट थी जिससे उसमें एक उच्च स्तर की आध्यात्मिक स्नेहप्रियता

प्रमाणित होती थी। दूसरा लामा उच्च स्वर में बोलता था जो अपने सहधर्मावलम्बी से अधिक स्फूर्तिवान जान पड़ता था। जब उसने कमरे में प्रवेश किया तो बोला, "मास्टर तिङ, शीघ्र ही मैं आपके लिये 'यामन फाटक के बाहर याङ ल्यूलाङ द्वारा अपने पुत्र का शिरच्छेद' गाकर सुनाऊँगा।"

"वह अद्भुत है!" मास्टर तिङ ने उसके समान ही प्रसन्नता के साथ उत्तर दिया, "मैं च्याओ चान अंश का राग गाऊँगा। आपका क्या कहना है? आह, सुन्दर! किन्तु पहले हम भोजन कर लें।" वह बगीचे की ओर मुँह करके चिल्लाया, "हम सब तैयार हैं! भोजन परोसा जाये।"

मास्टर तिङ के बाल भृत्य ने उत्तर दिया, "हाँ श्रीमान भोजन परोसा जा रहा है।"

"आप चलें, कृपया आप चलें।"

"मास्टर तिङ ने अपने अतिथियों से आगे बढ़ने का आग्रह किया। जैसे ही रेवरेण्ड बुल ने भोजन की पुकार सुनी, यद्यपि उनका क्रोध पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हो पाया था, उन्होंने वहाँ ठहरने का निश्चय कर लिया। उन्होंने भोजन की मेज पर अपना पहला स्थान ग्रहण करने का निश्चय कर लिया जिससे कि बौद्ध भिक्षु, ताओ पुजारी, दोनों लामा तथा विद्वान पीछे के स्थान पा सकें। किन्तु मास्टर तिङ ने कहा, "सीधे दाहिने जायें। यहाँ ऐबट ली सबसे वृद्ध हैं। आप चलने की कृपा करें।"

केवल न्यूनतम शालीनतापूर्वक सुन्दर सफेद दाढ़ी वाला ताओवादी धीरे-धीरे आगे बढ़ा। बाल भृत्य ने तुरन्त आगे बढ़कर उसकी बाँह साध ली। मास्टर तिङ हँसे, "ऐबट अट्ठानवे वर्ष के बूढ़े हैं, किन्तु देखिए यह कितने मजबूत तथा स्वस्थ हैं।"

रेवरेण्ड बुल के लिये यह एक बड़े धक्के जैसा था, जिसे अब विश्वास हो रहा था कि ताओवादी अपने को अनेक वर्षों तक जीवित रखने के लिये जादू टोने से काम लेता है।

एक क्षण के लिये भी संकोच किए बिना बौद्ध भिक्षु ताओवादी साधु के पीछे चल पड़ा। बाद में मास्टर तिङ ने उसका परिचय दिया, "यह मास्टर च्येलाङ हैं। यह केवल एक अच्छे विद्वान तथा सज्जन ही नहीं हैं अपितु एक सिद्धहस्त नायक, शतरंज के खिलाड़ी, सुलेखक, कलाकार तथा चित्रकार भी हैं।"

रेवरेण्ड बुल ने अपने मन में विचार किया, "यहाँ भोजन करना सरल कार्य नहीं है।" जिस समय यह विचार उनके मन में आ रहा था विद्वानों तथा लामाओं का चतुष्टय उनके आगे चल पड़ा। रेवरेण्ड बुल ने अपनी भँवें सिकोड़ीं, किन्तु मास्टर तिङ केवल सन्तोषपूर्वक मुस्करा दिए। तब जैसे ही रेवरेण्ड बुल बाहर जाने को हुए, मास्टर तिङ सीधे उनके सामने बढ़ गए। "मैं आगे चलूँगा।" रेवरेण्ड बुल उनके एक तेज ठोकर मारने की इच्छा कर सकते थे, किन्तु चूँकि अब वह उस भोजन को कठिनाई से छोड़ सकते थे, अतः उन्होंने पीछे का स्थान ग्रहण करने पर ही सन्तोष

कर लिया।

भोजन एक गोल गाजेबो पर लगाया गया था, जो बगीचे की बैठक क़े निकट बना था। मूल रूप में गाजेबो एक खुला हुआ मण्डप था किन्तु उसमें शीशे की खिड़कियाँ लगा दी गयी थीं, जिससे कि उसे सर्दियों में मनोरंजन या भोज देने योग्य बना दिया गया। जब कभी मास्टर तिङ खिन्न मन होते थे तब वे अपने मन को शान्त करने तथा अपनी स्वाभाविक चित्तवृत्ति को पुनः प्राप्त करने के लिये यहाँ आ जाते थे। यदि उनमें कुछ क्रोध शेष रह जाता था, तब उनके लिये कुछ थोड़ी छोटी वस्तुओं को तोड़ डालना अत्यन्त सरल था। इस गाजेबो में सजी तमाम वस्तुएँ आयातित घड़ियाँ, लैम्प, चीनी मिट्टी की मूर्तियाँ थीं... और यहाँ तक कि उसके फर्श पर एक आयातित कालीन भी बिछी थी।

"लाल ध्वजा के नीचे" के सम्बन्ध में

हू च्येछिङ*

लाओ श की अपूर्ण कृति "लाल ध्वजा के नीचे" सन 1960 के आरम्भ में लिखी गयी थी। कुल ग्यारह अध्यायों तथा लगभग 80,000 शब्दों में यह केवल एक लम्बे उपन्यास का प्रारम्भ है। यह पाण्डुलिपि कुछ परिवर्तनों सहित बहुत स्वच्छ है। लाओ श की अपने हाथ क़ी लिखी कृतियों मे भी इतनी सतर्कता से लिखी हुई पाण्डुलिपि दुर्लभ ही होगी।

"लाल ध्वजा के नीचे" एक आत्मकथात्मक उपन्यास है। किन्तु मैं इस बात पर बल देना चाहूँगी कि यह अधिकाँश रूप में काल्पनिक है। यह सत्य है कि इसमें वास्तविक व्यक्तियों तथा घटनाओं के कुछ चिह्न विद्यमान हैं, किन्तु चिह्नों से अधिक नहीं। स्पष्ट है कि इस उपन्यास में लाओ श का उद्देश्य अपने विषय में लिखना न था अपितु समाज के विषय मैं था, जैसा कि उनके नाटक "टी हाउस" में है। एक चायघर में जो घटनाएँ घटित हुई, उनके माध्यम से उन्होंने सामाजिक परिवर्तनों तथा ऐतिहासिक घटना-प्रवाहों का वर्णन किया है। "लाल ध्वजा के नीचे" उपन्यास में विभिन्न चरित्रों और घटनाओं के द्वारा लाओ श का उद्देश्य पाठकों को यह बताने का रहा है कि छिङ साम्राज्य जड़ से ही सड़-गल चुका था; मानचू लोग किस प्रकार दो विरोधी गुटों में विभाजित थे; किस प्रकार जनता प्रतिक्रियावादियों के विरूद्ध विद्रोह में उठ खड़ी हुई तथा किस प्रकार चीन उज्जवल भविष्य लेकर एकताबद्ध राष्ट्र बन गया।

यह कहने के पश्चात मेरा विचार है कि यह उपन्यास लाओ श के जीवन को समझने के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कम से कम चार बिन्दुओं में इसकी सादृश्यता है। पहला, उनके पिता एक मानचू सैनिक थे जिन्हें तीन औंस चाँदी मासिक वेतनस्वरूप प्राप्त होती थी। दूसरा, लाओ श का जन्म सन 1898 के बारहवें महीने के तेइसवें दिन सायंकाल लगभग सात बजे हुआ था, जो कि सुधार आन्दोलन आरम्भ होने का वर्ष था। तीसरा , उनका जन्म स्थान पेइचिङ के पश्चिमी भाग में "राष्ट्र रक्षा मन्दिर" के निकट था। चौथा, पिता, माता, बुआ, सबसे बड़ी बहिन, उसका पति तथा सास-श्वसुर तथा दूसरी बहिन के समस्त नमूने, जिनका वर्णन इस

* चित्रकार हू च्येछिङ लाओ श की पत्नी हैं।

उपन्यास में किया गया है, वे उनके सम्बन्धियों में पाये जा सकते हैं। उनमें से प्रत्येक का सामाजिक स्तर वैसा ही था जैसा कि इस उपन्यास के अभिनय करने वाले पात्रों का। ये कुछ बिन्दु जहाँ तक मैं जानती हूँ, प्रमाणित हैं। किन्तु मैं पुनः कहना चाहूँगी कि लाओ श एक आख्यायिका लिख रहे थे; उन्होंने वास्तविक व्यक्तियों तथा घटनाओं तक, जहाँ तक इसकी कथावस्तु, नए पात्र, भाषा तथा चरित्र-चित्रण का सम्बन्ध है, अपने को सीमित नहीं रखा।

तो भी ये बिन्दु अत्यन्त मनोरंजक शोधकार्य के विषय बन गये, उनमें से एक उदाहरण लाओ श के जन्म स्थान की हाल की खोज से सम्बन्धित है।

लाओ श बहुत पहले ही ई हो ध्वान आन्दोलन के सम्बन्ध में एक उपन्यास लिखना चाहते थे तथा मेरे विचार से उनका इस सम्बन्ध में एक विशेष कारण था। जब वे एक छोटे से बालक ही थे, उनकी माता ने उनके पिता की दुखद मृत्यु की कहानी कई बार सुनाई थी।

उस समय दक्षिणी लांग एवन्यू में एक अनाज की दुकान में उनके पिता का देहान्त हो गया था जब आठ साम्राज्यवादी शक्तियों की संयुक्त सेनाओं ने पेइचिङ में प्रवेश किया था। उनके फुफेरे भाई, जो स्वयं एक मानचू सैनिक थे, इसके साक्षी थे, वास्तव में "लाल ध्वजा के नीचे" उपन्यास में वर्णित यह सर्वतोमुखी प्रतिभासम्पन्न फूफेरा भाई फूहाए था। एक युद्ध में हार जाने प॰ वह अनाज की दुकान के पास से निकला। जब वह पीने के लिये कुछ पानी की तलाश में जा रहा था तब उसने मरणासन्न पड़े हुए लाओ श के पिता को देखा था। उनका शरीर उस बारुद से बुरी तरह जल गया था जिसे वे लिये जा रहे थे और जिस पर एक अग्नि बम का आघात हुआ तथा विस्फोट हो गया। घातक रूप से घायल हो जाने पर वे अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा में सरकते-सरकते अनाज के दुकान में पहुँच गये थे। जब लाओ श के फुफेरे भाई ने उन्हें देखा, उनका पूरा शरीर जलकर काला हो गया था और वे बोल नहीं सकते थे। उनका अन्तिम कार्य अपने भतीजे के हाथ में एक जोड़ी मोजे सौंप देना था, जिन्हें उन्होंने अपने सूजे हुए पैरों से उतार लिया था। बाद में यही मोजे का जोड़ा उनकी अन्य वस्तुओं के साथ उनके रिक्त मकबरे में दफना दिया गया था। उस समय लाओ श की आयु दो वर्ष से भी कम थी।

लाओ श का पारिवारिक इतिहास की यह दुखद घटना स्वाभाविक रूप से एक उपन्यास की विषय-वस्तु थी। जब कभी यह उनके मस्तिष्क में आता, वे दुख तथा निराशा में डूब जाते थे।

"लाल ध्वजा के नीचे" उपन्यास के बाद में लिख सके जाने वाले अध्याय सम्भवतया इसी घटना के वर्णन से प्रारम्भ होते, क्योंकि उपन्यास की कथावस्तु तीस वर्ष के जीवन-काल के वर्णन से सम्बन्धित है। इसकी छाया उसमें थी; सभी चरित्र

भी निर्मित हो गये थे, केवल लाओ श इसकी पूर्ति के लिये जीवित न रह सके।

तो भी यह अपूर्ण उपन्यास लाओ श के लिये एक स्मृति लेख सिद्ध हो सकता है, जिसमें उनके जीवन के अनुभव, उनके स्नेह और घृणा, उनकी आशाएँ तथा उनके आदर्श उल्लिखित हैं।

लेखक के बारे में

लाओ श (1899-1966) लेखक शू शय्वी (शू छिङ्छुन) का साहित्यिक नाम है। उनका जन्म पेइचिङ में हुआ था। 1924 में वे इंग्लैण्ड गये, जहाँ उन्होंने लन्दन विश्वविद्यालय के "स्कूल आफ ओरियण्टल स्टडीज" में चीनी भाषा के लेक्चरर के रूप में काम किया। लन्दन में ही उन्होंने अपने पहले तीन उपन्यास लिखे। 1930 में स्वदेश लौटने के बाद, उन्होंने चीनान के छीलू (चीलू) विश्वविद्यालय और छिङताओ के शाङ्तुङ विश्वविद्यालय में अध्यापन किया। इस दौरान उन्होंने लिखना भी जारी रखा और जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध (1937-1945) के दौरान जब वे छुङछिङ में थे, राष्ट्रीय लेखक और कलाकार प्रतिरोध संघ को संगठित करने में सक्रिय रूप से भाग लिया। बाद में वे चीन से अमरीका चले गये, जहाँ उन्होंने लेक्चर दिये और साथ में अपना लेखन-कार्य भी करते रहे। 1949 में दुबारा स्वदेश लौटने के बाद, वे नये चीन के नवनिर्माण में तन-मन से लग गये और केन्द्रीय सरकार प्रशासन परिषद की संस्कृति व शिक्षा समिति के सदस्य, राष्ट्रीय जन-प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि, चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की स्थाई समिति के सदस्य, साहित्य और कला क्षेत्र के चीनी महासंघ के उपाध्यक्ष, चीनी लेखक संघ के उपाध्यक्ष और पेइचिङ लेखक व कलाकार महासंघ के अध्यक्ष के रूप में काम करते रहे।

मुक्ति से पहले, उन्होंने समाज का पर्दाफाश व निन्दा-भर्त्सना करते हुए अनेक कृतियों की रचना की, जिनमें उनका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास "ऊँट श्याङचि" अथवा "रिक्शा वाला" भी शामिल है। नये चीन की स्थापना के बाद, उन्होंने "ड्रैगन दाढ़ी नाला", "वसन्त के फूल और शरद के फल", "फाङ चनचू", "टी हाउस" और अन्य बहुत-से लोकप्रिय नाटक लिखे। उन्हें चीन में अत्यधिक सम्मान प्राप्त था, तथा उनको "जन-कलाकार" और "भाषा का महापण्डित" कहा जाता था। 1966 में उनका निधन हो गया।



425-80-6